बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन

STUDY OF THE EDUCATIONAL CONTRIBUTION OF THE SARASWATI VIDYA MANDIR INSTITUTIONS IN BUNDELKHAND (UTTAR PRADESH) REGION
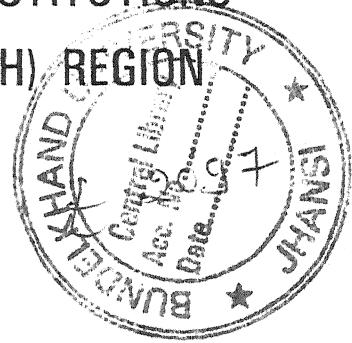
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के
शिक्षा शास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशिका :
डॉ. (श्रीमती) अंजना राठौर
एम.ए., एम.एड.,पी-एच.डी.
रीडर, अध्यक्ष बी.एड. विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

शोधकर्ता :
सत्येन्द्र गुप्ता
एम.एस-सी.,एम.एड.

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
2005

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन" को सत्येन्द्र गुप्ता (एम.एस-सी.,एम.एड.) ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से शिक्षाशास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (शिक्षा वारिधि) की उपाधि हेतु मेरे निर्देशन व परिवीक्षण में वांछित वर्षो के अभ्यन्तर पूर्ण किया है।

मैं पुनः प्रमाणित करती हूँ कि जहाँ तक मुझे ज्ञात व विश्वास है इनका प्रस्तुत शोध कार्य मौलिक है। अन्य उपाधि हेतु इन्होंने इसे अन्यत्र प्रस्तुत नहीं किया है।

दिनांक:
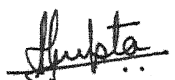
डॉ. (श्रीमती) अंजना राठौर
एम.ए., एम.एड.,पी-एच.डी.
रीडर, अध्यक्ष, बी.एड. विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी
(निर्देशिका)

घोषणा-पत्र

मेरे लिए यह बहुत ही गौरव का विषय है कि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से शिक्षाशास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (शिक्षा वारिधि) की उपाधि प्राप्ति हेतु मैंने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का शैक्षिक योगदान," डॉ.(श्रीमती) अंजना राठौड़, रीडर, विभागाध्यक्ष बी.एड. विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी के कुशल निर्देशन में सम्पादित किया है ।

यह मेरा मौलिक शोध कार्य है । इसकी सामग्री सम्पूर्ण या आँशिक रूप में किसी अन्य शोधकार्य के लिए प्रयोग नहीं की गई है । इस शोधकार्य हेतु जिन स्त्रोतों से सहायता प्राप्त की गई है उनका उल्लेख सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में किया गया है ।

स्थान - झाँसी
दिनांक :-

सत्येन्द्र गुप्ता
एम.एस-सी.,एम.एड.
(शोधकर्ता)

आभारिका

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को समीप से अवलोकित करने का प्रथम अवसर एम0एड0 परीक्षा की आँशिक पूर्ति हेतु लघु शोध प्रबन्ध, ''सरस्वती विद्या मन्दिर एवं केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों में संचित मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' के प्रस्तुतीकरण के समय प्राप्त हुआ था । अध्ययन के समय मैंने पाया कि इन स्ववित्तपोषित विद्यालयों ने अपने शैक्षिक वातावरण एवं कार्य प्रणाली से समाज में एक अलग पहचान बनाई हुई है।

वर्तमान समय में सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त या अन्य स्ववित्त पोषित विद्यालयों द्वारा जिस तरह अपने शैक्षिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों से मुँह मोड़ा जा रहा है यह वास्तव में गम्भीर चिन्ता का विषय है । 'शिक्षा' क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण इस विषय ने मुझे इस दिशा में चिंतन हेतु प्रेरित किया । सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं एवं अन्य शिक्षा संस्थाओं की तुलना करने पर यह प्रश्न बार–बार उठता है कि यह शिक्षा संस्थाएं ऐसा क्या कार्य कर रही हैं जिससे उन्हें समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है और यह तीव्रगति से पूरे देश में संख्यात्मक विस्तार कर रही हैं । अन्य विद्यालयों के द्वारा न केवल इनकी कार्य पद्धति अपनायी जा रही है वरन् इन्हीं 'सरस्वती विद्या मन्दिरों' के समान नाम भी रखे जा रहे हैं ।

विद्या मन्दिरों ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में भी तीव्र संख्यात्मक विस्तार किया है । अतः इन शिक्षा संस्थाओं द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे शैक्षिक योगदान को ही अपने शोध का विषय बनाने का निर्णय लिया ।

इस निर्णय एवं शोध कार्य में अनेकों महानुभावों का सक्रिय सहयोग एवं अविस्मरणीय योगदान रहा है । आप विद्वजनों एवं शिक्षाविद्ों के दिशा निर्देश एवं आत्मीय सहयोग के अभाव में मेरे लिए इस विषय पर शोध करना न केवल दुरूह अपितु असम्भव था । ऐसे सभी महान आत्मीयजनों के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना धर्म ही नहीं

सौभाग्य भी समझता हूँ । मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे आप सभी का सानिध्य प्राप्त हुआ है ।

सर्वप्रथम, मैं अपनी निर्देशिका डॉ0(श्रीमती) अंजना राठौर, रीडर एवं विभागाध्यक्ष, बी0एड0 विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का सम्पादन करवाना स्वीकार किया । आपकी सतत् प्रेरणा एवं सुयोग्य मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप ही मैं इस विषय पर शोध कार्य सम्पन्न कर सका ।

डॉ0 जे0एल0 वर्मा, रीडर, बी0एड0 विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी के सहयोग एवं योगदानों का मैं जीवन भर विस्मरण नहीं कर सकता हूँ । आपने जिस तत्परता एवं निःस्वार्थ भाव से प्रस्तुत शोध कार्य को लक्ष्य तक पहुँचाने में मेरा मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन किया है उसका कोई दूसरा उदाहरण प्राप्त होना असम्भव है। जब भी किसी सहायता की आवश्यकता अनुभव हुई आपने अविलम्ब मुझे सहयोग दिया। वास्तव में आप ही इस शोधकार्य के प्रेरणा स्त्रोत हैं ।

पिता तुल्य श्री प्रयाग नारायण साह, मंत्री, भारतीय शिक्षा समिति, उत्तर प्रदेश के चरणों में मैं सादर नमन करता हूँ । आप ने 'विद्या भारती' एवं ' सरस्वती विद्या मन्दिर' संस्थाओं को निकट से जानने, उनकी कार्यप्रणाली को समझने एवं सूचनाओं को संकलित करने में मेरी सदा सहायता की है ।

श्रीमान् सुशील कुमार, प्रधानाचार्य, भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज, झाँसी के सहयोग के अभाव में मेरा यह प्रयास सफल न होता । आपने अनेकों बार मेरी परेशानियों को दूर किया है । 'विद्या मन्दिरों' से प्रश्नोत्तरियों को पूर्ण करवाने में आपने सक्रिय सहयोग किया एवं अपने विद्यालय का अनेकों बार निरीक्षण करने का अवसर प्रदान किया ।

श्री विनोद शंकर दीक्षित, प्रदेश निरीक्षक, भारतीय शिक्षा समिति, अवध प्रदेश श्री रामजन्म पाठक, प्रधानाचार्य, सरस्वती विद्या मन्दिर, कानपुर का भी मैं आभारी हूँ । आप लोगों ने आँकड़ों के एकत्रीकरण में मेरी सहायता की है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के उन समस्त प्रधानाचार्यों, प्रधानाचार्याओं, आचार्य, आचार्याओं एवं कार्यालय सहायकों का मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने आँकड़े एकत्रित करने, प्रश्नोत्तरी को समय से पूर्ण करने एवं अपने विद्यालयों के निरीक्षण की अनुमति प्रदान कर मेरी सहायता की है । मैं श्री नरेन्द्र सिंह, प्रधानाचार्य, सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज, हमीरपुर को विशेष धन्यवाद करता हूँ ।

मैं अपने गुरूजनों डॉ० (श्रीमती) शारदा श्रीवास्तव, डॉ० रामलखन विश्वकर्मा, डॉ० ओंकार चौरासिया का भी आभार व्यक्त करता हूँ ।

राम–ईश इन्सटीटियूट ऑफ एजुकेशन, ग्रेटर नौएडा के चेयरमेन डॉ० आर. सी. शर्मा एवं प्राचार्य डॉ० ए. के. मोहन्ती का मैं बहुत आभारी हूँ । आप लोगों ने सदैव अमूल्य सुझाव देकर इस शोधकार्य में मेरा मार्गदर्शन किया एवं इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए सदा प्रोत्साहित किया ।

मैं अपने को अत्यन्त सौभाग्यवान् मानता हूँ कि मुझे श्रीमती पुष्पा गुप्ता एवं डॉ० हरि मोहन गुप्ता, रीडर, समन्वयक, औद्योगिक रसायन विभाग, बिपिन बिहारी महाविद्यालय, झाँसी की संतति के रूप में ईश्वर ने जन्म दिया । यह मेरे माता–पिता की तपस्या एवं पुण्यकर्मों का ही फल है कि मैं अपनी जीवन यात्रा में इस स्थान को प्राप्त कर सका हूँ। मैं अपने मातृ– पितृ ऋण से कभी उऋण न हो सकूँगा ।

अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विनीता गुप्ता का मैं बहुत आभारी हूँ । इन्होंने मेरे पारिवारिक दायित्वों को अपने ऊपर लेकर मुझे प्रस्तुत शोधकार्य में न केवल सहायता की वरन् सदैव अभिप्रेरित किया। मैं अपनी पुत्री सौ० सलोनी से क्षमा मोगता हूँ कि उसे इस शैशवावस्था में पिता का पूरा प्यार न दे सका।

श्रीमान् प्रदीप स्वर्णकार, यूनिवर्सल कम्प्यूटर ग्राफिक्स, झाँसी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ कि आपने इस शोध प्रबन्ध को आर्कषक रूप में मुद्रित कर प्रस्तुति योग्य बनाया ।

मैं उन समस्त महानुभावों, सरकारी अधिकारियों एवं कार्यालयों का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ जिनकी पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, अभिलेखों, प्रकाशनों आदि का उपयोग इस शोध प्रबन्ध की पूर्णता हेतु किया गया है ।

मैं उन सभी आत्मीयजनों का पुनः आभार व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्णता प्रदान कर सका ।

मैं ईश्वर, ईष्ट देवों एवं अपने गुरूजी को यही कह कर आभार व्यक्त करना एवं क्षमा मांगना चाहता हूँ कि :–

मूकं करोति वाचालं पंगु लङ्.घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ।।

सत्येन्द्र गुप्ता
(शोधकर्ता)

प्रस्तावना

कोठारी आयोग (1964–66) ने भारतीय शिक्षा के अध्ययन के पश्चात् अपने प्रतिवेदन को प्रस्तुत करते समय उसका प्रारम्भ इस कथन से किया था कि 'विद्यालयों में भारत के भविष्य का निर्माण हो रहा है'। निश्चित ही तत्कालीन विद्यालयों की दशा एवं शैक्षिक वातावरण ने उन्हें इस कथन के लिए प्रेरित किया होगा । शिक्षा आयोग का यह कथन पूर्णतः सत्य भी है । वर्तमान के व्यस्ततापूर्ण जीवन में बालकों की शिक्षा – दीक्षा के लिए विद्यालयी शिक्षा का महत्त्व दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है । अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को शिक्षित करने का जो कार्य करना चाहिए उसका भी उत्तरदायित्व धीरे–धीरे विद्यालयों को सौपा जा रहा है । आज विद्यालयों में विधार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है । निरक्षर माता–पिता भी अपने पाल्यों को विद्यालयों में प्रवेश दिलवाने के लिए जी –तोड़ मेहनत कर रहे हैं । कभी अभिजात्य वर्ग का अंग माने जाने वाली विद्यालयी शिक्षा आज आम जनता के लिए भी सुलभ हो रही है। परिणामस्वरूप विद्यालयी शिक्षा प्राप्ति के इच्छुकों की कामनापूर्ति के लिए समाज ने सरकारी एवं गैरसरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों की संख्या में बढ़ोत्तरी की ।

समाज ने विद्यालयों की अनियन्त्रित संख्यात्मक वृद्धि तो कि परन्तु इनमें गुणवत्ता के मानकों का ध्यान नहीं रखा । कभी एकड़ों भूमि में सर्वसुविधा एवं साधनों के साथ निर्मित होने वाले विद्यालय आज मात्र कुछ सौ फीटों में सिकुड़ कर गली–मुहल्लों की शान बन रहे हैं । शिक्षा के उद्देश्यों में अघोषित परिवर्तन हो रहे हैं। अधिकाँश विद्यालय बालकों के सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्यों से भटक कर मात्र 'कोचिंग सेंटर' की भाँति कार्य करने लगे हैं । विद्यालयों में न केवल छात्रों के विकास से संबंधित संसाधनों जैसे– खेल का मैदान एवं सामग्री, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, पाठ्यसहगामी क्रियाओं से सम्बन्धित सामग्री आदि का अभाव देखने को मिल रहा है बल्कि बालकों के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित क्रियाकलापों की सर्वथा उपेक्षा की जा रही है। यह स्थिति न केवल निजी विद्यालयों की है बल्कि सरकारी विद्यालयों की स्थिति और भी दयनीय है।

शिक्षा की बढ़ती मांग ने विद्यालयी शिक्षा को और महंगा बना दिया है। 'अच्छे विद्यालयों' की श्रेणी में गिने जाने वाले विद्यालय समाज के 'मध्यम वर्ग' की पहुँच से भी दूर हो चुके हैं। भारतीय समाज का मध्यम वर्ग इस समय दुविधा की स्थिति से निकल रहा है। वह अपने बच्चों के लिए अच्छे स्तर की विद्यालयी शिक्षा की व्यवस्था करने में स्वयं को अक्षम पा रहा है । वह अपने बच्चों को मंहगे पब्लिक स्कूल एवं इन्टरनेशनल स्कूलों में प्रवेश नहीं दिला पा रहा है तथा अन्य विद्यालयों में प्रवेश दिलाकर संतुष्ट नहीं है। आंग्ल भाषा एवं आंग्ल माध्यम वाले विद्यालयों के प्रति इस वर्ग के बढ़ते आकर्षण ने उसके समक्ष विकल्पों को और अधिक सीमित कर उसकी दुविधा को और बढ़ा दिया है ।

माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1972 ईस्वी से प्रारम्भ हुए सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों ने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बना विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में नये मानकों की स्थापना की है। वर्तमान समय में तेजी से संख्यात्मक वृद्धि करने वाले इन विद्यालयों का सम्पूर्ण देश में संचालन 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' कर रहा है। विद्या भारती सम्पूर्ण देश में अपने तत्वाधान में पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर तकनीकी एवं महाविद्यालयी शिक्षा संस्थानों का संचालन कर रही है। विद्या भारती अपने शिक्षा संस्थानों में उच्च गुणवत्ता युक्त विषय परक शिक्षा प्रदान करने के साथ –साथ छात्रों को, मूल्य आधारित शिक्षा, राष्ट्रीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र भक्ति एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर, एक सक्रिय नागरिक के रूप में विकसित करने का दावा करती है। विद्या भारती ने अपना केन्द्र देश के माध्यम एवं निम्न वर्ग को बनाया हुआ है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान उपरोक्त विशेषताओं के साथ–साथ माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति कर छात्रों का सर्वांगीण विकास करने का दावा करते हैं । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में इन संस्थानों ने विगत एक–दो दशकों में बहुत तेजी से प्रगति की है। चूँकि शोधकर्ता स्वयं बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र का निवासी एवं 'शिक्षा' का विद्यार्थी है अतः वह इन विद्यालयों के इस क्षेत्र में तेजी से विकास करने पर आश्चर्यचकित था ।

बुन्देलखण्ड को देश का एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता है । यहाँ की भौगिलिक परिस्थितियों ने इस क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को अवरूद्ध किया हुआ है। इन कारणों से यहाँ शिक्षा का विकास तथा प्रसार प्रदेश एवं देश की तुलना में कम ही हुआ है । इन परिस्थितियों में स्ववित्तपोषित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का इस क्षेत्र में तेजी से विकास करना शोधार्थी के मन में एक उत्सुकता पैदा कर रहा था । फलतः शोधार्थी ने अपनी उत्सुकता को शांत करने एवं इन विद्यालयों के दावों की सत्यता की जाँच करने के लिए अपने शोध कार्य का क्षेत्र बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को बनाया । इसके साथ शोधकर्ता यह भी जानना चाहता था कि इन विद्यालयों ने इस क्षेत्र के शहरों, तहसीलों, कस्बों एवं ग्रामों में कहाँ तक अपनी पहुँच बनाई है। बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर कैसा ध्यान दे रहे हैं ? अपने इस शोधकार्य से शोधार्थी यह भी आकलन करना चाहता है कि सम्पूर्ण देश में इन शिक्षा संस्थाओं की कार्यप्रणाली एवं शैक्षिक योगदान किस प्रकार का है ?

उपरोक्त वर्णित सभी कारणों पर विचार करते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य का क्षेत्र 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का शैक्षिक योगदान' ।

इस शीर्षक के अन्तर्गत किये गये शोध अध्ययन को शोधकर्ता प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के रूप में शिक्षाविद्‌ों के सम्मुख अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहा है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता, समस्या का स्पष्टीकरण, न्यायाधिकरण, अध्ययन का सीमांकन, उद्‌देश्य, परिकल्पनाएँ, अनुसंधान विधियाँ, आँकड़ों का संग्रहण एवं सांख्यिकीय विश्लेषण का आधार सहित सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का वर्णन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं भौगिलिक पृष्ठभूमि सहित इस क्षेत्र के सातों जनपदों का संक्षिप्त वर्णन एवं जनसंख्या और साक्षरता से सम्बन्धित कुछ तथ्यों को प्रदर्शित किया गया है।

तृतीय अध्याय को दो खण्डों में विभाजित किया गया है । खण्ड– 'क' में देश में शिक्षा के विकास का संक्षिप्त वर्णन, बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास, उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा के विकास का आँकड़ो सहित वर्णन किया गया है । खण्ड – 'ख' में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, इसके कार्यों एवं संगठन का सांक्षिप्त परिचय, उत्तर प्रदेश में सरस्वती मन्दिर योजनाओं का संगठनात्मक ढ़ाँचा, सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में विस्तार एवं संगठन सहित इन संस्थाओं की शैक्षिक कार्य प्रणाली का वर्णन किया गया है । विशेष अध्ययन के रूप में भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज, झाँसी का शोधकर्ता द्वारा कृत अवलोकन प्रस्तुत किया है ।

चतुर्थ अध्याय में अनुसंधान विधियों की आवश्यकता एवं महत्व, ऐतिहासिक अनुसंधान विधि, सर्वेक्षण अनुसंधान विधि, प्रयुक्त प्रश्नावली का विश्लेषण सहित प्रतिदर्श का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है ।

पंचम् अध्याय को भी दो खण्डों में विभाजित किया गया है । खण्ड – 'क' में प्रतिदर्श विद्या मन्दिरों से प्राप्त आँकड़ों को विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत तालिकाबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है । खण्ड–'ख' में तालिकाबद्ध आँकड़ों को रेखाचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत कर इनका विश्लेषण करते हुए परिकल्पनाओं के पुष्ट होने या न होने का वर्णन किया गया है ।

षष्ठम् अध्याय में शोध शीर्षक के अन्तर्गत किये गये शोध अध्ययन के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों एवं सुझावों का उल्लेख किया गया है ।

अन्त में परिशिष्टका एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची का उल्लेख किया गया है ।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	प्रमाण पत्र	ii
2	घोषणा पत्र	iii
3	आभारिका	iv
4	प्रस्तावना	viii
5	अनुक्रमणिका	xii
6	तालिकाओं की सूची	xiv
7	रेखाचित्रों की सूची	xvi
8	**प्रथम अध्याय**	1–48
	1.1 शिक्षा का महत्व	1
	1.2 समस्या का स्पष्टीकरण	15
	1.3 समस्या का न्यायाधिकरण	21
	1.4 अध्ययन का सीमांकन	26
	1.5 अध्ययन के उद्देश्य	27
	1.6 अध्ययन की परिकल्पना	33
	1.7 अनुसंधान विधि	35
	1.8 आँकड़ों का संग्रहण	39
	1.9 आँकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण	44
	1.10 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन	45
9.	**द्वितीय अध्याय**	49–81
	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि	
	2.1 नामकरण	50
	2.2 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	51
	2.3 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की भौगिलिक पृष्ठभूमि	68
	2.4 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के उधोग–धन्धे	74
	2.5 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जिलों का सामान्य परिचय	77
10	**तृतीय अध्याय**	82–186
	खण्ड –'क'	82–148
	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की शिक्षा का विकास	
	3.1.1 भारतीय शिक्षा का विकास	83
	3.1.2 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास	102

	3.1.3 उत्तर प्रदेश राज्य में माध्यमिक शिक्षा का विकास	109
	3.1.4 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा का विकास	124
	खण्ड – 'ख'	149–186
	3.2.1 विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान : एक परिचय	149
	3.2.2 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की कार्यप्रणाली : एक परिचय	161
	3.2.3 भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज: एक अवलोकन	177
11.	**चतुर्थ अध्याय**	187–233
	अनुसन्धान विधि	
	4.1 अनुसन्धान का अर्थ	188
	4.2 अनुसन्धान की सामान्य विशेषताएँ	192
	4.3 वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं शैक्षिक अनुसंधान	194
	4.4 अनुसंधान के प्रकार	196
	4.5 ऐतिहासिक अनुसंधान विधि	200
	4.6 सर्वेक्षण अनुसंधान विधि	214
	4.7 शोधकर्ता द्वारा प्रयुक्त अनुसंधान विधि –तन्त्र का विश्लेषण	225
	4.8 शोधकार्य हेतु प्रयुक्त प्रतिदर्श का विश्लेषण	230
12.	**पंचम अध्याय**	234–303
	आँकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं सांख्यकीय व्याख्या	
	खण्ड – 'क'	
	5.1 आँकड़ों का वर्गीकरण	236
	खण्ड – 'ख'	
	5.2 आँकड़ों का विश्लेषण एवं सांख्यकीय व्याख्या	267
13.	**षष्ठम् अध्याय**	304–311
	निष्कर्ष एवं सुझाव	
	6.1 निष्कर्ष	
	6.2 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को सुझाव	
	6.3 अग्रिम शोध कार्यों हेतु सुझाव	
14	**परिशिष्टका**	312
15	**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**	335

शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत तालिकाओं की सूची

तालिका क्रमाँक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.1	स्वानिर्मित प्रश्नावली के प्रश्नों का संक्षिप्त वर्गीकरण एवं विश्लेषण	42
2.1	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र–क्षेत्रफल, तहसील, विकासखण्ड	79
2.2	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र–जनसंख्या, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, दशकीय जनसंख्या वृद्धि	80
2.3	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र–साक्षरों की संख्या, साक्षरता दर (प्रतिशत)	81
3.1	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में विभिन्न स्तरों पर विद्यालयों की संख्या में दशकीय वृद्धि	111
3.2	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की संख्या में दशकीय वृद्धि	115
3.3	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में दशकीय वृद्धि	117
3.4	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में माध्यमिक विद्यालयों में छात्र नामांकन में दशकीय वृद्धि	119
3.5	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की संख्या में दशकीय वृद्धि	120
3.6	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में साक्षर व्यक्ति एवं साक्षरता का प्रतिशत	134
3.7	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) की संख्या	135
3.8	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) की संख्या	136
3.9	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च विद्यालयों (कक्षा 6–8) में छात्रों की नामांकन संख्या	137
3.10	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में छात्रों की नामांकन संख्या	138
3.11	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) में शिक्षकों की संख्या	139
3.12	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में शिक्षकों की संख्या	140
3.13	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में प्रतिलाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) की संख्या	141
3.14	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में प्रतिलाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) की संख्या	142
3.15	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) में अध्यापक–छात्र अनुपात	143
3.16	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में अध्यापक –छात्र अनुपात	144

3.17	सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में पिछले एक दशक में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति	145
5.1	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना से सम्बन्धित सूचनाएँ	236
5.2	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना से वर्तमान सत्र (2003–2004) तक विद्यालय भवनों की दशा एवं स्थिति	237
5.3	वर्तमान समय में (सत्र 2003–2004) सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के विद्यालय भवनों में कक्षों का उपयोग	238
5.4	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को विभिन्न स्तरों की मान्यता प्राप्ति का वर्ष	239
5.5	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों एवं आचार्यों की संख्या में सत्रशः क्रमिक वृद्धि एवं प्रति आचार्य छात्र अनुपात	240
5.6	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः कक्षा अष्टम (8वीं) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	244
5.7	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः कक्षा दशम् (10वीं) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	247
5.8	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः कक्षा द्वादश (12वीं) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	249
5.9	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्रों द्वारा 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' की 'हाईस्कूल' एवं 'इण्टरमीडिएट' की मेधावी छात्र सूची में स्थान प्राप्ति का विवरण	251
5.10	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्र प्रवेश प्रक्रिया सम्बन्धी जानकारी	252
5.11	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के आय के स्त्रोत	253
5.12	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आसन व्यवस्था	254
5.13	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की संख्या	255
5.14	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था	256
5.15	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रबन्ध	257
5.16	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में संगीत शिक्षा का प्रबन्ध	258
5.17	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में शिक्षकों को उपलब्ध सुविधाएं	259
5.18	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में प्रयुक्त पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ	260
5.19	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में स्थानीय प्रबन्ध समिति की भूमिका	261
5.20	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओ को सामाजिक सहयोग	262
5.21	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में निर्देशन एवं स्वास्थ्य सेवा	263
5.22	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में नामांकित छात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि	264
5.23	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावना एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु प्रयास	265
5.24	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में रोजगार परक कौशलों के प्रशिक्षण हेतु प्रयत्न	266
परिशिष्टका (3)	विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के कार्य की वर्तमान स्थिति	315
परिशिष्टका (4)	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षारत् सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की जनपदवार तालिका	316
परिशिष्टका (5)	प्रतिदर्श हेतु चयनित बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का जनपदवार विवरण	321

शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत रेखाचित्रों का विवरण

रेखाचित्र क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
3.1	उत्तर प्रदेश में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तर की रेखाकृति	111
3.2	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में विभिन्न वर्षों में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की संख्या की दण्डाकृति	122
3.3	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में विभिन्न वर्षों में माध्यमिक विद्यालयों में छात्र नामांकन में दशकीय वृद्धि की स्तम्भाकृति	123
3.4	उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में विभिन्न वर्षों में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की संख्या में दशकीय वृद्धि की स्तम्भाकृति	123
3.5	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की संख्या में पिछले एक दशक में वृद्धि की दण्डाकृति	146
3.5.1	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या में पिछले एक दशक में वृद्धि की स्तम्भााकृति	147
3.6	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में शिक्षकों की संख्या में पिछले एक दशक में वृद्धि की स्तम्भाकृति	148
3.7	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के जनपदवार एवं क्षेत्रवार वितरण की स्तम्भाकृति	165
3.8	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की क्षेत्रवार चकाकृति	165
3.9	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के मान्यता स्तर की जनपदवार स्तम्भाकृति	166
3.10	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के मान्यता स्तर की चकाकृति	166
3.11	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के वर्गों की जनपदवार स्तम्भाकृति	166
3.12	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के वर्गों की चकाकृति	167
4.1	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का जनपद एवं क्षेत्रवार विवरण प्रस्तुत करती हुई स्तम्भाकृति	232
4.2	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श की क्षेत्रवार चकाकृति	233
4.3	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का विद्यालय के वर्गानुसार चकाकृति	233
4.4	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का विद्यालय का मान्यता स्तर के आधार पर चकाकृति	233
5.1	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की संख्यात्मक वृद्धि की दण्डाकृति	267
5.2	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना के समय 'भवन के स्वामित्व' को दर्शाती चक्राकृति	268
5.3	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के 'वर्ग' को प्रदर्शित करती चक्राकृति	269

5.4	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के भवनों की वर्तमान सत्र (2003–2004) में स्थिति एवं दशा की इन विद्यालयों के स्थापना के समय भवनों की स्थिति एवं दशा से तुलनात्मक विश्लेषण की स्तम्भाकृति	270
5.5	सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के वर्तमान सत्र (2003–2004) में भवनों में कक्षों की संख्या एवं स्थापना के समय भवनों में कक्षों की संख्या की दण्डाकृति	271
5.6	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में प्रयोगशाला, पुस्तकालय कक्ष, क्रीड़ा कक्ष एवं संगीत कक्षों की उपलब्धता की दण्डाकृति	272
5.7	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त करने का सत्रशः विवरण प्रदान करती दण्डाकृति	274
5.8	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त करने का सत्रशः विवरण प्रदान करती दण्डाकृति	275
5.9	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की मान्यता स्तर को प्रदर्शित करती हुई वृत्ताकृति	275
5.10	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः अध्ययनरत् छात्रों की नामांकन संख्या का रैखिक रेखा चित्र	277
5.11	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः शिक्षणरत् आचार्यों की संख्या का रैखिक रेखा चित्र	277
5.12	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः प्रति आचार्य छात्र संख्या (आचार्य : छात्र) का रैखिक रेखाचित्र	279
5.13	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में कक्षा अष्टम् में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या का सत्रशः विवरण का रेखा चित्र	281
5.14	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के हाईस्कूल (कक्षा दशम्) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या को सत्रशः प्रदर्शित करती हुई स्तम्भाकृति	282
5.15	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में हाईस्कूल (कक्षा दशम्) में नामांकित छात्रों का सत्रशः उत्तीर्ण प्रतिशत का रैखिक रेखाचित्र	282
5.16	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की सत्रशः स्तम्भाकृति	284
5.17	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में इण्टरमीडिएट में नामांकित छात्रों का सत्रशः उत्तीर्ण प्रतिशत प्रदर्शित करता हुआ रैखिक रेखा चित्र	284
5.18	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों को प्रवेश देने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती चक्राकृतियाँ	287
5.19	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों की चक्राकृति	290
5.20	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में उपलब्ध कम्प्यूटर शिक्षा सम्बन्धी जानकारी प्रदान करती चक्राकृतियाँ	291

5.21	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रबन्धों को दर्शाती चक्राकृतियाँ	292
5.22	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में शिक्षकों को देय वेतनमान सम्बन्धी चक्राकृतियाँ	294
5.23	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्रों की क्षेत्रीय पृष्ठभूमि को प्रदर्शित करती चक्राकृतियाँ	299
5.24	बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतान्त्रिक भावना एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों के प्रति प्रधानाचार्यों के दृष्टिकोण की चक्राकृतियाँ	301

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय

1.1 शिक्षा का महत्व

पृथ्वी के निर्माण के पश्चात् प्रकृति ने सर्वप्रथम वनस्पति जगत् का तत्पश्चात् जीव जगत् का तथा अन्त में मानव जगत् का निर्माण किया । वनस्पति जगत् को जीवन देते हुए सजीव बना कर भी प्रकृति ने उसे जड़ बनाये रखा । जीव जगत् तथा मानव जगत् को जीवन देते हुए प्रकृति ने इन्हें चलायमान भी बनाया । इस कारण इन दोनों सजीवों ने पृथ्वी पर तेजी से विकास किया । जीव–जन्तुओं ने इस पृथ्वी पर मनुष्य से लाखों वर्ष पूर्व जन्म लिया, परन्तु मनुष्य ने ज्ञान एवं शिक्षा द्वारा इन सभी से तेजी से विकास करते हुये पृथ्वी पर अपना अधिकार कर लिया । मानव द्वारा तेजी से विकास करने का मूल कारण रहा कि उसने शिक्षा को अपने विकास का मूल साधन बनाया ।

मानव ने वातावरण से निरन्तर संघर्ष कर उससे जीना सीखा । अपने संघर्षों से प्राप्त अनुभवों की अमूल्य पूँजी में उत्तरोत्तर वृद्धि की । अपनी इच्छाओं एवं आकाँक्षाओं को पहचान कर उन्हें अभिव्यक्त करना सीखा । मानव ने सतत् संघर्षशील रहकर अपनी मानसिक शक्तियों का विकास किया तथा वातावरण के साथ समायोजन की प्रक्रिया में विकासात्मक परिवर्तन का रास्ता अपनाया ।

मानव अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है परन्तु उसका बच्चा असहाय अवस्था में पैदा होता है । बच्चे की यह असहाय अवस्था उसके लिए वरदान सिद्ध होती है । जो प्राणी जन्म के समय जितना ही असहाय रहता है उसमें शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता उतनी ही अधिक होती है । बच्चा जब अपने आस–पास के लोगों को चलते–फिरते हुए देखता है तब वह भी खड़े होकर चलने का प्रयास करता है । बच्चे को खड़ा होना और चलना जन्म के समय नहीं आता, उसे इन कियाओं को सीखना पड़ता है । पाण्डेय[1]

1. पाण्डेय, राम शकल, शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

कहते हैं कि इस प्रक्रिया के कई लाभ हैं । बच्चा चलने की कई विधियाँ सीख सकता है । जहाँ पर शिक्षा की सम्भावना है, विविधता भी आ सकती है । बच्चा घुटनों के बल चलना सीखता है, खिसकना सीखता है, खड़े हो कर दोनों पैरों से चल लेता है । बाद में बच्चा बड़े होकर साइकिल, मोटर, रेलगाड़ी एवं वायुयान से भी चलता है ।

मनुष्य का बाल्यकाल अन्य प्राणियों से कहीं अधिक लम्बा होता है । पशु–पक्षी अपने जन्म के कुछ समय बाद ही प्रौढ़ों का सा व्यवहार करने लगते हैं। बालक को प्रौढ़ों के समान आचरण करने में लगभग पच्चीस वर्ष से ऊपर का समय लग जाता है । बाल्यकाल की यह लम्बी अवधि बालक के हित में ही है । बाल्यकाल में शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता अत्यधिक होती है, क्योंकि बालक का मन बचपन में कोरी स्लेट की तरह होता है । अन्य प्राणियों को बाल्यकाल की अवधि बहुत कम मिलती है । बालक को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रकृति से पर्याप्त समय मिल जाता है ।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि प्रकृति ने मनुष्य के जीवन को इस तरह का बनाया है कि वह बहुत कुछ सीख सके । दूसरे शब्दों में, बालक प्रकृति की मांग के कारण सीखता है। सीखना उसका स्वभाव है । उसका जीवन ही ऐसा है कि उसमें शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता अत्यधिक है । मानव की इसी योग्यता के फलस्वरूप उसकी जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है ; और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है । यह प्रक्रिया मानव के जन्म से प्रारम्भ हो जाती है । बच्चे के जन्म के कुछ समय पश्चात् ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं । बच्चे के कुछ बड़े होने के बाद ही उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं । जब बालक तीन–चार वर्ष का होता है तब उसे पढ़ना–लिखना सिखलाया जाता है । विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है । विद्यालय में सुनियोजित रूप से बालक की शिक्षा चलती है । विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय

में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है । यह सीखने–सिखाने का कम विद्यालय छोड़ने के पश्चात् भी चलता रहता है; और जीवन भर चलता है । विस्तृत रूप से देखने पर समाज में मानव की शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है । अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है ।

1.1.1 शिक्षा की आवश्यकता–

यह स्पष्ट है कि मानव और समाज दोनों ही दृष्टि से शिक्षा महत्वपूर्ण है । बिना शिक्षा के, बिना शिक्षित सदस्यों के समाज का संचालन उचित प्रकार से नहीं हो सकता है । दूसरी ओर मानव जीवन का प्रारम्भ ही शिक्षा द्वारा होता है । मानव जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही सम्भव है । मानव जीवन की अनेक आवश्यकताएँ हैं जैसे– शारीरिक, सामाजिक तथा मानसिक । शारीरिक आवश्यकताऐं हैं – भोजन, पानी, वस्त्र एवं काम–पिपासा । सामाजिक आवश्यकताएँ हैं – समाज में सम्मान प्राप्त कर जीवन आनन्द से बिताना । मानसिक आवश्यकताओं का भी अनुभव मानव करता है । इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के अनेक साधन हो सकते हैं । मानव अनेक शैलियों से भोजन कर सकता है, अनेक प्रकार के वस्त्र पहन सकता है, अनेक विधियों से सामाजिक सम्बन्धों का निर्वाह कर सकता है । कौन–सी शैली या विधि उपयुक्त है ? इसका ज्ञान उसे शिक्षा द्वारा ही मिल सकता है ।

हम सभी यह जानते हैं कि मानव का सम्पूर्ण जीवन समाज में ही व्यतीत होता है । समाज की अपनी आवश्यकताएँ होती हैं, अपनी परम्पराएँ एवं प्रथाएँ होती हैं । समाज का अस्तित्व इन्हीं परम्पराओं एवं सामाजिक भावनाओं पर निर्भर है । समाज चाहता है कि उसके सभी सदस्य समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते रहें । इसके लिए समाज उचित रूप से शिक्षा की व्यवस्था करता है ताकि सदस्यों को कर्तव्यों का ज्ञान कराया जा सके । समाज यह भी चाहता है कि उसकी संस्कृति, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ बनी रहें । भविष्य में भी समाज की विशेषताएँ सुरक्षित रहें ।

इसलिए समाज अपने भावी सदस्यों को सुदीक्षित करना चाहता है । अतैव नई पीढ़ी को समुचित शिक्षा देने का प्रबन्ध करना समाज अपना कर्तव्य समझता है ।

उपरोक्त वर्णनों से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि हमारे लिए शिक्षा कितने महत्व की है । वर्तमान समाज के अस्तित्व की कल्पना शिक्षा के बिना नहीं की जा सकती है ।

1.1.2 शिक्षा का अर्थ–

शिक्षा वर्तमान समाज का एक अपरिहार्य अंग है । शिक्षा की अपरिहार्यता के गुण के कारण ही लोगों ने इसके अर्थ को भिन्न –भिन्न शब्दों में व्यक्त किया है, तथा इसकी परिभाषा भी भिन्न–भिन्न शब्दों में अभिव्यक्त की गई है।

शोधार्थी ने शिक्षा शब्द के अर्थों एवं परिभाषाओं के स्पष्टीकरण हेतु उन्हें दो मुख्य भागों में विभाजित किया है–

(1) भारतीय पक्ष

(2) पाश्चात्य पक्ष

भारतीय वैदिक साहित्य में 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है । यथा– 'विद्या', 'ज्ञान', 'बोध', 'विनय'। संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बने शब्द 'शिक्षा' का अर्थ है– सीखना और सिखाना । इसलिए शिक्षा का अर्थ हुआ– सीखने–सिखाने की किया ।

'शिक्षा' का अंग्रेजी शब्द 'एजुकेशन' (Education) लैटिन भाषा के 'एजुकेटम' (Educatum) शब्द से बना है। 'एजुकेटम' लैटिन भाषा के 'ए' (E) एवं 'ड्यूको' (Duco) दो शब्दों से मिलकर बना है। जहाँ 'ए' का अर्थ है 'अन्दर से' और 'ड्यूको' का अर्थ है 'आगे बढ़ाना' । अतः 'एजुकेशन' का अर्थ हुआ – 'बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना' । 'एजुकेशन' के अन्य अर्थ इस प्रकार मिलते हैं – शिक्षित करना, विकसित करना, आगे बढ़ाना आदि ।

शिक्षा शब्द का प्रयोग दो रूपों में होता है – एक प्रक्रिया के रूप में और दूसरा प्रक्रिया के परिणाम रूप में अर्थात उत्पाद रूप में । आधुनिक शिक्षा शास्त्री शिक्षा को प्रक्रिया रूप में ही स्वीकार करते हैं । वह तर्क देते हैं कि किसी भी प्रक्रिया में उसका परिणाम निहित होता है । अतः शिक्षाविदों ने शिक्षा की प्रक्रिया को अपने–अपने दृष्टिकोणों से देखा–परखा और परिभाषित किया है । यहाँ हम कुछ दृष्टिकोणों के आधार पर शिक्षा के स्वरूप को समझने एवं उसे परिभाषित करने का प्रयत्न करेंगे ।

1.1.3 भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा–

भारत में शिक्षा को वैदिक काल से पहले भी महत्व दिया जाता था । इस कथन का प्रमाण है आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व रचित वेदों में व्याप्त ज्ञान । वेदों में हमारे मनीषियों ने हजारों वर्षों में अर्जित अनुभवजन्य ज्ञान का वर्णन किया है । यह ज्ञान मनीषियों को शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त हुआ होगा । अपने इन्हीं अनुभवों एवं ज्ञान के आधार पर हमारे ऋषियों–मुनियों ने शिक्षा के महत्व को अलग–अलग रूपों में वर्णित किया है । शिक्षा को 'प्रकाश का स्त्रोत', 'अन्तर्दृष्टि', 'अन्तर्ज्योति', 'ज्ञान', 'चक्षु' और 'मानव का तीसरा नेत्र' माना गया है ।

प्राचीन युग में भारतीयों का विचार था कि शिक्षा का प्रकाश मनुष्य के सब संशयों का उन्मूलन कर उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है । भारतीय संस्कृति में शिक्षा को पवित्रतम प्रक्रिया माना गया है । गीता में श्री कृष्ण ने ज्ञान को पवित्रतम घोषित किया है – **'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'** । महाभारत में कहा गया है – **'नास्ति विद्यासमं चक्षुः'** ।

संस्कृत साहित्य में विद्या की बड़ी प्रशंसा की गई है । संस्कृत के एक श्लोक में विद्या को कल्पवृक्ष के समान माना गया है। यथा – 'विद्या बुद्धि की जड़ता को दूर करती है, वाणी में सत्य का सिंचन करती है, सम्मान बढ़ाती है, पाप को दूर रखती है, चित्त को प्रसन्न करती है, दिशाओं में कीर्ति फैलाती है, कल्पवृक्ष के समान विद्या क्या–क्या नहीं करती।'

संस्कृत में ही एक दूसरे श्लोक के अनुसार – "शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग–दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भाँति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है।"

एक स्थान पर शिक्षा के महत्व का वर्णन निम्न प्रकार किया गया है –

"जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्यास्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है ।"

जगत गुरू शंकराचार्य की दृष्टि से – **"सः विद्या या विमुक्तये"।** अर्थात शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये ।

आधुनिक भारत के महान विचारक स्वामी विवेकानन्द मनुष्य को जन्म से पूर्ण मानते थे और शिक्षा के द्वारा उसे अपनी पूर्णता की अनुभूति करने योग्य बनाने पर बल देते थे। उनके शब्दों में – **"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णतः को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है ।"**

महात्मा गाँधी के शब्दों में – **"शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है ।"**

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बालक के मनोवैज्ञानिक तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान देते हुये शिक्षा को विकास की प्रक्रिया माना है – **"शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वह सत्य की खोज कर सके.......... तथा अपना बनाते हुए उसको व्यक्त कर सके।"**

शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण के इस संक्षिप्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि अतिप्राचीन काल में ही भारतीयों ने शिक्षा के महत्व को समझ कर अपने जीवन में अंगीकार कर लिया था। सुखद बात यह है कि भारतीय मनीषियों ने शिक्षा के

व्यापक अर्थ को स्वीकार किया तथा शिक्षा को एक साधन एवं प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया । उन्होंने शिक्षा प्रक्रिया द्वारा मानव एवं समाज का सर्वांगीण विकास करने का रास्ता सुझाया। शिक्षा को प्रकाश मानते हुए मानव के अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने का प्रयास किया । यह भी कहा **'अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाना शिक्षा का प्रमुख कार्य है ।'**

डॉ. अनन्त सदाशिव अल्तेकर[1] ने प्राचीन भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में लिखा है – **''प्राचीन भारत में शिक्षा अन्तर्ज्योति और शक्ति का स्त्रोत मानी जाती थी, जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों के सन्तुलित विकास से हमारे स्वभाव में परिवर्तन करती तथा उसे श्रेष्ठ बनाती है । इस प्रकार शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि हम समाज में एक विनीत और उपयोगी नागरिक के रूप में रह सकें । यह अप्रत्यक्ष रूप में हमें इहलोक और परलोक – दोनों में आत्मिक विकास में सहायता देती है ।''**

1.1.4 पाश्चात्य दृष्टिकोण से शिक्षा–

वर्तमान शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य जगत् की ही देन है । पाश्चात्य जगत् में सभ्यता के विकास के दर्शन भारतीय सभ्यता के विकास के सैकड़ों वर्ष पश्चात् होते है । मानव जीवन में भौतिकता का प्रवेश कराने का श्रेय पाश्चात्य देशों को जाता है, विशेषकर यूरोपीय देशों को; अतः उनकी विचारधारा का हमारे ऊपर बड़ी गहराई से प्रभाव पड़ा । पाश्चात्य दर्शन का प्रारम्भ यूनान के दार्शनिक अरस्तु से माना जाता है । अरस्तु के विचारों ने न केवल यूनान बल्कि सम्पूर्ण तत्कालीन यूरोप को प्रभावित किया था । उनके पश्चात् पाश्चात्य जगत् में दार्शनिकों की एक लम्बी श्रृंखला देखने को मिलती है । ये सभी विभिन्न मतों को मानने वाले थे । इन्होंने अपने–अपने मतों के अनुसार ईश्वर, जीव, जगत, पदार्थ आदि का वर्णन किया । सभी पाश्चात्य दार्शनिकों ने किसी न किसी रूप में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है । शिक्षा के महत्त्व का वर्णन विभिन्न रूपों में अपने–अपने विचारों के अनुसार किया है । किसी ने शिक्षा को जन्मजात शक्तियों को व्यक्त करने की प्रक्रिया कहा, किसी ने वैयक्तिक्ता के विकास

---

1. अल्तेकर, डॉ0 अनन्त सदाशिव–प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृष्ट 6 ।

की प्रक्रिया कहा तथा किसी ने समूह में परिवर्तन करने की प्रक्रिया के रूप में या वातावरण से अनुकूलन की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के महत्व का वर्णन किया है ।

सुकरात के अनुसार – **"शिक्षा का अर्थ है – प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में अदृश्य रूप से विद्यमान संसार के सर्वमान्य विचारों को प्रकाश में लाना ।"**

प्लेटो का विश्वास था कि उचित शारीरिक एवं मानसिक विकास होने पर ही मनुष्य आत्मा की अनुभूति कर सकता है । अतः प्लेटो के अनुसार – **"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण ही शिक्षा है ।"**

फ्रोबेल का कहना था कि – **"शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियाँ बाहर प्रकट होती हैं ।"**

टी.पी.नन का विचार है – **"शिक्षा बालक की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास है जिससे वह अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार मानव जीवन को मौलिक योगदान दे सके ।"**

काण्ट ने अनुभव किया कि– **"शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमें क्षमता है ।"**

पेस्टालॉजी का विचार था कि – **"शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है ।"**

ब्राउन ने कहा कि – **"शिक्षा चेतना रूप में एक नियन्त्रित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन किये जाते हैं तथा व्यक्ति के द्वारा समाज में ।"**

जेम्स इस बात के पक्षधर हैं कि – **"शिक्षा कार्य–सम्बन्धी अर्जित आदतों का संगठन है, जो व्यक्ति को उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण में उचित स्थान देती है ।"**

शिक्षा की उरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक दार्शनिक एवं शिक्षाविद् ने जीवन के लक्ष्यों के प्रति अपने अलग–अलग दृष्टिकोण के आधार पर शिक्षा के महत्व का वर्णन भी अलग–अलग रूपों में किया है ।

समाजशास्त्री टी.रेमॉन्ट की शिक्षा सम्बन्धी व्याख्या सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होती है । उनके अनुसार – **"शिक्षा उस विकास का नाम है जो कि मानव का शैशव अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता है, जिसमें मानव स्वयं अपने को शनैः शनैः आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है ।"**

1.1.5 शिक्षा का संकुचित अर्थ–

शिक्षा की चाहे भारतीय दृष्टिकोण से व्याख्या करें या पाश्चात्य दृष्टिकोण से, दोनों ही पक्षों में शिक्षा को एक प्रक्रिया माना गया है । उपरोक्त सभी परिभाषाओं में शिक्षा को बालक का विकास करने वाले साधन के रूप में देखा गया है । बालक के विकास में लगने वाले समय एवं उद्देश्यों के आधार पर शिक्षा को हम दो अर्थों में देख सकते हैं । पहला – संकुचित अर्थ, दूसरा – व्यापक अर्थ ।

जब वयस्क वर्ग एक पूर्व निश्चित योजना के अनुसार बालक के सामने एक विशेष प्रकार के नियन्त्रित वातावरण को प्रस्तुत करके एक निश्चित ज्ञान को, निश्चित विधि के द्वारा, निश्चित काल में समाप्त करने का प्रयास करता है; जिससे उसका मानसिक विकास हो जाए, शिक्षा का संकुचित रूप कहा जाता है ।

जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार – **"शिक्षा द्वारा एक पीढ़ी के लोग दूसरी पीढ़ी के लोगों में संस्कृति का संकमण करते हैं ताकि वे उसका संरक्षण कर सकें और यदि सम्भव हो तो उसमें उन्नति भी कर सकें।"**

एस.एस. मैकेन्जी ने कहा– **"संकुचित रूप में शिक्षा का अर्थ हमारी शक्तियों के विकास तथा सुधार के लिए चेतनापूर्वक किये गये किसी भी प्रयास से हो सकता है।"**

उपरोक्त वर्णन के अनुसार संकुचित रूप में 'स्कूली शिक्षा' को ही शिक्षा कहते हैं ।

1.1.6 शिक्षा का व्यापक अर्थ–

व्यापक दृष्टि में शिक्षा का अर्थ बालक के उन सभी अनुभवों से है जिनका प्रभाव उसके ऊपर जन्म से लेकर मृत्यु तक पड़ता है। अर्थात् शिक्षा वह अनियन्त्रित वातावरण है जिसमें रहते हुए बालक अपनी प्रकृति के अनुसार स्वतन्त्रतापूर्वक नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है तथा विकसित होता है । दूसरे शब्दों में, शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रकिया है । व्यापक अर्थ में, शिक्षा किसी व्यक्ति विशेष, समय, स्थान अथवा देश तक ही सीमित नहीं रहती है, अपितु जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर बालक जो कुछ भी सीखता है, वह सब उसकी शिक्षा है । इस रूप में बालक जिससे जो कुछ भी सीखता है वे सब उसके शिक्षक हैं, जिन्हें वह सिखाता है वह सब उसके शिष्य हैं तथा जिस स्थान पर सीखने अथवा सिखाने का कार्य चलता है वह विद्यालय है । इस प्रकार बालक का समस्त जीवन स्कूल ही है ।

एस.एस. मैकेन्जी के अनुसार – **"व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रकिया है जो जीवन–पर्यन्त चलती है तथा जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमें वृद्धि होती है ।"**

डम्बिल कहते हैं कि – **"शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव आ जाते हैं, जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं ।"**

1.1.7 शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ–

शिक्षा को केवल स्कूल की सीमाओं तक ही नहीं बाँधा जा सकता है न केवल स्कूल में दिये जाने वाले ज्ञान तक ही शिक्षा को सीमित किया जा सकता है । प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की लम्बी यात्रा में किसी न किसी से सदैव कुछ न कुछ सीखता ही रहता है । अतः शिक्षा को जड़ नहीं अपितु एक गतिशील प्रक्रिया कहा जाता है । जो बालक को सदैव देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर अग्रसर करती रहती है । शिक्षा का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है । अतः इसे एक सविचार तथा सौद्देश्य प्रक्रिया की संज्ञा भी दी जाती है । शिक्षा की प्रक्रिया मुख्य रूप से शिक्षक तथा विद्यार्थी के मध्य चलती है । इसी आधार पर एडम्स महोदय ने शिक्षा को एक 'द्विमुखी' प्रक्रिया माना है, जिसकी एक धुरी 'शिक्षक' है तथा दूसरी धुरी 'बालक' । इन्होंने शिक्षा को 'द्विमुखी प्रक्रिया' मानते हुए शिक्षा के केवल मनोवैज्ञानिक पक्ष पर बल दिया है । जॉन डीवी ने शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पक्ष को स्वीकर करते हुए इसके सामाजिक पक्ष पर अधिक बल देते हुए शिक्षा को 'त्रिमुखी प्रक्रिया के रूप में व्यक्त किया है । इसके अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया के तीन अंग हैं – शिक्षक, बालक तथा पाठ्यक्रम । डीवी इस प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं । उनके अनुसार पाठ्यक्रम ही एक ऐसी धुरी है जो शिक्षक तथा बालक रूपी दोनों धुरियों को मिलाती है । यहां पाठ्यक्रम समाज का रूप माना गया है क्योंकि शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण समाज द्वारा ही किया जाता है । बदलती हुई परिस्थतियों के अनुसार विषय, शिक्षण–पद्धति आदि का भी निर्धारण समाज द्वारा ही किया जाता है । इसलिए इन्हीं तीन अंगो की पारस्परिक क्रिया में ही शिक्षा निहित है ।

1.1.8 शिक्षा के कार्य—

शिक्षा का महत्व अनेक रूपों में है । इस महत्व को और अधिक समझने के लिए हमारे लिए शिक्षा के कार्यों को समझना आवश्यक है । आवश्यकता से ही हमें किसी वस्तु के महत्व का ज्ञान होता है । शिक्षा का कार्य क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है इसके अंतर्गत वे सभी बातें आ जाती हैं जो व्यक्ति को प्रभावित करते हुये उसे इस योग्य बनातीं हैं कि वह अपने जीवन तथा समाज के लिए उचित कार्यों को उचित समय पर कर सके । उचित कार्यों का अर्थ देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता हैं । इसे सदैव के लिए स्थायी रूप से निश्चित नहीं किया जा सकता है। यही कारण है कि शिक्षा के कार्यों के विषय में विद्वानों में कभी एकमतता नहीं रही ।

डेनियल वेवस्टर के अनुसार – **"शिक्षा का कार्य भावनाओं को अनुशासित, आवेगों को नियन्त्रित, प्रेरणाओं को उत्तेजित तथा धार्मिक भावनाओं को विकसित करना है ।"**

जान डीवी के अनुसार – **"शिक्षा के कार्य असहाय प्राणी के विकास में सहायता पहुँचाना है , जिससे वह सुखी, नैतिक तथा कुशल मानव बन सके ।"**

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि शिक्षा के अनेक कार्य हैं । भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये शिक्षा के अनेक कार्यों का ज्ञान हमें होता है । इन कार्यों को हम विभिन्न आधारों पर तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं ।[1]

1. **शिक्षा के सामान्य कार्य**
2. **मानवीय जीवन में शिक्षा के कार्य**
3. **राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य**

---

1. सक्सेना, एन. आर. एस., शिक्षा के सैद्धान्तिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, सूर्या प्रकाशन, मेरठ ।

शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों को दृष्टिगत् रखते हुये उपरोक्त वर्गीकरण उचित प्रतीत होता है । इस वर्गीकरण में व्यक्तिगत्, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उद्देश्यों को सामने रखा गया है । हम जानते हैं कि शिक्षा व्यापक अर्थों में जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है । बालक को अपनी शैशव अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक इस संसार में कई रूपों में कार्य करना होता है । एक पारिवारिक सदस्य के रूप में, सामाजिक प्राणी के रूप में तथा देश के एक सुयोग्य नागरिक के रूप में । इन सभी रूपों में उसके ऊपर अनेक जिम्मेदारियाँ होती हैं जिनका निर्वाहन कुशलता पूर्वक करने के लिए बालक को एक अच्छी शिक्षा की आवश्यकता होती है । अतः मानव को अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करने के लिए शिक्षा के द्वारा विभिन्न कार्यों को सीखना होता है । यहां हम केवल संक्षिप्त रूप में ही शिक्षा के तीनों कार्यों का अध्ययन करेंगे ।

1- शिक्षा के सामान्य कार्य –

(1) जन्मजात शक्तियों का प्रगतिशील विकास (2) व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास (3) मूल प्रवृत्तियों का नियन्त्रण, मार्गान्तीकरण तथा शोधन (4) चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास (5) प्रौढ़ जीवन के लिए तैयारी (6) सामाजिक भावना का विकास (7) उत्तम नागरिकों का निर्माण (8) संस्कृति एवं सभ्यता का संरक्षण (9) सामाजिक सुधार (10) राष्ट्रीय सुरक्षा ।

2- मानवीय जीवन में शिक्षा के कार्य –

(1) वातावरण से अनुकूलन (2) वातावरण का रूप परिवर्तन (3) मानव को सभ्य बनाना (4) आवश्यकताओं की पूर्ति (5) व्यवसायिक कुशलता की पूर्ति (6) भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति (7) आत्मनिर्भरता की प्राप्ति (8) चरित्र का विकास (9) व्यक्तित्व का विकास (10) भावी जीवन की तैयारी (11) अनुभवों का पुनर्संगठन एवं पुनर्रचना (12) उत्तम नागरिकों का निर्माण (13) कार्यक्षेत्रों का व्यवहारिक ज्ञान ।

3- राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य –

(1) नेतृत्व के लिये प्रशिक्षण (2) राष्ट्रीय विकास (3) राष्ट्रीय एकता (4) भावनात्मक एकता (5) राष्ट्रीय अनुशासन (6) नागरिक तथा सामाजिक कर्त्तव्यों की भावना का समावेश (7) नैतिकता का प्रशिक्षण (8) कुशल श्रमिकों की पूर्ति (9) राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता (10) सामाजिक कुशलता की उन्नति (11) लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास ।

विभिन्न आधारों पर शिक्षा के कार्यों का अध्ययन कर हम पाते हैं कि इन सभी कार्यों का समापन किसी एक व्यक्ति द्वारा या स्वयं बालक द्वारा सम्भव नहीं है । बालकों में उपरोक्त वर्णित विकास करने के लिए परिवार एवं समाज की आवश्यकता के अतिरिक्त किसी अन्य साधन की आवश्यकता का भी विचार समाज के जागरूक नागरिकों ने किया होगा । इस चिन्तन प्रकिया के फलस्वरूप स्कूलों/विद्यालयों का जन्म हुआ । समाज ने इन स्कूलों को यह जिम्मेदारी प्रदान की कि वह उसकी नई पीढ़ी का विकास उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप करे । प्राचीन भारतीय पद्धति के गुरूकुल रहे हों या आधुनिक पद्धति के स्कूल अपने उद्‌भव के समय से निरन्तर समाज की सेवा करते चले आ रहे हैं । आज जब परिवार और समाज दोनों अपने कर्त्तव्य पालन में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं ऐसे में स्कूलों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ रही है । समाज और परिवार दोनों ने ही अपना उत्तरदायित्व स्कूलों को सौंप कर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री समझ ली है । फलतः आज स्कूलों को ही अकेले बालकों के सर्वांगीण विकास के गुरूत्तर कार्य को वहन करना पड़ रहा है ।

1.2 समस्या का स्पष्टीकरण–

अनुसन्धान कार्य के लिए समस्या के चुनाव और कथन के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण कार्य समस्या का परिभाषीकरण करना होता है, क्योंकि समस्या को परिभाषित किये बिना यह दुष्कर होगा कि कोई भी अन्य व्यक्ति समस्या के सम्बन्ध में अपनी सही धारणा निरूपित कर सके । समस्या के परिभाषीकरण के माध्यम से शोधकर्ता के चिन्तन एवं दृष्टिकोण का स्पष्ट चित्र उभर कर सामने आ जाता है ।

इस सोपान में समस्या के विभिन्न अंगो का स्पष्ट उल्लेख किया जाता है। समस्या के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण करने के पश्चात् उनका परिभाषीकरण किया जाता है । परिभाषीकरण समस्या के मूल और व्यावहारिकता को स्पष्ट करता है । परिभाषीकरण द्वारा समस्या में स्पष्टता एवं शुद्धता लाने का प्रयास किया जाता है । अतः प्रत्येक शोधकर्ता को परिभाषीकरण द्वारा अपनी समस्या का स्पष्टीकरण करना आवश्यक होता है ।

एक ही शब्द का विभिन्न कालों एवं स्थानों पर अर्थ अलग–अलग हो सकता है । ऐसे में समस्या आती है वस्तुनिष्ठता की । अर्थात शोधकर्ता ने समस्या चयन के समय जिस चिन्तन एवं दृष्टिकोण से समस्या का चयन किया था अन्य लोगों का भी वही दृष्टिकोण एवं चिन्तन होना चाहिए । वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है ।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना विचार एवं चिन्तन होता है, अपना भिन्न दृष्टिकोण होता है । किन्हीं दो व्यक्तियों के विचारों में भी समानता देखने को नहीं मिलती है । सबसे कठिन कार्य है किसी अन्य को अपने विचारों से सहमत करना ; उसके दृष्टिकोण को अपने अनुसार परिवर्तित करना ।

अनुसन्धान कार्य में व्यक्ति को अपने दृष्टिकोण से सहमत करवाने का आसान रास्ता है कि अनुसन्धान से सम्बन्धित प्रत्येक प्रमुख तथा सहायक प्रश्न का स्पष्टीकरण आवश्यक रूप से किया जाए । 'समस्या के स्पष्टीकरण' को ही 'समस्या का

परिभाषीकरण' भी कहते हैं । शर्मा[1] (1998) लिखते हैं कि समस्या के परिभाषीकरण से तात्पर्य उसकी शुद्धता एवं विस्तारपूर्वक विशेष वर्णन करना है। अर्थात समस्या के स्पष्टीकरण का अर्थ है **"अध्ययन की समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से अलग निकाल कर स्पष्ट करना ।"**

शोध प्रबन्ध का शीर्षक–

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का शीर्षक है –

"बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन।"

इस शोध शीर्षक का अर्थ वैसे तो अपने आप में स्पष्ट है फिर भी समस्या के स्पष्टीकरण में किसी प्रकार का संशय एवं अन्तर न आने पावे उसके लिए शोधार्थी समस्या के शीर्षक का स्पष्टीकरण आवश्यक समझता है ।

चयनित शोध समस्या के मुख्य तीन भाग हैं –

1- **बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र**

2- **सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं**

3- **शैक्षिक योगदान**

शोध समस्या के उपरोक्त तीनों भागों का पृथक–पृथक स्पष्टीकरण किया जा रहा है ; जिससे शोधार्थी के चिन्तन एवं दृष्टिकोण को स्पष्ट किया जा सके ।

1.2.1 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र –

भारत देश के वर्तमान राजनैतिक मानचित्र में उत्तर प्रदेश राज्य के मानचित्र का अध्ययन करते समय हम देखते हैं कि उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में मध्य प्रदेश राज्य की सीमा से कुछ जिले जुड़े हुये हैं। ये जिले हैं – झाँसी, ललितपुर,

---

1. शर्मा, आर.ए., 1998, शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।

जालौन, हमीरपुर, बाँदा, महोबा तथा चित्रकूट । उत्तर प्रदेश राज्य के ये सातों जनपद वर्तमान समय में दो मण्डलों में विभाजित हैं । 'झाँसी मण्डल' तथा 'चित्रकूटधाम मण्डल'। झाँसी मण्डल के अन्तर्गत आने वाले जिले हैं– झाँसी, ललितपुर एवं जालौन । चित्रकूट धाम मण्डल के अन्तर्गत आने वाले जिले हैं– चित्रकूट, बाँदा, हमीरपुर एवं महोबा ।

उत्तर प्रदेश के इन सातों जिलों के भौगोलिक क्षेत्र तथा निवासियों में कई समानताएँ पायी जाती हैं । इन सभी जनपदों के निवासियों में एक समान बोली तथा संस्कृति पायी जाती है ; जिसे 'बुन्देलखण्डी बोली' तथा 'बुन्देलखण्डी संस्कृति' के नाम से जाना जाता है । इस सांस्कृतिक एवं भौगोलिक समानता के आधार पर इस सम्पूर्ण क्षेत्र को 'बुन्देलखण्ड' के नाम से जाना जाता है । बुन्देलखण्ड का विस्तार न केवल उत्तर प्रदेश के इन्हीं सात जिलों में है अपितु इस बुन्देलखण्डी संस्कृति एवं भौगोलिक समानताओं का विस्तार उत्तर प्रदेश से सटे हुये मध्य प्रदेश राज्य के कई जिलों में भी है । अतः बुन्देलखण्ड का विस्तार उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्यों के बड़े भू–भाग में है ।

बुन्देखण्ड एक ऐतिहासिक नाम है । प्राचीन काल में इसे **जेजॉक भुक्ति** के नाम से जाना जाता था । जेजॉक भुक्ति का उल्लेख हमें महाभारत काल में भी प्राप्त होता है । बुन्देलखण्ड भारत का हृदय स्थल है । वर्ष 1858 तक यह एक ईकाई के रूप में विद्यमान था । पहले ब्रिटिश शासन द्वारा तथा फिर स्वतंत्रता के पश्चात जब देश के प्रान्तों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण हुआ तब पुनः, राजनैतिक रूप से, इस बुन्देलखण्ड को उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश दो राज्यों में विभाजित कर दिया गया । मध्य प्रदशे में स्थित बुन्देलखण्ड की सीमाओं और विस्तार के सम्बन्ध में विवाद हो सकता है, किन्तु उत्तर प्रदेश में स्थित बुन्देलखण्ड की सीमाएं निर्विवाद हैं ।

अतः प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में बुन्देखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र का स्पष्टीकरण हुआ– उत्तर प्रदेश राज्य के सात जिलों में फैला हुआ बुन्देलखण्ड । ये सात जिले हैं

– झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बाँदा तथा चित्रकूट । इन्हीं सात जिलों के अन्तर्गत स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर शैक्षिक संस्थाओं का अध्ययन किया गया है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में दो मण्डल, सात जिले, 26 तहसील, 47 ब्लॉक, 44 कस्बे तथा 5234 गांव आते हैं । इस सम्पूर्ण भू–भाग का भौगोलिक क्षेत्रफल 29,478 वर्ग किलोमीटर है जो कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश का 12.24 प्रतिशत है । सन् 1991 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 66,49,748 थी । सन् 2001 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 8232847 है ।

1.2.2 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं –

स्वक्तिपोषित आधार पर सामाजिक बन्धुओं द्वारा समाज के सक्रिय सहयोग द्वारा चलाये जा रहे 'सरस्वती विद्या मन्दिर', विद्यालयों की एक श्रंखला है । इसका प्रारम्भ सन् 1972 से हुआ था । यह शैक्षिक संस्थाऐं एक विशेष विचार धारा के अन्तर्गत् एक अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा सम्पूर्ण देश में चलायी जा रही हैं । यह सरस्वती विद्या मन्दिर शैक्षिक संस्थाऐं सामान्य रूप से कक्षा छः (6) से लेकर कक्षा बारह (12) तक की शिक्षा प्रदान कर रही हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों की श्रंखला को 'संस्थाओं' के रूप में वर्णित किया है । इसका कारण यह है कि इन विद्यालयों को एक संस्थान द्वारा सामूहिक रूप से, कार्यों में समानताओं के साथ चलाया जा रहा है । संस्था की विशेषताओं का वर्णन करते हुए भटनागर एवं अग्रवाल[1] (1999) लिखते हैं कि एक संस्था में निम्न विशेषताऐं होती हैं– (1) सामूहिक एकरूपता (2) समूहों का मेल मिलाप (3) कार्यों में समानताऐं (4) तंत्र समन्वय (5) स्थिर अन्तः क्रिया ।

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 12 तक) की विद्यालयी शिक्षा प्रदान करने वाली शैक्षिक संस्थाओं में सरस्वती विद्या मन्दिर वर्तमान में एक लोकप्रिय नाम है । इस शिक्षा संस्था की मांग आज समाज में दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है, तदनुसार यह शिक्षा संस्था तेजी से विस्तार कर रही है । सम्पूर्ण देश में इन

1- Bhatnagar, Dr. R.P. & Agarwal, Dr. Vidya,1999, Educational Administration-Supervision, planning & financing, 5th ed., Surya Publication, Meerut, P-44.

शिक्षा संस्थाओं का संचालन ''विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान'' नामक एक अखिल भारतीय संस्था कर रही है। यह अखिल भारतीय संस्था सोसायटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1861 की धारा – 21 के अंतर्गत् एक रजिस्टर्ड संस्था है । इसका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत देश है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' को संक्षेप में 'विद्या भारती' भी लिखा गया है । अतः दोनों का अर्थ एक ही समझा जाए ।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबंध में ''सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं'' से तात्पर्य है ऐसे माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय जो कक्षा षष्ठम् से लेकर कक्षा द्वादश तक के मध्य की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं तथा जो 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' से सम्बद्ध हैं ।

1.2.3 शैक्षिक योगदान –

शिक्षा के कार्यों के अन्तर्गत् कई कार्यों का निर्धारण किया गया है । इन्हें मुख्य रूप से हम निम्न शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं । यथा–जन्मजात शक्तियों का विकास, व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास, प्रौढ़ जीवन के लिए तैयारी, सामाजिक भावना का विकास, उत्तम नागरिकों का निर्माण, संस्कृति एवं सभ्यता का संरक्षण, व्यवसायिक कुशलता की पूर्ति, आत्मनिर्भरता की प्राप्ति, नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण, भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता का विकास, लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास एवं कुशल श्रमिकों की पूर्ति, आदि ।

शिक्षा के द्वारा उपरोक्त सभी कार्य शिक्षा के औपचारिक साधन विद्यालय या स्कूल द्वारा ही किये जाने सम्भव हैं । विद्यालयों का प्रमुख कार्य छात्रों को विषय सम्बन्धी ज्ञान का अधिगम कराना एवं उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन करना माना जाता है । यह विद्यालयों के संकुचित कार्यों की श्रेणी में आता है । जिसमें केवल बालक के मस्तिष्क में ज्ञान को जबरदस्ती ठूंसा जाता है । बालक को एक कोरी स्लेट मानकर उस पर शिक्षक अपनी मनमर्जी से कुछ भी लिखता रहता है ।

विद्यालयों के व्यापक कार्यों की व्याख्या गाँधी जी के उस कथन से स्पष्ट होती है जिसमें गाँधी जी कहते हैं कि **"शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूपों में सर्वांगीण विकास से है ।"**

एक अच्छा विद्यालय उसे कहा जाएगा जो बालक का सर्वांगीण विकास करे । विद्यालय का पाठ्यक्रम ऐसा हो कि वह बालकों का शैक्षिक, बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, भावात्मक एवं लोकतांत्रिक मूल्यों में विकास कर सके । अतः किसी विद्यालय के शैक्षिक योगदान का अध्ययन करने के लिए हमें यह देखना होगा कि विद्यालय उपरोक्त वर्णित कार्यों में कितने कार्यों का पालन किस सीमा तक कर रहा है ? विद्यालय अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए किस–किस प्रकार की व्यवस्था कर रहा है ?

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शैक्षिक योगदान के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं' में अग्रलिखित बातों का अध्ययन किया गया है– छात्र नामांकन की वृद्धि दर, हाईस्कूल के परीक्षाफल का विश्लेषण, इण्टरमीडिएट के परीक्षाफल का विश्लेषण, विद्यालय के भवनों की दशा में परिवर्तन, काष्ठोपकरणों की उपलब्धता, इन विद्यालयों में उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं का अध्ययन, बालकों के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित सामग्रियों की उपलब्धता एवं कार्य, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र प्रेम, देश भक्ति तथा लोकतांत्रिक मूल्यों एवं भावनाओं के विकास के लिए किया जाने वाले प्रयास । इसके साथ–साथ बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में इन विद्यालयों की संख्यात्मक प्रगति एवं कक्षा उच्चीकरण की प्रगति का भी अध्ययन किया गया है ।

1.3 समस्या का न्यायाधिकरण

माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के मध्य की कड़ी कहा जाता है । माध्यमिक शिक्षा में बालक द्वारा प्राथमिक शिक्षा में प्राप्त किये गये ज्ञान का विस्तार किया जाता है साथ ही साथ बालक को उच्च शिक्षा प्राप्त करने योग्य बनाया जाता है । तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार किया जाता है । भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है । जीवकोपार्जन करने की क्षमता का विकास किया जाता है तथा देश का एक जिम्मेदार एवं सक्रिय नागरिक बनने की क्षमताओं का विकास किया जाता है ।

माध्यमिक शिक्षा के इन कार्यों को देखते हुये हम इस शिक्षा के महत्व को भली–भाँति समझ सकते हैं । इस बात का भी अनुमान आसानी से लगा सकते हैं कि माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय इस देश के विकास में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ।

मुदालियर आयोग (1954) ने माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के मध्य की एक निर्बल कड़ी कहा था । इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक शिक्षा के जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है यह शिक्षा उन उद्देश्यों की पूर्ति में विफल रही है । बालकों को मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्रदान कर, परीक्षा का आयोजन कर उन्हें एक प्रमाण–पत्र प्रदान करके ही माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षा संस्थान अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री समझ रहे हैं ।

कोठारी आयोग (1964) की एक सिफारिश के अनुसार माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का मात्र 30 प्रतिशत ही उच्च शिक्षा में जाना चाहिए । शेष 70 प्रतिशत विद्यार्थियों के बारे में आयोग का कहना है कि उन्हें विभिन्न प्रकार के कौशलों, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा प्रदान कर जीवकोपार्जन योग्य बनाना चाहिए । आयोग की इस सिफारिश से हम माध्यमिक शिक्षा के महत्व को आसानी से समझ सकते हैं । यदि माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षा संस्थान अपने

उत्तरदायित्वों का गम्भीरतापूर्वक निर्वाहन नहीं करें तो देश की क्या दशा हो ? न ही उच्च शिक्षा के लिए योग्य विद्यार्थी मिलेंगे, न ही विद्यार्थी अपने लिए जीवकोपार्जन की व्यवस्था कर सकेंगे ।

बुन्देलखण्ड को भारत वर्ष का हृदय स्थल कहा जाता है । हृदय शरीर का सबसे अधिक सक्रिय एवं सजीव अंग होता है । परन्तु बुन्देलखण्ड इन कसौटियों पर खरा नहीं उतरता है । यह वर्तमान समय में देश के सबसे अधिक पिछड़े एवं उपेक्षित क्षेत्रों में शामिल है । इसकी यह स्थिति उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश दोनों ही राज्यों में है । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के सबसे उपेक्षित एवं पिछड़े क्षेत्रों में गिना जाता है । विश्लेषण करने के उपरान्त सबसे प्रमुख कारण प्राप्त होता है बुन्देलखण्ड का भूगोल ।

समूचा बुन्देलखण्ड क्षेत्र पठारी भू–भाग पर बसा हुआ है । यहाँ की मिट्टी पथरीली एवं कम उपजाऊ है । बरसाती नदियाँ होने के कारण सिंचाई का समुचित प्रबंध नहीं है । इस कारण किसानों को फसल की ज्यादा उपज प्राप्त नहीं होती है । फसलों के कम उत्पादन के कारण कृषि आधारित उद्योगों का विकास इस क्षेत्र में नही हुआ है । उद्यमियों के लिए यह लाभ का सौदा नहीं है । पानी एवं बिजली की कमी एवं समुचित प्रबंध न होने के कारण अन्य दूसरे प्रकार के उद्योगों की स्थापना में भी समस्याऐं आती हैं । अतः व्यवसायी वर्ग एवं उद्यमी वर्ग यहां उद्योगों की स्थापना करने से भी घबराता है ।

कृषि तथा उद्योग आधारित अर्थ व्यवस्था न होने के कारण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र आर्थिक रूप से अत्यधिक पिछड़ा हुआ है । इस पिछड़ेपन के कारण ही गांवों की अर्थव्यवस्था भी पिछड़ी हुई है, चारों ओर गरीबी व्याप्त है । उद्योग–धन्धे तथा कृषि उत्पादन न होने के कारण राज्य सरकार भी इस क्षेत्र के विकास में अधिक रूचि नहीं लेती है । राज्य सरकार की इस उपेक्षा के फलस्वरूप इस क्षेत्र में परिवहन व्यवस्था तक का विस्तार उचित रूप से नहीं हुआ है । आजादी के पश्चात् से रेल परिवहन तथा सड़क परिवहन के क्षेत्र में कोई नया विकास कार्य नहीं हुआ है। इस

कारण इस क्षेत्र में आवागमन भी सुगम नहीं है । सम्प्रति उद्यमी इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के विकास में किसी भी रूप में भागीदार नहीं होना चाहते । इस क्षेत्र के मूल निवासियों को देश के अन्य भागों में मेहनत–मजदूरी करके अपना पेट पालना पड़ रहा है । शिक्षित लोगों को भी अन्य स्थानों पर नौकरी पाने के लिए भटकना पड़ रहा है । अवस्थी[1] लिखते हैं कि इस क्षेत्र के देहातों से निर्गमन दर अत्यधिक 39 प्रतिशत है, जबकि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में यह दर मात्र 11 प्रतिशत है। आर्थिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विस्तार भी पूर्ण रूप से नहीं हुआ है । मुख्य रूप से सरकारी विद्यालयों का ही अस्तित्व इस क्षेत्र में देखने को मिलता है । सरकारी विद्यालयों की प्रमुखता मुख्य रूप से प्राथमिक स्तर तथा जूनियर हाई स्कूल तक ही है । इस क्षेत्र की जनसंख्या के अनुपात में इन विद्यालयों की संख्या असंतोषजनक है । हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर के सरकारी विद्यालयों की संख्या तो बहुत ही कम है । डिग्री कालेज स्तर के सरकारी शिक्षा संस्थानों की संख्या तो सोचनीय है । इन सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षा संस्थानों की स्थापना भी शहरों तथा कस्बों में ही अधिक है । यह संख्या भी ऊँट के मुंह में जीरा के समान है ।

भारत एक जनतांत्रिक देश है ; जिसमें मिश्रित अर्थव्यवस्था है । इस कारण शिक्षा के विस्तार में सरकारी संस्थाओं के साथ–साथ निजी संस्थायें भी अपना योगदान दे रही हैं । चूंकि निजी संस्थायें अपने वित्तीय हितों का भी ध्यान रखती हैं फलस्वरूप बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को देखते हुए निजी संस्थाओं ने भी इस क्षेत्र के शैक्षिक विकास में भी अपना पूर्ण सहयोग नहीं दिया । बड़े–बड़े औद्योगिक संस्थाओं के द्वारा अपने कर्मचारियों के बच्चों के लिए शिक्षा संस्थान स्थापित किये जाते हैं । परन्तु भारी उद्योग–धंधों के इस क्षेत्र में अभाव से इस प्रकार के भी शिक्षा संस्थानों की स्थापना इस क्षेत्र में न हो सकी ।

केन्द्र सरकार द्वारा संचालित 'केन्द्रीय विद्यालय' वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में केवल झाँसी एवं ललितपुर जिले में ही हैं । जिनकी संख्या कुल 5 है । यथा–झाँसी में 4, झाँसी–3, बबीना–1, ललितपुर के तालबेहट में

---

1. अवस्थी, डॉ. सुरेश चन्द्र– बुन्देलखण्ड : साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव में एक लेख, श्रीवास्तव, रमेशचन्द्र (सम्पादक), पृष्ठ 16।

एक। इन विद्यालयों में प्रमुख रूप से सेना तथा केन्द्रीय कर्मचारियों के पाल्यों को ही प्रवेश प्राप्त होता है । अतः इन विद्यालयों का इस क्षेत्र के शैक्षिक विकास में योगदान नगण्य ही है । इसी प्रकार रेलवे के मात्र दो (2) विद्यालय इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं । इनमें रेलवे के कर्मचारियों के पाल्यों को ही प्रवेश प्राप्त होता है ।

केन्द्र सरकार की दूसरी योजना 'जवाहर नवोदय विद्यालय' की स्थापना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली बालकों को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करना है। इस सरकारी योजना में प्रत्येक जिले में केवल एक ही 'जवाहर नवोदय विद्यालय' की स्थापना की जाती है । इसमें छात्र संख्या भी सीमित होती है । सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सात जिलों में से अभी तक केवल झाँसी, ललितपुर तथा महोबा जिलों में ही इनकी स्थापना हुई है । अतः यह विद्यालय भी इस क्षेत्र के शैक्षिक विकास में अपना सीमित योगदान ही दे पा रहे हैं ।

संख्या के संदर्भ में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षा संस्थानों के पश्चात दूसरे कम पर गैर सरकारी/निजी शिक्षा संस्थानों का स्थान आता है । गैर सरकारी शिक्षा संस्थानों का वर्गीकरण दो प्रकार किया जा सकता हैं । (1) संगठित शिक्षा संस्थान (2) असंगठित शिक्षा संस्थान । असंगठित शिक्षा संस्थान उन्हें कहते हैं जो व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग लोगों के द्वारा चलाये जा रहे हैं एवं इनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होता है । संगठित शिक्षा संस्थान अर्थात किसी एक संस्था या विचारधारा द्वारा संचालित शिक्षा संस्थान । इस क्षेत्र में संगठित शिक्षा संस्थाओं में संख्या के आधार पर दूसरे कम पर मिशनरियों द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं का स्थान आता है । मिशनरियों द्वारा प्राथमिक स्तर से लेकर इण्टरमीडिएट स्तर तक के विद्यालयों का संचालन बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में किया जा रहा है । एक अध्ययन के अनुसार मिशनरियों के लगभग 38 विद्यालय[1] इस पूरे क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं जो कि मिशनरियों के विभिन्न सम्प्रदायों एवं संस्थानों द्वारा विदेशी सहायता से चलाये जा रहे हैं ।

---

1. तिवारी, शिवाकान्त, 2002, बुन्देलखण्ड क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षिक योगदान का–आलोचनात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में गैर सरकारी एवं संगठित क्षेत्र द्वारा संचालित शिक्षा संस्थानों में पहला स्थान 'विद्या भारती' द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं का आता है । शोधार्थी द्वारा किये गये सर्वे में केवल जूनियर हाईस्कूल, हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर तक के बालक एवं बालिकाओं के 60 से अधिक सरस्वती विद्या मन्दिर इस क्षेत्र में विद्या भारती द्वारा चलाये जा रहे हैं ।

उच्च शिक्षा की व्यवस्था भी इस क्षेत्र में संतोषजनक नहीं है । एक विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में कार्य कर रहा है । बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की परिधि में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र आता है । इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में प्रवेश की क्षमता इस क्षेत्र की उच्च शिक्षा की मांग की तुलना में काफी कम है ।

इस विवेचना से हम पाते हैं कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालयी स्तर तक के शिक्षा संस्थाओं की कमी है । इस क्षेत्र में निवास करने वाले आम निवासियों की औसत आय कम है । इस कारण यहाँ के निवासी गैर सरकारी शिक्षा संस्थाओं की महंगी शिक्षा का भार वहन नहीं कर पा रहे हैं । दूसरी ओर माता–पिता की अशिक्षा के कारण अधिकांश बच्चे अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देते हैं ।

अतः इन समस्त कारणों के आधार पर शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का स्तर अच्छा नहीं है । इस कारण यह क्षेत्र शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का स्तर अपने वर्तमान स्तर से भी नीचे गिरता जा रहा है । इसका कारण है कि विद्यार्थियों को यह आभास होता जा रहा है कि विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी उनका भविष्य सुरक्षित नहीं है । अतः उनका उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रमाण पत्र प्राप्त करना ही

रह गया है । इसके लिए भी वह नकल का सहारा ले रहे हैं । इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप विद्यार्थियों का मानसिक तथा बौद्विक स्तर भी ऊँचा नहीं उठ पा रहा है ।

किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत इस पर भी निर्भर करती है कि उस क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक तथा शैक्षिक स्थिति कैसी है । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र आर्थिक तथा शैक्षिक रूप से सम्पन्न न हेने के कारण सांस्कृतिक रूप से भी तुलनात्मक रूप में समृद्धशाली नहीं है । आर्थिक समृद्धि किसी भी संस्कृति की भवन निर्माण कला, वेश–भूषा, रहन–सहन पर गहरा प्रभाव डालती है । शैक्षिक विकास परम्पराओं , रीति–रिवाज, जीवन शैली, भाषा शैली पर गहरा प्रभाव डालती है । इस प्रकार के दोनों विकासों में बुन्देलखण्ड देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पिछड़ा हुआ है ।

उपरोक्त विवेचना से शोधार्थी द्वारा चयन की गई शोध समस्या का महत्व एवं औचित्य स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है । शोधार्थी ने अपने शोध कार्य में अध्ययन का यही बिन्दु रखा है कि क्या वास्तव में 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं' शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े हुये बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शैक्षिक संदर्भो में विकास करने का प्रयास कर रही हैं ? या एक धन कमाऊ संस्था के रूप में कार्य कर रही हैं ? या मात्र अपनी संख्या बढ़ा रही हैं ?

1.4 अध्ययन का सीमांकन

किसी समस्या का अध्ययन करते समय उसका स्वरूप अत्यधिक विषम तथा विस्तृत होता है । इसके कई पक्ष भी होते हैं । इन सभी का एक साथ अध्ययन करना सम्भव नहीं होता है । शोध समस्या को यदि सीमाबद्ध न किया जाये तो उसका आकार–प्रकार बहुत विस्तृत हो जायेगा । समय, शक्ति, श्रम एवं धन अधिक व्यय होगा । अतः समस्या के अध्ययन की सुस्पष्टता तथा गहनता बनाये रखने के लिए

उसका सीमांकन किया जाता है । शोधकर्ता को अपनी इसी सीमा के भीतर रहते हुए शोध कार्य करना होता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में समस्या के अध्ययन की सीमायें निम्नलिखित हैं –

1. शोध समस्या के अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के केवल बुन्देलखण्ड क्षेत्र को ही सम्मिलित किया गया है । इस क्षेत्र के अन्तर्गत सात जिले आते हैं–झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बाँदा तथा चित्रकूट ।

2. 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' से सम्बद्ध केवल माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती विद्या मन्दिर' संस्थाओं को शोध कार्य हेतु चुना गया है ।

3. प्रस्तुत शोधकार्य में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के उन 'सरस्वती विद्या मन्दिर' संस्थाओं का अध्ययन किया गया है जो कक्षा षष्ठ से लेकर कम से कम हाईस्कूल (कक्षा दशम्) या इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) स्तर तक की शिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं ।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

प्राचीन युग में मानव का जीवन अत्यंत सरल था । उस काल तक ज्ञान में इतनी वृद्धि नहीं हुई थी जितनी कि आज तक हो चुकी है । वर्तमान युग भौतिक युग कहा जाता है । इस युग में मानव ने भैतिक एवं वैज्ञानिक रूप से बहुत प्रगति की है । फलस्वरूप आज के युग को 'ज्ञान के विस्फोट' के युग के रूप में भी जाना जाता है । प्राचीन काल में मानव का ज्ञान सीमित होने के कारण वह अपने बालकों को अर्जित ज्ञान अपने परिवार एवं अन्य अनौपचारिक साधानों के द्वारा प्रदान कर दिया करता था । वर्तमान काल में जनसंख्या वृद्धि तथा जीवन की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के कारण शनैः शनैः मानव का जीवन जटिल होता चला जा रहा है । इस सम्पूर्ण ज्ञान को बालक को अपने परिवार तथा अन्य अनौपचारिक साधनों के द्वारा प्रदान करना न

केवल कठिन बल्कि असम्भव सा हो चुका है । माता–पिता द्वारा अर्जित ज्ञान उनके बालकों के लिए पुराना एवं अनुपयोगी हो जाता है । माता–पिता जीविकोपार्जन एवं घरेलू कार्यों के चक्र में भी फंसे रहते हैं । उनके पास अपने बालकों को शिक्षा प्रदान करने का भी समय नहीं रहता है । कुछ माता–पिता अशिक्षित या अल्पशिक्षित होने के कारण अपने बालकों को भाषा, भूगोल, इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, शरीर–विज्ञान, स्वास्थ्य–ज्ञान,वाणिज्य, गणित, विज्ञान तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों जैसे आवश्यक विषयों का ज्ञान प्रदान करने में स्वयं को अक्षम पाते हैं ।

प्राचीन काल में ही समाजों को एक ऐसी नियमित शैक्षिक संस्था की आवश्यकता अनुभव होने लगी थी जो सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक सम्पत्ति को सुरक्षित, संरक्षित एवं विकसित कर भावी पीढ़ी को हस्तांतरित कर सके । इस दृष्टि से स्कूल या विद्यालय का जन्म हुआ । स्कूलों में विद्यार्थियों को औपचारिक रूप से एक निश्चित पाठ्यक्रम, निश्चित समयावधि में, नियन्त्रित वातावरण में पूर्ण करना होता है । पाठ्यक्रम समाप्ति उपरांत बालकों की विषयगत् उपलब्धियों का मापन एवं मूल्यांकन किया जाता है, तथा इसी आधार पर उसे कक्षोन्नति प्रदान की जाती है ।

सम्पूर्ण विश्व में प्रारम्भ में 'स्कूलों' का उदय व्यक्तिगत् विचारधारा को फैलाने के लिए हुआ था । व्यक्तिगत् प्रयासों द्वारा स्थापित किये गये स्कूलों को समाज ने स्वीकार किया एवं उनकी संख्या में वृद्धि की मांग की । शनैः शनैः स्कूलों का विस्तार होता गया । समाजों ने सरकारों से भी स्कूलों का प्रबन्ध करने की मांग की । शिक्षा को सरकार का उत्तरदायित्व बनाये जाने की माँग की जाने लगी, जो कि सरकारों द्वारा पूर्ण भी की गई । इस प्रकार सभी समाजों में सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के शिक्षा संस्थानों का अस्तित्व विद्यमान हुआ ।

भारत राजनैतिक दृष्टि से एक लोकतांत्रिक एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश है । यहाँ सरकारी विद्यालयों के साथ–साथ निजी विद्यालयों के द्वारा भी शिक्षा का प्रबंध किया जा रहा है । सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षा संस्थानों में संविधान सम्मत् पंथ–निरपेक्ष, एवं समाजवादी रूप से शिक्षा प्रदान की जा रही है । इन

संस्थानों में व्यक्तिगत् विचारों का कोई अस्तित्व नहीं होता है । निजी एवं वैयक्तिक रूपों में संचालित स्कूलों में व्यक्तिगत् विचारों को महत्व दिया जाता है । इसी आधार पर इन विद्यालयों में सामान्य शिक्षा की व्यवस्था की जाती है ।

निजी शिक्षा संस्थाओं द्वारा सरकारी नियमों से आबद्ध रहते हुए लोकतांत्रिक पद्धति से, बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, मनोवैज्ञानिक वातावरण, व्यक्तिगत भिन्नता पर बल, चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास, व्यवहारिक ज्ञान, रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्रियाओं पर बल, आधुनिक शिक्षण–पद्धतियों का उपयोग इत्यादि कार्यों पर बल देते हुए बालकों को शिक्षा प्रदान करने का दावा किया जाता है ।

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' द्वारा संचालित विद्यालयों में बालकों को उपरोक्त सभी विशेषताओं के साथ–साथ देशभक्ति से परिपूर्ण, राष्ट्रीय गौरव, भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों आदि की भी शिक्षा प्रदान करने के लिए उचित वातावरण प्रदान करने का दावा किया जाता है । यह संस्थान अपने विद्यालयों में सामान्य शिक्षा को भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के रूप में प्रदान करने का दावा करता है । इस संस्थान का उद्देश्य है कि विद्यार्थी अपना सर्वांगीण विकास कर इस लोकतंत्रात्मक देश का एक सक्रिय नागरिक बन, देश तथा समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें ।

प्रस्तुत शोध विषय पर कार्य करते हुए शोधकर्ता के मन में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं एवं उनके दावों को लेकर कौतुहल पैदा हुआ एवं कई प्रश्नों ने जन्म लिया । यथा–

– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें बालकों में लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास में सहायक हैं ?
– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं ?

- क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें बालकों में राष्ट्रीय चेतना के संचार में सहायक हैं ?
- क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शैक्षिक विकास में योगदान कर रही हैं ?
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का प्रबंधन, आय–व्यय एवं वित्तीय सहायता के स्त्रोत क्या–क्या और कैसे हैं ?
- इन संस्थाओं में शिक्षकों की स्थिति एवं उनका वेतन कैसा है ?
- क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें सरकारी नियमों का पालन करती हैं ?
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना कैसे एवं कब हुई थी ? एवं इनका संचालन किस प्रकार होता है ?
- क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को सरकार एवं स्थानीय जनता द्वारा अपेक्षित सहयोग प्राप्त होता है ?
- किन उद्देश्यों को लेकर सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना की जा रही है ?
- क्या यह संस्थान बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर समान प्रकार से ध्यान दे रहे हैं ?
- क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की पहुँच तहसील, कस्बा एवं ग्राम स्तरों तक बढ़ रही है ?
- बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का संख्यात्मक विस्तार कैसा है ?
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट कक्षाओं के छात्रों की माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश की परीक्षाओं में उपलब्धि कैसी है ?
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के भवनों की दशा में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ है ? एवं उनमें कौन–कौन से संसाधन कितनी मात्रा में उपलब्ध हैं ?
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के नामांकन की दर कैसी है ?

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में प्रवेश प्रक्रिया क्या है ?

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों की तुलना में शिक्षकों की संख्या एवं अनुपात कैसा है ?

– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के द्वारा छात्रों के शारीरिक विकास के लिए प्रबन्ध किये जा रहे हैं ।

– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों के द्वारा छात्रों के लिए आधुनिक विषयों जैसे – कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है ? यदि हाँ तो किस प्रकार ?

– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों द्वारा छात्रों के मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए संगीत शिक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की जा रही है ?

– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों के द्वारा छात्रों की सहायता के लिए निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं का संचालन किया जा रहा है ?

– क्या सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों के द्वारा छात्रों को रोजगार सम्बन्धी कोई कार्य सिखलाया जाता है ? यदि हाँ तो कौन–कौन से ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना ही शोधकर्ता ने अपने इस शोधकार्य का लक्ष्य रखा । अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा उपरोक्त सभी बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए अध्ययन के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूपों में निर्धारित किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के उद्देश्य हैं कि –

1. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संख्यात्मक प्रगति, श्रेणी उन्नयन, भवनों की दशा एवं उनमें छात्रों के लिए उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करना ।

2. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में छात्र नामांकन में वृद्धि, नामांकित छात्रों की भौगोलिक पृष्ठभूमि, आचार्यों की संख्या में वृद्धि एवं आचार्य–छात्र अनुपात का अध्ययन करना ।

3. कक्षा अष्टम्, हाईस्कूल (कक्षा दशम्) एवं इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) स्तरों की परीक्षाओं में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्रों के प्रदर्शन एवं उपलब्धियों का अध्ययन करना ।

4. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों एवं उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करना ।

5. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के आर्थिक स्त्रोतों एवं शिक्षकों को प्राप्त होने वाले वेतन की जानकारी प्राप्त करना ।

6. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सरकारी पाठ्यक्रम एवं नियमों के पालन किये जाने की स्थिति का अध्ययन करना ।

7. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं, राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रभक्ति के विकास के लिए किये जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना ।

1.6 अध्ययन की परिकल्पना

अनुसन्धान कार्य में समस्या चयन के पश्चात् अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं । इसके पश्चात् समस्या को एक कथन के रूप में व्यक्त किया जाता है । अनुसन्धान की प्रक्रिया में समस्या कथन के तुरन्त पश्चात् एक उपयुक्त परिकल्पना की रचना की आवश्यकता होती है । एक वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना के अभाव में सम्भव नहीं होता है । समस्या का स्वरूप अधिकतर अत्यधिक विषम, विस्तृत तथा विसरित रहता है । ऐसी स्थिति में उसके व्यापक क्षेत्र को घटाकर न्यून करना अत्यन्त आवश्यक होता है जिससे अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट, सूक्ष्म तथा गहन हो सके । अतः प्रत्येक अनुसंधान कार्य में अनुसंधानकर्ता को परिकल्पना का निर्धारण अवश्य करना होता है । ऐसा नहीं करने पर अनुसंधानकर्ता सम्बन्धित समस्या के अध्ययन के लिए इधर–उधर भटकता रहता है एवं अनेक अनावश्यक तथा व्यर्थ के आँकड़े संकलित कर लेता है । इसका कारण है कि उसे परिकल्पना के अभाव में समस्या से सम्बन्धित आवश्यक तथ्यों एवं चरों का स्पष्ट तथा विशिष्ट ज्ञान नहीं हो पाता है । परिकल्पना निर्धारण से शोधकर्ता को तर्क–संगत आँकड़ो के संकलन में सही दिशा प्राप्त होती है तथा उपयुक्त, वैध एवं शुद्ध निष्कर्षों की गणना में सुविधा तथा सरलता रहती है ।

उच्च गुणवत्ता के अनुसन्धान कार्य के लिए एक उत्तम परिकल्पना की रचना अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है । अतः मैक्गुईगन ने एक उत्तम परिकल्पना की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि परिकल्पना परीक्षण योग्य होनी चाहिए, परिकल्पना सामान्यतः अपने अनुसन्धान क्षेत्र से सम्बन्धित अन्य परिकल्पनाओं के अनुरूप होना चाहिए, परिकल्पना अल्पव्ययी होना चाहिए, परिकल्पना अपनी समस्या का स्पष्ट उत्तर होना चाहिए, परिकल्पना में तर्क–संगत सरलता होना चाहिए, परिकल्पना का कथन मात्रात्मक रूप में होना चाहिए, परिकल्पना से अनेक परिणाम उपलब्ध होना चाहिए, परिकल्पना में सम्बन्धित चरों की संक्रियात्मक व्याख्या निहित होनी चाहिए, परिकल्पना की पुष्टि अथवा अस्वीकृति की प्रसम्भाव्यता लगभग समान होनी चाहिए,

परिकल्पना का स्वरूप यथासम्भव विधि–निर्धारित होना चाहिए तथा परिकल्पना सत्यापनीय होना चाहिए ।

अपने शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने जिस प्रकरण का चयन किया है उसका कार्य क्षेत्र अति विस्तृत है। शोध कार्य को समय से तार्किक, सूक्ष्म एवं गहन रूप में सम्पन्न करने के लिए शोधार्थी ने सीमांकन की सहायता से अपने शोध विषय को सीमांकित रूप में प्रस्तुत किया है । अपने शोधकार्य हेतु उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात् जब शोधकर्ता ने उपरोक्त वर्णित कसौटियों के आधार पर परिकल्पना का निर्माण करना प्रारम्भ किया तब उसे अनुभव हुआ कि प्रस्तुत शोधकार्य के लिए 'शोध परिकल्पनाओं' का ही निर्माण उपयुक्त होगा । प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र एवं उद्देश्य इतने विस्तृत हैं कि इन्हें एक ही 'शोध परिकल्पना' में समायोजित करना शोधकर्ता के लिए दुष्कर कार्य सिद्ध हुआ । अतः शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य को व्यवस्थित रूप एवं एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए एक से अधिक परिकल्पनाओं का निर्माण किया ।

शोध परिकल्पना – प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्धारित किये गये उद्देश्यों के आधार पर शोध अध्ययन को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए शोधार्थी ने निम्न शोध परिकल्पनाओं का निर्धारण किया है –

1. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संख्यात्मक प्रगति, श्रेणी उन्नयन, भवनों की दशा एवं उनमें छात्रों के लिए उपलब्ध संसाधनों में निरन्तर संतोषजनक वृद्धि हो रही है ।

2. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में छात्र नामांकन एवं आचार्यो की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है तथा आचार्य–छात्र अनुपात मानकों के अनुरूप है ।

3. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्र हाईस्कूल (कक्षा दशम्) एवं इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) स्तरों की परीक्षाओं में उत्तम श्रेणी का प्रदर्शन कर रहे हैं ।

4. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु संतोषजनक रूप से कार्य कर रहे हैं ।

5. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान आर्थिक स्त्रोतों के आधार पर शिक्षकों को सरकारी नियमों के अनुरूप वेतन प्रदान कर रहे हैं ।

6. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सरकारी पाठ्यक्रम एवं नियमों का पालन हो रहा है तथा जनता के मध्य इनकी छवि अच्छी है ।

7. सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं बालकों में लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास, राष्ट्रीय चेतना का विकास एवं उनका सर्वांगीण विकास करने में सक्षम भूमिका का निर्वाहन कर रही हैं ।

1.7 अनुसन्धान विधि

अनुसन्धानकर्ता द्वारा समस्या चयन के पश्चात् समस्या अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं । चयनित समस्या को एक कथन की सहायता से शीर्षक के रूप में व्यक्त किया जाता है । समस्या के अत्यधिक विषम, विस्तृत, विसरित तथा व्यापक क्षेत्र को सीमित एवं न्यून करने के लिए परिकल्पना का निर्माण किया जाता है । इससे अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट, सूक्ष्म तथा गहन हो जाता है । परिकल्पना का निर्माण होने पर तर्क–संगत आँकड़ो के संकलन के लिए उचित दिशा निर्धारण में

सहायता प्राप्त होती है । शोध समस्या के वैज्ञानिक स्वरूप में अध्ययन हेतु एवं आँकड़ों के संग्रहण, विश्लेषण एवं निष्कर्ष निगमन हेतु किसी अनुसन्धान विधि का उपयोग किया जाता है ।

अनुसन्धान विधि के चयन से पूर्व हमें अपने शोध की प्रकृति एवं प्रकार का भी निर्धारण करना होता है । मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षिक शोधों में प्रयोगात्मक शोध एवं अप्रयोगात्मक शोध दोनों का महत्व है । इन दोनों तरह के शोधों में शोधकर्ता स्वतंत्र चर एवं आश्रित चर के मध्य के सम्बन्धों का सत्यापन करने का प्रयास करता है ।

वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा शैक्षिक शोधों में प्रयोगात्मक शोध का महत्व सर्वाधिक है । प्रयोगात्मक शोध में शोधकर्ता नियंत्रित परिस्थति में विशेष चर या चरों में जोड़–तोड़ करता है और उसके प्रभाव का अध्ययन दूसरे चर पर करता है । इस प्रकार के शोध में विश्वासपूर्वक यह कहा जा सकता है कि अमुक जोड़–तोड़ से अमुक प्रभाव पड़ा । प्रयोगात्मक शोध में शोधकर्ता स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर के मध्य कारण तथा परिणाम सम्बंध एक विश्वास के साथ स्थापित कर पाता है । वह इस बात का स्पष्टीकरण देने में सक्षम होता है कि किस प्रकार स्वतंत्र चर में परिवर्तन करने पर आश्रित चर प्रभावित होते हैं ।

मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये शोधों में अप्रयोगात्मक शोध का भी विशेष महत्व है । अप्रयोगात्मक शोध उस स्थिति में किया जाता है जहां प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व ही स्वतंत्र चरों की अभिव्यक्ति हो चुकी होती है । अर्थात स्वतंत्र चरों का प्रभाव प्रयोग प्रारम्भ के पहले से ही कुछ इस तरह का होता है कि इनमें जोड़–तोड़ या किसी भी प्रकार का नियंत्रण सम्भव नहीं होता है । अतः अप्रयोगात्मक शोध एक ऐसा कमबद्ध शोध होता है जिसमें शोधकर्ता का स्वतंत्र चरों पर कोई सीधा नियंत्रण नहीं होता है । इस प्रकार के शोध में स्वतंत्र चर और आश्रित चर के मध्य विशेष सम्बन्धों के बारे में इन दोनों तरह के चरो में हुए सहवर्ती परिवर्तनों के आधार पर मात्र एक अंदाज लगाया जाता है । मनोविज्ञान,

समाजशास्त्र तथा शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारे ऐसे चर हैं जिनमें जोड़–तोड़ करना संभव नहीं है । जैसे– सामाजिक वर्ग, पारिवारिक पृष्ठभूमि, बुद्धि, अभिक्षमता, उपलब्धि, दृढ़ता, संजाति, केन्द्रवाद आदि । इन चरों पर 'नियंत्रित अन्वेषण' संभव है परन्तु इनका प्रयोग संभव नहीं है क्योंकि इनमें शोधकर्ता परिवर्तन नहीं कर सकता है । इस तरह के नियंत्रित अन्वेषण, जिनमें स्वतंत्र चर का जोड़–तोड़ नहीं हो पाता है तथा जिनमें स्वतन्त्र चर तथा आश्रित चर के सम्बन्धों को इन दोनों चरों के साथ–साथ होने वाले परिवर्तनों के आधार पर जानने की कोशिश की जाती है, अप्रयोगात्मक शोध कहा जाता है ।

करलिंगर (1986) के अनुसार –**"अप्रयोगात्मक शोध एक ऐसा कमबद्ध अनुभव सिद्ध शोध है जिसमें वैज्ञानिक का स्वतंत्र चरों पर कोई सीधा नियंत्रण नहीं रहता है क्योंकि उनकी अभिव्यक्ति पहले ही हो चुकी होती है या वे स्वाभाविक रूप से जोड़–तोड़ के योग्य ही नहीं होते हैं । आश्रित चर तथा स्वतंत्र चरों के सहवर्ती परिवर्तनों के आधार पर इन चरों के बीच के संबंधो के बारे में, बिना किसी तरह के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के ही, एक अंदाज लगाया जाता है।"**[1]

अप्रयोगात्मक शोध में शोधकर्त्ता प्रभाव के आधार पर कारणों का पता लगाने का प्रयास करता है । दूसरे शब्दों में, इस तरह के शोध में आश्रित चर के आधार पर सम्भावित स्वतंत्र चरों के अस्तित्व तथा उनके आश्रित चर के साथ संबंधों का पता लगाया जाता है । दूसरी ओर प्रयोगात्मक शोध में स्वतंत्र चर में किये गये परिवर्तनों के आधार पर आश्रित चर में हुए परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में एक विशेष प्रकार के शिक्षा संस्थाओं एवं उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को शोध का आधार बनाया गया है । हम अपने दैनिक अनुभवों में यह देखते हैं कि विभिन्न प्रकार के शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियाँ भिन्न–भिन्न प्रकार की देखने को मिलती हैं । अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण का प्रभाव विद्यार्थी की शैक्षिक

---

1. कपिल,एच.के., 1997, अनुसन्धान विधियाँ (व्यवहारिक विज्ञानों में), हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक, आगरा ।

उपलब्धि पर पड़ता है । विभिन्न विद्यालयों का वातावरण भी भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है क्योंकि इन विद्यालयों को संचालित करने वाली संस्थाएँ भी अलग–अलग सिद्धान्तों वाली होती हैं । प्रत्येक संस्था के अपने स्वतंत्र विचार एवं आदर्श होते हैं जिनके अन्तर्गत् ही यह विद्यालयों का संचालन करती हैं । इस प्रकार विद्यालयी वातावरण एक स्वतंत्र स्वरूप हुआ जो प्रत्येक विद्यालय में अलग–अलग तरह का होता है । विद्यालयी वातावरण में भिन्नता होने के कारण इन विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, व्यवहारिक, धार्मिक आदि आदतों एवं दशाओं में भी भिन्नता देखने को मिलती है ।

उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण एक स्वतंत्र चर तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियाँ एक आश्रित चर है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन' में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं स्वतंत्र चर हैं तथा शैक्षिक योगदान आश्रित चर है । जब शोधार्थी ने इस विषय पर शोध कार्य प्रारम्भ किया जब तक सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षा संस्थाओं को प्रारम्भ हुए कई वर्ष व्यतीत हो चुके थे । इनका एक सुनिश्चित सामाजिक वातावरण एवं शिक्षा पद्धति स्थापित हो चुकी थी । इन शिक्षा संस्थाओं के शैक्षिक वातावरण एवं सामाजिक वातावरण में शोधार्थी के द्वारा किसी भी प्रकार के परिवर्तन या जोड़–तोड़ सम्भव नही था । न ही शोधार्थी के द्वारा इन शिक्षा संस्थानों के वातावरण में किसी भी प्रकार के परिवर्तन या जोड़–तोड़ का प्रयास किया गया । इन संस्थानों की स्वाभाविक दशाओं में रह कर यथा–स्थिति के आधार पर ही शोधार्थी द्वारा अपना शोधकार्य सम्पन्न किया गया । अतः इन शिक्षा संस्थाओं को एक स्वतंत्र चर तथा इनका शैक्षिक योगदान अर्थात विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को एक आश्रित चर के रूप में स्वीकार करने के कारण यह शोध प्रबंध अप्रयोगात्मक शोध की श्रेणी के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है । जिसमें आश्रित चर (प्रभाव) अर्थात शैक्षिक योगदान पर स्वतंत्र चर (कारण) अर्थात विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध अप्रयोगात्मक प्रकार का शोध कार्य है । अप्रयोगात्मक शोध के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करने पर यह शोध प्रबन्ध 'सर्वेक्षण शोध' की 'विद्यालय सर्वेक्षण' की श्रेणी मे रखा जा सकता है । इस शोध कार्य में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षा संस्थाओं का सर्वे प्रतिदर्श के आधार पर किया गया है । साथ ही उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्धित आँकड़ों को एकत्रित किया गया है । इस शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए शोधार्थी को विभिन्न प्रकार के आँकड़ों के एकत्रीकरण की आवश्यकता थी । इसके लिए शोधार्थी ने 'सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि' का उपयोग किया है । सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षा संस्थाओं का विकास , बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र का अध्ययन, उत्तर प्रदेश एवं बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा के विकास का अध्ययन करने के लिए 'ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि' का उपयोग किया गया है ।

1.8 आँकड़ों का संग्रहण

शोधकार्य का अनिवार्य भाग होता है आँकड़ों का संग्रह करना। शोधकार्य किसी भी प्रकार का हो शोधार्थी को शोध से सम्बन्धित सूचनाओं एवं आँकड़ों का संकलन करना होता है । शोध से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन के लिये दस्तावेजों, आलेखों एवं रिपोर्टों आदि का अध्ययन एवं आँकड़ों के संकलन के लिए सर्वे विधि का उपयोग शोध समस्या के अनुसार करना होता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में 'ऐतिहासिक' एवं 'सर्वेक्षण अनुसन्धान' विधियों का उपयोग किया गया है । बुन्देलखण्ड की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास से सम्बन्धित आँकड़ों के संग्रहण हेतु इनसे सम्बन्धित प्राथमिक स्रोतों एवं गौण स्त्रोतों का उपयोग किया गया है ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं' एवं 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' की स्थापना, इतिहास, उद्देश्य, कार्य–क्षेत्र एवं कार्य प्रणाली का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत् रूप से इन संस्थाओं का सर्वे किया गया एवं सम्बन्धित

अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर विचार–विमर्श करने के उपरांत आँकड़ों को एकत्रित किया गया है ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं' द्वारा बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में किये जा रहे शैक्षिक विकास एवं योगदान से सम्बन्धित आँकड़ों के संग्रहण के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित, 113 प्रश्नों की, मिश्रित प्रारूप वाली प्रश्नावली का उपयोग किया गया है । इस प्रश्नावली के सभी प्रश्नों का उत्तर सम्बन्धित विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या को स्वयं अपने हाथों से लिखना था । इस प्रश्नावली को पूर्ण करवाने के लिए शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत् रूप से शिक्षण संस्थाओं से सम्पर्क किया गया ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अध्ययन से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह निम्न वर्णित प्रकिया के अनुसार किया गया है –

1. आँकड़ों के रूप में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित एवं कम से कम हाईस्कूल स्तर की मान्यता प्राप्त प्रत्येक 'सरस्वती विद्या मन्दिर' को लिया गया है ।
2. 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं' में प्रत्येक वर्ष की छात्र नामांकन संख्या से सम्बन्धित आँकड़ें एकत्रित किये गये हैं ।
3. इन संस्थानों से प्रत्येक वर्ष हाईस्कूल उत्तीर्ण करने वालो विद्यार्थियों से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन किया गया है ।
4. इन संस्थानों से प्रत्येक वर्ष इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन किया गया है ।
5. बुन्देलखण्ड के इतिहास के लिए विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों से संकलन एकत्रित किये गये हैं ।

6. बुन्देलखण्ड क्षेत्र के भौगोलिक इतिहास से सम्बन्धित जानकारियों को मानचित्रों, सन्दर्भ ग्रन्थों एवं सम्बन्धित भौगोलिक क्षेत्रों में जाकर एकत्रित किया गया है ।

7. भारत में शिक्षा का विकास, उत्तर प्रदेश में शिक्षा का विकास, बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास तथा 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' से सम्बन्धित जानकारी आदि के लिए पाठ्य पुस्तकों, सन्दर्भ ग्रन्थों एवं सम्बन्धित स्त्रोतों से सूचनाओं को एकत्रित किया गया है ।

शोधार्थी द्वारा विद्यालयों से विभिन्न प्रकार की जानकारियों को एकत्रित करने के लिए प्रयोग की गई प्रश्नावली का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैं –

– यह प्रश्नावली शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित की गई है।

– यह प्रश्नावली मिश्रित प्रकार की है । इसमें बन्द सिरे एवं खुले सिरे दोनों प्रकार के प्रश्नों का उपयोग किया गया है ।

– प्रश्नावली में प्रश्नों की कुल संख्या 113 है ।

– प्रश्नावली में प्रस्तुत शोध कार्य के सभी उद्देश्यों से सम्बन्धित प्रश्नों का निर्माण किया गया है ।

– प्रश्नावली में प्रयुक्त 113 प्रश्नों का संक्षिप्त वर्गीकरण एवं विश्लेषण निम्नानुसार है –

1.8.1 शोधकर्ता की स्वनिर्मित प्रश्नावली के प्रश्नों का संक्षिप्त वर्गीकरण एवं विश्लेषण-

क्रम संख्या	प्रश्नावली में पूछे गये सम्बन्धित क्षेत्र	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्रश्नों की कुल संख्या
1	विद्यालय की स्थापना	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 24	10
2	विद्यालय भवन	4, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 61, 69	12
3	विद्यालय में छात्रों का नामांकन	5, 16, 17, 20, 21, 25	6
4	विद्यालय में शिक्षकों की संख्या	6, 26, 27, 28	4
5	कक्षाओं एवं वर्गों की संख्या	7, 8, 10, 11, 12	5
6	जूनियर हाई स्कूल की मान्यता एवं छात्र संख्या	13, 35	2
7	हाई स्कूल की मान्यता एवं छात्र संख्या	14, 15, 16, 17, 36	5
8	इण्टरमडिएट की मान्यता एवं छात्र संख्या	18, 19, 20, 21, 22, 37	6
9	प्रवेश प्रक्रिया	29, 30, 31, 32, 33, 34	6
10	विद्यालय के आय के स्त्रोत	40, 46	2
11	विद्यालय को आर्थिक सहायता	41, 42, 43, 44, 45	5
12	आसन व्यवस्था	55, 56, 57	3
13	पुस्तकालय एवं पाठ्य पुस्तकें	58, 59, 60	3
14	छात्रों के शारीरिक विकास के लिए प्रबंध	61, 62, 63, 64	4
15	कम्प्यूटर की शिक्षा	67, 68, 69, 70, 71	5
16	संगीत शिक्षा	72, 73, 74, 75, 76	5
17	सरकारी नियमों का पालन	77, 78, 79, 80, 81	5
18	शिक्षण पद्धति	23, 88, 89, 90	4
19	पाठ्यक्रम	86, 87	2

20	निर्देशन एवं स्वास्थ्य सेवायें	91, 92, 93 94, 95	5
21	शिक्षकों को प्राप्त सुविधायें	78, 79, 80, 81, 82	5
22	विशेष विचारधारा से जुड़े होने का परिणाम	83, 84, 85	3
23	अध्ययनरत् छात्रों की पृष्ठ भूमि	96, 97, 98	3
24	प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति	2, 99, 100	3
25	लोकतान्त्रिक भावना विकसित करने हेतु कार्य	101, 102, 103	3
26	राष्ट्र चेतना विकास एवं समाज सेवा हेतु कार्य	104 ,105, 106, 111	4
27	रोजगार की शिक्षा	107	1
28	शैक्षिणक रूप से कमजोर छात्रों की सहायता	108	1
29	आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की सहायता	109	1
30	अभिभावक विद्यालय सम्पर्क	110	1
31	छात्रों द्वारा शैक्षिक एवं क्रीड़ा सम्बन्धी उपलब्धियों की प्राप्ति	38 ,39, 65	3
32	विद्यालय द्वारा कोई विशेष उपलब्धि की प्राप्ति	112	1
33	विद्यालय की सामान्य गतिविधियाँ	113	1
34	विद्यालय में आयोजित की जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियायें	66	1

विश्लेषण में प्रयुक्त प्रश्नों का कुल योग –130

प्रश्नावली में प्रयुक्त प्रश्नों की कुल संख्या – 113

विश्लेषण में एक से अधिक बार प्रयुक्त प्रश्नों की संख्या – 17

एक से अधिक बार उपयोग किये गये प्रश्नों की कम संख्या –2,4,5,6,7,8,16,17,20,21, 55, 61, 69, 78, 79, 80, 81

1.9 आँकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण

शोध एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सार्थकता एवं सत्यता का विशेष महत्व है । सत्यता एवं सार्थकता विहीन शोध कार्य अर्थहीन हो जाता है । अतः शोधार्थी के लिए यह जानना अत्यावश्यक है कि शोध में जो जानकारी सम्मिलित कर रहा है वह यथार्थ है या नहीं । शोध में सम्मिलित सूचनाओं एवं आँकड़ों की सत्यता जांचने के लिए हम प्राथमिक एवं गौढ़ स्रोतों का सहारा लेते हैं । सन्दर्भ ग्रन्थों द्वारा इस बात की जांच की जाती है कि प्रस्तुत विचार किसी व्यक्ति विशेष की सोच तो नहीं है क्योंकि सन्दर्भ ग्रन्थों में दी गई सूचनायें व विचार सभी की सन्तुष्टि एवं यथार्थ का प्रतिबिम्ब होते हैं । सन्दर्भ ग्रन्थ सर्वसम्मत होते हैं क्योंकि इन ग्रन्थों का निर्माण तार्किक विवेचना, विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर होता है । अतः ऐतिहासिक सूचनाओं की सत्यता की जाँच एवं विश्लेषण के लिए उपर्युक्त विधि सबसे उपयुक्त है ।

सर्वेक्षण एवं प्रश्नोत्तर विधि द्वारा एकत्रित आँकड़ों की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए प्रतिदर्श विधि द्वारा उनकी जाँच कर, व्यापक विश्लेषण करने के पश्चात् ही हम निष्कर्ष पर पहुचते हैं । प्रस्तुत शोध प्रबंध में एकत्रित किये गये आँकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण करने के लिए प्रयुक्त प्रश्नावली के आधार पर एकत्रित किये गये आँकड़ों का सारणियन किया गया है । रेखाचित्रों एवं चक्राकृतियों की सहायता से आँकड़ों का प्रदर्शन किया गया है ।

आँकड़ों का संख्यिकीय विश्लेषण करने पर निष्कर्षों में त्रुटि की सम्भावना शून्य रह जाती है । शोध में आँकड़ों के सांख्यिकीय विधि से विश्लेषण का बहुत महत्व है क्योंकि सांख्यिकीय विधि द्वारा ही हम परिणामों की प्रमाणिकता की जांच सूक्ष्मतम रूप में कर सकते हैं । अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि शोध के लिए प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण अत्यन्त आवश्यक है, इसके बिना शोध की सत्यता प्रमाणित नहीं हो सकती है ।

1.10 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किये गये ज्ञान का लाभ उठा सकता है । मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं– ज्ञान को एकत्र करना, एक दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्वि करना । यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो कि वास्तविकता के समीप आने के लिए निरन्तर प्रयास करता रहता है ।

अनुसन्धान विधि में 'साहित्य' शब्द किसी विषय के अनुसन्धान के विशेष क्षेत्र में ज्ञान की ओर संकेत करता है । जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक, व्यवहारिक और शोध अध्ययन आते हैं । 'समीक्षा' शब्द का अर्थ शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखना है कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा ।

1.10.1 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता–

1. शोधकर्ता शोधकार्य की योजना बनाने में प्रारम्भिक पदों में से एक, रूचि के अनुरूप विशेष क्षेत्र में किये गये शोध कार्यों का अध्ययन करता है जो कि शोधार्थी को अध्ययन से सम्बन्धित गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण में एक दिशा का संकेत देता है ।

2. प्रत्येक शोधार्थी के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह दूसरों के द्वारा किये गये शोध कार्यो से अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली–भांति अवगत हो । यह एक अपेक्षित महत्वपूर्ण कार्य समझा जाता है ।

3. यह अध्ययनगत् समस्या को साधन प्रदान करता है, शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिए सहायता प्रदान करता है । शोधकर्ता साहित्य के पुनर्निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनायें निर्मित करता है । यह अध्ययन के

लिए आधार प्रदान करता है । अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद–विवाद किया जा सकता है ।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है । शोध किये गये क्षेत्र में शोध-कर्ता की निपुणता और सामान्य पाण्डित्य को विकसित करने में सहायक होता है । समस्या के समाधान के लिए उचित विधि, प्रकिया, तथ्यों को प्राप्त करने के साधन और सांख्यिकीय तकनीक का सुझाव देता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य को सफलता प्रदान करने के लिए शोध शीर्षक से सम्बन्धित सभी विषयों पर उपलब्ध साहित्य का गहनता से अध्ययन किया है। बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन के लिए शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं गौढ़ स्त्रोतों का गहनता से अध्ययन किया गया है । भारत में शिक्षा का विकास एवं बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा के विकास का अध्ययन करने के लिए शोधार्थी ने सन्दर्भ ग्रन्थों एवं पाठ्य पुस्तकों का बारीकी से अध्ययन किया है ।

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' एवं 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओ' के एवं इनसे सम्बन्धित विभिन्न साहित्यों का अध्ययन किया गया है ।

उपरोक्त सभी विषयों से सम्बन्धित अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधार्थी द्वारा आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी 'इन्टरनेट' का भी सहारा लिया गया है । सम्बन्धित विषयों पर किये गये विभिन्न शोधकार्यों का भी अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

शोधार्थी द्वारा अपने शोध विषय पर कार्य करते हुए निम्न शोध प्रबन्धों का भी अध्ययन किया गया है –

– Vishwakarma, Jitan Prashad,1986, Cultural geography of bundelkhand region (U.P.), Ph.D., Geography, Bundelkhand University.

– पांचाल, संतोष कुमार, 1988, बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के जनजातीय समूहों के मूल्यों तथा शैक्षिक अभिवृत्ति का सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन, पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

– पाल, डी. आर. सिंह, 1989, स्वतंत्र्योत्तर उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शिक्षा का विकास–1950–80, पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

– तरसौलिया, अशोक कुमार, 1994, बुन्देलखण्ड में विभिन्न प्रबन्धतन्त्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों और अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

– त्रिवेदी, अवध किशोर, 1994, बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों के किशोरों के समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का उनकी बुद्धि तथा शैक्षिक–उपलब्धि के सन्दर्भ में मूल्यांकन, पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

– सिंह, अवतार, 2001, बुन्देलखण्ड में शिक्षा, चिकित्सा एवं न्याय व्यवस्था, पी–एच.डी. थीसिस, इतिहास, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

– तिवारी शिवाकान्त, 2002, बुन्देलखण्ड क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षिक योगदान का – आलोचनात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

– तिवारी, ममता, 2002, बुन्देलखण्ड क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) की स्वातंत्रोत्तर प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन में सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों का योगदान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन), पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा शास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ।

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि

2.0 **भूमिका**– प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, **"बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन"**, का अध्ययन करते समय मन में एक कौतुहल जाग्रत होता है कि बुन्देलखण्ड क्या है ? किस जगह को बुन्देलखण्ड के नाम से जाना जाता है ? इसका इतिहास क्या है ? यहाँ का भूगोल तथा वातावरण कैसा है ? स्वाभाविक रूप से इन प्रश्नों का उत्तर जानने की सभी के मन में उत्कंठा होती है । ऐसे ही प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर देने का प्रयास शोधकर्ता द्वारा अपने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में किया गया है ।

वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड का सम्पूर्ण भू–भाग भारत देश के दो राज्यों उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के मध्य विभाजित है । बुन्देलखण्ड का उत्तर–पूर्व, उत्तर एवं उत्तर–पश्चिम का भू–भाग उत्तर प्रदेश मे आता है तथा शेष भाग मध्य प्रदेश में है । वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के सात जिले बुन्देलखण्ड भू–भाग के अन्तर्गत आते हैं। यह जनपद हैं – झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बाँदा तथा चित्रकूट। मध्य प्रदेश राज्य के पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, सागर, दमोह, नरसिंहपुर जिले तथा जबलपुर, होशंगाबाद, रायसेन, विदिशा, गुना एवं ग्वालियर जिलों का कुछ भाग बुन्देलखण्ड क्षेत्र का भाग माना जाता है । ब्रिटिश सरकार द्वारा 1858 में भारत में अपनी संसद का शासन स्थापित करने तक सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र एक ईकाई के रूप में विद्यमान था जिस पर कई रियासतों का शासन था । इसके पश्चात् अंग्रेजों ने प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से इस क्षेत्र को दो भागों में विभाजित कर दिया था । स्वतंत्रता पश्चात् भी इस क्षेत्र का विभाजन दो राज्यों के मध्य रहा । बुन्देलखण्ड की इस विभाजित स्थिति की तुलना श्रीवास्तव[1] ने विभाजित जर्मनी से की है ।

---

1. श्रीवास्तव, डॉ. रमेश चन्द्र (सम्पादक), बुन्देलखण्ड–साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव, बुन्देलखण्ड प्रकाशन , बाँदा ।

2.1 नामकरण–

बुन्देलखण्ड का इतिहास अति प्राचीन है । इस क्षेत्र का उल्लेख पुराणों एवं महाभारत में भी किया गया है । समय–समय पर इस क्षेत्र को विभिन्न नामों से जाना गया है । वनों की प्रधानता से यह क्षेत्र **'आरण्यक'** या **'वन्य देश'** कहलाया । विन्ध्याचल पर्वत श्रेणियों के फैलाव के कारण कभी इसे **'विन्ध्याचल'** भी कहा जाता था । कालांतर में इसे **'आटव्य देश'** के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी । महाभारत काल में यह क्षेत्र **'चेदि–देश'** नाम से सम्बोधित हुआ । धसान नदी के निकटवर्ती क्षेत्र को **'दशार्ण'** के नाम से पुकारा जाता था । छँटवी शताब्दी में इस क्षेत्र को **'जेजाहुति'** अथवा **'जुझौतिया'** कहा जाता था । बारहवीं सदी के अन्त तक यह क्षेत्र **'जेज्जाक भुक्ति'** के नाम से प्रसिद्ध था । चौदहवीं शताब्दी में बुन्देला ठाकुरों के द्वारा अपना राज्य इस क्षेत्र में स्थापित किया गया । बुन्देलों द्वारा शासित प्रदेश होने के कारण कालांतर में इसे **'बुन्देलखण्ड'** के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई । आज यह सम्पूर्ण क्षेत्र **'बुन्देलखण्ड'** के नाम से प्रसिद्ध है । एक मान्यता यह भी है कि विन्ध्याचल पर्वत श्रेणियों के कारण इसे **'बिन्धेलखण्ड'** भी कहा गया । बिन्देलखण्ड का अपभ्रंश होकर यह बुन्देलखण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।[1]

बुन्देलखण्ड क्षेत्र का सीमांकन कालानुसार परिवर्तनशील रहा है । इस क्षेत्र का सीमांकन भौगोलिक आधार पर बहुत ही आसानी के साथ किया जा सकता है । इस क्षेत्र के भौगोलिक सीमांकन पर विस्तृत चर्चा इसी अध्याय में आगे के भाग में की गई है । वर्तमान उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में फैले हुए बुन्देलखण्ड की स्थिति का भारत के मानचित्र में सीमांकन[2] 78^0 4′ से 81^0 34′ पूर्वी देशान्तर तक तथा 23^0 10′ से 26^0 27′ उत्तरी अक्षांश तक रेखांकित किया गया है ।

---

1. श्रीवास्तव, डॉ. रमेश चन्द्र (सम्पादक), बुन्देलखण्ड–साहित्यक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा ।
2- www.lalitpur.nic.in

2.2 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है । इस क्षेत्र के इतिहास की चर्चा सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के इतिहास के साथ ही करना सारगर्भित जान पड़ता है । बुन्देलखण्ड के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर शोधार्थी ने यह पाया कि मध्यकाल में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में मध्यकालीन सत्ता के सक्रिय केन्द्र प्रमुखताः मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में रहे थे ।

श्रीवास्तव[1] ने अपने एक संकलित लेख में बुन्देलखण्ड के इतिहास के तीन हजार ईसा पूर्व के समय का उल्लेख करते हुए लिखा है कि "3000 ईसा पूर्व से 15000 ईसा पूर्व तक भगवान परशुराम के काल में वर्तमान राजापुर (हमीरपुर) तथा कालपी के यमुना तट से आर्यों का प्रवेश इस क्षेत्र में माना जा सकता है । इसी समय आदि कवि बाल्मिकि, अत्रि-अनुसुइया, अगस्त्य, सुतीक्षण, मार्कण्डेय, भारद्वाज, शरभंग, पाराशर, वेदव्यास आदि के आश्रम इस क्षेत्र में नदी,पर्वतों के समीप स्थापित थे । समस्त आश्रम विद्या एवं आर्य संस्कृति के केन्द्र बिन्दु थे ।"

रामायण काल में भगवान राम ने सीता एवं लक्ष्मण के साथ अपने चौदह वर्ष के वनवास के 11–12 वर्षों के समय को चित्रकूट प्रदेश एवं आस–पास के क्षेत्रों में घूमते हुये व्यतीत किया था ।

द्वापर युग में चेदि प्रदेश, राजा शिशुपाल तथ दंतवक्र के अधीन था । दोनों ही श्री कृष्ण की बुआ के पुत्र थे । शिशुपाल की राजधानी 'चंदेरी' तथा दाक्षिणी प्रदेश में केन नदी के तट पर स्थित 'शुक्तिमती' थी । श्री कृष्ण की नारायणी सेना का मुख्यालय 'कान्तवार' था । दंतवक्र का मुख्यालय 'दतिया' था । युधिष्ठिर ने अपने भाइयों सहित 12 वर्ष का वनवास इसी प्रदेश में व्यतीत किया था ।

बौद्ध काल एवं जैन काल में उत्तरी भारत 16 महाजनपदों में विभक्त था । उनमें चेदि, दशार्ण तथा वत्स इसी भू–भाग में स्थित थे ।

---

1. श्रीवास्तव, डॉ. रमेश चन्द्र (सम्पादक), बुन्देलखण्ड–साहित्यक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा ।

सन् 290 ईसवी से 400 ईसवी तक लगभग समूचा बुन्देलखण्ड गुप्त राजाओं के अधीन रहा । शेष भाग पर नागों और वाकाटकों का अधिकार था । परिहार गुप्त राजाओं के मांडलिक थे । कलांतर में स्वतंत्र होकर उन्होनें बुन्देलखण्ड के पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी भाग में अपनी सत्ता स्थापित की। इनकी राजधानी पश्चिमी भाग में गंगानगर (टीकमगढ़), पूर्व में मऊ सहानिया तथा दक्षिण में सिंगोरगढ़ (दमोह) में स्थापित हुई । गुप्त वंश के पतन के साथ यह क्षेत्र अनेकानेक स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो गया । पांचवी सदी के अंत में जुझौतिया राज्य की सीमा सागर, चंदेरी से मिर्जापुर तक तथा यमुना नदी से बिलहरी तक फैली हुई थी ।

बुन्देलखण्डी राजाओं ने कभी किसी दूसरे की दासता स्वीकार नहीं की, इसका एक उदाहरण राजा मातृविष्णु का प्राप्त होता है। मातृविष्णु ने हूणों का प्रतिरोध कर इस देश की संस्कृति की सुरक्षा करने का गौरव प्राप्त किया था । इन्होंने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की एवं खजुराहो को अपनी राजधानी बनाया । बुन्देलखण्ड पर कल्चुरियों का भी शासन रहा है । यह वंश 550 ईसवी से 1200 ईसवी तक प्रभावशाली रहा । इस वंश के प्रसिद्व शासक कोकल्लदेव, कर्णदेव, कृष्णराज प्रथम एवं लक्ष्मण राज रहे हैं ।

बुन्देलखण्ड का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विकास एवं उन्नयन कर उसे वैभव एवं प्रसिद्धि दिलाने वाले साम्राज्यों में प्रमुख नाम चंदेल वंशीयों एवं बुन्देले वंशीयों का आता है । चंदेलों का इस भू–भाग पर शासन पूर्व –मध्यकाल से मध्यकाल के आरम्भ तक रहा है तत्पश्चात् बुन्देलों का शासन मध्यकाल से लेकर 'कम्पनी' का शासन आने तक प्रभावशाली रहा ।

2.2.1 चंदेल वंश–

प्रतिहार नरेश नागभट्ट की मृत्यु के पश्चात रामभद्र गद्दी पर बैठा परन्तु वह एक निर्बल शासक था । चन्देल वंशी नन्नुक ने रामभद्र के निर्बल शासन तंत्र से मुक्त होकर लगभग सन् 830 ईसवी में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया । इस

प्रकार नन्नुक चंदेल वंश का प्रथम शासक कहलाया । उसका राज्य खजुराहो एवं महोबा तक सीमित था । चंदेलों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इतिहासकारों में गहरे मतभेद हैं । परन्तु चन्देलों की गणना छत्तीस क्षत्रिय वंशो में मान्य है ।

नन्नुक बाद में प्रतिहार नरेश मिहिरभोज का सामंत बन गया था । नन्नुक के पुत्र वाक्पति ने तथा बाद में वाक्पति के ज्येष्ठ पुत्र जयशक्ति ने सन् 870 ईसवी में इस पद को ग्रहण किया । जयशक्ति को 'जेजा' के नाम से जाना जाता था । यह एक बहुत ही शक्तिशाली तथा प्रतापी राजा था । इसने अपने पराक्रम तथा शौर्य से इस क्षेत्र में अपने साम्राज्य का विस्तार किया । उसकी प्रसिद्ध के कारण इस क्षेत्र को 'जेजॉक भुक्ति' के नाम से प्रसिद्धी प्राप्त हुई । जयशक्ति का सहयोगी उसका छोटा भाई विजयशक्ति था । विजयशक्ति के पुत्र राहिल तथा राहिल के पुत्र हर्ष ने भी चंदेल साम्राज्य का विस्तार किया । चन्देलों के अधिकार क्षेत्र में धासान नदी के पूर्व का प्रदेश तथा विन्ध्याचल पर्वत के उत्तर और पश्चिम का भू भाग था ।

हर्ष का उत्तराधिकारी यशोवर्मन (सन् 925–940 ई0) इस वंश का एक महान योद्धा था । उसने कन्नौज नरेश देवपाल एवं कल्चुरि राजा को हरा कर चंदेल कीर्ति का विस्तार किया । यशोवर्मन का पुत्र धंगदेव (950–999 ई.) गद्दी पर बैठा । उसने प्रतिहारों से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छेद कर स्वतंत्रता प्राप्त की । धंगदेव वर्मन चंदेल वंश का सबसे अधिक प्रतापी एवं योग्य शासक माना जाता है । इतिहासकार इसे स्वतंत्रता प्रेमी कहते हैं । यह भगवान शिव का उपासक था । अपने शासन काल में भगवान शिव के मन्दिरों की स्थापना करवाई । जिसमें खजुराहो के कंधारिया महादेव और विश्वनाथ मंदिर प्रसिद्ध हैं ।

धंगदेव के ही समान उसका पुत्र गंडदेव (999–1025 ई.) प्रतापी राजा एवं दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था । उसने महमूद गजनवी के आक्रमणों को रोकने के लिए आस–पास के राजाओं को संयुक्त रूप से मुकाबला करने के लिए तैयार किया । इस कार्य के लिए उसने अपने पुत्र विद्याधर को भेजा । किन्तु कन्नौज नरेश राजपाल की कायरता से यह योजना सफल न हो सकी ।

चंदेल राजा विद्याधर (1025—1040 ई.) गंडदेव के बाद सिंहासन पर बैठा । उसने कन्नौज के प्रतिहारों से दोआब प्रदेश छीन लिया । विद्याधर का पुत्र विजय पाल (1040—50ई.) शांतिप्रिय परन्तु निर्बल शासक था । विजय पाल का प्रथम पुत्र देववर्मन मात्र दो वर्ष राज्य कर सका । द्वितीय पुत्र कीर्तिवर्मन ने खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः वापस पाने का सफल प्रयास किया । इसका राज्य देवगढ़ ललितपुर तक फैला हुआ था । कीर्तिवर्मन के पुत्र सलक्षण वर्मन ने (1100—1110 ई0) इस क्षेत्र पर राज्य किया । सलक्षण वर्मन के पश्चात् जय वर्मन, पृथ्वी वर्मन तथा मदन वर्मन चन्देल शासक बने ।

मदन वर्मन का पुत्र परिमर्दिदेव वर्मन (परमाल देव) सन् 1165 ई0 में राजगद्दी पर बैठा । इसने महोबा को अपनी राजधानी बनाकर शासन चलाया । इसने उरई के प्रतिहारों को अस्तित्वहीन कर दिया । इसके यहां वीर भाई आल्हा एवं ऊदल सामन्त सरदार थे । सन् 1202 ईसवी में परिमर्दि देव की मृत्यु के पश्चात् 1203 ईसवी में कुतबुद्दीन ऐबक ने कालिंजर पर आक्रमण कर किला जीत लिया । इसकी वापसी के पश्चात् 1203 ई में त्रिलोक वर्मन ने कालिंजर पर अधिकार कर लिया । यह परिमर्दि देव की संतान था । त्रिलोक वर्मन के उपरान्त वीर वर्मन, भोज वर्मन तथा हम्मीर वर्मन चंदेल शासक हुए । इस समय चंदेलों की स्थिति कमजोर होती जा रही थी । सन् 1310 ईसवी में चन्देल सत्ता का अन्त प्रायः हो गया था । इन्हें बुन्देलों तथा बघेलों ने बुन्देलखण्ड से बाहर जाने को विवश कर दिया था ।

2.2.2 बुन्देल वंश —

बुन्देलखण्ड में चन्देलों के रिक्त स्थान की पूर्ति बघेलों तथा बुन्देलों ने की थी । बुन्देले मूल रूप से कन्नौज के गहड़वाल या गहरवार की एक शाखा है, जिन्हानें काशी में अपना राज्य स्थापित किया था । 'विन्धेलखण्ड' में आने के कारण यह

लोग कालान्तर में 'बुन्देले' कहलाये । इसी साम्राज्य ने 'विन्धेलखण्ड' को 'बुन्देलखण्ड' में परिवर्तित कर दिया ।

इस क्षेत्र में बुन्देलों का प्रारम्भिक शासक हेमकरण माना जाता है। इसने सन् 1048 ईसवी में गहोरा पर अपना शासन स्थापित किया, बाद में माहौनी (उरई) पर आक्रमण कर एक राज्य की स्थापना की । हेमकरण के पश्चात् बुन्देलों का शासन वीरभद्र (1071 ई.) तथा कर्ण पाल (1087 ई.) ने माहौनी में चलाया । सन् 1231 ईसवी में सोहनपाल ने बुन्देलों का शासन सम्भाला । इसने गढ़कुंडार पर कब्जा कर सन् 1257 ई. में इसे अपनी राजधानी बनाया ।

समय में परिवर्तन का चक्र चला । गुलाम वंश का पतन हुआ । चंदेलों की सत्ता महोबा से उखड़ गई । अलाउद्दीन खिलजी ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को जीत लिया। मुहम्मद तुगलक ने गढ़कुण्डार पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। तुगलक वंश का अंत हुआ । सैय्यद वंश के शासनकाल में बुन्देले पुनः स्वतंत्र व शक्तिशाली हो गये । अपने राज्य का विस्तार कालिंजर तक कर लिया ।

16 शताब्दी से बुन्देलखण्ड के इतिहास का एक नया अध्याय आरम्भ होता है । चंदेलों की समाप्ति हो चुकी थी । बुन्देलों का उदय हो रहा था । बुन्देलों ने अपनी राजधानी बदलने का निर्णय लिया । गढ़कुण्डार से अपनी राजधानी स्थानान्तरित कर ओरछा लाये । सन् 1531 ईसवी में बुन्देलों ने अपनी राजधानी ओरछा में बना ली । इस समय बुन्देले राजा रूद्रप्रताप थे । इनके पश्चात् राजा भारती चन्द्र (1531–1554 ई.) राजा बने । इन्होंने सन् 1531 ईसवी में ओरछा दुर्ग का विशाल परकोटा, राजमन्दिर तथा रानीमहल तैयार करवाया । दुर्ग का परकोटा 12 मील लम्बा था ।

राजा भारती चन्द्र की मृत्यु के पश्चात उनके भाई मधुकर शाह (सन् 1554–92 ई.) ओरछा के राजा बने । ये मथुरा से राधा–माधव एवं जुगल किशोर की मूर्तियां ओरछा लाये थे । उनकी रानी गणेश कुंवरि अयोध्या से भगवान रामराजा की

मूर्ति लायी थीं जो अभी भी रामराजा मन्दिर, ओरछा मे प्रतिष्ठित है । अकबर के समय बुन्देलखण्ड पर विभिन्न सूबों का नियन्त्रण था । ऐरछ, कालपी आदि सूबा आगरा से, ललितपुर, चन्देरी, मालवा से, बालाबेहट और धमौनी रायसेन से तथा बाँदा, हमीरपुर सूबा इलाहाबाद से नियन्त्रित थे ।

मधुकर शाह के पुत्र वीरसिंह देव बड़ौनी के जागीरदार थे । ओरछा का राज्य मधुकर शाह के उपरान्त पुत्र रामशाह (1592 ई.) को प्राप्त हुआ । इन दोनों में वीरसिंह देव महत्वकांक्षी थे । इन्होंने अपने राज्य का विस्तार करते हुए ऐरछ, नरवर का इलाका अधिकृत कर लिया । सम्राट अकबर की सेना से भी उनका युद्व हुआ । राजकुमार सलीम द्वारा अपने पिता सम्राट अकबर का विरोध करने पर इन्होंने सलीम का सहयोग किया। सन् 1602 ई. में अबुल फज़ल की दक्षिण भारत से वापसी के समय इन्होंने उसकी हत्या कर दी । अकबर की मृत्यु के पश्चात सम्राट जहांगीर (सलीम) ने वीरसिंह को सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड का राजा बना दिया । रामशाह को ओरछा के बदले चन्देरी और बानपुर का राज्य दे दिया गया । वीरसिंह के इलाके में 81 परगने थे । ये महान दानी , स्थापत्यकला के पारखी, कवियों और विद्वानों के आश्रयदाता थे । इनके 12 पुत्र थे । इनमें से पहले जुझार सिंह फिर पहाड़ सिंह ओरछा के राजा बने । दीवान हरदौल को बड़ा गांव तथा भगवन्त राय को बड़ौनी (दतिया) का राज्य प्राप्त हुआ ।

जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् राजा जुझार सिंह ने सम्राट शाहजहाँ को कर देना बन्द कर दिया । शाहजहाँ ने बकी खां को सेना सहित भेजा किन्तु वह बुन्देली सेना से पराजित हो गया । शाहजहाँ स्वयं विशाल सेना लेकर आया किन्तु इसे भी सफलता नहीं मिली । अकाल के कारण पीड़ित जनता को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से बुन्देलों ने संधि कर ली । इन्हें ओरछा की मनसबदारी प्राप्त हुई । बुन्देलों की अजेयता से चिढ़ कर कुछ लोगों ने इनके विरूद्ध षड़यन्त्र रचा । राजा जुझार सिंह और दीवान हरदौल के मध्य यह षडयन्त्र रचा गया ।

हरदौल एक देशभक्त, वीर, स्वाभिमानी और जनप्रिय थे । ये अपनी भाभी रानी चम्पावती, पत्नी जुझार सिंह, को माता के समान प्यार करते थे । कुछ लोगों ने

जुझार सिंह को इनके रिश्तों के सम्बन्ध में भड़का दिया । राजा के आदेश पर रानी चम्पावती ने विष भरी खीर हरदौल को खाने को दी । हरदौल ने यह जानते हुए भी कि खीर ज़हरीली है उसे खाकर हँसते-हँसते प्राणों की आहुति दे दी ।

चम्पतराय बुन्देला वंश के थे । उन्हें महेबा की जागीर प्राप्त थी । बाद में चम्पतराय को कोंच की जागीर प्रदान की गई । वे नहीं चाहते थे कि बुन्देले मुगलों के आश्रित बने रहें । चम्पतराय मुगलों को फूटी आंख न सुहाता था । शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह के हस्तक्षेप से ओरछा नरेश पहाड़ सिंह ने चम्पतराय की जागीर हासिल कर ली । इस पर खिन्न होकर चम्पतराय ने मुगलों के उत्तराधिकारी युद्ध में ओरंगजेब का साथ दिया । औरंगजेब ने चम्पतराय को यमुना से ओरछा तक का प्रदेश तथा बाराहजारी मनसब प्रदान किया । बाद में चम्पतराय ने यह मित्रता तोड़ते हुये सनदें वापस कर स्वतन्त्रता का नारा बुलन्द किया । अनेक किले जीते । औरंगजेब से दुश्मनी इन्हें मंहगी पड़ी । यत्र-तत्र जान बचाते हुए भागते रहे, अन्त में समर्पण की अपेक्षा आत्महत्या करना ही उचित समझा । स्वयं उन्होंने तथा उनकी पत्नी लाल कुंवारि ने अपने पेटों में कटारे मारकर सन् 1664 ई. में आत्माहुति दे दी ।

चम्पतराय के पुत्र का नाम छत्रसाल था । पिता की मृत्यु के समय इनकी आयु मात्र 16 वर्ष की थी । प्रारम्भ में यह अपने भाई अंगदराय के साथ मुगल सेना में भर्ती हुये । शिवाजी महाराज की प्रेरणा से इन्होंने बुन्देलों के एकीकरण का प्रयास किया । असफलता प्राप्त होने पर इन्होंने स्वयं सेना गठित कर अपना अभियान आरम्भ किया । पिता के विश्वासघाती हत्यारों का वध किया । सन् 1675 ई. में गोंडो से पन्ना जीत कर उसे अपनी राजधानी बनाया । इनकी मुलाकात संत प्राणनाथ से हुई । उन्हें अपने साथ आदर पूर्वक पन्ना ले आये । संत प्राणनाथ ने छत्रपाल को आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु हीरा खदानों की जानकारी दी । छत्रसाल ने छापामार युद्ध में अनेक मुगल सेनापतियों को पराजित किया । इन्होंने छतरपुर नगर बसाया । औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुअज्जम ने बहादुर शाह के नाम से शासन किया ।

छत्रसाल ने बहादुर शाह के आमंत्रण पर उन्हें लोहगढ़ अभियान में सहायोग किया । विजयोपरान्त इन्हें पन्ना राज्य प्राप्त हो गया ।

सम्राट मुहम्मद शाह के शासन काल में मुहम्मद खां बंगश शक्तिशाली हो गया था । उसे सातहजारी मनसब तथा इलाहाबाद की सूबेदारी प्रदान की गई । उसे बुन्देलखण्ड में एरछ, भाण्डेर, कालपी, कोंच, मौदहा, जालौन का इलाका सैन्य खर्च हेतु प्राप्त हुआ । छत्रसाल ने उसके अधिकृत क्षेत्र पर आक्रमण किया । बंगश सन् 1726 ई0 में हुंडा, बाँदा होते हुए जैतपुर की ओर बढ़ा तथा जैतपुर का किला घेर लिया । ओरछा के राजा उदोत सिंह, दतिया के राजा रामचन्द्र, चन्देरी के राजा दुर्जन सिंह, मौदहा के जागीरदार जय सिंह सभी बंगश के सहयोगी बन गये । ऐसी विषम परिस्थिति में वृद्ध छत्रसाल ने सहायता के लिए पेशवा बाजीराव को पत्र लिखा । पेशवा पच्चीस हजार सवार तथा पैदल सेना सहित महोबा पहुँचे । बंगश ने अपने पुत्र कायम खां को सहायतार्थ बुलाया किन्तु मराठों ने उसे बेलाताल के निकट पराजित कर भागने पर विवश कर दिया । बंगश को जैतपुर के किले में घेर लिया । हताश मुहम्मद खां बंगश ने बुन्देलों की शर्त स्वीकार की कि वह दुबारा बुन्देलखण्ड पर आक्रमण नहीं करेगा ।

छत्रसाल ने पेशवा का इस सहयोग के लिए जैतपुर में अभिनन्दन किया । अपने दोनों पुत्रों की रक्षा का भार उन्होंने सौंपा पेशवा को तथा पेशवा को अपना तीसरा पुत्र मानकर अपने राज्य का तिहाई (1/3) भाग जागीर के रूप में प्रदान किया । दो वर्ष पश्चात् महाराज छत्रसाल का देहावसान 1731 ईसवी को हो गया । छत्रसाल ने अपने राज्य के तीन भाग किये थे । ज्येष्ठ पुत्र हृदयशाह को पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, शाहगढ़, कालींजर प्रदान किया । जगतराज को जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, बिजावर, बाँदा प्रदान किया । पेशवा को अर्थात मराठों को कालपी, हटा, हृदयनगर, जालौन, झाँसी, सिरौंज, गढ़कोटा, सागर आदि का भाग प्रदान किया ।

छत्रसाल के राज्य की वार्षिक आय एक करोड़ रूपये से अधिक थी । यह कवियों के आश्रयदाता थे । ये सर्वधर्म सम्भाव के समर्थक थे । इनकी सेना में सभी

धर्मों के सैनिक थे । इनके शासन मे प्रजा सुखी एवं सम्पन्न थी । इन्होने स्वयं भी कई काव्य ग्रन्थों की रचना की थी । इन्हें राष्ट्र नायक कहा गया है ।

महाराजा छत्रसाल के पश्चात् कोई भी बुन्देला राजा पुनः पूरे बुन्देलखण्ड पर एकछत्र राज्य न कर सका । हृदयशाह और जगतरात के पश्चात् उत्तराधिकार की लड़ाई छिड़ गई । छोटी–छोटी रियासतों में बुन्देले शासन करने लगे । बुन्देलों की शक्ति क्रमशः निर्बल होती गयी । इसी समय मराठों का प्रभाव इस क्षेत्र में बढ़ना प्रारम्भ हो चुका था । दूसरी ओर गुसांईयों का भी आगमन हो रहा था ।

2.2.3 बुन्देलखण्ड में मराठों का प्रभाव

छत्रसाल द्वारा प्राप्त जागीर को अपना केन्द्र बना कर पेशवा ने अपनी शक्ति का विस्तार करना प्रारम्भ किया । पेशवा बाजीराव ने इस क्षेत्र की बागडोर अपने सूबेदार गोविन्द पंत खेर को दे दी, जो सागर में रहते हुये इन क्षेत्रों का प्रबन्ध करने लगा । बाँदा और कालपी का क्षेत्र बाजीराव और मस्तानी की अवैध संतान शमशेर बहादुर के हिस्से में आया । झाँसी का प्रबन्ध रघुनाथ हरि निवालकर को सौंपा गया । मराठा बुन्देलों से चौथ वसूला करते थे । बुन्देला मराठों को चौथ देने मे कतराते थे, साथ ही साथ वह मराठों की प्रभुता के अधीन रहना नहीं चाहते थे । इसके बावजूद गोविंद पंत खेर ने बुन्देलखण्ड को केन्द्र बनाकर मराठा सत्ता का चारों ओर विस्तार किया ।

सन् 1761 ई0 में पानीपत का तृतीय युद्ध अहमद शाह अब्दाली और मराठों के मध्य हुआ । मराठे इस युद्ध में पराजित हुये । शमशेर बहादुर तथा गोविन्द पंत शहीद हुये । पेशवा बाजीराव के पुत्र पेशवा बालाजी बाजीराव दुखित होकर प्राण गंवा बैठे, मराठों की शक्ति कमजोर हो गई । इसका प्रभाव बुन्देलखण्ड में भी पड़ा । बुन्देलों ने मराठों के विरूद्ध विद्रोह प्रारम्भ कर दिये । इस अव्यवस्था का लाभ उठा कर अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने इस क्षेत्र पर पुनः मुगल सत्ता की स्थापना करने का

निश्चय किया । मुग़लों के विरूद्ध एक बार पुनः बुन्देले और मराठों ने स्वयं को संगठित किया और नौने अर्जुन सिंह के नेतृत्व में संयुक्त सेनाओं ने तिंदवारी के युद्ध में शुजाउद्दौला के सेना नायक हिम्मत बहादुर को पराजित किया ।

2.2.4 गुसाँईयों का बुन्देलखण्ड अभियान –

गुसाँइयों के प्रारम्भिक इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं होती है । एक कथा के अनुसार यह ज्ञात होता है कि दतिया में अकाल के समय एक महिला ने अपने पुत्रों को किसी साधू को बेच दिया था, सम्भवतः यही इन्दरगिरि तथा अनूपगिरि के नाम से विख्यात हुए ।

इन्दरगिरि ने मोंठ में सन् 1745 ईसवी में अपनी प्रभुता स्थापित की । एक किला बनवाया तथा उसके चारों ओर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया । झाँसी के मराठा गवर्नर नारोशंकर से 1750 ई0 में पराजित होकर इन्दरगिरि अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सेना में चला गया । इन्दरगिरि की मृत्यु के पश्चात् उसका भाई अनूपगिरि अवध की सेना का सेनानायक बन गया । सन् 1764 ई0 में बक्सर की लड़ाई में अनूपगिरि ने शुजाउद्दौला के प्राणों की रक्षा अंग्रेजों से की । उसकी इस बहादुरी से प्रभावित होकर नवाब ने उसे 'हिम्मत बहादुर' की पदवी दी तथा बिन्दकी और आस–पास के परगने जागीर के रूप में दे दिये । इसी हिम्मत बहुादर गुसाँई ने सन् 1763 ई0 में तिन्दवारी के युद्ध में बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर पराजय प्राप्त की थी ।

वह हतोत्साहित नहीं हुआ तथा बुन्देलखण्ड में अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए प्रयास करता रहा । अवध के नवाब की विशाल सेना लेकर पुनः बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया तथा दतिया के राजा रामचन्द को पराजित कर उनसे चौथ वसूल की, इसके पश्चात मोंठ तथा गुरसरांय पर आक्रमण किया । गुरसरांय के राजा बालाजू गोविन्द तथा मराठों की सम्मिलित सेना से परास्त होकर वह अवध वापस

चला गया । परन्तु उसकी बुन्देलखण्ड पर प्रभुता स्थापित करने की लालसा समाप्त नहीं हुई । अन्त में हिम्मत बहादुर गुसाँई 1775 ई0 में मराठों की सेना में आ गया । मराठों ने उसे अपने उत्तरी अभियानों के लिए नियुक्त किया । इसी बीच हिम्मत बह्युदर गुसाँई का सम्पर्क बाजीराव–मस्तानी के पौत्र शमशेर बहादुर के पुत्र, अली बहादुर के साथ हुआ । इन दोनों ने मिलकर इस क्षेत्र में मराठा प्रभुता के पतन के क्रम को रोकने का निश्चय किया । इन दोनों ने बाँदा, चरखारी, बिजावर आदि को जीतते हुए पन्ना, छतरपुर को भी अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया । इस प्रकार मराठा सत्ता पुनः स्थापित हुई । कालिंजर का घेरा डालते हुए अली बहादुर की मृत्यु हो गई । उसके पुत्र शमशेर बह्युदर ने आकर मोर्चा सम्हाला और स्वयं को बाँदा का राजा घोषित किया ।

इस बीच पूना दरबार में नाना फड़नवीस की मृत्यु हो गई । अंग्रेजों ने पेशवाओं से 'बसीन की संधि' पर हस्ताक्षर करा लिये । हिम्मत बहादुर गुसाँई मराठों का साथ छोड़कर अंग्रेजों से जा मिला । उसने इस क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता स्थापना के लिए भरसक प्रयास किये । इसके बदले अंग्रेजी शासकों ने हिम्मत बहादुर को बुन्देलखण्ड में यमुना के दाहिने किनारे पर 20 लाख रूपया वार्षिक आय की एक जागीर देने का वचन दिया ।

2.2.5 बुन्देलखण्ड में कम्पनी शासन–

सन् 1803 ईसवी में कर्नल पावेल एवं जॉन बेली मराठों के साथ 'बसीन की पूरक संधि' के माध्यम से बुन्देलखण्ड में शासन व्यवस्था सम्भालने आ पहुँचे । कम्पनी शासन ने देशी राज्यों को आन्तरिक व्यवस्था में स्वतंत्रता प्रदान की तथा बाह्य रक्षा का उत्तरदायित्व लेकर करार पत्रों पर हस्ताक्षर करवाये । पिंडारियों के दमन हेतु लार्ड बारेन हेस्टिंग्स जालौन और दतिया स्वयं आया । ठगों के दमन हेतु लार्ड विलियम

बैंटिक ने बुन्देलखण्ड का भ्रमण किया व कर्नल स्लीमेन के द्वारा उन्हे दंड दिलाया तथा बसाया गया ।

सन् 1804 ई. में बाँदा 1817 ई. में झाँसी तथा 1820 ई0 में सागर–नर्मदा टेरिटरीज प्रांत बनाये गये । कालपी से बाँदा का भू–भाग 'अपर प्रविन्सेज' के नाम से निर्मित किया गया । सन् 1819 ई0 में 'उत्तरी बुन्देलखण्ड' के नाम से हमीरपुर तथा 'दक्षिणी बुन्देलखण्ड' के नाम से बाँदा जिला गठित हुआ । सन् 1835 ई0 में डिप्टी कमिश्नर को जिले की कार्यपालिका, न्यायपालिका की शक्तियाँ पुलिस व्यवस्था सहित प्रदान की गईं । सम्पूर्ण प्रदेश उत्तरी–पश्चिम प्रदेश के गवर्नर के अधीन कर दिया गया । बोर्ड ऑफ कमिश्नर्स भूमि कर वसूली हेतु लगान तय किया करता था । लगान की वसूली तीन बार सावन, अगहन, चैत्र माह में होती थी । प्रत्येक जिले में जज, मजिस्ट्रेट नियुक्त थे । इनकी सहायता के लिये अमीन तथा मुंसिफ होते थे । कम्पनी द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य की ओर सन् 1833 ई0 के चार्टर के पश्चात ध्यान दिया गया । सरकार ने अकाल, दुर्भिक्ष में कल्याणकार्यों पर विशेष ध्यान नहीं दिया । ईसाई धर्म के प्रचार को पर्याप्त संरक्षण व सुविधायें प्रदान की गईं ।

सन् 1803 ईसवी से 1857 ई0 के मध्य कम्पनी शासन द्वारा बुन्देलखण्ड की अनेकों रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बनाया गया । ओरछा, टिहरी, दतिया और समथर की रियासतों के साथ सन्धियाँ करके एवं जालौन रियासत 1840 ई., में झाँसी रियासत 1853 ई0 में, जैतपुर रियासत 1849 ई. में, खाड़ी रियासत 1850 ई. में इनके अलावा 1857 के संग्राम में अंग्रेजों का विरोध करने के कारण छोटी–छोटी रियासतों तिरगुवां, चिरगांव, परवर, विजय, राधौगढ़, शाहगढ़, बानपुर आदि को अंग्रेज साम्राज्य ने अपने अधीन कर लिया । इन रियासतों को अपने साथ मिलाने के अतिरिक्त अंग्रेजों ने कुछ जागीरदारों को इस शर्त पर सनदें प्रदान की कि वे कभी ब्रिटिश सरकार का विरोध नहीं करेंगे तथा भविष्य में भी ब्रिटिश सरकार के प्रति उन्हें वफादार रहना होगा । सरकार का इन पर केवल राजनैतिक नियंत्रण होगा, जबकि शेष प्रबन्ध

वहीं के राजा करेंगे ।[1] इस प्रकार 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों का साम्राज्य फैल चुका था ।

यहाँ के जागीरदारों तथा सामन्तों को अंग्रेजों के साथ समझौता करके न बाहरी आक्रमण का डर रहा न ही आन्तरिक विद्रोह का । आराम की जिन्दगी का फल यह हुआ कि इन जमीदारों का युद्ध कौशल, साहस तथा परिश्रमी स्वभाव आदि गुण स्वतः समाप्त हो गये । इनका पतन होने लगा । विलासिता में डूबे रहने के कारण जागीरों का उचित प्रबन्ध नहीं किया । किसानों से सम्बन्ध खराब हो गये । धीरे–धीरे जागीरें घटती गईं । यह स्थिति बुन्देलों के साथ–साथ मराठा जागीदारों की भी हुई । महाराजा छत्रसाल के समय से स्वाधीनता, देशभक्ति, साहस, शौर्य और पराक्रम की जो परम्परा शुरू हुई थी जिसे गोविन्द पंत खेर जैसे मराठा सूबेदारों ने आगे बढ़ाया था अब वह नष्ट होकर धोखा, छल–कपट आदि दुर्गुण इन जमींदारों के चरित्र में आ गये । अधिकाँशों ने 1857 के संग्राम में अंग्रेजी सरकार का खुलकर साथ दिया था ।

2.2.6 बुन्देलखण्ड एवं 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम–

सन् 1804 ईसवी से प्रारम्भ होकर सन् 1857 ईसवी तक सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड पर अंग्रेजी साम्राज्य स्थापित हो चुका था । लार्ड डलहौजी की गोद न लेने की प्रथा प्रारम्भ करने के पश्चात् अंग्रेजों को रियासतें व जागीरें हड़पने में सरलता हुई। उसकी इस हड़प नीति का शिकार झाँसी रियासत भी हुई । बुन्देलखण्ड में इस घटना का विशेष प्रभाव पड़ा । इसने अंग्रेजों के विरूद्ध असंतोष भड़काया ।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ होने के अनेक कारण थे । यथा–धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक । इन सभी से सबसे बडा कारण था ; सैनिकों में असंतोष । भारतीय सैनिकों को सेना में उच्च पद नहीं मिल पाते थे । भारतीय अधिक से अधिक सूबेदार, मेजर के पद तक वह पहुँच सकता था । यहाँ तक पहुंचने के लिए भी उसे अनेकों परीक्षणों से गुजरना पड़ता था । अंग्रजों की अपहरण नीति को भारतीय हिन्दू सैनिकों ने पसंद नहीं किया ।[2] ब्रिटिश सरकार की भेदभाव पूर्ण नीति के

1. एचीन्सन, सी..यू., 1909,ट्रीटीज, इंगेजमेन्टस् एण्ड सनद, भाग–पाँच, कलकत्ता ।
2. मैलेसन, के.एन., लाइफ ऑफ इण्डियन ऑफिसर्स, भाग–एक ।

कारण भारतीय सैनिकों में अत्यधिक असंतोष था । सैनिक यह समझने लगे थे कि उनके ही शस्त्रों के बल पर अंग्रेजी साम्राज्य टिका हुआ है । अतः वह चाहें तो उसे समाप्त भी कर सकते हैं ।

भारतीय सैनिकों ने यह सोचा कि अपहरण की नीति के कारण भारत के अधिकतर क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल होंगे और सैनिकों को भी उन दूर–दराज के क्षेत्रों तक जाना पड़ सकता है । कारतूसों में सुअर और गाय की चर्बी मिले होने की घटना ने तो हिन्दू और मुसलमान दोनों सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को उत्तेजित कर दिया । ब्रिटिश शासन काल में भारतीय सैनिकों की संख्या अंग्रेजी सैनिकों की संख्या से ज्यादा हो चुकी थी । डलहौजी के भारत छोड़ने के समय तक भारतीय सैनिकों की संख्या दो लाख पैंतीस हजार थी, जबकि अंग्रेज सैनिक पैंतालीस हजार तीन सौ बाइस थे ।[1]

बुन्देलखण्ड में उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त 1857 विद्रोह के कुछ अन्य कारण भी थे । अंग्रेजों की आर्थिक नीति के कारण भारतीय उद्योग धंधे नष्ट हो गये थे । इसका प्रभाव बुन्देलखण्ड में भी पड़ा था । अनेकों बुन्देला तथा मराठा जागीरदार सरकार से इसलिये नाराज थे क्योंकि उनमें से अधिकांश की जागीरें जब्त कर ली गई थीं । इनमें उदरगांव, नाठौर और जिगनी के कई जागरीदार भी थे । अंग्रेज सरकार के विरूद्ध जो असंतोष फैल रहा था उनमें यह भी अफवाह फैली थी कि बाजार में जो आटा बिक रहा है उसमे हड्डी का चूरा मिलाया गया है । इसके साथ कारतूस वाली घटना ने तो आग में घी का काम किया ।

बाँदा में भी सरकार की साम्राज्यवादी नीति से वहां के जागीरदार साथ ही साथ वहाँ के नवाब अली बहादुर (द्वितीय) भी रुष्ट थे । असंतोष की यह लहर बुन्देलखण्ड के लगभग सभी जिलों में व्याप्त थी । निःसंतान झाँसी के राजा गंगाधर राव ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मृत्यु से पूर्व पांच वर्ष के बालक दामोदर राव को गोद लिया, लेकिन सरकार ने इस गोद को मान्यता प्रदान नहीं की । गंगाधर राव ने अपनी पत्नी महारानी लक्ष्मीबाई को बच्चे के व्यस्क होने तक रियासत का रीजेन्ट

1. रावर्ट्स, पी.ई., हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया ।

नियुक्त किया, लेकिन सरकार की हड़प नीति के कारण इसे भी मान्यता नहीं दी गई । गंगाधर राव ने कम्पनी सरकार को पत्र लिखकर अपने परिवार द्वारा अंग्रेजों की की गई सेवा का हवाला दिया, लेकिन इसका भी कोई प्रभाव नहीं हुआ ।[1]

झाँसी के महाराज गंगाधर राव की मृत्यु सन् 1853 ईसवी में हो गई । रानी लक्ष्मीबाई को रूपया 5000/– मासिक पेंशन स्वीकृत कर मेजर माल्कम ने झाँसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने का आदेश दिया । झाँसी के दरबार ने शासन दामोदर राव के नाम से चलाने का निश्चय किया । रानी ने अंग्रेजों से कई अपीलें की सभी निरर्थक सिद्ध हुईं । झाँसी का राज्य अंग्रेजी शासन में मिलाने का रानी ने विरोध किया और घोषणा की कि "मैं अपनी झाँसी अंग्रेजों को नहीं दूंगी" तथा पेंशन ठुकरा दी । इस घटना से लोगों की नसों में विद्रोह रूपी रक्त का संचार हुआ और विद्रोह का सूत्रपात्र हो गया । पाठक[2] (1987) लिखते हैं कि "झाँसी में स्थित बारहवीं पैदल सेना के एक जवान के रिश्तेदार ने दिल्ली से एक पत्र लाकर झाँसी के सैनिकों में वितरित किया कि बंगाल प्रेसीडेन्सी के सभी सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और झाँसी के सैनिकों ने विद्रोह में हिस्सा नहीं लिया, यह सैनिक जाति के विरूद्ध एक शर्मनाक पूर्ण कार्य है । यह सूचना अमन खॉन नामक सैनिक ने रावर्ट हैमिल्टन को दी थी ।

5 जून को 12 वीं देशी पैदल सेना के 45 जवानों ने झाँसी में विद्रोह की घोषणा की तथा स्टार फोर्ड पर अधिकार कर लिया । किले में रखा हुआ बारूद तथा खज़ाना विद्रोहियों ने अपने हाथ में ले लिया । सरकार ने पड़ोसी रियासतों जैसे ओरछा, दतिया और गुरसरांय के राजाओं से मदद की माँग की । रियासतों के राजाओं ने कोई जवाब नहीं भेजा । उसी दिन रानी झाँसी के समर्थकों की प्रेरणा से यहाँ की सेना ने विद्रोह करते हुए कैप्टन डनलप, लैफ्टीनेन्ट कैम्पबेल और टर्नबुल तथा 12वीं पैदल सेना के दो स्वामी भक्त हवलदारों को गोली से उड़ा दिया । 7 जून को दो यूरोपीय स्कॉट और परिसिल को कैप्टन स्कीने ने रानी के पास इस निवेदन के साथ भेजा कि जैसे ही यूरोपीय अधिकारी स्टार फोर्ड से बाहर निकलते हैं वैसे ही रानी उनको संरक्षण दे दें । लेकिन विद्रोहियों ने इन लोगो का भी कत्ल कर दिया । रानी ने

---

1. पाठक, एस.पी., 1987, झाँसी डियूरिंग दी ब्रिटिश रूल, रामानन्द विद्या भवन, नई दिल्ली ।
2. यथा

विद्रोहियों को अपनी बंदूक देकर सहायता की । इस प्रकार 7 तथा 8 जून को स्टार फोर्ड पर आक्रमण किया गया जिसमें कैप्टन जोर्डन को मार डाला गया । इसके पश्चात् वहाँ रह रहे सभी यूरोपीयों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा क्रान्तिकारी खींच कर उन्हें जोखन बाग ले आये, उनमें से 66 लोगों को कत्ल कर दिया गया, इस भयानक दृश्य में बख्शीस अली तथा रानी के समर्थकों ने मुख्य भूमिका निभाई ।[1]

झाँसी में प्रारम्भ हुए विस्फोट की चिंगारी पड़ोसी जिले ललितपुर में भी फैल गई । इसके साथ चंदेरी, तालबेहट भी प्रभावित हुए । ललितपुर के विद्रोही सागर और शाहगढ़ की ओर चले गये । हमीरपुर में भी विद्रोह भड़क गया । कालपी, उरई और जालौन में भी विद्रोह की लहर फैल गई । इस प्रकार पूरे बुन्देलखण्ड में यहाँ की क्रान्तिकारी जनता तथा आन्दोलनकारियों ने ब्रिटिश सरकार का डटकर मुकाबला किया । झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बाँदा के नवाब अली बहादुर, कानपुर के मर्दन सिंह तथा अन्य विद्रोही राजाओं ने अंग्रेजी हुकूमत को गहरा धक्का दिया ।

इस विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेज सेना ने झाँसी को घेरना शुरू कर दिया । ह्यूरोज की सेना बानपुर के राजा को हराकर सागर और शाहगढ़ को कब्जे में लेते हुये तालबेहट, चन्देरी होते हुए झाँसी की ओर बढ़ी । इस सेना ने 23 मार्च 1858 ईसवी को झाँसी किले पर आक्रमण किया । रानी के तोपची गुलाम गौस खाँ ने वीरता से मुकाबला किया । तात्या टोपे रानी की सहायता को चरखारी से चले किन्तु अंग्रेजी सेना ने उन्हे बीच में ही रोक लिया । तात्या भाग कर कालपी चले गये । अंग्रेजी सेना ने झाँसी पर तीन ओर से हमला बोल दिया । मजबूरी में रानी को झाँसी के किले से भागना पड़ा । रानी को किले से भागने देने में वीरांगना झलकारी बाई का योगदान अविस्मरणीय है । इन्होंने स्वयं रानी को भेष बनाकर अंग्रेजों को झाँसी में ही उलझाये रखा तथा रानी मौके का फायदा उठाकर पुरूष वेष धारण कर कालपी की ओर बढ़ी । वह अपनी पीठ पर दामोदर को बांधे हुई थीं । बाँदा के नवाब, शाहगढ़ तथा बानपुर के राजा भी सेना सहित कालपी पहुँचे । कालपी युद्ध में अंग्रेजी सेना विजयी हुई । रानी ग्वालियर की ओर बढ़ी । रानी ने सिधिंया की सेना को हराकर ग्वालियर पर कब्जा

---

1. एहकिंशन, ई. टी. (Eds), बुन्देलखण्ड गजेटियर ।

कर लिया । अंग्रेज सेना भी ग्वालियर की ओर बढ़ी । सिंधिया की सेना अंग्रेजी सेना के समर्थन में आ गई । रानी व पेशवा की सेना 19 जून 1858 ई0 को मुरार में पराजित हो गई । वहां से मुट्ठी भर सैनिकों के साथ रानी भागीं , साथ में रामचन्द्र देशमुख भी थे । रानी का घोड़ा सोन रेखा नाले को पार न कर पाया । पीछा करते दो अंग्रेज सैनिकों को रानी ने मार डाला । रानी के सिर पर भारी चोटें आई हुईं थीं । बचने की कोई सम्भावना न थी । रानी ने रामचन्द्र से निवेदन किया कि उनका शव अंग्रेजों के हाथों मे न पड़े । वीरगति प्राप्त होने पर रामचन्द्र राव ने एक साधू के फूस के झोपड़े में रानी का शव रखकर अग्नि प्रदीप्त कर दी तथा स्वयं दामोदर राव को लेकर फरार हो गये । इस प्रकार रानी द्वारा प्रारम्भ की गई स्वतंत्रता की लड़ाई का दुखःद अंत हुआ ।

लार्ड कैनिंग ने घोषणा की जो विद्रोही आत्मसमर्पण कर देंगे सरकार उनके अपराध क्षमा कर उनकी समुचित व्यवस्था करेगी । इस घोषणा के उपरांत बानपुर, शाहगढ़, नवाब अली बहादुर (द्वितीय) कर्वी, दत्तक पुत्र दामोदर राव आदि ने विभिन्न स्थानों पर आत्मसमर्पण कर दिया ।

सन् 1886 ई0 में सागर, दमोह, शाहगढ़, 'सेन्ट्रल प्रविन्सेज' में मिला दिये गये । झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर, ललितपुर 'यूनाइटेड प्राविन्सेज' में शामिल किये गये । इस प्रकार ऐतिहासिक बुन्देलखण्ड के भू–भाग को प्रशासनिक व्यवस्था के तहत दो भागों में विभाजित कर दिया गया । स्वतंत्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्यों के गठन के पश्चात् लगभग यही विभाजन बुन्देलखण्ड का बनाये रखा गया । इस प्रकार बुन्देलखण्ड, बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र एवं बुन्देलखण्ड(मध्य प्रदेश) क्षेत्र के नाम से जाना जाने लगा ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बुन्देलखण्ड का इतिहास हमें रामायण काल से देखने को मिलता है, जो निरन्तर संघर्ष एवं उथल–पुथल भरा रहा है । कभी भी किसी राजा का शासन, अपवाद छोड़कर, लम्बे समय तक सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड पर नहीं रहा है । इस क्षेत्र के निवासियों ने कभी किसी की गुलामी करना पसंद नहीं किया ।

यदि किसी ने गुलामी स्वीकार की है तो वह अपने स्वार्थवश मजबूरी में । यही सतत् संघर्ष का इतिहास रहा है भारत की हृदयस्थली बुन्देलखण्ड का ।

2.3 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि

बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अध्ययन के समय यह पाया कि बुन्देलखण्ड का विस्तार विभिन्न साम्राज्यों के समय अलग–अलग रहा है । भले ही बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक सीमाएँ अलग–अलग रही हों परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण स्वयं प्रकृति ने अपने हाथों से किया हो। इतनी स्पष्ट, सुनिश्चित एवं सुरक्षित भौगोलिक सीमाएँ बहुत कम क्षेत्रों की देखने को मिलती हैं ।

विभिन्न पुरातत्वविद्, इतिहासकारों एवं साहित्यकारों ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सीमाओं का वर्णन विभिन्न कालों एवं शासन के आधार पर किया है । इनके वर्णनों मे विभिन्नता देखने को मिल सकती है, परन्तु जब इन्हें गहराई से देखा जाए तो कुछ समानताएँ स्पष्ट नजर आती हैं ।

अली[1] (1966) ने विभिन्न पुराणों के आधार पर विन्ध्य क्षेत्र में तीन जनपद– विदिशा, दशार्ण एवं करूष की स्थिति का विवरण दिया है । उन्होंने 'विदिशा' में ऊपरी बेतवा का बेसिन; 'दशार्ण' में धसान नदी, उसकी गहरी घाटियों से लेकर सागर का पठार; 'करूष' के अन्तर्गत सोन नदी के बीच का समतलीय मैदान समाविष्ट किया है ।

इतिहासकार जयचन्द्र विद्यालंकार[2] ने विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड को तीसरा प्रान्त माना है । इसमें बेतवा (वेत्रवती) , धसान (दशार्ण) और केन (शुक्तिमती) नदी के क्षेत्र एवं नर्मदा की ऊपरी घाटी और पंचमढ़ी से अमरकण्टक तक का पर्वतीय क्षेत्र एवं पूर्वी सीमा पर टोंस नदी को शामिल किया है । उन्होंने बुन्देलखण्ड की इन सीमाओं का वर्णन पुराणों के आधार पर किया है ।

1- Ali, S.M., 1966, The geography of the puranas.

2. विद्यालंकार, जयचन्द्र, भारतभूति और उसके निवासी ।

पुरातत्ववेत्ता कनिंघम[1] (1869) के अनुसार बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत यमुना का दक्षिणी प्रदेश, पश्चिम में बेतवा नदी से पूर्व में चन्देरी और सागर के जिलों सहित विन्ध्यवासिनी देवी के मंदिर तक दक्षिण में नर्मदा नदी के तट पर बिलहरी तक विस्तृत भाग शामिल रहा ।

श्रीवास्तव[2] लिखते हैं कि सर जार्ज ग्रिथर्सन ने बुन्देली भाषा के आधार पर बुन्देलखण्ड का भौगोलिक क्षेत्र निर्धारित किया है । उनके मतानुसार बुन्देलखण्ड उत्तर में चम्बल नदी के उस पार मैनपुरी, आगरा इटावा के दक्षिणी भाग तक, पश्चिम में पूर्वी ग्वालियर तक, दक्षिण में सागर, दमोह तक ही नहीं भोपाल का पूर्वी भाग, नर्मदा के दक्षिण में नरसिंहपुर, होशंगाबाद, सिवनी, बालाघाट, छिन्दवाड़ा के कुछ क्षेत्रों तक फैला हुआ है ।

तिवारी[3] (1933) के अनुसार जिस भू–भाग के उत्तर में यमुना का प्रचण्ड प्रवाह, पश्चिम में मन्द–मन्द बहने वाली चम्बल और सिन्धु नदियाँ और दक्षिण में नर्मदा नदी तथा पूर्व में बघेलखण्ड है वही बुन्देलखण्ड है।

उपरोक्त एवं पिछले सभी वर्णनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड प्रदेश की सीमा रेखाएं बिल्कुल स्पष्ट एवं अधिकतर प्राकृतिक हैं । उत्तर में यमुना नदी, दक्षिण में महादेव पर्वत(गोण्डवाना श्रेणियाँ), उत्तर–पूर्व में केन नदी, पूर्व में भाण्डेर श्रेणियाँ,दक्षिण–पूर्व में मेकल पर्वत श्रेणी, उत्तर–पश्चिम में चम्बल एवं सिंध नदियों के क्षेत्र तथा मुरैना और शिवपुरी के पठार, पश्चिम में ऊपरी बेतवा, सिंध नदियां तथा मध्य भारत का पठार एवं विन्ध्य श्रेणियाँ हैं ।

बुन्देखण्ड की भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषाई इकाइयों में अदभुत समानता है । भूगोल वेत्ताओं का मत है कि बुन्देलखण्ड की सीमाएँ स्पष्ट हैं और भौतिक तथा सांस्कृतिक रूप में निश्चित हैं । यह भारत का एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है जिसमें न केवल संरचनात्मक एकता, भौम्याकार की समानता, जलवायु की समानता है

---

1. कनिंघम, 1869, ए आर्केलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग–21, वाराणसी ।
2. श्रीवास्तव, डॉ. रमेंश चन्द्र (सम्पादक), बुन्देलखण्ड; साहित्यिक ऐताहिसिक सांस्कृतिक वैभव, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा, पृष्ठ–4 ।
3. तिवारी, गोरेलाल, 1933, बुन्देलखण्ड का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा, काशी ।

वरन् उसके इतिहास, अर्थव्यवस्था, सामाजिकता और संस्कृति का आधार भी एक है । वास्तव में समस्त बुन्देलखण्ड में सच्ची सामाजिक, आर्थिक और भावात्मक एकता है । यह एक भौगोलिक प्रदेश है ।

2.3.1 भौगोलिक संरचना – बुन्देलखण्ड की धरातलीय संरचना प्रमुखतः विन्ध्याचल पर्वत की श्रंख्लाओं से अच्छादित होने के कारण पहाड़ी एवं पठारी है । कुछ मैदानी भूभाग भी है । इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की चट्टानों का क्रम पाया जाता है। चौरसिया[1] के अनुसार जिसमें प्रमुख हैं – 1. आर्कियन क्रम 2. संक्रमित क्रम 3. विन्ध्य क्रम तथा 4. नवीनतम जमाव । झाँसी, ललितपुर, महोबा तथा छतरपुर जनपद की बिजावर तहसील आर्कियन चट्टानों का प्रतिनिधित्व करती है । संक्रमित क्रम की चट्टानें ललितपुर की महरौनी तहसील में पायी जाती हैं । विन्ध्य क्रम की चट्टानों के तीन रूप देखने को मिलते हैं – भाण्डेर, रीवा और कैमोर क्रम । भाण्डेर और रीवा क्रम की चट्टानें दमोह जिले में पायी जाती हैं । कैमोर क्रम की चट्टानें ललितपुर की महरौनी तहसील, बाँदा के कालिंजर क्षेत्र, चित्रकूट, मऊ क्षेत्रों मे पायी जाती हैं । यह चट्टाने विन्ध्य पठार में खड़े स्कार्प का निर्माण करती हैं । इसने दक्षिण और उत्तरी भारत के मध्य विभाजन रेखा का कार्य किया है । नवीनतम जमाव ग्रेनाइट चट्टानों के ऊपर कॉप मिटटी के जमाव को अभिव्यक्त करता है । जैसे–जैसे हम दक्षिणी बुन्देलखण्ड से उत्तरी बुन्देलखण्ड में यमुना नदी की ओर चलते हैं वैसे–वैसे मिट्टी के कणों का आकार महीन से महीनतर होता जाता है । जालौन, हमीरपुर, बाँदा तथा चित्रकूट जनपद के उत्तरी क्षेत्रों में इस मिट्टी का व्यापक जमाव देखने को मिलता है । यह मिट्टी यहाँ की कृषि अर्थ व्यवस्था के लिये मूलाधार प्रस्तुत करती है ।

2.3.2 भौतिक बनावट[2] – सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र घिसी–पिसी धरातलीय संरचना को प्रकट करता है । इसका लगभग 68 प्रतिशत क्षेत्र समुद्र तल से 300 मीटर से कम ऊँचा है । लगभग 4 प्रतिशत क्षेत्र 450 मीटर से अधिक ऊँचा तथा शेष भाग समुद्र तल से 300 से 450 मीटर ऊँचा है ।

---

1. चौरसिया, डॉ. रामआसरे, बुन्देलखण्ड की भौतिक बनावट, बुन्देलखण्ड : साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव में एक लेख, डॉ. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव (सम्पादक)।
2. यथा ।

उत्तर का एक तिहाई (1/3) भाग समतलीय मैदानी भाग है जो 300 मीटर से कम ऊँचा है । इसके दक्षिण में विन्ध्यन पठार विद्यमान है जो 300 से 450 मीटर ऊँचा क्षेत्र है । मुख्य रूप से ग्रेनाइट चट्टानों की संरचना वाला यह क्षेत्र कहीं–कहीं 600 मीटर ऊँची चोटियों को प्रदर्शित करता है ।

2.3.3 जल संसाधन – बुन्देलखण्ड में छोटी–बड़ी कई नदियाँ हैं । यथा–यमुना, चम्बल, सिंध, पहूज, बेतवा, धसान, वीला, केन, टौंस, वाछिन, सोनार, गड़रा, मदरार, बेरमा, हिरन, जामुनी, जमडार, सजनाम, उर उर्मिला, पटनै और नर्मदा आदि। बुन्देलखण्ड की सभी नदियों का उद्‌गम स्थल मध्य प्रदेश में है । बुन्देलखण्ड में कई जलाशय भी हैं । यथा – पहूज जलाशय, बरूआसागर, बड़वार झील, स्योढ़ी झील, पचवाड़ा झील, डक्कन तथा पारीछा जलाशय, अरहर ताल, मानिकपुर ताल, मझगवा ताल, बेलाताल, राजपुर सागर, कीर्तिसागर, मदनसागर तथा टीकमगढ़ के नंदवारा, वीरसागर अरझर झील, जगतसागर, गोराताल, गगँऊ जलाशय, माताटीला और सपरार जलाशय आदि ।

बुन्देलखण्ड का ढ़ाल उत्तर की ओर है तथा केवल नर्मदा कछार का ढ़ाल उत्तर से दक्षिण की ओर है । इस कारण वर्षा का समूचा जल टौरियों एवं पहाड़ियों के मध्य के ढ़ालों से दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित होता है । नर्मदा को छोड़कर बुन्देलखण्ड की समस्त नदियाँ आपस में संगम बनाती हुई अंत में यमुना या गंगा नदी में समाहित हो जाती हैं । सोन व टौंस गंगा में मिलती हैं बाकी नदियाँ यमुना में । कुछ बड़ी नदियों को छोड़कर जैसे सोन, बेतवा, सिन्ध, केन, टौंस, नर्मदा आदि अधिकांश नदियाँ पठारी एवं बरसाती हैं जिनमें वर्षा होने पर जल भर जाता है, बाद में नाले के समान हो जाती हैं । ग्रीष्म ऋतु में तो कई नदियाँ सूख जाती है ।

2.3.4 वर्षा – बुन्देलखण्ड की औसत वर्षा 95 सेमी है । इसमें से 85 सेमी वर्षा जून से सितम्बर तक चार मास में हो जाती है । वह भी अधिकतर 40 दिनों की वर्षा में, शेष 10 सेमी वर्षा आठ माह में मात्र 6 दिनों में हो जाती है । कुछ महीने वर्षा विहीन हो जाते हैं । 85 सेमी में भी 40 सेमी वर्षा मात्र 20 घण्टों में हो जाती है । इसका

परिणाम यह होता है कि धरती पर्याप्त पानी सोख नहीं पाती है । घने वनों के अभाव में वर्षा का पानी उपजाऊ मिट्टी को बहा ले जाता है ।[1]

2.3.5 जलवायु – बुन्देलखण्ड की जलवायु पूर्वी तटीय तथा पश्चिमी तटीय जलवायु का मिश्रित रूप है । यहाँ का औसत वार्षिक तापमान 25^0 सेल्सियस रहता है । झाँसी का औसत तापमान 27^0 सेल्सियस तथा उरई का 23^0 सेल्सियस रहता है ।

ग्रीष्मऋतु में औसत तापमान 30^0 से 35^0 सेल्सियस के मध्य रहता है । अब यह बढ़ रहा है, किसी–किसी दिन तापमान 45^0 से भी अधिक हो जाता है । इस ऋतु में दोपहर के समय लू के थपेड़े चलते हैं । बाँदा जनपद में अन्य क्षेत्रों की तुलना में तापमान अधिक रहता है एवं लू भी ज्यादा दिनों तक चलती है । मई–जून का महीना बहुत गर्म, सूखा और झुलसाने वाला होता है । मध्य जून के पश्चात् मानसूनी वर्षा का समय प्रारम्भ हो जाता है । वातावरण उमस एवं तेज गर्मी का होता है । मध्य जुलाई से सितम्बर तक का समय सबसे अधिक वर्षा वाला होता है ।

अक्टूबर से फरवरी माह तक मौसम ठण्डा व सुहावना रहता है । शीत ऋतु मध्य दिसम्बर से प्रारम्भ होती है । इस ऋतु का औसत तापमान 16^0 से 29^0 सेल्सियस के मध्य रहता है । रातें ठण्डी होती हैं । कभी–कभी पाला भी पड़ता है । 15 मार्च के पश्चात् तापमान बढ़ने लगता है एवं मौसम प्रायः शुष्क रहता है ।

2.3.6 वनस्पति एवं वन – वन प्राकृतिक रूप से अत्यधिक उपयोगी होते हैं । पर्यावरण की दृष्टि से तो वनों का महत्व है ही । जीवकोपार्जन की दृष्टि से भी वन उपयोगी होते हैं । वन पर्यावरण की दृष्टि से बहाव अवरोधक, मृदा अपरदन रोधक, वृष्टि उत्प्रेरक, भूमि ताप नियंत्रक एवं पर्यावरण रक्षक हैं । इस दृष्टि से राष्ट्रीय वन्य नीति के अनुसार 33 प्रतिशत भू–भाग में वन होना चाहिए । इसके प्रतिकूल बुन्लखण्ड में 1 प्रतिशत से भी कम भू–भाग पर वन है । पन्ना, दमोह, सागर जनपदों में वनों का क्षेत्रफल 32 प्रतिशत है । जालौन, हमीरपुर, और बाँदा में वन सम्पदा को कृषि कार्यों के

---

1. श्रीवास्तव, डॉ. रमेशचन्द्र(सम्पादक), साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा, पृष्ठ–13 ।

कारण समाप्त प्रायः सा कर दिया गया है । दतिया और झाँसी जनपदों में झाडियाँ और घासें पाई जाती हैं ।

बुन्देलखण्ड में सागौन, ढ़ाक, सेमल, सेलई, बबूल प्रमुख महत्वपूर्ण वृक्ष हैं । खैर, हिगोंटा, तेन्दू आदि के वृक्ष भी वनों में पाये जाते हैं । तेन्दू के वृक्ष चित्रकूट, पन्ना, छतरपुर तथा सागर में प्रचुर मात्रा में पाये जाते है । खैर, महुआ, बेला, आँवला, बहेरा, अमलतास, अरूसा, सर्पगन्धा, गिलोय, गोखरू आदि प्रचुर मात्रा में मिलते है । फलों में शरीफा, बेर, चिरौंजी, खजुरिया, करौंदा आदि होते है ।

2.3.7 मिट्टी – बुन्देलखण्ड की मिट्टी में विविधता पाई जाती है । यहाँ भूमि की ऊँचाई–निचाई के अनुसार मिट्टी में परिवर्तन देखने को मिलता है । यहाँ की मिट्टी को तीन वर्गों में रखा जा सकता है। (क) उच्च भूमि की मिट्टियाँ (ख) निम्न क्षेत्रों की मिट्टियां जिन्हे लाल व काली मिट्टियों में वर्गीकृत किया गया है (ग) नदीकृत मिट्टियां ।

उच्च भूमि की मिट्टियां विन्ध्यपठार में पायी जाती है । इनके अंतर्गत् पडुवा, मार और काबार मिट्टियां आती हैं ।

निम्न प्रकार की मिट्टियों के अन्तर्गत मार, काबर, पडुवा और राकड़ मिट्टियां है । मार चूना युक्त काले रंग की मिट्टी है । इसमें कहीं–कहीं काकर मिट्टी भी मिली होती है । जिससे इसमें वायु प्रवेशनीयता बढ़ जाती है । यह मिट्टी अधिक समय तक नमी धारण करने में सक्षम है । काबर भी मार मिट्टी की तरह है ।

झाँसी जनपद में लाल मिट्टी पायी जाती है । पूर्वी बुन्देलखण्ड में यह बलुवा पत्थर के साथ मिली हुई है । इनका लाल रंग नीश चट्टानों पर गहरा तथा लोहे के अंश के अनुसार क्रमशः भूरा, चाकलेटी, पीला और पाण्डु होता है । पडुवा लाल और पीली मिट्टी से बनी हुई बुन्देलखण्ड की महत्वपूर्ण मिट्टी है ।

नदीकृत मिट्टियाँ बड़े रवे से लेकर छोटे रवे वाली क्ले प्रकार की मिट्टियाँ हैं । नदी तटों की मिट्टी को कछार तथा उच्च क्षेत्र की मिट्टी को राकड़ कहते हैं ।

2.4 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में उद्योग – धंधे

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण होने के बावजूद भी औद्योगिक दृष्टि से प्राचीन काल से ही पिछड़ा हुआ है । यहां के शासकों ने यहां के उद्योग धन्धो के बारे में तथा प्रकृतिक संसाधनों के दोहन के बारे में कोई योजना नहीं बनाई, जिसके कारण यह क्षेत्र गरीब होता चला गया । यहां के व्यक्तियों को केवल कृषि एवं उससे सम्बन्धित उद्योगों पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र न केवल देश के बल्कि प्रदेश के अन्य भागों से अधिक गरीब और पिछड़ा हुआ है ।

2.4.1 कृषि आधारित उद्योग – इस क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों का पूर्णतः अभाव रहा है । जो कुछ कृषि आधारित उद्योग चल रहे थे वे भी धीरे–धीरे आर्थिक बदहाली व कुप्रबंध के शिकार हो गये । कालपी क्षेत्र कपास का अच्छा उत्पादक रहा, किन्तु उद्योग प्रोत्साहन के अभाव में विकास न कर सका । दलहन उद्योग का थोड़ा सा विकास यहां हो रहा है । राठ, उरई, झाँसी, हमीरपुर, मुस्करा, महोबा, बाँदा, ललितपुर, एट, मोंठ आदि क्षेत्रों में दाल मिलें स्थापित हैं, जो सामान्य रूप से कार्य कर रही हैं । बाँदा जिले का चावल उद्योग भी अब औसत दर्जे का उद्योग रह गया है । बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र का अनाज उद्योग विकास कर रहा है । यहां प्रत्येक कस्बे में कृषि उत्पादन मण्डियां स्थापित की जा चुकी है जहां अनाज की खरीद–फरोख्त होती है ।

हमीरपुर जिले का राठ क्षेत्र बुन्देलखण्ड में गन्ने की पैदावार के लिए प्रसिद्ध है । यहाँ किसान गन्ने की खेती एवं गुड़ का उत्पादन करते हैं जो सामान्य लाभ प्रदान करता है । अभी तक इस क्षेत्र में कोई चीनी मिल स्थापित नहीं हो सकी है ।

इन उद्योगों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में कृषि आधारित ऐसा कोई उद्योग नहीं है जिससे यहां की गरीब जनता लाभ एवं रोजगार पा सके ।

2.4.2 वनोपज आधारित उद्योग – इस क्षेत्र में वनोपज आधारित उद्योगों का पूर्णतया अभाव है । बीड़ी का निर्माण इस क्षेत्र में किया जाता है जिसके लिये तेन्दुपत्ता मध्य प्रदेश से आता है, थोड़ा–बहुत तेंदूपत्ता ललितपुर में भी पाया जाता है ।

झाँसी, ललितपुर एवं बाँदा क्षेत्रों में छेवलों की उपलब्धता ज्यादा है, जिससे यहां लोग दौना एवं पत्तल बनाने का कार्य करते हैं । किन्तु यह कोई ज्यादा लाभ देने वाला उद्योग नहीं है ।

लकड़ी एवं फर्नीचर उद्योग की स्थिति सामान्य है । सिर्फ जीवन यापन करने के उद्देश्य से फर्नीचर का कार्य होता है ।

2.4.3 कपड़ा उद्योग – प्राचीन काल में कपड़ा प्रत्येक गांव में बनता था । अंग्रेजों के आने के बाद मशीनों से कपड़े बनने लगगे। जिससे इस क्षेत्र में कपड़ा बनाने का उद्योग नष्ट हो गया । आजादी के बाद मिलों का विकास हाने लगा तथा सिंथैटिक कपड़ा बनने लगा । वर्तमान समय में सरकारों के प्रोत्साहन से हैण्डलूम काफी लोकप्रिय होने लगा है । रानीपुर का टेरीकाट काफी लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है । इसे अभी अपना विकास करने में बहुत लम्बा रास्ता तय करना है ।

उपरोक्त उद्योग–धन्धों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में अन्य उद्योग–धन्धों का भी अस्तित्व देखने को मिलता है । इन उद्योग–धन्धों में कुछ का अस्तित्व समाप्त हो रहा है और कुछ उद्योग–धन्धों का विकास प्रारम्भिक चरण में है ।

धातु के बर्तन, आभूषण, रंगाई का काम, कालीन–गलीचा उद्योग, चमड़ा उद्योग, मिट्टी का काम आदि ऐसे उद्योग–धन्धे हैं जो कभी बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) में कुटीर उद्योगों के रूप में विकसित थे । अब यह उद्योग समाप्ति की कगार पर हैं ।

लोहा ढ़लाई का काम झाँसी में एक विकासशील उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है । साबुन उद्योग का विकास भी बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में हो रहा है । पत्थर उद्योग का विकास तेजी से ललितपुर में हो रहा है, जिसमें ग्रेनाइट उद्योग प्रमुख है । इसके अतिरिक्त बाँदा एवं महोबा जिलों में भी पत्थर सम्बन्धी लघु उद्योग हैं । इसके अलावा खाद, आइसक्रीम, टूथपेस्ट, चमड़ा, गुटखा, सौन्दर्य–प्रसाधन सामग्री आदि उद्योगों का भी विकास बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में हो रहा है ।

झाँसी में बी.एच.ई.एल., सीमेन्ट कारखाना, महोबा में आर्डिनेंस फैक्ट्री जैसे कुछ बड़े उद्योग स्थापित हैं । कुलपहाड़ के पास कागज का कारखाना प्रस्तावित है । लघु एवं बड़े पालीथीन उद्योग भी इस क्षेत्र में है ।

इन सभी उद्योग–धन्धों की मात्रा इस क्षेत्र के आर्थिक विकास में पूर्णतः सहायक नहीं है । इनके द्वारा इतनी ज्यादा मात्रा में रोजगार के अवसरों को उत्पन्न नहीं किया जा सकता है कि यह इस क्षेत्र की बेरोजगारी एवं आर्थिक बदहाली को दूर कर सम्पन्नता ला सकें ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में विकास की एक किरण नजर आती है भारत सरकार की 'स्वर्णिम चतुर्भुज' योजना के रूप में । इस योजना का पूर्व–पश्चिम एवं उत्तर–दक्षिण कोरीडोर का कास मिलान बिन्दु अर्थात चौराहा झाँसी मे बन रहा है । इस कोरिडोर का चौराहा झाँसी में बनने से झाँसी अब सड़क मार्ग द्वारा भी देश के चारों कोनों से जुड़ जायेगी । आवागमन सुलभ हो जायेगा । उम्मीद है कि झाँसी एवं आस–पास के क्षेत्रों में भी अब बड़े–बड़े उद्योग स्थापित किये जाऐंगे जिससे इस क्षेत्र को विकसित क्षेत्र के रूप में गिना जा सके ।

2.5 बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जिलों का सामान्य परिचय

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में वर्तमान समय में सात जिले हैं । यह दो सम्भागों में विभाजित है । यथा –

(1) झाँसी सम्भाग में जिले – 1. झाँसी 2. ललितपुर 3. जालौन ।

(2) चित्रकूट धाम सम्भाग में जिले – 1. बाँदा 2. हमीरपुर 3. महोबा 4. चित्रकूट ।

झाँसी – यह झाँसी मण्डल (सम्भाग) का मुख्यालय एवं जिला है । यह जिला 25^0 30′ से 25^0 57′ उत्तरी अक्षाँश तक तथा 78^0 50′ से 79^0 52′ पूर्वी देशान्तर के बीच में स्थित है । इसके उत्तर में जालौन, दक्षिण में ललितपुर, टीकमगढ़ (म.प्र.), पूर्व में हमीरपुर तथा पश्चिम में दतिया (म.प्र.) जिले हैं ।

ललितपुर – क्षेत्रफल की दृष्टि से यह झाँसी मण्डल का सबसे बड़ा जिला है । यह सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में सबसे कम जनसंख्या घनत्व, 194 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी, वाला जिला है । यह जिला 24^0 11′ से 25^0 13′ उत्तरी अक्षाँश तक तथा 78^0 11′ से 79^0 0^0 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है । उत्तर प्रदेश के मानचित्र में देखने पर यह मध्य प्रदेश में धंसा हुआ दिखलाई देता है अर्थात इस जिले की पूर्वी, दक्षिणी एवं पश्चिमी सीमाएँ मध्य प्रदेश से घिरी हुई हैं, केवल उत्तर दिशा से यह उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले से जुड़ा हुआ है ।

जालौन – यह जिला 25^0 46′ से 26^0 27′ उत्तरी अक्षाँश तक तथा 78^0 56′ से 79^0 52′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है । इस जिले की पश्चिमी सीमा मध्य प्रदेश से लगी हुई है शेष सीमा उत्तर प्रदेश में है । पूर्व में हमीरपुर एवं कानपुर, उत्तर–पूर्व में ओरैया एवं उत्तर में इटावा एवं दक्षिण में झाँसी जिला है ।

बाँदा – यह जिला चित्रकूट सहित 24^0 53′ से 25^0 55′ उत्तरी अक्षाँश तक तथा 80^0 7′ से 81^0 34′ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है । इसके उत्तर में

फतेहपुर, पूर्व में चित्रकूट पश्चिम में महोबा एवं हमीरपुर तथा दक्षिण दिशा में मध्य प्रदेश की सीमा है । यह चित्रकूट धाम मण्डल का मुख्यालय भी है ।

हमीरपुर – यह जिला महोबा सहित 25^0 7′ से 26^0 7′ उत्तरी अक्षाँश तक तथा 79^0 11′ से 80^0 21′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है । इस जिले के पूर्व में बाँदा, उत्तर–पूर्व में फतेहपुर उत्तर में कानपुर, उत्तर–पश्चिम में जालौन, पश्चिम में झाँसी एवं दक्षिण में महोबा जिला है । यह बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) का एकमात्र जिला है जिसकी कोई भी सीमा मध्य प्रदेश से जुड़ी हुई नहीं है ।

महोबा – यह नवनिर्मित जनपद है। 11 फरवरी 1995 से पूर्व तक महोबा जिला हमीरपुर का ही भाग था । यह जिला पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिम दिशाओं में मध्य प्रदेश से घिरा हुआ है। उत्तर–पूर्व में बाँदा, उत्तर में हमीरपुर एवं पश्चिम में झाँसी स्थित है । महोबा का मुख्यालय 25^0 18′ N तथा 79^0 53′ E पर स्थित है ।

चित्रकूट – सन् 1997 ई. में बाँदा जिले से कर्वी क्षेत्र को विभाजित कर चित्रकूट जिले का निर्माण किया गया था । इसी जिले के नाम पर मण्डल का नामकरण 'चित्रकूटधाम' किया गया । यह एक ऐतिहासिक तीर्थ स्थली है । इस जिले की पूर्वी एवं दक्षिणी सीमा मध्य प्रदेश को छूती है । पूर्वोत्तर में कौशाम्बी, उत्तर में फतेहपुर, पश्चिम में बाँदा तथा पूर्व में इलाहाबाद जिले हैं ।

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के समस्त जनपदों के क्षेत्रफल, जनसंख्या एवं साक्षरता सम्बन्धी आँकडों का प्रदर्शन एवं विश्लेषण अग्रिम तालिकाओं में किया गया है ।

2.5.1 बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जिलों का सांख्यकीय विश्लेषण–

तालिका कमाँक–2.1 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश)– क्षेत्रफल, तहसील, विकासखण्ड

कम संख्या	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	विकास खण्ड	तहसील	तहसीलों के नाम
1	झाँसी	5, 024	8	5	झाँसी, मोंठ, गरौठा, मऊरानीपुर, टहरौली
2	ललितपुर	5,039	6	3	ललितपुर, तालबेहट, महरौनी
3	जालौन	4,565	9	5	जालौन, उरई, कोंच, कालपी, माधवगढ.
4	बाँदा	4,117	8	4	बाँदा, अतर्रा, बबेरू, नरैनी
5	हमीरपुर	4,095	7	4	हमीरपुर, राठ, मौदहा, सरीला
6	महोबा	3,071	4	3	महोबा, कुलपहाड, चरखारी
7	चित्रकूट	3,567	5	2	कर्वी, मऊ
	कुल योग	29478	47	26	
	उत्तर प्रदेश	2,40,930	807	300	

स्त्रोत– (1) सांख्यिकीय पत्रिका (वर्ष 2003), झाँसी मण्डल।

(2) सांख्यिकीय पत्रिका (वर्ष 2003),चित्रकूट धाम मण्डल ।

(3) उत्तरांचल एण्ड उत्तर प्रदेश एट ए ग्लांस, जागरण रिसर्च सेन्टर, कानपुर।

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के भू–भाग का कुल क्षेत्रफल 29478 वर्ग किमी है । जो उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल का 12.24 प्रतिशत है । झाँसी मण्डल का क्षेत्रफल 14628 वर्ग किमी तथा चित्रकूट धाम मण्डल का क्षेत्रफल 14850 वर्ग किमी है । इस क्षेत्र में विकासखण्डों की कुल संख्या 47 एवं तहसीलों की संख्या 26 है ।

तालिका कमाँक– 2.2 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र–जनसंख्या, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, दशकीय जनसंख्या वृद्धि (जनगणना वर्ष 2001 पर आधारित)

कम संख्या	जिला	जनसंख्या 2001			जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी	लिंगानुपात महिला प्रति हजार पुरूषों पर	दशकीय जनसंख्या वृद्धि 1991.2001
		कुल	पुरूष	महिला			
1	झाँसी	17,44,931	9,32,818	8,12,113	347	871	23.23
2	ललितपुर	9,77,734	5,19,413	4,58,321	319	882	29.98
3	जालौन	14,54,452	7,86,641	6,67,811	194	849	19.39
4	बाँदा	15,37,334	8,26,544	7,10,790	348	860	18.49
5	हमीरपुर	10,43,724	5,63,801	4,79,923	242	851	17.85
6	महोबा	7,08,447	3,79,691	3,28,756	249	866	21.80
7	चित्रकूट	7,66,225	4,09,178	3,57,047	239	873	34.33
	कुल योग	8232847	44,18,086	38,14,761			
	उत्तर प्रदेश	16,61,97,921	8,75,65,369	7,86,32,552	690	898	25.80

स्त्रोत– उत्तरांचल एण्ड उत्तर प्रदेश एट ए ग्लाँस – 2005, जागरण रिसर्च सेन्टर, कानपुर ।

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह गणना प्राप्त होती है कि सन् 2001 में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की कुल जनसंख्या 82,32,847 है जो कि उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का 4.95 प्रतिशत है । दशकीय जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत की दृष्टि से बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में अच्छी स्थिति हमीरपुर जिले की है । इस आँकड़े के अनुसार हमीरपुर का प्रदेश में तीसरा स्थान है। महोबा उत्तर प्रदेश का सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है । ललितपुर उत्तर प्रदेश में सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला जिला है ।

तालिका कमाँक–2.3– बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र– साक्षरों की संख्या, साक्षरता दर (जनगणना वर्ष 2001 पर आधारित)

कम संख्या	जिला	साक्षरों की संख्या			साक्षरता दर(प्रतिशत)		
		कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
1	झाँसी	9,85,079	6,33,803	3,51,276	66.69	80.11	51.21
2	ललितपुर	3,89,150	2,68,530	1,20,620	49.93	64.45	33.25
3	जालौन	8,09,988	5,26,774	2,83,214	66.14	79.14	50.66
4	बाँदा	6,64,686	4,58,330	2,06,356	54.84	69.89	37.1
5	हमीरपुर	4,98,910	3,39,494	1,59,416	58.1	72.76	40.65
6	महोबा	3,12,398	2,07,039	1,05,359	54.23	66.83	39.57
7	चित्रकूट	4,19,558	2,69,142	1,50,416	66.06	78.75	51.28
	कुल योग	40,79,769	27,03112	13,76,657			
	उत्तर प्रदेश	7,77,70,275	5,02,56,119	2,75,14,156	56.36	70.23	42.97

स्त्रोत– उत्तरांचल एण्ड उत्तर प्रदेश एट ए ग्लाँस – 2005, जागरण रिसर्च सेन्टर, कानपुर ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के 40,79,769 साक्षर व्यक्ति रहते हैं जो कि उत्तर प्रदेश के साक्षरों का 5.25 प्रतिशत है । इस क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के 5.38 प्रतिशत साक्षर पुरूष एवं 5.00 प्रतिशत साक्षर महिलाएँ निवास कर रही हैं ।
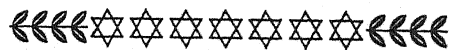
तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

खण्ड–'क'

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास

3.1.0 भूमिका– शिक्षा प्राचीन काल से व्यक्तिगत रुचि का विषय रही है । मानव ने अपने ज्ञान का विकास करने के लिए स्वप्रेरणा से शिक्षा विनिमय का कार्य किया । हमारे ऋषियों–मुनियों ने स्वअध्याय से प्राप्त ज्ञान का विस्तार करने एवं अन्य इच्छुक व्यक्तियों को प्रदान करने के लिए गुरूकुलों का निर्माण किया । गुरूकुल बिना किसी राजकीय सहायता से स्थापित किये जाते थे । इनके संचालन के लिए भी कोई राजकीय आर्थिक सहायता ग्रहण नहीं की जाती थी । शिक्षक एवं शिक्षार्थी अंतःप्रेरणा से अध्यापन एवं अध्ययन का कार्य किया करते थे । इस कार्य हेतु किसी भी प्रकार की कोई प्रशासनिक प्रतिबद्धता नहीं थी । यह स्थिति मध्य युग के आरम्भ तक बनी रही । इस्लाम धर्म के अनुयायी शासकों ने धार्मिक कारणों से शिक्षा संस्थानों की स्थापना एवं संचालन का उत्तरदायित्व निभाया ।

भारत में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासन स्थापित करने के पश्चात, उन पर एक दबाव डाला गया कि वह भारत में आधुनिक यूरोपीय शिक्षा की व्यवस्था करें । सन् 1813 ई0 के चार्टर में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को आदेश दिया गया कि वह भारत में अपने शासित राज्यों में शिक्षा की व्यवस्था करें । यहां से हमें शिक्षा के इतिहास में एक परिवर्तन देखने को मिलता है । यह समय शिक्षा की दशा व दिशा निर्धारित करने के समय के रूप में इतिहास प्रसिद्ध है । अब शिक्षा सरकारी एवं निजी दोनों माध्यमों से अपना कार्य कर रही थी । सरकारी माध्यम अधिक सशक्त, विस्तृत एवं सक्षम होने के कारण जनता ने सरकार से मांग की कि उसकी शिक्षा की व्यवस्था सरकार अपने हाथों से करें । भारत में कम्पनी शासन का विस्तर होने के कारण उस पर इस कार्य के लिए अधिक दबाव डाला गया । इस प्रकार शिक्षा निजी हाथों से निकलकर धीरे–धीरे सरकारी हाथों में जाने लगी ।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में जिस प्रकार के परिवर्तन परिलक्षित होते हैं वही परिवर्तन हमें बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था में देखने को मिलते हैं । वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं विद्यालयी व्यवस्था को देखकर वर्तमान पीढ़ी के मन में एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि यह शिक्षा व्यवस्था कितनी प्राचीन है ? इसमें क्या–क्या परिवर्तन हुए हैं ? हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति कैसी थी ? आदि–आदि । अतः बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा की विकास यात्रा का अध्ययन करने से पूर्व यह आवश्यक है कि पहले हम यह ज्ञान प्राप्त करें कि भारत में शिक्षा का विकास किस प्रकार हुआ ? शिक्षा परिवर्तन एवं विकास के किन–किन दौरोंसे होकर गुजरी है ?

3.1.1 भारतीय शिक्षा का विकास–

विश्व में शिक्षा का प्रारम्भ तभी से माना जाता है जब से मानव सभ्यता का विकास पृथ्वी पर हुआ । शिक्षा को मानव ने एक आभूषण के समान धारण किया । इस आभूषण ने मानव को पशु जगत् से अलग खड़ा कर दिया । कुछ ही समय में मानव ने अपने आपको इस संसार का श्रेष्ठ जीव घोषित कर दिया । भारत वर्ष में मानव सभ्यता ने अपनी इस श्रेष्ठता की घोषणा विश्व की अन्य मानव सभ्यता की तुलना में बहुत पहले कर दी थी । डा.एफ.ई.केई लिखते हैं कि सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान के प्रति प्रेम सबसे पहले भारत वर्ष में देखने को मिलता है । यहाँ ज्ञान का प्रकाश सबसे पहले प्रस्फुटित हुआ । भारतीय शिक्षा के विकास में हमें कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं । यह परिवर्तन देश में हुए धार्मिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों से प्रभावित रहे हैं ।

3.1.1.1 वैदिक काल में शिक्षा–

भारत के ऋषियों–मुनियों ने हजारों वर्षों में अर्जित ज्ञान का संकलन वेदों के रूपों में किया । जिस समय वेदों का प्रभाव भारत की भूमि पर था उस काल को 'वैदिक काल' के नाम से जाना जाता है । वेदों के उदय के सम्बन्ध में विद्वानों एवं इतिहासकारों में एकमतता नहीं है । लोकमान्य तिलक वेदों का लेखन काल ईसा से

10,000 वर्ष पूर्व मानते हैं । प्रसिद्ध इतिहासकार वाकणकर ने वेदों का काल 4,500 ईसा पूर्व माना है । जर्मन के इतिहासकार एवं विद्वान मैक्समूलर ने वेदों का समय 2,500 ईसा पूर्व स्वीकार किया है । इतनी मतभिन्नताओं के मध्य इतिहासकारों में एक सहमति है कि वेदों का प्रभाव काल 2,500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक था ।[1]

रमन बिहारी[2] लिखते हैं कि वेदों के रचना काल के सम्बन्ध में कोई भी विवाद हो परन्तु एक बात पर आम सहमति है कि उस समय की भारतीय सभ्यता उच्च विकसित, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत थी । विश्व की अन्य सभी सभ्यताएं अन्धकार के युग में जी रहीं थीं । इस समय की भारतीय वैदिक सभ्यता सामाजिक, अर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक रूप से विकसित हो चुकी थी । इस समय का अर्जित ज्ञान आज भी प्रासंगिक है एवं हम लोगों का मार्गदर्शन कर रहा है । वैदिक युग के महर्षियों ने इस तत्व को भली भांति समझ लिया था कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति, धर्म, सभ्यता और संस्कृति के उत्थान के लिए शिक्षा अनिवार्य है । शिक्षा के इसी महत्व के फलस्वरूप भारत के सुदूर अतीत में शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था की गई थी । यह शिक्षा व्यवस्था इतनी सुन्दर एवं ठोस आधार पर खड़ी की गई थी कि हजारों वर्षों उपरान्त आज भी अपना अस्तित्व बनाये हुए है ।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने विशाल वैदिक साहित्य को हजारों वर्षों तक अलिखित रूप में सुरक्षित रखा एवं ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म दिया । वैदिक काल में शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत कहा गया, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है । यह शिक्षा मानव की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक शक्तियों का संतुलित विकास करती है । वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यों को हम विभिन्न रूपों में वर्गीकृत कर सकते हैं । यथा – ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना का विकास, चित्त–वृत्ति निरोध, उत्तम चरित्र का निर्माण, शारीरिक विकास, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति, संस्कृति तथा सभ्यता का संरक्षण एवं विकास आदि । शिक्षा के यह उद्देश्य पूरे वैदिक काल में लगभग एक समान बने रहे । वैदिक धर्म के

---

1. लाल, रमन बिहारी,, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ ।
2. तथैव ।

उद्भव, विकास एवं प्रधानता के कारण इस काल को वैदिक काल का नाम दिया गया । वैदिक धर्म को सनातन धर्म, हिन्दू धर्म आदि के नाम से भी जाना जाता है ।

वैदिक काल में शिक्षा के औपचारिक केन्द्र ऋषियों, मुनियों एवं आचार्यों के निवास एवं आश्रम हुआ करते थे । इन्हें 'गुरूकुल' कहा जाता था । गुरूकुल शिक्षक का निवास स्थान होता था जहाँ विद्यार्थी अपने घर–परिवार को छोड़कर विद्याध्ययन के लिए कई वर्षों तक रहते थे । गुरूकुल में आचार्य ही छात्रों के आवास, भोजन, वस्त्र आदि की व्यवस्था करता था । गुरूकुल शिक्षा निःशुल्क होती थी । आचार्य शिक्षा अवधि के प्रारम्भ एवं मध्य में छात्रों से कोई भी धन, वस्तुएँ आदि स्वीकार नहीं कर सकता था । शिक्षा समाप्ति के पश्चात् छात्र अपनी यथा स्थिति के अनुसार गुरू को 'गुरू दक्षिणा' स्वरूप धन, गौधन, वस्त्र, भूमि, वस्तुएं आदि प्रदान करता था ।

वैदिक काल में शिक्षा वर्णानुसार दी जाती थी । ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों के बालकों की शिक्षा प्रारम्भ करने की आयु अलग–अलग निर्धारित थी । शूद्रों को गुरूकुलों मे प्रवेश का अधिकार नहीं था । अलग–अलग वर्णों के बालकों के लिए वेश–भूषा सम्बन्धी नियम अलग–अलग थे । प्रारम्भ में बालकों को अपनी रूचियों एवं योग्यताओं के आधार पर विषय चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त थी, परन्तु उत्तर वैदिक काल में विषय एवं पाठ्यक्रम वर्णानुसार निर्धारित किया जाने लगा था । विद्यार्थी की शिक्षा का मूल्यांकन आचार्य स्वयं किया करता था तथा इसी आधार पर बालक को आगे का पाठ अध्ययन हेतु दिया जाता था । परीक्षा प्रणाली का कोई अस्तित्व प्राप्त नहीं होता है । न ही किसी प्रकार का कोई प्रमाण पत्र या उपाधि प्रदान की जाती थी । आचार्य की संतुष्टि से ही विद्यार्थी की शिक्षा पूर्ण मान ली जाती थी ।

वैदिक संस्कृति में 'संस्कारों' का बहुत महत्व है । अलग–अलग तरह के संस्कारों का उल्लेख वेद–पुराण आदि वैदिक साहित्यों में प्राप्त होता है । इनकी संख्याएँ भी अलग–अलग वर्णित की गई हैं । वर्तमान में सोलह संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है । इन संस्कारों में चार संस्कार शिक्षा से सम्बन्धित हैं जो हमें वैदिक काल से शिक्षा के स्थान एवं महत्व को बतलाते हैं । यह चार संस्कार हैं –

1. **विद्यारम्भ संस्कार**
2. **उपनयन संस्कार**
3. **वेदारम्भ संस्कार**
4. **समावर्तन संस्कार**

बालक के द्वारा प्रथम बार शिक्षा प्रारम्भ करने से लेकर औपचारिक रूप से गुरूकुल छोड़ने तक यह चार संस्कार सम्पन्न किये जाते थे । इन चारों संस्कारों में उपनयन संस्कार महत्वपूर्ण था । बालक विद्या अध्ययन के लिए गुरूकुल जाए या नहीं उसका उपनयन होना आवश्यक था । उपनयन संस्कार के पश्चात् बालक का दूसरा जन्म माना जाता था तथा बालक को 'द्विज' कहा जाता था ।

बालक की 'गुरूकुल शिक्षा' का प्रारम्भ 'उपनयन संस्कार' से होता था । अध्ययन काल सामान्यतः 10 वर्ष का होता था । गुरूकुल शिक्षा की समाप्ति के उपरांत, गृह वापसी के समय, गुरूकुल छोड़ते समय बालक का 'समावर्तन संस्कार' सम्पन्न किया जाता था । इसका अर्थ है – 'घर वापस जाना' । इस संस्कार के सम्पन्न होने के पश्चात् युवक 'ब्रहमचर्य आश्रम' का त्याग कर 'ग्रहस्थ आश्रम' में प्रवेश करता था ।

वैदिक काल में शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी । विद्यार्थी अपने पाठों को कंठस्थ किया करता था । शिक्षक अपने छात्रों से पुत्रवत् प्यार किया करता था, उसकी देखभाल किया करता था । शिक्षक अपने आचरण को शुद्ध रखते थे जिससे उसके शिष्य उसके आचरण का अनुगमन कर अपने चरित्र एवं व्यक्तित्व का विकास कर सकें । वैदिक काल में सहशिक्षा का अस्तित्व प्राप्त होता है । जिससे यह जानकारी प्राप्त होती है कि स्त्रियों को इस काल में शिक्षा प्राप्ति का अधिकार था । उत्तर वैदिक काल मे स्त्री शिक्षा को हतोत्साहित किया गया था ।

पूर्व वैदिक काल एवं वैदिक काल में समाज रूढ़िवादी व्यवस्थाओं से मुक्त था । उत्तर वैदिक काल में ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित हो गया था । ब्राह्मणों ने समाज में वर्ण व्यवस्था को जन्म आधारित बनाकर कई दोषों को जन्म दिया । स्त्री को समाज का द्वितीय स्तर का नागरिक बनाकर कई प्रकार के बंधनों में जकड़ दिया । वेदों की

अवहेलना कर स्वयं के द्वारा प्रतिपादित नियमों से समाज का संचालन प्रारम्भ किया । इसलिय इस काल को 'ब्राह्मण काल' के नाम से भी जाना जाता है । 'ब्राह्मण काल' में समाज में कई दोषों के कारण पीड़ित वर्ग में विद्रोह की भावनाएँ पनपने लगी थी । इसी समय भारत की भूमि पर दो महान आत्माओं का जन्म हुआ—'भगवान बुद्ध' एवं 'महावीर स्वामी' । भगवान बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित 'बौद्ध धर्म' ने समाज में प्रचलित बुराईयों का विरोध किया । बौद्ध धर्म ने बहुत तेजी से लोकप्रियता प्राप्त की तथा सम्पूर्ण भारत के साथ पूर्वी एशिया में तेजी से फैल गया ।

3.1.1.2 बौद्ध काल में शिक्षा–

छटी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में उदित बौद्व धर्म ने एक नवीन शिक्षा प्रणाली का विकास किया । विद्वानों के अनुसार बौद्ध काल में प्रचलित शिक्षा प्रणाली वैदिक धर्म के विरोध स्वरूप उत्पन्न हुई थी । यह बौद्ध शिक्षा प्रणाली वैदिक शिक्षा प्रणाली से भिन्न होते हुए भी कई अर्थों में इसके समान ही थी । भगवान बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य था 'निर्वाण प्राप्ति में सहायक होना' । इसके अन्य उद्देश्यों ज्ञान की प्राप्ति, चरित्र निर्माण, अच्छे नागरिक का निर्माण जीवकोपार्जन की शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति का विकास आदि थे । बौद्ध शिक्षा प्रणाली के केन्द्र 'मठ' एवं 'बिहार' थे । इससे अलग शिक्षा के अन्य कोई केन्द्र नहीं थे । शिक्षार्थी को शिक्षा प्राप्त करने के लिए मठों एवं बिहारों में ही प्रवेश लेना होता था । मठों एवं बिहारों वाली इस शिक्षा प्रणाली का अस्तित्व भारत में लगभग 500 ईसा पूर्व से 1200 ईसवी तक रहा था । इसके पश्चात् इसका प्रभाव बहुत तेजी से भारत में घट गया ।

बौद्ध शिक्षा की प्रसिद्धी बहुत तेजी से फैली । इन शिक्षा संस्थाओं में देश के सुदूर कोनों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे । कुछ समय पश्चात विदेशों से, विशेषकर जावा, सुमात्रा, बालीद्वीप, चीन, जापान आदि देशों से भी शिक्षार्थी इन शिक्षा संस्थानों में विद्या अध्ययन हेतु आये । इस शिक्षा प्रणाली ने देश का चहुँमुखी विकास किया । भारत का 'स्वर्ण काल' भी इसी समय में था। बौद्ध शिक्षा के केन्द्र इतने विशाल थे कि इनमें दस हजार से भी अधिक विद्यार्थी अध्ययन करते थे । ऐसे शिक्षा

संस्थानों को 'विश्वविद्यालय' कहा गया । देश का पहला विश्वविद्यालय 'तक्षशिला' इसी युग में प्रसिद्धी के शिखर पर था । बौद्ध काल का सबसे बड़ा शिक्षा केन्द्र 'नालन्दा विश्वविद्यालय' था । इसमें दस हजार से भी अधिक विद्यार्थियों एवं तीन हजार शिक्षकों का वर्णन मिलता है । अन्य विश्वविद्यालय थे – विक्रमशिला, वल्लभी, नदिया, ओदन्तपुरी आदि । सन् 1205 ईसवी में बख्तियार खिलजी ने कुतबुद्दीन ऐबक के आदेश पर इन विश्वविद्यालयों को नष्ट कर दिया था ।

बौद्ध धर्म जाति–पाँति का कोई भेद नहीं मानता है । इसी आधार पर इन्होनें अपनी शिक्षा के द्वार सभी धर्म, जाति के लोगों के लिए खोले हुए थे । कुछ अन्य नियमों के अतिरिक्त केवल चाण्डाल जाति के लोगों को मठों में प्रवेश से वंचित किया गया था । मठों में सभी धर्मों की शिक्षा की व्यवस्था थी । यहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षा, दर्शन, तर्कशास्त्र, नक्षत्र, ज्योतिष, औषधि, गणित, रसायन शास्त्र आदि विषयों का अध्ययन किया जाता था । बौद्ध शिक्षा का माध्यम लोक भाषा 'पाली' थी । विद्या अध्ययन काल 12 वर्ष का था । प्रारम्भिक शिक्षा के लिए मठों में प्रवेश हेतु न्यूनतम आयु 6 वर्ष एवं अवधि भी 6 वर्ष की थी । इसके पश्चात् बालक की उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती थी । जिसकी अवधि 12 वर्ष थी ।

बौद्धकाल में भी शिक्षा से सम्बन्धित संस्कार सम्पन्न किये जाते थे । 'प्रबज्जा संस्कार' बालक की आयु 8 वर्ष की होने पर सम्पन्न किया जाता था । इसमें जाति–धर्म का कोई भेद नहीं किया जाता था । इस संस्कार के उपरांत बालक की उच्च शिक्षा प्रारम्भ हो जाती थी । इस संस्कार के समय बालक का मुण्डन कर स्नानादि कराकर, पीले वस्त्र धारण कराकर मठ के वरिष्ठ भिक्षुक के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था । बालक भिक्षुक को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर उसके सम्मुख पालथी मारकर बैठ जाता था । भिक्षुक उसे शरणत्रयी दुहराने को कहता था, जिसे बालक को तीन बार दुहराना होता था । यथा –

बुद्धं शरणं गच्छामि ।
धम्मं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।

'उपसम्पदा संस्कार' उन बालक या बालिकाओं का किया जाता था जिनका उद्देश्य बौद्ध भिक्षुक या भिक्षुणी बनना होता था । यदि श्रमण आगे 'भिक्षु शिक्षा' का अध्ययन नहीं करना चाहता था तो उसे बौद्ध मठ छोड़कर जाना होता था । 'उपसम्पदा संस्कार' चाहने वाले श्रमण का प्रब्बज्जा संस्कार होना आवश्यक था । उपसम्पदा संस्कार के समय बालक को दस भिक्षुओं के पैनल के सम्मुख उपस्थित होकर शास्त्रार्थ करना होता था । भिक्षुओं का साधरण बहुमत उसके पक्ष में होने पर उसे भिक्षु शिक्षा हेतु अनुमति प्राप्त हो जाती थी । अब वह मठ का पूर्ण रूप से सदस्य होकर अगले दस वर्षों तक 'भिक्षु शिक्षा' प्राप्त करता था । सम्पूर्ण विद्यार्थी काल में मठ में रहने के समय विद्यार्थी को विविध नियमों का पालन करना होता था ।

बौद्ध काल में देश ने सभी क्षेत्रों में विकास किया, परन्तु सैनिक शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया गया । इस कारण देश सैनिक शक्ति के रूप में कमजोर होता गया । बौद्ध धर्म एवं शिक्षा पद्धति में कई कमियों एवं बुराईयो ने जन्म ले लिया था, जिसकी वजह से लोग इस धर्म से विमुख होने लगे थे । फलस्वरूप जब देश पर विदेशी आक्रमण आरम्भ हुए तो देश उनका विरोध न कर सका । तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुसलमान आक्रमणकारी कुतबुद्दीन ऐबक ने समस्त उत्तर भारत पर आक्रमण कर अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार देश में बौद्ध काल का अंत हो गया और इस्लाम धर्म को मानने वाले मुसलमानों ने इस देश पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया ।

3.1.1.3 मुस्लिम काल में शिक्षा–

मुसलमानों के भारत पर आक्रमण आठवीं शताब्दी में प्रारम्भ हो चुके थे । परन्तु उन्हें इस देश में अपना शासन स्थापित करने में सफलता तेरहवीं शताब्दी में मिली । मुसलमान विदेशी थे । उनकी सभ्यता एवं संस्कृति पूर्णतया इस देश से अलग थी । मुसलमानों ने अपने धर्म, सभ्यता एवं संस्कृति की इस देश में स्थापना एवं विस्तार करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया ।

मुस्लिम शिक्षा पद्धति एक नई शिक्षा पद्धति थी । इनकी शिक्षा के उद्देश्य थे – इस्लाम धर्म का प्रचार, इस्लाम संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार एवं प्रसार करना, इस्लाम सम्मत नैतिकता एवं मूल्यों की शिक्षा देना, ज्ञान का प्रकाश फैलाना, मुस्लिम कानूनों एवं सामाजिक प्रथाओं का प्रचार, मुस्लिम शासन को दृढ़ बनाना एवं निष्ठावान नागरिकों का निर्माण करना आदि । इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विविध शिक्षा संस्थानों का निर्माण करवाया गया । प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने हेतु मुख्य संस्था 'मकतब' थी । 'दरगाह' एवं 'खानकाहों' में भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती थी । उच्च स्तर की शिक्षा 'मदरसों' में प्रदान की जाती थी । यह शिक्षा संस्थान मस्जिदों से जुड़े हुए होते थे ।

मुस्लिम शिक्षा पद्धति में भी प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ करने हेतु संस्कार का वर्णन मिलता है । बालक की आयु 4 वर्ष 4 माह 4 दिन होने पर मौलवी साहब की उपस्थिति में घर या मस्जिद में 'बिस्मिल्लाह खानी' रस्म सम्पन्न की जाती थी । इस समय घर–परिवार के सभी सदस्य उपस्थिति होते थे ।

इस शिक्षा पद्धति में संकीर्णता थी । इसमें केवल इस्लाम धर्म एवं साहित्य के अध्ययन की व्यवस्था थी । शिक्षा का माध्यम भी विदेशी भाषाएं 'फारसी' एवं 'अरबी' थीं । इस शिक्षा से हिन्दू , जैन, बौद्ध आदि धर्मों के लोग अपने आपको जोड़ न सके । मुस्लिम शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क थी । बादशाहों, वजीरो एवं अमीरों के द्वारा कई मकतब, मदरसों का निर्माण करवाया गया । इनमें शिक्षण करने वाले उस्तादों एवं अध्ययन करने वाले शागिर्दों का पूरा खर्चा इन्हीं संस्थानों के द्वारा उठाया जाता था । इन संस्थानों को दान एवं सरकारी सहायता प्राप्त होती थी । इस प्रकार इन शिक्षण संस्थानों की स्थापना एवं आर्थिक सहायता प्रदान कर बादशाह, वजीर, अमीर आदि अपने धार्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति किया करते थे ।

मदरसों का पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत था । अलग–अलग मदरसों में अलग–अलग विषयों के अध्ययन की सुविधा थी । एक मदरसे में सामान्यतः दो विषयों के शिक्षण की व्यवस्था होती थी । इनमें उपलब्ध विषय थे – इस्लाम धर्म का अध्ययन, शरीअत अर्थात इस्लामी कानून का अध्ययन, नक्षत्र विद्या, ज्योतिष विद्या, दर्शन, तर्कशास्त्र,

अंकगणित, विज्ञान एवं जीविकोपार्जन सम्बन्धी विविध विषय । शिक्षण विधि मौखिक थी । मूल्यांकन का कार्य शिक्षकों के द्वारा ही सम्पन्न कर दिया जाता था, कोई परीक्षा नहीं ली जाती थी । छात्रों द्वारा कुछ विशेष विषयों का उच्च अध्ययन करने पर उन्हे 'आमिल', 'काबिल' और 'फाज़िल' जैसी उपाधियां प्रदान की जाती थीं । सामान्य शिक्षा की समाप्ति उपरांत कोई उपाधी नहीं दी जाती थी ।

मुस्लिम काल में स्त्रियों की दशा सोचनीय हो गई थी । शिक्षा की व्यवस्था में स्त्रियों का स्थान नगण्य था । राजपरिवारों एवं अमीरों की बलिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था उनके घर पर ही की जाती थी ।

मुस्लिम काल में आगरा, रामपुर, दिल्ली, कन्नौज अदि के मदरसे बहुत प्रसिद्ध थे । इन मदरसों में अच्छी व्यवस्थायें उपलब्ध थीं । इब्नबतूता ने एक मदरसे का वर्णन करते हुए लिखा है कि मदरसे में दस जलाशय थे । छात्रों के सोने के लिए कालीनों की व्यवस्था थी । खाने में मुर्गा, पुलाव आदि भोजन प्राप्त होता था ।[1] इस काल में छात्रों के आराम की हर सुविधा थी । इस काल में अनुशासन पर बहुत बल दिया जाता था । छात्रों के द्वारा अनुशासनहीनता करने पर उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाता था ।

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत में 'ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी' ने अपने कदम रखे । धीरे–धीरे अपनी कूटनीति से सम्पूर्ण देश में अपना शासन स्थापित कर लिया । ब्रिटेन के औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण ने भारत पर अपना प्रभाव डाला और देश में भी आधुनिकीकरण की बयार बह उठी ।

3.1.1.4 यूरोपीय ईसाई मिशनरियाँ एवं शिक्षा कार्य –

24 मई 1498 ईसवी को पुर्तगाली नाविक वास्को–डी–गामा ने समुद्री रास्ते से कालीकट के तट पर अपने कदम रखे । इसके साथ ही भारत में यूरोपीय मिशनरियों का आगमन प्रारम्भ हो गया । अगले 100 वर्षों तक पुर्तगाली मिशनरियों ने भारत में अपना आधिपत्य बनाये रखा । इन मिशनरियों ने भारत में धर्मान्तरण तथा इसाई धर्म का

---

1. लाल, रमन बिहारी,, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ ।

प्रचार–प्रसार करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया । प्रारम्भ में इन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया । शनैः शनैः यूरोपीय शिक्षा का भारत में विकास हुआ । मिशनरियों ने माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षा संस्थानों की भी स्थापना की ।

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन के साथ यहाँ की मिशनरियों ने भी अपना कार्य भारत में प्रारम्भ किया । ऐसा कहा जाता है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रत्येक जहाज के साथ एक पादरी भारत में आता था । ब्रिटेन के पश्चात् फ्रांसीसी, डच व डेन देशों के व्यापारियों तथा मिशनरियों ने अपना कार्य भारत में प्रारम्भ किया ।

यूरोपीय मिशनरियों ने भारत की तत्कालीन स्थिति का भरपूर लाभ उठाते हुये यहाँ के निवासियों के दिल में अपने लिए जगह बनाई । यहाँ के निवासियों में व्याप्त अंधविश्वासों तथा कुरीतियों को दूर करने के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया । ईसाई धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए भी इन्होंने शिक्षा को माध्यम बनाया । प्राथमिक स्तर के विद्यालयों की स्थापना मिशनरियों द्वारा की गई । प्रारम्भ में इस प्रकार के विद्यालयों की संख्या कम थी । इनमें अध्ययन के लिए आने वाले छात्रों की संख्या भी कम थी । इन विद्यार्थियों में ईसाई धर्म के अनुयायियों की संख्या अधिक थी । मिशनरियों के द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा देने के साथ–साथ आधुनिक यूरोपीय शिक्षा एवं भारतीय विषयों की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी । मिशनरियों ने भारत में आधुनिक यूरोपीय पद्धति की शिक्षा व्यवस्था की स्थापना की ।

भारत में शिक्षा का विस्तार करने में यूरोप की व्यापारिक कम्पनियों ने भी अपना योगदान दिया । प्रारम्भ में इन्होंने अपने कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की । इस कार्य हेतु इन्होंने अपने कारखानों के नजदीक की बस्तियों में प्राथमिक शिक्षा केन्द्र स्थापित किये । इस प्रकार के शिक्षा केन्द्र पुर्तगाली, ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच तथा डेन सभी की व्यापारिक कम्पनियों के द्वारा स्थापित किये गये । यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों के आपसी व्यापारिक हितों में टकराहट प्रारम्भ हुई । फलस्वरूप इनमें आपस में युद्ध हुए । इस संघर्ष में अंग्रेजों ने विजय प्राप्त की ।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य से ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत पर अपना अधिकार तेजी से जमाना प्रारम्भ किया और उन्नीसवीं शताब्दी के प्राम्भिक वर्षों तक भारत के अधिकतर भू–भाग पर अपना अधिकार कर लिया था ।

यूरोपीय ईसाई मिशनरियों के कुछ कृत्यों के कारण भारत में इनका विरोध प्रारम्भ हो गया । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों में भय व्याप्त हो गया कि इन मिशनरियों के कारण कहीं उन्हें यह देश छोड़ कर न जाना पड़े । अतः कम्पनी ने मिशनरियों के कार्यों पर रोक लगा दी । कम्पनी एवं मिशनरियों में आपसी टकराहट शुरू हो गई । टकराहट के परिणाम स्वरूप मिशनरियों द्वारा किये जा रहे शैक्षिक कार्यों में रूकावट आने लगी । सन् 1813 के आज्ञा पत्र में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट 'हाउस ऑफ कॉमेन्स' ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को आदेश दिया कि वह किसी भी यूरोपीय मिशनरी के भारत में प्रवेश करने पर तथा उनके कार्यों पर किसी भी प्रकार की कोई रोक नहीं लगाएगी ।

3.1.1.5 ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं शिक्षा कार्य–

कम्पनी ने प्रारम्भ में शिक्षा के क्षेत्र में काई रूचि प्रकट नहीं की थी । व्यापारिक हितों को सर्वोपरी स्थान दिया था । फिर भी अपने कर्मचारियों, उनके बच्चों तथा आस–पास के निवासियों के लिए सीमित संख्या में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की । शिक्षा की मांग बढ़ने पर कुछ माध्यमिक विद्यालय भी खोले । सन् 1781 ईसवीं में मुसलमानों की सद्भावना प्राप्त करने के लिए उनकी मांग पर तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज ने कलकत्ता में 'कलकत्ता मदरसा' के रूप में एक उच्च शिक्षा संस्थान स्थापित किया । जल्द ही यह पूरे देश में प्रसिद्व हो गया । दूर–दूर से लोग इसमें शिक्षा प्राप्त करने आने लगे । इसमें इस्लाम की शिक्षा के साथ–साथ अंग्रेजी सहित आधुनिक विषयों की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी । शिक्षा का माध्यम अरबी भाषा थी ।

कम्पनी द्वारा हिन्दुओं की सद्भावना प्राप्ति के उद्देश्य से सन् 1791 में 'बनारस संस्कृत कॉलेज' की स्थापना बनारस में की । इसका श्रेय बनारस के रेजीडेन्ट

जानेथन डन्कन को जाता है । इसमें हिन्दू धर्म की शिक्षा के साथ–साथ अंग्रेजी एवं अन्य आधुनिक विषयों की शिक्षा हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में प्रदान की जाती थी ।

सन् 1800 ईसवीं में अपने कर्मचारियों के लिए असैनिक उच्च शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए कलकत्ता में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना की गई । इसमें हिन्दुओं एवं मुसलमानों को भी प्रवेश का अधिकार था । इसमें सभी आधुनिक विषयों की शिक्षा का प्रावधान था । हिन्दू एवं इस्लाम धर्मों एवं नियम–कानूनों की भी शिक्षा दी जाती थी । शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा थी ।

दक्षिणी ब्राह्मणों को प्रसन्न करने के लिए पेशवा विजय के पश्चात् पूना में 'पूना संस्कृत कॉलेज' की स्थापना सन् 1821 ईसवीं में कम्पनी शासन द्वारा की गई ।

उपरोक्त वर्णित महाविद्यालयों की स्थापना कम्पनी शासन ने अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु की थी । जन शिक्षा की ओर कम्पनी ने कोई ध्यान नहीं दिया था। सन् 1793 एवं 1813 के आज्ञा पत्रों के पश्चात् दबाव एवं मजबूरी में कम्पनी को सम्पूर्ण देश में शिक्षा सम्बन्धी कार्य प्रारम्भ करने पड़े ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों में शिक्षा के स्वरूप को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गये । 'प्राच्य – पाश्चात्य विवाद' के कारण शिक्षा की प्रगति वाधित हुई । 1813 के आज्ञा पत्र में उल्लिखित धारा 43 ने विवाद में 'आग में घी' के रूप में काम किया । फरवरी सन् 1835 ई. में मैकाले द्वारा अपना विवरण पत्र प्रस्तुत किया गया । मैकाले ने अपने इस विवरण पत्र के माध्यम से देश की शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की । देश को कुरीतियों एवं अंधविश्वासों से मुक्त करने के लिए अंग्रेजी एवं आधुनिक यूरोपीय शिक्षा का समर्थन किया । प्राचीन वैदिक एवं मुसलिम शिक्षा पद्धति को 'नकारा' एवं 'महत्वहीन' बतलाकर उसे तुरन्त समाप्त करने की बात कही । इस प्रकार मैकाले ने शिक्षा को आधुनिक एवं प्रगतिशील बनाया । आज तक हमारा देश मैकाले द्वारा स्थापित शिक्षा सिद्धान्तों का अनुगमन कर रहा है ।

गवर्नर ज़नरल लार्ड विलियम बेंटिक ने एक ओर पाश्चात्यवादी मैकाले को अपने सुझाव देने को कहा, दूसरी ओर प्राच्यवादी मिशनरी एडम को भी शिक्षा सुधार सम्बन्धी अपने सुझाव देने को कहा था । एडम महोदय ने तत्कालीन बंगाल एवं बिहार प्रान्त का अध्ययन कर अपनी रिपोर्टें प्रस्तुत की थीं । एडम महोदय मैकाले की तुलना में अपनी रिपोर्टें देर में प्रस्तुत कर सके थे । इन रिपोर्टों में इनके द्वारा कुछ विरोधाभासी बातें लिखीं गई थीं । एडम महोदय की तीनों रिपोर्ट का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि उस समय विद्यालयों की संख्या पर्याप्त नहीं थी, न ही विद्यार्थी इन स्कूलों में पढ़ने में रूचि लेते थे । लड़कियों की शैक्षिक दशा तो बहुत ही दयनीय थी ।

सन् 1854 ई0 में कम्पनी द्वारा घोषित 'वुड घोषणा पत्र– 1854' ने देश की शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित करने का कार्य किया । शिक्षा राज्य का उत्तरदायित्व बनाई गई । क्रमबद्ध विद्यालयों का गठन किया गया । आधुनिक विश्वविद्यालयों की भारत में स्थापना की सिफारिश की गई। शिक्षा के उद्‌देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, शिक्षण का माध्यम, मूल्यांकन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर इस घोषणा पत्र ने सिफारिशें दी । स्त्री एवं मुसलमानों की शिक्षा पर चिन्ता व्यक्त की गई । वुड घोषणा पत्र के महत्व एवं उसके कार्यों को देखते हुए जेम्स महोदय ने इसे भारत में 'शिक्षा का महाधिकार' पत्र की संज्ञा दी ।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के कारण वुड घोषणा पत्र पर अधिक कार्य नहीं हो सका । देश का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से छुड़ाकर ब्रिटिश संसद ने अपने हाथों में नवम्बर 1858 में ले लिया । रानी विक्टोरिया की ब्रिटिश सरकार ने अपना पूरा ध्यान भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने पर लगाया । शिक्षा सम्बन्धी कार्य पीछे छूट गये ।

इस समय तक देश के विभिन्न प्रांतों में हजारों प्राथमिक विद्यालय विभिन्न माध्यमों से स्थापित किये गये । कई स्थानों पर हाईस्कूलों की स्थापना की गई । नये कॉलेजों की स्थापना की गई, कुछ हाईस्कूलों को कॉलेज बनाया गया । सन् 1835 में 'कलकत्ता मेडिकल कॉलेज' स्थापित हुआ । 1851 में मद्रास मेडिकल स्कूल को कॉलेज में परिवर्तित किया गया । 1854 में मुम्बई में ग्राण्ट मेडिकल कॉलेज एवं पूना में

इन्जीनियरिंग कॉलेज तथा एक यंत्र शास्त्र का विद्यालय स्थापित किया गया । इसी वर्ष रूड़की में टामसन इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना हुई । कलकत्ता में सन् 1856 में एक इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना हुई । सन् 1857 में कलकत्ता, बम्बई एवं मद्रास में, लन्दन विश्वविद्यालय को आदर्श बनाकर, विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई ।

3.1.1.6 परतंत्र भारत में शिक्षा आयोग एवं शिक्षा–

देश में समय–समय पर शिक्षा में सुधार, परिवर्तन एवं विकास करने के लिए अनेकों शिक्षा आयोगों का गठन किया गया । इन आयोगों ने शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किये । 'भारतीय शिक्षा आयोग' देश में सबसे पहला शिक्षा आयोग था । इसे 'हण्टर आयोग' भी कहा जाता है । सन् 1882 ई0 में गठित इस आयोग ने प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा तीनों के विकास एवं बेहतर प्रबन्धन के लिए कई क्रान्तिकारी सुझाव दिये । आयोग के सुझावों के फलस्वरूप प्राथमिक शिक्षा में तीव्ररूप से प्रगति हुई । देश में इनका जाल सा बिछ गया । माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के विद्यालयों में तीव्र गति से प्रगति हुई । शिक्षा संस्थाओं में हुई प्रगति देश की तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार संतोषजनक कही जा सकती है परन्तु जनसंख्या की तुलना में इसे असंतोषजनक ही कहा जाएगा ।

हण्टर आयोग को प्राथमिक शिक्षा का विशेष अध्ययन करने के लिए कहा गया था । इस आयोग ने प्राथमिक शिक्षा को स्थानीय निकायों को सौंपने की सिफारिश की थी, जिससे प्राथमिक शिक्षा का तेजी से विकास हो सके । माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा को भारतीय जनता पर छोड़ने की बात कही थी । आयोग ने यह भी कहा था कि जिन स्थानों पर माध्यमिक शिक्षा या उच्च शिक्षा की मांग होगी और वहां की जनता इस मांग को पूरा करने में असमर्थ होगी, उन स्थानों पर सरकार जिले में एक स्कूल या कॉलेज की स्थापना करेगी । शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थानीय आवश्यकताओं को महत्व दिया था । शिक्षा का माध्यम मातृभाषाएं एवं क्षेत्रीय भाषाएं बनाने की सिफारिश की थी । माध्यमिक शिक्षा में पहली बार छात्रों को अपनी रूचि के अनुसार विषय चुनने के लिए विकल्प उपलब्ध करवाये । माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को 'साहित्यिक पाठ्यक्रम' एवं 'व्यावसायिक पाठ्यक्रम' में विभाजित किया ।

भारतीयों के व्यक्तिगत प्रयासों से अनेक विद्यालय एवं कॉलेजों का निर्माण किया गया । स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से अनेकों विद्यालय खोले गये । इस समय स्थापित किये गये प्रमुख कॉलेज थे – फर्ग्यूसन कॉलेज, दयानन्द एंग्लोवैदिक कॉलेज और सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज आदि ।

लार्ड कर्जन एक विद्वान व्यक्ति एवं अच्छा प्रशासक था । भारत में गवर्नर जनरल के रूप में सबसे अधिक कार्य लार्ड कार्जन ने ही किये हैं । यह 1899 ई0 में गवर्नर जनरल के रूप में भारत आया था । कर्जन ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से कार्य किया । सबसे पहले 1901 ई0 में शिमला में पंद्रह दिवसीय 'शिक्षा सम्मेलन' का आयोजन किया, जो कि पूर्णतः गोपनीय रहा । 1902 ई0 में भारतीय विश्वविद्यालयों की संरचना एवं प्रबन्धन में सुधार करने हेतु 'भारतीय विश्वविद्यालय आयोग' का रैले महोदय की अध्यक्षता में गठन किया । इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर 'भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम – 1904' को पारित करवाया । इस अधिनियम में विश्वविद्यालयों के अच्छे प्रबन्धन के लिए कई नियम पारित किये गये । मार्च 1904 में घोषित अपनी शिक्षा नीति में कर्जन ने देश की शिक्षा में व्याप्त दोषों की संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूपों में व्याख्या की । संख्यात्मक दोषों में कहा कि 5 में 4 गांवों में स्कूल है । 5 में से 3 लड़के शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । 40 में से 1 लड़की शिक्षित है । गुणात्मक दोषों में कहा कि शिक्षा पुस्तकीय है, इसे जीवन परक बनाने की आवश्यकता है ।

1905 से 1911 का समय राष्ट्रीय जागरण काल के नाम से जाना जाता है । 1905 में बंगाल विभाजन की घोषणा ने पूरे देश को आन्दोलित कर दिया । 'राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन' प्रारम्भ हुआ । देश में राष्ट्रीय शिक्षा की मांग उठी । कांग्रेस ने 'राष्ट्रीय शिक्षा' की घोषणा की । 1911 में बंगाल विभाजन की घोषणा वापस होने के साथ ही राष्ट्रीय आन्दोलन धीमा हो गया । शिक्षा के क्षेत्र में कई कार्य हुए । राष्ट्रीय आन्दोलन के फलस्वरूप कई राष्ट्रवादी विद्यालयों एवं कॉलेजों की स्थापना हुई । 1920 में जामिया मिलिया इस्लामिया, बिहार विद्या पीठ, काशी विद्या पीठ, गुजरात विद्या पीठ आदि की स्थापना हुई । 1916 से 1921 तक 7 नये विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ । 1911 से

1921 तक 69 कॉलेजों की स्थापना हुई । सरकार ने इन सभी को उदारता पूर्वक दान दिया । 1921 में 7530 माध्यमिक विद्यालय थे ।

सन् 1907 में बड़ौदा नरेश शियाजी राव गायकवाड़ ने अपने बड़ौदा राज्य में 7–12 आयु वर्ग के बालकों के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी थी । इससे प्रेरणा पा कर गोपाल कृष्ण गोखले ने 1910 एवं 1911 में दो बार केन्द्रीय धारा सभा में प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता सम्बन्धी प्रस्ताव पारित करवाने का प्रयास किया, परन्तु असफल रहे ।

1971 ई. में कलकत्ता विश्वविद्यालय में सुधार के लिए 'कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग' का गठन किया गया । इसके अध्यक्ष डॉ. माइकल सैडलर थे । इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में सुधार के लिए सुझाव दिये, इसके साथ इन्होंने देश के अन्य विश्वविद्यालयों में भी सुधार के लिए सुझाव दिया । इन्होंने विश्वविद्यालयों को 'सम्बद्ध' से 'शिक्षण एवं सम्बद्ध' विश्वविद्यालयों में परिवर्तित करने का सुझाव दिया । इन्होंने माध्यमिक शिक्षा का भार विश्वविद्यालयों से अलग करने का सुझाव दिया । इन्होंने माध्यमिक शिक्षा के संचालन के लिए अलग से 'माध्यमिक शिक्षा परिषद' के गठन का सुझाव दिया । माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु अन्य महत्वपूर्ण सुझाव दिये ।

1929 में हर्टाग समिति की नियुक्ति साइमन कमीशन ने की थी । इस समिति ने भारतीय शिक्षा के सभी अंगों का अध्ययन किया एवं उसकी उन्नति के लिए अमूल्य सुझाव दिये । हर्टाग समिति ने सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षा के विकास में अवरोधक 'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' समस्या का विस्तृत अध्ययन किया । हाईस्कूल के पाठ्यक्रम में औद्योगिक एवं व्यापारिक विषयों को स्थान देने की सिफारिश की ।

इस काल में उच्च शिक्षा में आशाजनक उन्नति हुई । दिल्ली, नागपुर, आंध्र, आगरा और अन्नामलाई विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ । राष्ट्रीय शिक्षा के विकास के लिए कुछ देशभक्त भारतीयों ने विशिष्ट शिक्षा संस्थायें स्थापित की, जिनमें विश्वभारती, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, दारूल उलूम आदि प्रमुख हैं। इसी काल में व्यवसायिक

शिक्षा, स्त्री शिक्षा, मुसलमानों की शिक्षा, हरिजनों की शिक्षा पर भी कार्य हुआ । प्रौढ़ शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया ।

अक्टूबर 1937 में वर्धा में 'राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' आयोजित किया गया । देश भर से शिक्षाविद् एवं विद्वानों को आमंत्रित किया गया । महात्मा गाँधी ने इस सम्मेलन के सभापति पद से अपनी आत्मनिर्भर एवं कौशल आधारित शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की । इसकी भरपूर सराहना हुई । इसे व्यवस्थित रूप देने के लिए जामिया मिलिया के कुलपति डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई । इस समिति ने इसे 'बेसिक शिक्षा' या 'बुनियादी तालीम' नाम दिया तथा इसका पाठ्यक्रम एवं सम्पूर्ण योजना प्रस्तुत की । 1937 में देश के कई राज्यों में कांग्रेस का मंत्रीमण्डल गठित होने पर बेसिक शिक्षा को इन राज्यों में लागू करने का निर्णय लिया गया ।

देश में व्यवसायिक शिक्षा की उचित व्यवस्था करने के लिए वुड–ऐवट आयोग का गठन 1937 में किया गया । ऐवट ने व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में कई सुझाव दिये । इन सुझावों की सहायता से देश में व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार में सहायता मिली । वुड ने सामान्य शिक्षा के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये थे ।

इसी समय प्राथमिक शिक्षा के विकास में नवीन योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई । 1938–39 में मध्य प्रान्त में 'विद्या मन्दिर योजना' को क्रियान्वित किया गया । इस योजना के तहत उन ग्रामों में जहाँ 40 बालक –बालिकायें शिक्षा प्राप्त करने योग्य थे 'विद्या मंदिर' स्कूल खोले गये । प्रत्येक विद्या मन्दिर को भवन और 200 रूपया वार्षिक आय की भूमि दी गई । सम्पूर्ण प्रान्त में लगभग 80 विद्या मन्दिर स्थापित किये गये । मुम्बई प्रान्त में वालण्टरी स्कूल योजना 1938 में क्रियान्वित की गई । इस योजना में समितियों या व्यक्तियों द्वारा स्थापित किये गये स्कूलों को प्रोत्साहित किया गया । 1947 तक पूरे प्रान्त में 6684 वालण्टरी स्कूलों का संचालन किया जा रहा था ।

1944 में सार्जेण्ट की अध्यक्षता में एक कार्य योजना का कार्य प्रारम्भ किया गया । इसे 'युद्धोत्तर शिक्षा योजना' भी कहा गया । इस योजना में पहली बार एक

समयबद्ध योजना तैयार की गई थी । कार्यान्वयन में होने वाले खर्च का भी पूर्वानुमान प्रस्तुत किया गया था । आजादी के संघर्ष एवं आजादी के पश्चात् इस योजना पर कार्य नहीं किया जा सका ।

3.1.1.7 स्वतन्त्रोत्तर भारत में शिक्षा आयोग एवं शिक्षा–

स्वतंत्रता के पश्चात् देश ने अपनी विकास की योजनाओं का पुनर्गठन किया । शिक्षा की नीतियों पर विचार विमर्श किया गया । सर्वप्रथम उच्च शिक्षा का भारतीयकरण करने पर बल दिया गया । जिससे देश का आर्थिक विकास तेजी से किया जा सके । डा. राधा कृष्णन की अध्यक्षता में 1949 में 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' का गठन किया गया । आयोग ने उच्च शिक्षा के उद्देश्यों को आधुनिक भारत के अनुरूप निर्धारित किया । कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के पुनर्गठन की आवश्यकता पर बल दिया । इन्होंने माध्यमिक शिक्षा में सुधार के लिए भी कई सुझाव दिये । इस आयोग का मानना था कि माध्यमिक शिक्षा में सुधार किये बिना उच्च शिक्षा का विकास सम्भव नहीं है ।

1952–53 में माध्यमिक शिक्षा के पुनर्निर्माण की आवश्यकता का अनुभव करके केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' की नियुक्ति की सिफारिश की । भारत सरकार ने मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति डा0 लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में 'माधमिक शिक्षा आयोग'–1954 की नियुक्ति की । इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु उपयोगी सुझाव दिये । सरकार द्वारा सुझावों का कियान्वयन करते हुए बहुउद्देशीय स्कूलों की स्थापना, ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति, अखिल भारतीय कीड़ा परिषद और अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद की स्थापना, कृषि शिक्षा का विस्तार, इन्जीनियरिंग कॉलेज एवं प्राविधिक विद्यालयों का निर्माण एवं माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र आदि पर कार्य किये गये ।

भारतीय शिक्षा में 'मील का पत्थर' कोठारी आयोग द्वारा स्थापित किया गया । डा. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय शिक्षा आयोग' का गठन 14 जुलाई 1964 को किया गया । आयोग का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत था । इसने पूर्व

प्राथमिक शिक्षा से लेकर शोध कार्यों तक अपने सुझाव दिये । सभी स्तरों पर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया । शिक्षा की संरचना व्यवस्थित की । आयु वर्ग के अनुसार कक्षाओं का निर्धारण किया । 10+2+3 शिक्षा संरचना की प्रबल संस्तुति की । अध्यापक शिक्षा, शैक्षिक अवसरों की समानता, विद्यालय शिक्षा का विस्तार, पाठ्यक्रम, प्रशासन, मूल्याँकन, कृषि शिक्षा, व्यावसायिक, प्राविधिक एवं विज्ञान शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा कर अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये ।

केन्द्र सरकार ने सम्पूर्ण देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार कर देश को इक्कीसवीं सदी में ले जाने के लिए सन् 1986 में नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' की घोषणा की । इस नीति के फलस्वरूप सम्पूर्ण देश में 10+2+3 संरचना को अनिवार्य किया गया । एक Programme of Action तैयार किया गया । इस शिक्षा नीति में दो बार संशोधन किये गये । पहली बार 1990 में आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में, दूसरी बार 1992 में जनार्दन रेड्डी की अध्यक्षता में । इस शिक्षा नीति के तहत देश में सन् 2000 तक शत–प्रतिशत साक्षरता पाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था ।

उपरोक्त वर्णित मुख्य शिक्षा आयोगों के अतिरिक्त अन्य शिक्षा आयोगों एवं समितियों का भी गठन किया गया था जिनको एक सीमित क्षेत्र में ही कार्य करना था । इन सभी आयोगों ने देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने में शिक्षा को एक मात्र साधन माना । समय तथा परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा में परिमार्जन करने के लिए कई उपयोगी सुझाव दिये । देश को शत–प्रतिशत साक्षर बनाने के लिए कई प्रयास किये गये । यह देश का दुर्भाग्य है कि हम आज तक इस लक्ष्य को पाने का प्रयास कर रहे हैं, अभी भी दिल्ली दूर नज़र आ रही है ।

3.1.2 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास

शिक्षा विकास का एक माध्यम है । विकास चाहे मानव का हो या राष्ट्र का शिक्षा के बिना अधूरा ही नहीं असम्भव भी है । इस कथन का प्रत्यक्ष उदाहरण है बुन्देलखण्ड क्षेत्र । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र वर्तमान में ही नहीं भूतकाल में भी शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था । शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण इस क्षेत्र में गरीबी बेरोजगारी और भुखमरी चारों और फैली हुई थी । यहां व्याप्त गरीबी एवं पिछड़ेपन का चित्रण करते हुए अमेरिकन मिशनरी डेलिया फिशनर ने लिखा था कि, "हे मित्रों बुन्देलखण्ड के पिछड़े हुए क्षेत्र में जाओ, जहाँ भूख से मरने वालों की संख्या बहुत अधिक है । यहां के लोग दयनीय स्थिति में हैं, इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें । वहां की गरीबी का चित्रण कलम के द्वारा नहीं किया जा सकता है।"[1] अमेरिकन मिशनरी डेलिया फिशनर ने अपने इस लेख में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बुन्देलखण्ड की स्थिति का वर्णन किया था । इस संक्षिप्त वर्णन से बुन्देलखण्ड की बदहाली का सम्पूर्ण दृश्य स्पष्ट हो जाता है ।

3.1.2.1 बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों का शैक्षिक योगदान–

स्वतंत्रता पूर्व बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में आधुनिक यूरोपीय प्रकार की शिक्षा को प्रारम्भ करने का श्रेय विभिन्न यूरोपीय मिशनरियों को ही जाता है । यूरोपीय मिशनरियों का आगमन भारत में सोलहवीं शताब्दी में हो चुका था । पुर्तगाली, ब्रिटेन, फ्रांसीसी, डच तथा डेन मिशनरियों ने अपना कार्य देश के विभिन्न भागों में सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक प्रारम्भ कर दिया था । परन्तु इस क्षेत्र में मिशनरियों का आगमन बहुत समय पश्चात् हो सका । मिशनरियों ने इस क्षेत्र में अपने कदम अठारवीं शताब्दी के अन्त तक रखे थे । सन् 1802 ई. में अंग्रेजों एवं मराठों के मध्य 'बेसिन की सन्धि' के पश्चात् बुन्देलखण्ड का आधिपत्य अग्रेजों को प्राप्त हो गया था । अंग्रेज कम्पनी के अधिकार में बुन्देलखण्ड का क्षेत्र आने के पश्चात् मिशनरियों का अधिक मात्रा में इस क्षेत्र

---

1. ए. सेन्चुअरी ऑफ प्लाटिंग, ए हिस्ट्री ऑफ दी अमेरिकन फ्रेन्डस् मिशन इन इण्डिया थाई ई. अन्ना निक्सन प्रीफेस ।

में आगमन प्रारम्भ हुआ । इस क्षेत्र में यूरोपीय मिशनरियों के साथ–साथ अमेरिकन तथा कनेडियन मिशनरियों ने भी अपना कार्य प्रारम्भ किया था ।

अंग्रेजी शासन का प्रमुख उद्देश्य यहां का सामाजिक आर्थिक शोषण करते हुए अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त करना था । राजस्व की ऊँची दरों के साथ तेजी से वसूली के कारण, इस इलाके के अधिकांश लोगों ने सरकारी करों की पूर्ति के लिए अपनी भूमि मारवाड़ियों, जैनियों तथा अनेक ऋणदाताओं के हाथों में बेचनी शुरू कर दी थी । बाँदा तथा कर्वी सब डिवीजन दोनों क्षेत्र राजस्व प्रबन्ध, अकाल तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्रभावित होते रहे । इस प्रकार की राजस्व नीति इस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी रही, साथ ही भूमि हस्तांतरण की यह प्रकिया निरन्तर चलती रही । अतः इस क्षेत्र में गरीबी, भुखमरी तथा बेरोजगारी का बोल–बाला बढ़ा और सामाजिक, अर्थिक पिछड़ापन बढ़ता गया ।

पाठक[1] (1987) लिखते है कि अंग्रेज शासन की राजस्व नीति एवं 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी दमनकारी नीति के फलस्वरूप बुन्देलखण्ड की जनता अंग्रेजों के किसी भी कार्य में सहयोग नहीं देना चाहती थी । ऐसी दुरूह परिस्थितियों में अंग्रेजों के लिए यह आवश्यक हुआ कि इस क्षेत्र में एक वफादार प्रजा का निर्माण किया जाये । इस उद्देश्य से ईसाई धर्म प्रचारकों को इस क्षेत्र में बसने के लिए प्रेरित किया गया जिससे यहाँ की जनता ईसाईयों के नाम पर वफादार हो । इस प्रकार बुन्देलखण्ड के पिछड़े क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों ने अपना कार्य प्रारम्भ किया । इन्हें सरकार की ओर से संरक्षण एवं सुविधायें प्रदान की गईं ।

बुन्देलखण्ड के पिछड़े हुए इलाके में ईसाई मत के प्रचार तथा प्रसार का कार्य सर्वप्रथम प्रोटेस्टेन्ट मिशनरियों ने किया था।[2] बाँदा में सन् 1870 ई0 में कलैक्टर मेन ने बुन्देलखण्ड मिशन की स्थापना की थी । यह मिशन कानपुर मिशन का एक भाग था । यह मिशनरी प्रोटेस्टेन्ट समुदाय के लोगों की थी । धीरे–धीरे इस मिशन की शाखाऐं महोबा, अतर्रा, कर्वी आदि स्थानों पर खोली गईं । कर्वी बाँदा जिले का सब

1. पाठक, एस. पी., 1987, झाँसी डयूरिंग दि ब्रिटिश रूल, रामानन्द विद्या भवन, नई दिल्ली ।
2. रत्नाकर, एम.राव., किटिकल इन्क्वायरी इन टू दि बुन्देलखण्ड मसीही मित्र समाज वर्ष इन दि बुन्देलखण्ड एरिया ।

डिवीजन एवं सबसे पिछड़ा इलाका था, यहां इस मिशन के द्वारा एक चर्चा का निर्माण किया गया । प्रोटेस्टेन्ट मिशन के अलावा अमेरिकन मैथडिस्ट मिशन ने भी बाँदा तथा कर्वी में कुछ केन्द्र स्थापित किये थे ।[1] जालौन जिले में किसी भी मिशन का स्थायी केन्द्र 1909 तक स्थापित नहीं हो सका था । लेकिन अमेरिका के मैथडिस्ट मिशन के अनुयायी इस जिले के कोंच, उरई और माधौगढ़ स्थानों पर अपने धर्म के प्रचार का कार्य कर रहे थे ।[2] मिशनरियों का लगभग इसी तरह का कार्य झाँसी, ललितपुर तथा हमीरपुर जिलों में रहा ।

सिन्हा[3] (1982) महोदय लिखते हैं कि, "ब्रिटिश शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में बुन्देलखण्ड के जिलों में ईसाई मिशनरियों का कोई विशेष केन्द्र नहीं था । जैसे–जैसे अंग्रेजी शासन विस्तृत होता चला गया और शान्ति व्यवस्था स्थापित होने लगी वैसे–वैसे इस क्षेत्र में भी ईसाई मिशनरियों का प्रभुत्व बढ़ने लगा । इन मिशनरियों के प्रचार एवं प्रसार से कन्या वध, सती प्रथा और विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक सुधारों का कियान्वयन हुआ ।" इस प्रकार बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की मिशनरियों ने अपना कार्य प्रारम्भ किया, इनमें कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट, अमेरिकन मिशनरी, अमेरिकन फ्रेण्डस मिशन, माल्टा की मिशनरी, अमेरिकन प्रेस ब्रिटेनियन आदि प्रमुख हैं । इलाहाबाद डायोसिस से अलग झाँसी प्रिफेक्चर का गठन सन् 1932 ई0 में किया गया ।

ईसाई मिशनरियों ने इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए अनूठी पद्धति का प्रयोग किया था । सर्व प्रथम वह क्षेत्र विशेष का भ्रमण कर वहां के क्षेत्रवासियों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझते थे । आवश्यकता के अनुसार चिकित्सालय, धार्मिक केन्द्र, अनाथालय, शिक्षालय आदि स्थापित करते थे । बुन्देलखण्ड में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी तथा पिछड़ेपन का लाभ लेने के लिए ईसाई मिशनरियां ने इस क्षेत्र में अनेक संस्थाओं की स्थापना कर लोगों की सहायता की तथा ईसाई धर्म के प्रचार का कार्य किया । 'बुन्देलखण्ड मिशन' ने प्रारम्भिक वर्षों में अनाथालय तथा धर्म प्रचार से सम्बन्धित कार्य किये ।

---

1. ड्रेक, वॉकमेन, डी. एल., 1909, बाँदा, गजेटियर, इलाहाबाद ।
2. ड्रेक, वॉकमेन डी. एल., 1909, जालौन गजेटियर, इलाहाबाद ।
3. सिन्हा, एस.एन., 1982, दि रिबेल्ट ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड, प्रथम संस्करण ।

मराठों से बुन्देलखण्ड का अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् प्रारम्भिक वर्षों में अंग्रेजी शासक इस क्षेत्र के जमीदारों, राजाओं तथा महाराजाओं को दबाकर शांति व्यवस्था स्थापित करने में व्यस्त रहे । यह विदेशी शासक अधिक से अधिक राजस्व की वसूली तथा शोषण में ही रूचि रखते थे । वे बुन्देलखण्ड के कल्याण अथवा शिक्षा आदि के लिए विशेष दिलचस्पी नहीं रखते थे । यही कारण था कि सन् 1804 से सन् 1858 तक इस क्षेत्र में शिक्षा की व्यवस्था के लिए किसी भी सुनियोजित नीति का पालन नहीं हुआ ।

1858 में विद्रोह समाप्त होने के पश्चात् अंग्रेजी अधिकारियों ने बुन्देलखण्ड के विभिन्न अंचलों में प्राथमिक स्कूलों की स्थापना करना प्रारम्भ किया। इन स्कूलों की स्थापना करके ये सरकारी अधिकारी जनता को यह दिखाना चाहते थे कि सरकार उनका कल्याण चाहती है । झाँसी सम्भाग में सरकार यह प्रयास अधिक से अधिक करना चाहती थी । मिशनरियों ने सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षा की ओर ध्यान दिया । 1858 में झाँसी, करेरा, पिछोर, मोंठ, गरौठा, मऊ, पण्डवाहा में प्राथमिक स्कूल खोले गये । ठीक इसी तरह कुछ गांवों में भी ऐसे प्राथमिक स्कूलों की स्थापना की गई, जिनकी संख्या झाँसी जिले में लगभग 28 थी । इस जिले के विस्तृत क्षेत्र तथा विशाल जनसंख्या की दृष्टि से 28 प्राइमरी स्कूल लोगों की आवश्यकता से बहुत कम थे । इसी तरह का प्रयास ललितपुर में भी किया गया, जहाँ ललितपुर, महरौनी और मड़ोरा में प्राईमरी स्कूलों की स्थापना हुई ।[1]

1861 में कुछ नये तहसील स्कूल चिरगांव, बरूआसागर, मऊरानीपुर में प्रारम्भ हुए । 1862 तक आते–आते यह देखा गया कि झाँसी जिले में तहसीली स्कूलों की संख्या कुल 11 थी । इसके अतिरिक्त गांवों में 76 स्कूल स्थापित किये जा चुके थे । 20 वी शताब्दी के प्रारम्भ तक झाँसी जिले में स्कूलों की संख्या 167 हो गई । इसके अलावा 39 प्राईवेट स्कूल भी प्रारम्भ किये जा चुके थे ।[2]

1.पाठक,एस.पी., 1987, झाँसी ड्यूरिंग दि ब्रिटिशरूल, रामानन्द विद्या भवन, नई दिल्ली ।
2. ड्रेक, वॉकमेन डी. एल., 1909, झाँसी गजेटियर, इलाहाबाद, पृष्ठ–174 ।

शिक्षा की दृष्टि से बुन्देलखण्ड अत्यधिक पिछड़ा हुआ था । स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में यहाँ अत्यन्त दयनीय स्थिति थी । इस क्षेत्र में 1866 में सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा का प्रारम्भ हुआ । इस वर्ष ललितपुर में एक कन्या स्कूल की स्थापना की गई थी । ललितपुर में इस योजना का स्वागत किया गया और यह सफल रही । इससे प्रेरित होकर अधिकारियों ने इसी तरह का कन्या विद्यालय झाँसी में भी स्थापित करना चाहा किन्तु यह योजना झाँसी में सफल न हो सकी । सन् 1872 में झाँसी में पुनः कन्या स्कूल की स्थापना का प्रयास हुआ।

इस समय 7 कन्या विद्यालय स्थापित किये गये, लेकिन इस योजना को पुनः लोगों का प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हुआ और चार वर्ष की अवधि के भीतर भी इन स्कूलों में लड़कियों की संख्या 116 से अधिक नहीं पहुंची । परिणाम यह हुआ कि कम संख्या के कारण 7 में से 6 स्कूलों को बंद करना पड़ा ।[1]

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लोगों ने कन्या विद्यालय के महत्व को समझा । इस समय तक ब्रिटिश दमन की याद भी लोगों के मस्तिष्क से विस्मृत हो रही थी । अतः झाँसी तथा ललितपुर को मिलाकर 146 कन्या विद्यालय स्थापित किये गये । झाँसी सम्भाग के अन्य जिलों में विशेषतः बाँदा तथा जालौन में भी यही स्थिति रही।[2]

यह भली–भाँति ज्ञात है कि बुन्देलखण्ड में अनेकों अंग्रेजी छावनियां थीं, यहाँ कार्यरत सैनिक अधिकारियो के बच्चों को पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के आधार पर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने की आवश्यकता महसूस की जा रही थी । साथ ही झाँसी रेलवे का प्रमुख केन्द्र बन चुका था । यहाँ भी काफी संख्या में ईसाई नौकरी आदि में आ चुके थे, जिनके बच्चों की शिक्षा के लिए भी अंग्रेजी स्कूलों की स्थापना की आवश्यकता थी । यूरोप के विभिन्न ईसाई मिशनरी भारत के पिछड़े क्षेत्रों में जाकर स्कूल आदि की स्थापना के द्वारा मानवीय कल्याण के कार्य करते हुए लोगों का दिल जीतकर अपने धर्म चाहते थे । पाश्चात्य ~~का प्रचार प्रसार करना~~ शिक्षा के प्रचार के पीछे ब्रिटिश शासकों का उद्देश्य यह भी था कि इस देश में अंग्रेजी पढ़े लिखे एक ऐसे वर्ग का निर्माण किया

1. ड्रेक, वॉकमेन डी. एल., 1909, झाँसी गजेटियर, इलाहाबाद, पृष्ठ–174 ।
2. इम्पीरियर गजेटियर इण्डिया, 1908, भाग–दो, कलकत्ता, पृष्ठ–91 ।

जाये जो रक्त में भारतीय हों, किन्तु जिनके विचार तथा सोचने के तरीके अंग्रेजों जैसे हों । ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भी भरत में पढ़े–लिखे सस्ते कर्मचारियों की आवश्यकता थी । अतः इन तमाम कारणों से बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में कई अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की स्थापना हुई ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में क्षेत्र के हिसाब से मिशनरी विद्यालयों का जाल सा फैला हुआ है । वर्तमान में इस क्षेत्र में कोई भी ऐसी तहसील नहीं हैं जहाँ पर कोई मिशनरी विद्यालय नहीं हो । वर्तमान में बुन्देलखण्ड के इस क्षेत्र में मिशनरियों द्वारा संचालित विद्यालयों की संख्या चालीस से अधिक है । इनमें कई विद्यालय स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व ही स्थापित किये जा चुके थे । स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व स्थापित विद्यालयों में से अधिकाँश विद्यालयों ने उच्चतम विकास किया है। सेन्ट फ्रांसिस कान्वेंट हाई स्कूल, झाँसी की स्थापना सन् 1898 में हुई थी, यह वर्तमान में इस क्षेत्र का सबसे पुराना मिशनरी स्कूल है ।

बुन्देलखण्ड में धीरे–धीरे मिशनरियों ने शिक्षा के क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए अनेक विद्यालय स्थापित किये । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के झाँसी में मिशनरियों ने शिक्षण संस्थाओं का सबसे अधिक विकास किया जो आज भी विकास की ओर अग्रसर है । वर्तमान में इस क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों में मिशनरी प्राथमिक विद्यालयों की संख्या सबसे अधिक है । माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या अपेक्षाकृत कम है । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में मिशनरियों द्वारा संचालित एक भी महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्य नहीं कर रहा है । ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में मिशनरियाँ मात्र प्राथमिक शिक्षा तक ही कार्य करना चाहती हैं । माध्यमिक स्तर एवं उच्च स्तर पर मिशनरी शिक्षा का प्रयास कम दिखई देता है ।

बुन्देलखण्ड में आज भी शिक्षा के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं है जिसके कारण इस क्षेत्र के छात्रों को अच्छी एवं उच्च शिक्षा के लिए बाहर जाना पड़ता है । यद्यपि आज शिक्षण संस्थाओं में बढ़ोत्तरी हुई है । आज यदि मिशनरी विद्यालयों को नजर अंदाज कर दिया जाये तो बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लगभग 60 प्रतिशत व्यक्ति प्राथमिक

शिक्षा से एवं 30 से 40 प्रतिशत व्यक्ति माध्यमिक शिक्षा से वंचित हो जायेंगे । अतः बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षिक योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यदि मिशनरी विद्यालयों को अलग कर दिया जाये तो बुन्देलखण्ड की जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा शिक्षा से वंचित रह जायेगा । इसका कारण यह है कि बुन्देलखण्ड के लगभग सभी शहर एवं कस्बों में मिशनरी विद्यालयों ने अपने पैर जमा लिये है एवं यहां की जनता की भावनाओं को समझकर अपने विद्यालयों का विकास किया है ।

3.1.3 उत्तर प्रदेश राज्य में माध्यमिक शिक्षा का विकास

औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय एक सशक्त माध्यम है। विद्यालयों के माध्यम से बालकों को उनके भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है। विश्व के सभी देशों ने अपने नागरिकों का विकास एवं उत्थान करने के लिये अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास किया है। हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तरों पर शिक्षा की सुव्यवस्था करने के अनेकों कार्यक्रमों का संचालन प्रारम्भ हुआ। स्वतन्त्रता के समय देश का साक्षरता प्रतिशत लगभग 26 प्रतिशत था। देश की तीन चौथाई जनसंख्या निरक्षर थी। साक्षरता के मामले में स्त्रियों की दशा और भी दयनीय थी। इतनी विशाल जनसंख्या के निरक्षर रहते हुए देश के समुचित विकास की कल्पना करना असम्भव था। अतः सरकारों ने स्कूलों के माध्यम से साक्षरता अभियान को प्राथमिकता प्रदान की। विभिन्न अनौपचारिक माध्यमों से भी जनसाधारण को शिक्षित एवं साक्षर बनाने के कई कार्यक्रमों का प्रायोजन किया गया। इन समस्त प्रयासों के फलस्वरूप हम आज देश का साक्षरता प्रतिशत, सन् 2001 की गणना के अनुसार, 65.38% तक पहुँचा सके हैं।

उत्तर प्रदेश में सन् 1951 में साक्षरता का प्रतिशत देश के औसत प्रतिशत की तुलना में कम था। मात्र 12.03% की साक्षरता के आधार पर उत्तर प्रदेश का विकास सम्भव नहीं था। स्वतन्त्रता पश्चात् प्रान्तों के पुनर्गठन के उपरान्त 26 जनवरी 1950 को इस प्रदेश को अपना नाम 'उत्तर प्रदेश' प्राप्त हुआ। प्रदेश सरकार ने शिक्षा को वरीयता प्रदान करते हुए स्कूलों की संख्या बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया, जिससे अधिक से अधिक बालकों को विद्यालयी शिक्षा उपलब्ध हो सके।

सन् 1950–51 की गणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में नर्सरी से लेकर उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विभिन्न प्रकार के विद्यालयों की कुल संख्या 35,826 थी। 50 वर्षों के प्रयासों के पश्चात् इन विद्यालयों की संख्या में लगभग 350 प्रतिशत की वृद्धि सम्भव हो सकी। सन् 1999–2000 में 127036 विद्यालय विभिन्न स्तरों की विद्यालयी शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहे थे। इतने ही समय में प्रदेश की

साक्षरता पौने पाँच गुना बढ़कर 12.03 प्रतिशत से 57.36 प्रतिशत हो सकी । इसी अन्तराल में प्रदेश की जनसंख्या में लगभग पौने तीन गुने की वृद्धि हुई । सरकार के पास उपलब्ध संसाधन एवं शिक्षा के प्रति सामाजिक जागरूकता को देखते हुए प्रदेश की साक्षरता में हुई वृद्धि को संतोषजनक कहा जा सकता है । अभी भी उत्तर प्रदेश साक्षरता में तुलनात्मक रूप से देश के औसत से नीचे है ।

उत्तर प्रदेश में विद्यालयी शिक्षा पाँच भागों में विभाजित है । सबसे पहले स्तर पर 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा' आती है । सामान्यतः इसे नर्सरी स्कूलों में प्रदान किया जाता है । उत्तर प्रदेश में केवल पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों की संख्या नाममात्र को है । सन् 1999–2000 में प्रदेश में ऐसे स्कूलों की संख्या मात्र 45 थी । शोधकर्ता इसका कारण यह समझ पा रहा है कि प्राथमिक शिक्षा देने वाले विद्यालय साथ ही साथ पूर्व प्राथमिक शिक्षा का भी प्रबन्ध कर रहे हैं। दूसरे स्तर पर 'प्राथमिक शिक्षा' आती है । प्रदेश में इसे 'जूनियर बेसिक स्कूल' स्तर की शिक्षा का नाम दिया गया है । इस स्तर में कक्षा 1 से कक्षा 5 आती है । तीसरे स्तर की 'उच्च प्राथमिक शिक्षा' को 'सीनियर बेसिक स्कूल' स्तर की शिक्षा का नाम दिया गया है । यह कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की शिक्षा कहलाती है । इसे 'जूनियर हाईस्कूल' या 'माध्यमिक स्कूल' या 'मिडिल स्कूल' या 'उच्च प्राथमिक स्कूल' की शिक्षा का भी नाम दिया गया है । चौथा स्तर 'उच्च माध्यमिक' स्तर है, जिसमें कक्षा 9 व 10 की शिक्षा आती है । इसे 'हाई स्कूल' के नाम से भी जाना जाता है । 'उच्चतर माध्यमिक शिक्षा' विद्यालयी शिक्षा का उच्चतम एवं अन्तिम स्तर है । इसमें कक्षा 11 व 12 को शामिल किया जाता है, जिसे 'इण्टरमीडिएट' स्तर भी कहा जाता है । इस प्रकार पाँच स्तरों में विभाजित स्कूली शिक्षा को भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है । कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की शिक्षा को सामूहिक रूप से 'माध्यमिक शिक्षा' कहा जाता है ।

उत्तर प्रदेश की विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न चरणों को एक रेखाचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ।
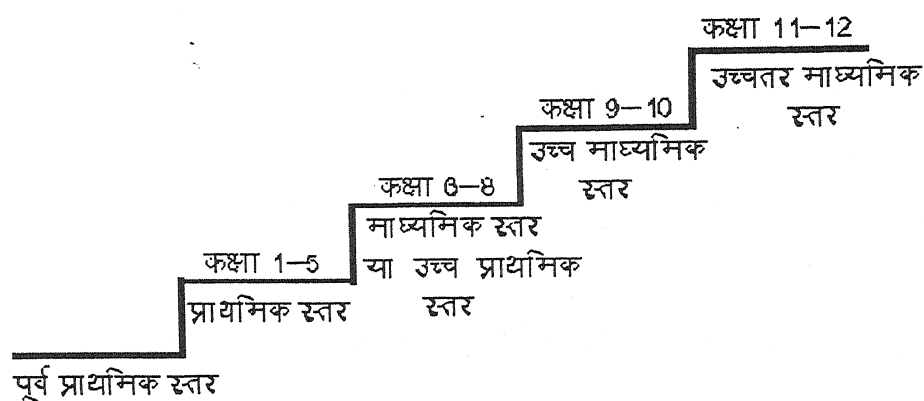
'उत्तर प्रदेश में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तर' की रेखाकृति 3.1

उत्तर प्रदेश में नर्सरी से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की संख्या में पिछले पाँच दशको में हुई वृद्धि को निम्न प्रस्तुत तालिका द्वारा आसानी से समझा जा सकता है ।

तालिका कमाँक–3.1 – उत्तर प्रदेश (उत्तरांचल सहित) में विभिन्न स्तरों पर विद्यालयों की संख्या में दशकीय वृद्धि

स्तर		1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91	1999-2000
नर्सरी विद्यालय	बालक A एवं बालिका	6	73	141	65	45	45
प्राथमिक विद्यालय	बालक	29459	35156	50503	70606	77111	96764
	बालिका	2520	4927	11624	combined	combined	combined
	टोटल B	31979	40083	62127	70606	77111	96764
	ग्रामीण क्षेत्र	23710	35302	55998	64021	71188	87482
उच्च प्राथमिक विद्यालय	बालक	2386	3674	6779	10355	11753	18441
	बालिका	468	661	2008	3200	3319	3237
	टोटल C	2854	4335	8787	13555	15072	21678
	ग्रामीण क्षेत्र	1984	3772	6367	11322	13530	18852
उच्च माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	बालक	833	1489	2834	4420	5113	7122
	बालिका	154	282	581	758	886	1427
	टोटल D	987	1771	3415	5178	5999	8549
	ग्रामीण क्षेत्र	503	749	1840	3394	4093	7168
कुल योग	A+B+C+D	35826	46262	74470	89404	98277	127036

Source – School Education in uttar pradesh : Status, issues and future perspectives-NCERT (2003)

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विद्या भारती द्वारा संचालित कक्षा 6 से लेकर कक्षा 12 तक की शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों को अपने शोध अध्ययन का केन्द्र बनाया है । इस प्रकार शोधार्थी ने सीनियर बेसिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय अपने अध्ययन में सम्मिलित किये हैं । उत्तर प्रदेश में विद्या भारती द्वारा संचालित प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों को 'सरस्वती शिशु मन्दिर' एवं कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों को 'सरस्वती विद्या मन्दिर' के नाम से जाना जाता है । इन्हीं 'सरस्वती विद्या मन्दिर' शिक्षा संस्थाओं द्वारा बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में किस प्रकार शैक्षिक विकास किया जा रहा है ? इसी समस्या को शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन का विषय बनाया है । चूँकि शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र माध्यमिक विद्यालय है, अतः शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की प्रगति का ही वर्णन किया है ।

विश्व के किसी भी देश के शिक्षा तंत्र में माध्यमिक शिक्षा का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सार्थक होता है । इस स्तर की शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व इस लिए भी ज्यादा है क्योंकि इसे शिक्षा में पहला पड़ाव कहा जाता है । इस स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् दो तिहाई (2/3) से भी ज्यादा छात्र विद्यालयी शिक्षा छोड़कर, सामान्य जीवन में प्रवेश कर, जीवकोपार्जन के कार्य में जुट जाते हैं । माध्यमिक शिक्षा के उपरांत विद्यालय छोड़कर औपचारिक शिक्षा से दूर हट जाने के कारण छात्रों का विकास अपूर्ण रह जाने की आशंका रहती है । अतः शिक्षाविदों के अनुसार माध्यमिक शिक्षा को स्वयं में समेकित एवं पूर्ण होना चाहिए । अर्थात इस स्तर के पश्चात् स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों में अधकचरापन (अपूर्णता) नहीं होना चाहिये । ऐसा प्रतिबिम्बत हो कि उनके अन्दर एक स्तर तक की पूर्णता है । माध्यमिक शिक्षा का ढाँचा इस प्रकार से तैयार किया जाना चाहिए कि इस शिक्षा द्वारा उत्तम, उत्तरदायित्व पूर्ण एवं समर्पित नागरिक, तथा श्रम के क्षेत्र में तकनीकी अनुभव, अर्ध कुशल श्रमिक एवं मध्यम स्तरीय व्यक्ति के रूप में बालक को तैयार किया जा सके ।

माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के मध्य की कड़ी कहा जाता है, क्योंकि इस शिक्षा के प्रारम्भिक छोर पर प्राथमिक शिक्षा एवं अन्तिम छोर पर उच्च शिक्षा होती है । इन दोनों ही शिक्षाओं की प्रकृति एवं स्वरूप माध्यमिक शिक्षा से सर्वथा भिन्न है । अतः माध्यमिक शिक्षा का महत्व न केवल उसकी सम्पूर्णता में है । बल्कि इस बात में भी है कि यह प्राथमिक शिक्षा प्राप्त बालकों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी तैयार करती है । इस प्रकार यह शिक्षा कई उत्तरदायित्वों का वहन करती है। एक ओर यह शिक्षा ऐसे बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार करती है जो इस स्तर को पूर्ण करने के पश्चात् जीवकोपार्जन के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं । दूसरी ओर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की महात्वाकाँक्षा रखने वाले छात्रों में उच्च गुणवत्ता के ज्ञान का विकास करती है , जिससे उच्च शिक्षा को प्रतिभाशाली एवं योग्य छात्र प्राप्त हों। तीसरी ओर देश का सामाजिक, वैज्ञानिक, तकनीकी तथा आर्थिक विकास एवं उन्नति का भार भी इसी शिक्षा पर आता है ।

शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का सामान्य रूप में, विशेषकर माध्यमिक शिक्षा के सन्दर्भों में वर्णन करते हुए एन.सी.ई.आर.टी. कहती है कि इसके द्वारा ऐसे उत्तम नागरिकों का विकास सहजता से हो जो उत्तरदायी, ज्ञानवान, अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करने वाले, प्रजातांत्रिक, विचारशील व्यक्ति, धनी, सही–गलत में निर्णय लेने में सक्षम, सहयोगी, समाज के पुनर्निर्माण एवं आर्थिक विकास में प्रभावी भूमिका निभाने वाले हों।[1]

उत्तर प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने वालों में अगुवा रहा है । सैडलर आयोग 1917 ने सिफारिश की थी कि माध्यमिक शिक्षा के उचित विकास एवं विश्वविद्यालयों के बोझ को कम करने के लिए सभी प्रान्तों को अपना 'माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' बनाना चाहिए । उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रान्त) ने सर्वप्रथम इस सुझाव पर अमल करते हुए सन् 1921 में 'हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट शिक्षा बोर्ड', उत्तर प्रदेश का गठन किया था । इस बोर्ड को हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों को देखने एवं इन शिक्षण संस्थानों पर नियंत्रण करने की जिम्मेदारी दी गई थी ।

1- School Education in uttar pradesh : Status, issues and future perspectives, 2003, NCERT, New Delhi.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के द्वारा जब सम्पूर्ण देश में 10+2+3 प्रणाली को स्वीकार करने का दबाव डाला जा रहा था उस समय उत्तर प्रदेश में 10+2 प्रणाली कार्य कर रही थी तथा कुछ ही वर्षो में +3 प्रणाली को भी लागू कर दिया गया था ।

3.1.3.1 उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा संस्थानों का विस्तार–

उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता के पूर्व भी शिक्षा पर ध्यान दिया जा रहा था । स्वतंत्रता के पश्चात् इस दिशा में और भी गम्भीरता से कार्य किया गया । केन्द्र सरकार द्वारा शिक्षा के विकास के लिये विभिन्न प्रयास प्रारम्भ किये गये । आयोगों का गठन किया, इनकी अनुशंसाओं का पालन किया गया। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश सरकार ने वर्ष 1952 में माध्यमिक शिक्षा के विकास को तेज करने के लिये एक समिति को गठित करने का फैसला लिया । आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया । इस समिति को आचार्य नरेन्द्र देव समिति (द्वितीय) 1952 के नाम से जाना जाता है । इन्हीं आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में सन् 1938 में माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु प्रथम समिति का गठन किया गया था । आचार्य नरेन्द्र देव समिति (द्वितीय) 1952 के द्वारा प्रस्तावित सुझावों को प्रदेश सरकार द्वारा तुरन्त स्वीकार कर उन पर कार्य प्रारम्भ किया गया।

उत्तर प्रदेश में स्वतन्त्रता के पश्चात् माध्यमिक शिक्षा संस्थानों, उनमें नामांकन एवं शिक्षकों की संख्या में कमिक वृद्धि देखने को मिलती है । इन शिक्षा संस्थानों का विस्तार ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में हुआ है । इन संस्थाओं ने दोनों क्षेत्रों के बालक–बालिकाओं तक अपनी पहुँच बढ़ायी है ।

शोधार्थी ने संस्थाओं के विकास का अध्ययन दशकीय आधार पर सन् 1950–51 से आरम्भ कर क्रमशः 1960–61,1970–71, 1980–81, 1990–91, 1999–2000 तक के वर्षों को अध्ययन में सम्मिलित किया है । इस अध्ययन को सुविधापूर्ण बनाने के लिये आँकड़ों को 'स्कूलों की संख्या में वृद्धि', 'नामांकन में वृद्धि' एवं 'शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की संख्या में वृद्धि' नामक तीन भागों में विभाजित किया गया है ।

प्रस्तुत तालिका कमाँक–3.2 में कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की दशकीय वृद्धि को प्रदर्शित किया गया है । इस प्रदर्शन में बालक एवं बालिकाओं के शिक्षा संस्थानों की संख्या का पृथक–पृथक उल्लेख किया गया है ।

तालिका कमाँक–3.2 – उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की संख्या में दशकीय वृद्धि –

स्तर	बालक / बालिका	1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91	1999-2000
माध्यमिक विद्यालय कक्षा 6–8	बालक	2386	3674	6779	10355	11753	18441
	बालिका	468	661	2000	3200	3319	3237
	योग	2854	4335	8787	13555	15072	21678
हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट कक्षा 9-12	बालक	833	1489	2834	4420	5113	7122
	बालिका	154	282	581	758	886	1427
	योग	987	1771	3415	5178	5999	8549
	कुल टोटल	3841	6106	12202	18733	21071	30227

Source – School Education in uttar pradesh : Status, issues and future perspectives-NCERT (2003)

उपर्युक्त तालिका प्रदर्शित कर रही है कि जहाँ 1950–1951 में 3841 माध्यमिक विद्यालय कार्यरत थे वहीं उनकी संख्या में 1.59 गुनी वृद्धि होकर सन् 1960–61 में इनकी संख्या 6106 तक पहुँची। सन् 1960–61 से लेकर 1970–71 तक इन विद्यालयों की संख्या में अब तक की सबसे अधिक दशकीय वृद्धि देखने को मिलती है । इस दशक में विद्यालयों की संख्या में दोगुनी वृद्धि हुई और इनकी संख्या 6106 से बढ़कर 12202 तक पहुँच गई । माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में सबसे कम वृद्धि सन् 1980–1981 से लेकर 1990–1991 तक मात्र 1.13 गुना देखने को मिलती है । पिछले दो दशकों में विद्यालयों की संख्या 18733 से बढ़कर 30227 तक पहुँच गई । इस प्रकार सन् 1950–51 से लेकर सन् 1999–2000 तक माध्यमिक विद्यालयों में 7.87 गुना वृद्धि होकर उनकी संख्या 3841 से बढ़कर 30227 तक पहुँच गई । माध्यमिक विद्यालयों की वृद्धि का दशकीय औसत 1.54 प्राप्त होता है । अर्थात प्रत्येक 10 वर्षों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या लगभग 150 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है ।

कक्षा 6–8 तथा कक्षा 9–12 तक की वृद्धि का पृथक –पृथक विश्लेषण करने पर दोनों की वृद्धि दर प्रत्येक दशक में कुल मिलाकर लगभग समान प्राप्त हुई है । मिडिल स्कूलों की अधिकतम वृद्धि दर 60 से 70 के दशक में 2.03 प्राप्त होती है, तथैव इसी दशक में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्कूलों की वृद्धि में भी अधिकतम बढ़ोत्तरी 1.93 देखने को मिली है । मिडिल स्कूलों में न्यूनतम वृद्धि 80–90 के दशक में 1.11 गुना हुई थी , जबकि हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्कूलों में न्यूनतम वृद्धि 1.43 1990 से 2000 के दशक में हुई ।

बालक एवं बालिकाओं के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की संख्याओं का पृथक से विश्लेषण करने पर एक संतोषजनक परिणाम प्राप्त होता है कि बालिका विद्यालयों की दशकीय वृद्धि दर, 70–80 दशक को छोडकर, सदैव बालक विद्यालयों से अधिक रही है । परन्तु 1950–51 एवं 1999–2000 के आंकड़ों के मध्य तुलना करने पर बालक माध्यमिक विद्यालयों की वृद्धि दर 7.94 तथा बालिका माध्यमिक विद्यालयों की वृद्धि दर 7. 50 प्राप्त होती है । कक्षा 6–8 के विद्यालयों में इन्हीं पाँच दशकों में बालिकाओं के विद्यालयों की वृद्धि दर 6.91 तथा बालकों के विद्यालयों की वृद्धि दर 7.73 गुना रही । बालिकाओं के हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट विद्यालयों की वृद्धि दर मिडिल स्कूलों से 1.34 गुना ज्यादा रही । जहाँ कक्षा 6 से 8 तक के बालिका विद्यालयों की वृद्धिदर पिछले पाँच दशकों में 6.91 गुना रही वहीं कक्षा 9–12 तक के बालिका विद्यालयों की वृद्धि दर सभी वर्गों में सबसे अधिक 9.27 गुना रही । इसी समय में एवं इन्हीं वर्गों में बालक माध्यमिक विद्यालयों की वृद्धि क्रमशः 7.73 एवं 8.55 रही । कक्षा 6 से 8 तक के स्कूलों में, बालक एवं बालिकाओं, दोनों वर्गों में 60–70 के दशक में सबसे अधिक वृद्धि अंकित की गई, यह दर क्रमशः 1.85 एवं 3.00 गुना रही । कक्षा 9–12 तक के विद्यालयों में इसी दशक में दोनों वर्गों में वृद्धि दर सर्वाधिक रही, बालक 1.90 गुना एवं बालिकाएं 2.06 गुना । सबसे कम वृद्धि दर इन कक्षाओं में 80–90 के दशक में रही, बालक 1.16 एवं बालिकाएं 1.17 ।

तालिका क्रमाँक–3.3 में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में दशकीय वृद्धि को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के आधार पर प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका कमाँक–3.3– उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में दशकीय वृद्धि –

स्तर		1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91	1999-2000
उच्च प्राथ0	ग्रामीण	1984	3772	6367	11322	13530	18852
विद्यालय	शहरी	870	563	2420	2233	1542	2826
कक्षा (6–8)	कुल (A)	2854	4335	8787	13555	15072	21678
हाईस्कूल एवं	ग्रामीण	503	749	1840	3394	4093	7168
इण्टरमीडिएट	शहरी	484	1022	1575	1784	1906	1381
स्कूल 9-12	कुल (B)	987	1771	3415	5178	5999	8549
ग्रामीण क्षेत्रों में कुल माध्यमिक विद्यालय	(C)	2487	4521	8207	14716	17623	26020
शहरी क्षेत्रों में कुल माध्यमिक विद्यालय	(D)	1354	1585	3995	4017	3448	4207
सम्पूर्ण योग	A+B=C+D	3841	6106	12202	18733	21071	30227

Source – School Education in uttar pradesh : Status, issues and future perspectives-NCERT (2003)

सन् 1950–51 से लेकर सन् 1999–2000 तक ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में बढ़ोत्तरी शहरी क्षेत्रों की तुलना में तीन गुना अधिक हुई । पिछले पचास वर्षों में जहाँ शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 3.11 गुना बढ़कर 1354 से 4207 हो सकी वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में इन विद्यालयों की संख्या 10.46 गुना बढ़कर 2487 से 26020 तक पहुँच गई। ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों के खुलने की दर पहले तीन दशको में अधिक रही है, बाद के दो दशकों, अर्थात सन् 80–90 एवं 1990–2000 में इन विद्यालयों के स्थापित होने की दर में कमी देखने को मिल रही है । दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों में पिछले पाँच दशको में सर्वाधिक वृद्धि 60–70 के दशक में देखने को मिली है । इसके पश्चात् अगले दो दशकों में इस क्षेत्र में माध्यमिक स्कूलों की वृद्धि दर में बहुत ज्यादा कमी देखने को मिली, बल्कि 80–90 के दशक में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में पिछले दशक की तुलना में 569 अंको की कमी हुई है। सन् 1990 से 2000 तक विद्यालयों की स्थापना दर में 1.22 गुना की वृद्धि हुई है । सन् 1990 से लेकर सन् 2000 तक पिछले पचास वर्षों में उत्तर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में मिडिल स्कूलों (कक्षा 6–8) की संख्या का संख्यात्मक विश्लेषण करने पर बहुत दिलचस्प निष्कर्ष प्राप्त होते

हैं । ग्रामीण क्षेत्रों में तो मिडिल स्कूलों की संख्या में सतत वृद्धि हुई परन्तु शहरी क्षेत्रों में इनकी संख्या में धनात्मक व ऋणात्मक उतार–चढ़ाव देखने को मिल रहा है । 50–60 के दशक में ही इन स्कूलों की संख्या में कमी दर्ज की गई । 1950–51 में जहाँ 870 मिडिल स्कूल थे वहीं 1960–61 में इनकी संख्या 563 दर्ज हुई । 1970–71 की तुलना में इनकी संख्या में तीव्र वृद्धि अंकित हुई, 1960–61 की तुलना में 4.3 गुना वृद्धि होकर इनकी संख्या 2420 तक पहुँची । अगले दो दशकों में पुनः इनकी संख्या में गिरावट हुई, 1990–91 में इनकी संख्या 1542 रह गई । अंतिम दशक 1990–2000 में शहरी क्षेत्रों के मिडिल स्कूलों की संख्या में पुनः वृद्धि हुई तथा 1.83 गुना बढ़कर इनकी संख्या 1999–2000 में 2826 तक पहुँच गई ।

हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट विद्यालयों की संख्या कुछ अपवादों को छोड़कर ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में पिछले पांच दशकों में धनात्मक रूप से बढ़ी है । इन विद्यालयों के वृद्धि अनुपात में घट–बढ़ रही है परन्तु इन विद्यालयों की संख्या प्रत्येक दशक में ज्यादा ही रही है । 1950–51 में ग्रामीण क्षेत्रों में इन विद्यालयों की संख्या 503 थी जो कि 14.25 गुना बढ़कर 1999–2000 में 7168 तक पहुँच गई । 60–70 के दशक में इस क्षेत्र में इन विद्यालयों की संख्या में सर्वाधिक आनुपातिक वृद्धि 2.46 अंकित की गई । इन्हीं 50 वर्षों में शहरी क्षेत्रों में हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट विद्यालयों की संख्या में मात्र 2.85 गुना की वृद्धि देखी गई । इस वर्ग के आँकड़ों पर गहराई से दृष्टिपात करने पर हम देखते हैं कि जहाँ 1990–91 में शहरी क्षेत्रों में कक्षा 9–12 तक के विद्यालयों की संख्या 1906 थी, वहीं 1999–2000 में इन विद्यालयों की संख्या घटकर 1381 रह गई ।

तालिका क्रमाँक–3.4 में उत्तर प्रदेश में माध्यमिक विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की नामांकन संख्या का वर्णन किया गया है । इस तालिका में आधार वर्ष 1950–51 से वर्ष 1999–2000 तक छात्र–छात्राओं के नामांकन में दशकीय वृद्धि को दर्शाया गया है ।

तालिका कमाँक–3.4– उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में माध्यमिक विद्यालयों में छात्र नामांकन में दशकीय वृद्धि–

स्तर		1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91	1999-2000
उच्च प्राथ0	बालक	278339	446139	1095740	1412783	2026314	2171874
विद्यालय	बालिका	69798	103688	285166	391731	721254	1010153
कक्षा (6–8)	कुल (A)	348137	549827	1380906	1804514	2747568	3182027
हाईस्कूल एवं	बालक	359580	757592	1851759	2752494	3614474	4021356
इण्टरमीडिएट	बालिका	57825	154485	463977	695829	1145932	1774321
स्कूल कक्षा 9–12	कुल (B)	417405	912077	2315736	3448323	4760406	5795677
सम्पूर्ण योग	A+B	765542	1461904	3696642	5252837	7507974	8977704

Source – School Education in uttar pradesh : Status, issues and future perspectives-NCERT (2003)

उपरोक्त आँकड़ों की गणना से ज्ञात होता है कि उत्तर प्रदेश में पिछले पांच दशकों में कक्षा 6 से लेकर कक्षा 12 तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों एवं बालिकाओं का मिडिल, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकन में 11.73 गुना वृद्धि हुई है । सन् 1950–51 जहाँ कुल 765542 विद्यार्थी माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित थे, वहीं सन् 1999–2000 में छात्रों का कुल नामांकन बढ़कर 8977704 हो चुका था । पिछले दो दशकों में छात्र नामांकन की तुलनात्मक दर 1.65 गुना रही है । सन् 1950–51 से लेकर 1999–2000 तक माध्यमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं के संयुक्त नामांकन की दशकीय वृद्धि कमशः 1.91, 2.53, 1.42, 1.43, 1.20 प्राप्त हुई है ।

कक्षा 6–8 तक में छात्र नामांकन का अध्ययन करने पर यह तथ्य प्राप्त होता है कि बालिकाओं की नामांकन दर, पिछले पाँच दशकों में ; बालकों के नामांकन दर से लगभग दुगुनी (1.86) रही है । कक्षा स्तरों में केवल बालिकाओं का नामांकन पिछले पाँच दशकों में 14.47 गुना बढ़ा है । वर्ष 1999–2000 में उच्च प्राथमिक स्कूलों में 1010153 लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त कर रही थीं, वहीं वर्ष 1950–51 में लड़कियों की संख्या मात्र 69798 थी । दूसरी ओर वर्ष 1950–51 में उच्च प्राथमिक स्कूलों में 278339 बालक अध्ययनरत् थे तथा वर्ष 1999–2000 में 2171874 बालक इन विद्यालयों में अध्ययनरत् थे। इस प्रकार बालकों के नामांकन में 7.80 गुना वृद्धि देखी गई ।

कक्षा 6 से लेकर कक्षा 8 तथा कक्षा 9 से लेकर कक्षा 12 तक में छात्र नामांकन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर एक रूचिकर तथ्य प्राप्त होता है कि माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं के नामांकन की दर मिडिल स्कूलों में नामांकन की तुलना में सदैव अधिक रही है । तुलना के लिये जहाँ पिछले पाँच दशकों में मिडिल स्कूलों में बालिकाओं के नामांकन में 14.47 गुना की वृद्धि हुई है वहीं कक्षा 9–12 तक के स्कूलों में बालिकाओं के नामांकन में 30.68 गुना की वृद्धि हुई है । बालकों के नामांकन में 1950–51 से लेकर 1999–2000 तक कक्षा 6–8 तक 7. 80 गुना वृद्धि हुई, दूसरी ओर कक्षा 9–12 तक इसी समयान्तराल में 11.18 गुना वृद्धि हुई है ।

पिछले पाँच दशकों में मिडिल स्कूलों में छात्रों का नामांकन 1950–51 में 3,48,137 से बढ़कर 1999–2000 में 31,82,027 हो गया, जो कि लगभग नौ गुना अधिक था। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पिछले पाँच वर्षों में नामांकन लगभग चौदह गुना की दर से बढ़कर सन् 1950–51 में 4,17,405 से सन् 1999–2000 में 57,95,677 हो गया ।

तालिका कमाँक–3.5 में उत्तर प्रदेश में पिछले पाँच दशकों में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की संख्या से सम्बन्धित आँकड़े प्रस्तुत किये गये हैं । प्रस्तुत सारणी में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संख्या में दशकीय वृद्धि को प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका कमाँक–3.5 उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की संख्या में दशकीय वृद्धि –

स्तर		1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91	1999-2000
उच्च प्राथ0 विद्यालय कक्षा (6–8)	पुरूष	11605	19057	41306	58775	78814	82798
	महिला	2900	4202	10880	14326	19415	23890
	कुल (A)	14505	23259	52186	73101	99329	106888
हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्कूल कक्षा (9-12)	पुरूष	15453	30222	64810	96117	106650	114494
	महिला	182	5854	14838	19747	19522	26838
	कुल (B)	18227	36076	79648	115864	126172	141332
सम्पूर्ण योग	A+B	32732	59335	131834	188965	225501	248220

Source – School Education in uttar pradesh : Status, issues and future perspectives-NCERT (2003)

उत्तर प्रदेश में आधार वर्ष 1950–51 से लेकर सन् 1999–2000 तक माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में शिक्षको की संख्या में दशकीय वृद्धि क्रमशः 32732, 59335,131834, 188965, 225501 एवं 248220 प्राप्त होती है । निश्चित रूप से पुरूष शिक्षकों की संख्या महिला शिक्षकों से अधिक रही है , परन्तु यहाँ संतोष करने वाली एक बात रही है कि महिला शिक्षिकाओं की दशकीय वृद्धि दर कुल मिलाकर पुरूष शिक्षकों की दशकीय वृद्धि दर के लगभग समान रही है । सन् 1999–2000 एवं सन् 1950–51 के आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन यह प्रदर्शित करता है कि कक्षा 6–8 एवं कक्षा 9–12 दोनों स्तरों पर महिला शिक्षिकाओं की वृद्धि दर शिक्षकों की कुल संख्या की वृद्धि दर से अधिक रही है । कक्षा 6–8 तक के शिक्षकों की संख्या में आधार वर्ष 1950–51 से लेकर 1999–2000 के मध्य कुल 7.37 गुना वृद्धि प्राप्त होती है जबकि इसी क्रम में महिला शिक्षिकाओं की संख्या में 8.24 गुना वृद्धि प्राप्त हुई है । इसी प्रकार कक्षा 9–12 तक शिक्षकों की संख्या में इसी समयान्तराल में 7.75 गुना वृद्धि प्राप्त हुई वहीं महिला शिक्षिकाओं की संख्या में 147.46 गुना वृद्धि प्राप्त होती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि वर्ष 1950–51 में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में मात्र 182 महिला शिक्षिकायें कार्यरत् थीं ।

पिछले पचास वर्षों में शिक्षिकाओं की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि दिखलाई पड़ रही है , परन्तु जब इन आँकड़ो का दशकीय आधार पर आंकलन किया गया तब तस्वीर कुछ और ही उभर कर सामने आई है । सन् 1950–51 से लेकर 1970–71 तक के दो दशकों में शिक्षकों की संख्या में वृद्धि दर क्रमशः बढ़ते क्रम में 1.81 एवं 2.22 प्राप्त हुई है । इसके पश्चात् सन् 1970–71 से लेकर सन् 1999–2000 के मध्य तीन दशकों में शिक्षक संख्या में क्रमशः घटती हुई दर 1.43, 1.19 एवं 1.10 प्राप्त हुई ।

कक्षा 6–8 एवं कक्षा 9–12 के विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या में तुलनात्मक अध्ययन करने पर एक रूचिकर तथ्य प्राप्त होता है कि माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या सदैव उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या से ज्यादा रही है ।

उपरोक्त तालिकाओं में प्रदर्शित आँकड़ों एवं उनके विश्लेषणों के आधार पर निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश (उत्तराँचल सहित) में शिक्षा के विकास की दर संतोषजनक है , परन्तु इस दर से शत प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य दूर नज़र आ रहा है । सर्व शिक्षा अभियान के आधार पर वर्ष 2015 तक सभी बालक–बालिकाओं के लिए उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का प्रबंध इन वृद्धि दरों के आधार पर करना असम्भव है ।
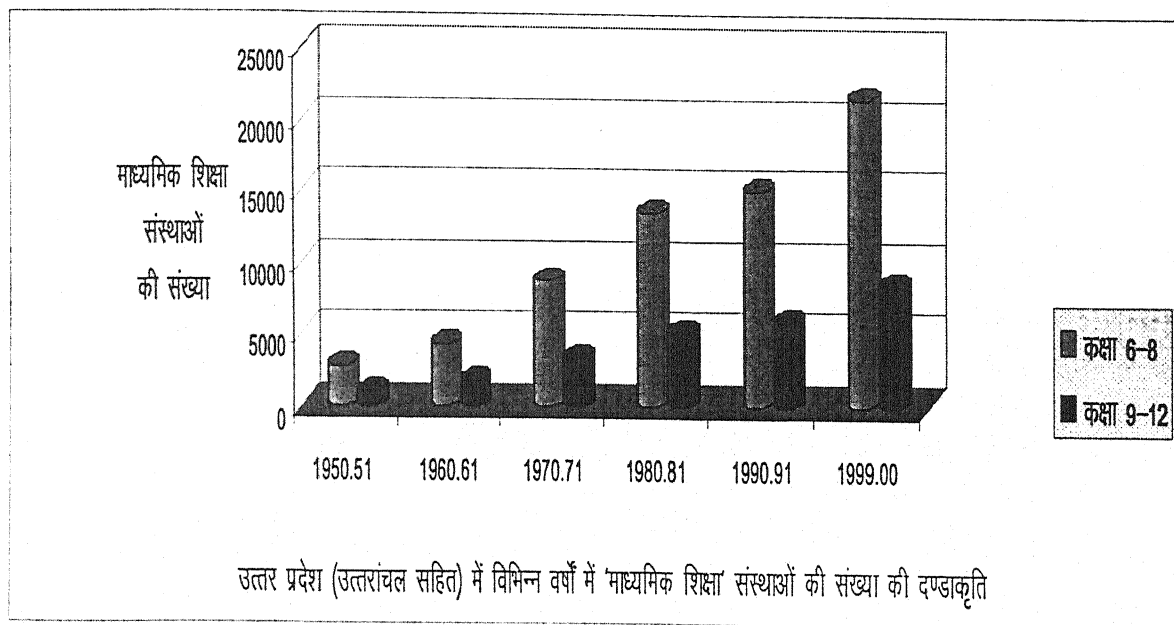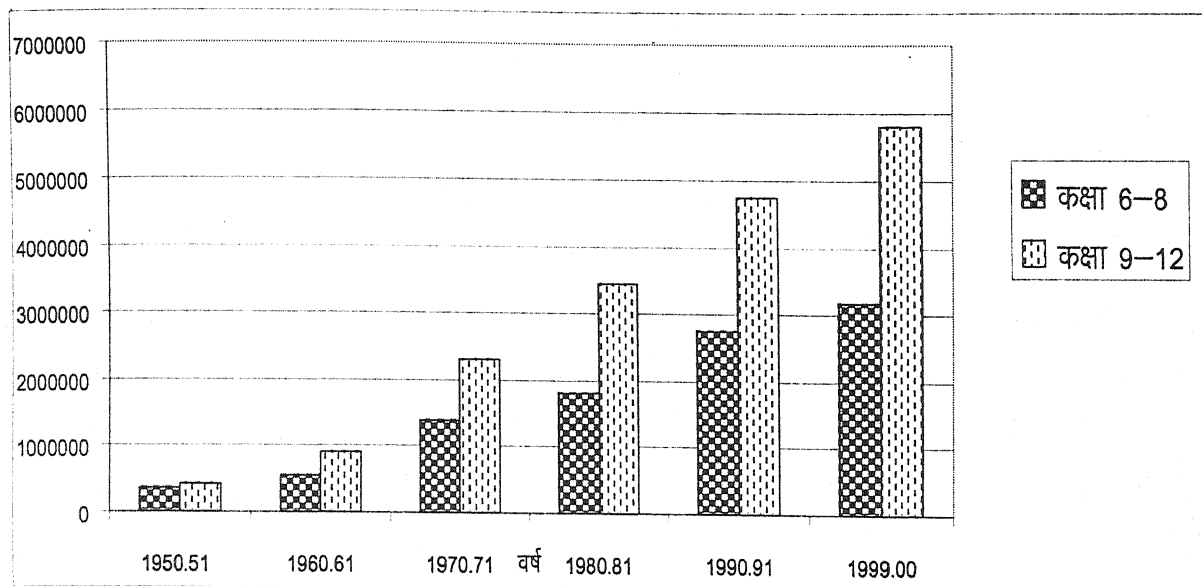
उत्तर प्रदेश (उत्तरांचल सहित) में विभिन्न वर्षों में 'माध्यमिक शिक्षा' संस्थाओं की संख्या की दण्डाकृति

रेखाचित्र कमाँक–3.2

उत्तर प्रदेश(उत्तरांचल सहित) में विभिन्न वर्षों में माध्यमिक विद्यालयों में छात्र नामांकन में दशकीय वृद्धि की स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.3
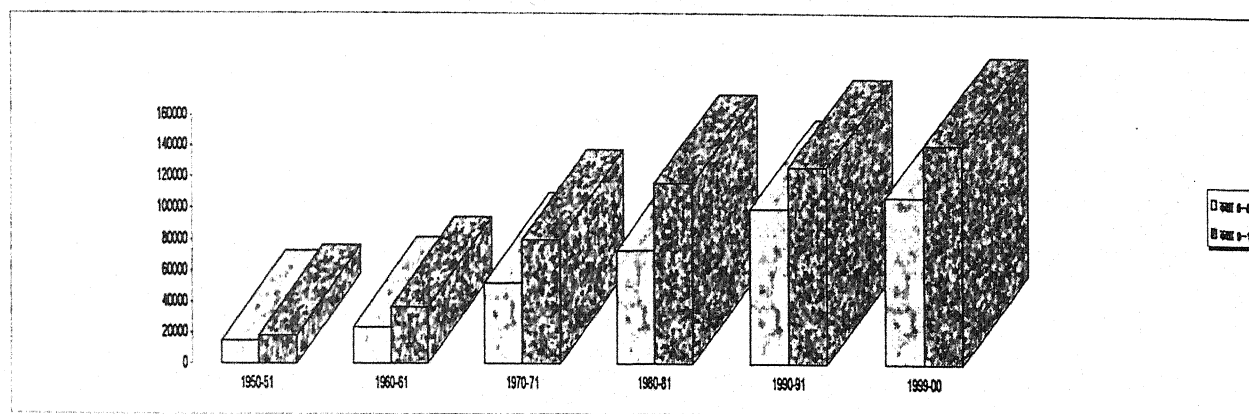
उत्तर प्रदेश (उत्तरांचल सहित) में विभिन्न वर्षों में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की संख्या में दशकीय वृद्धि की स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.4

3.1.4 बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा का विकास

उत्तर प्रदेश राज्य में बुन्देलखण्ड क्षेत्र को राज्य का सर्वाधिक पिछड़ा हुआ क्षेत्र कहा जाता है । यह कथन मात्र धारणा नहीं अपितु तथ्यों पर आधारित है । बुन्देलखण्ड के पिछड़ेपन के लिए प्राकृतिक कारणों के साथ–साथ सामाजिक कारण भी उत्तरदायी हैं । शिक्षा एवं ज्ञान सदैव समाज के विकास का आधार रहे हैं । आधुनिक समय में औपचारिक शिक्षा के बिना समाज का विकास सम्भव नहीं है । उत्तर प्रदेश में, देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात, निजी क्षेत्र के साथ–साथ सरकार ने भी शिक्षा के विस्तार पर तेजी से कार्य किया । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में भी शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर ध्यान दिया गया, परन्तु इस क्षेत्र में शिक्षा का विकास सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश की तुलना में कम ही रहा है । आँकड़ों के आधार पर इन कथनों की सत्यता स्वतः सिद्ध हो जाती है ।

शोधार्थी ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के शैक्षिक विकास का अध्ययन करने हेतु अनेकों स्त्रोतों से सूचनाओं का संकलन किया है । सूचना संकलन के लिए शोधार्थी ने सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों सूचना तंत्रों का उपयोग किया है । सरकारी एवं गैर सरकारी अभिलेखों के साथ–साथ शोधार्थी ने इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं की सहायता से बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के शैक्षिक विकास का अध्ययन किया है । इस अध्ययन कार्य को शोधार्थी ने बहुत ही धैर्य पूर्वक किया है। शोधार्थी ने कई समस्यों का सामना करते हुए बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन किया है । प्रस्तुत आँकड़ों का सम्पादन करते समय शोधार्थी ने पूर्ण प्रयास किया है कि आँकड़ों की विश्वसनीयता में कोई कमी न आने पावे । आँकड़ों के संकलन के लिये शोधार्थी को द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करना पड़ा है । फलतः ऐतिहासिक शोध विधि में वर्णित द्वितीयक माध्यमों की जो सीमाऐं एवं विश्वसनीयता होती है वही सीमाऐं एवं विश्वसनीयता इन प्रस्तुत आँकड़ों की भी है । संकलित आँकड़ें सरकारी हैं इसलिए शोधार्थी ने अपनी ओर से इनमें कोई संशोधन नही किया है । यथा स्थानों पर आँकड़ों के स्त्रोतों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

शोधार्थी द्वारा बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा के विकास से सम्बन्धित सभी शैक्षिक स्तरों का अध्ययन किया गया है । प्रस्तुत शोध प्रबंध के 'सीमांकन' का पालन करते हुए शोधार्थी द्वारा बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 6 से कक्षा 12 तक) से सम्बन्धित आँकड़ों को ही इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है । माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित संकलित आँकड़ों के विस्तार एवं जटिलता को दृष्टिगत रखते हुए आँकड़ों को सुविधाजनक रूप में 12 तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है, जिससे इस क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा के विकास क्रम को आसानी से समझा जा सके । अध्ययन को आसान बनाने के लिए शोधार्थी द्वारा शैक्षिक सत्र 2002–2003 से लेकर पिछले ग्यारह वर्षों के आँकड़ों का उपयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के इस खण्ड में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की माध्यमिक शिक्षा के विकास से सम्बन्धित आँकड़ों की विभिन्न बारह तालिकाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन क्रमशः प्रस्तुत किया है ।

तालिका क्रमाँक–3.6 में 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में साक्षर व्यक्तियों एवं साक्षरता का प्रतिशत' के आँकड़ों का वर्णन किया गया है । प्रस्तुत तालिका में इस क्षेत्र के सातों जनपदों में पिछले चार दशकों में साक्षरता में हुई वृद्धि को दर्शाया गया है । सन् 1971 से लेकर सन् 2001 तक के चार दशकों के आँकड़ों के आधार पर एक संतोष होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सभी सातों जनपदों में साक्षरता का प्रतिशत सतत् रूप से बढ़ा है । इस क्षेत्र की साक्षरता की वृद्धि दर प्रदेश की वृद्धि दर के लगभग समान रही है । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों के साक्षरता के प्रतिशत का औसत पिछले चार दशकों में क्रमशः 22.87% 27.53%,39.70%, 59.43% रहा दूसरी ओर सम्पूर्ण प्रदेश की साक्षरता दर पिछले चार दशकों में क्रमशः 23. 99%, 32.64%, 40.71% एवं 57.36% रही । इन आँकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि सन् 1971 एवं 1981 में इस क्षेत्र की साक्षरता दर प्रदेश की साक्षरता दर से थोड़ी सी कम रही, सन् 1991 में इस क्षेत्र की साक्षरता दर एवं प्रदेश की साक्षरता दर में मामूली सा अन्तर रहा, परन्तु सन् 2001 में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की साक्षरता

दर प्रदेश की साक्षरता. दर से थोड़ी सी अधिक रही है । यह इस क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है । सन् 2001 के साक्षरता दर के आँकड़ों में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) के पुरूष एवं महिलाओं दोनों ने पृथक–पृथक रूप से प्रदेश के आँकड़ों से बढ़त प्राप्त कर ली । इस क्षेत्र में सन् 2001 में सन् 1971 की तुलना में, चार गुना अधिक साक्षर व्यक्ति निवास कर रहे थे । महिलाओं में यह अनुपात 7.23 गुना एवं पुरूषों में मात्र 3.26 गुना प्राप्त होता है । इससे प्रमाणित होता है कि इस क्षेत्र में महिला साक्षरता दर में अधिक तेजी से वृद्धि हुई है । यह समाज में महिलाओं की शिक्षा के प्रति आई जाग्रति का परिणाम है। जनपदवार इस विश्लेषण में थोड़ी विविधता प्राप्त होती है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में निवास करने वाले साक्षर व्यक्तियों की संख्या की तुलना जब सम्पूर्ण प्रदेश के साक्षर व्यक्तियों की संख्या से की गई तब एक आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुआ । सन् 1991 की जनगणना के आधार पर इस क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रदेश के 6.09 प्रतिशत साक्षर व्यक्ति निवास कर थे जिनमें महिलाएं 5.51 प्रतिशत एवं पुरूष 6.31 प्रतिशत थे । सन् 2001 की जनगणना में इस प्रतिशत तुलना में वृद्धि होने के स्थान पर कमी प्राप्त हुई । सन् 2001 की गणना के अनुसार इस क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रदेश के मात्र 5.25 प्रतिशत साक्षर व्यक्ति निवास कर रहे हैं, जिस में महिलाऐं 5.00 प्रतिशत एवं पुरूष 5.38 प्रतिशत हैं । इस संदर्भ में एक तथ्य यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस क्षेत्र में जहाँ सम्पूर्ण प्रदेश की जनसंख्या का सन् 1991 में 5.1 प्रतिशत व्यक्ति निवास कर रहा था वही सन् 2001 में यह प्रतिशत घटकर 4.95 प्रतिशत रह गया ।

जनपदवार विश्लेषण करने पर यह तथ्य प्राप्त होता है कि ललितपुर जिले में साक्षरता का प्रतिशत बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सदैव सबसे कम रहा है । झाँसी जिले में साक्षरता का प्रतिशत सम्पूर्ण क्षेत्र में सदैव अधिकतम रहा है । दूसरी ओर सन् 2001 एवं सन् 1971 की 'साक्षरता के प्रतिशत' की तुलना करने पर यह जानकारी प्राप्त होती है कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र में साक्षरता की दर में अधिकतम वृद्धि ललितपुर जिले में लगभग तीन (2.95) गुना एवं न्यूनतम वृद्धि झाँसी जिले में मात्र 2.31 गुना ही हुई है।

तालिका क्रमाँक–3.7 में 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6 से 8) की संख्या' का प्रदर्शन किया गया है । इस तालिका में सत्र 1992–93 से लेकर सत्र 2002–2003 तक के बालक एवं बालिकाओं के कक्षा 6 से लेकर कक्षा 8 तक के विद्यालयों की कुल संख्या वर्णित की गई है । इस स्तर के शिक्षा संस्थानों को विभिन्न सरकारी अभिलेखों में अलग–अलग नामों से सम्बोधित किया गया है । इन विद्यालयों को 'सीनियर बेसिक स्कूल' या 'मिडिल स्कूल' या 'उच्च प्राथमिक विद्यालय' (अपर प्राइमरी विद्यालय) या 'जूनियर हाई स्कूल' या 'लोअर सेकेन्ड्री स्कूल' या 'माध्यमिक विद्यालय' आदि के नामों से सम्बोधित किया गया है । शोधार्थी ने इस स्तर के विद्यालयों के लिए 'उच्च प्राथमिक विद्यालय' के नाम का उपयोग किया है ।

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सभी जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में पिछले ग्यारह वर्षों में सतत् रूप से वृद्धि हुई है। प्रशंसनीय बात यह रही है कि चित्रकूट धाम मण्डल में इसी अन्तराल में दो जिलों का विभाजन भी हुआ परन्तु इन सभी जिलों में इस स्तर के स्कूलों की संख्या में फिर भी वृद्धि हुई है । कुल मिलाकर पिछले वर्षों में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में 1.75 गुना वृद्धि होकर इनकी संख्या 1263 से बढकर 2204 तक पहुँच गई । सभी सातों जनपद झाँसी, जालौन, ललितपुर, बाँदा, हमीरपुर, महोबा एवं चित्रकूट में यह वृद्धि दर इसी अवधि में क्रमशः 1.16, 1.53, 2.2, 1.35, 1.15, 1.48, एवं 2.26 रही । इस प्रकार सर्वाधिक वृद्धि चित्रकूट एवं ललितपुर जनपदों में हुई । न्यूनतम वृद्धि दर हमीरपुर जनपद में रही । सम्पूर्ण क्षेत्र में बालक एवं बालिकाओं के विद्यालयों की संख्या में वृद्धि दर लगभग समान रही, जिसमें बालिका विद्यालयों की दर नगण्य वृद्धि की बढ़त लिये हुए है ।

तालिका कमांक–3.8 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9 से 12) की संख्या' को प्रस्तुत कर रही है । कक्षा 9 से 12 तक के विद्यालयों में दो स्तर होते हैं । उत्तर प्रदेश में कक्षा 9 एवं 10 को 'हाईस्कूल' एवं कक्षा 11 एवं 12 को मिलाकर 'इण्टरमीडिएट' कहा जाता

है । कहीं–कहीं इण्टरमीडिएट स्तर को 'हायर सैकेन्ड्री' के नाम से भी लिखा गया है । शोधकर्ता को प्राप्त केन्द्र सरकार, प्रान्त सरकार एवं गैर सरकारी सभी अभिलेखों में 'हाईस्कूल' एवं 'इण्टरमीडिएट' विद्यालयों की संख्या का पृथक–पृथक उल्लेख न कर उन्हें संयुक्त रूप से गणना में सम्मिलित किया गया है । शोधार्थी ने भी इन्हीं सरकारी अभिलेखों का अनुसरण कर कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के विद्यालयों का संयुक्त रूप से 'माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों' के नाम से उल्लेख किया है ।

इस तालिका से, उपलब्ध सरकारी आँकड़ों के आधार पर, यह जानकारी प्राप्त होती है कि पिछले ग्यारह वर्षों में बालिका विद्यालयों की वृद्धि दर बालक विद्यालयों से अधिक रही है । इस क्षेत्र में 'बालिका माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों' के विस्तार की दर 1.82 गुना एवं बालकों की 1.58 गुना रही है । संयुक्त रूप से यह वृद्धि दर 1.62 रही । जनपदों के स्तर पर महोबा जनपद में सर्वाधिक वृद्धि दर 2.3 गुना रही, जहाँ इन विद्यालयों की संख्या 1994–95 में 16 से बढ़कर 2002–2003 में 37 हो गयी । बाँदा एवं हमीरपुर जिलों के विभाजन के पश्चात् भी इन जनपदों में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यालयों की संख्या में क्रमशः 1.03 एवं 1.14 गुना की वृद्धि हुई ।

'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6 से 8) में छात्रों की नामांकन संख्या' का विवरण तालिका क्रमाँक 3.9 मे प्रस्तुत किया गया है । प्राप्त विवरण के अनुसार सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पिछले ग्यारह वर्षों में छात्रों के नामांकन की वृद्धि दर 1.81 गुना रही है । बालिकाओं के नामांकन की दर बालकों से कहीं अधिक रही है । बालिकाओं के नामांकन की दर 2.67 रही एवं बालकों के नामांकन में मात्र 1.58 गुना की वृद्धि हुई । सत्र 2002–2003 में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं के नामंकन का अनुपात 2.3:1 प्राप्त होता है । वहीं सत्र 1992–93 में यह अनुपात 3.8:1 था ।

जनपदवार विश्लेषण में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों झाँसी, जालौन, ललितपुर, बाँदा, हमीरपुर, महोबा एवं चित्रकूट में पिछले ग्यारह वर्षों में नामांकन

की वृद्धि दर क्रमशः 1.61, 1.22, 2.77, 2.14, 1.00 , 1.58 एवं 1.36 प्राप्त होती है । चित्रकूट की वृद्धि दर 6 वर्षों के एवं महोबा की वृद्धि दर 9 वर्षों के आँकड़ों पर आधारित है । छात्र नामांकन में सर्वाधिक वृद्धि ललितपुर जिले में रही । इस जिले में जहाँ 1992–93 में मात्र 10675 छात्रों का नामांकन कक्षा 6, 7 एवं 8 में था, वही 2002–2003 में इन कक्षाओं में 29566 छात्र अध्ययनरत् थे । सत्र 2002–2003 में इन कक्षाओं में सर्वाधिक नामांकन बाँदा जनपद में 105100 छात्रों का था ।

तालिका क्रमाँक–3.10 में 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9 से 12) में छात्रों की नामांकन संख्या' का विवरण प्रस्तुत किया गया है । इन आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में कक्षा 9 से 12 में विद्यार्थियों का नामांकन सत्र 2001–2002 में सत्र 1992–93 की तुलना में 1.33 गुना अधिक रहा । इसी समय अन्तराल में बालकों का नामांकन 1.2 गुना एवं बालिकाओं का नामांकन दुगना हुआ है ।

सन् 1992–93 से सन् 2002–03 तक की अवधि में इन विद्यालयों में सर्वाधिक नामांकन दर ललितपुर जिले में 2.49 गुना रही ।

तालिका क्रमाँक–3.11 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) में शिक्षकों की संख्या' का विवरण प्रदान करती है । इस तालिका से यह तथ्य प्राप्त होता है कि सभी जिलों में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है । यह वृद्धि दर 1992–93 से 2002–03 तक 1.52 रही है । महिला शिक्षिकाओं की संख्या में 2.37 गुना एवं पुरूष शिक्षकों की संख्या में 1.38 गुना की वृद्धि हुई । प्राप्त आँकड़ों के आधार पर शिक्षकों की संख्या में आनुपातिक रूप से सर्वाधिक वृद्धि चित्रकूट जनपद में 4.95 गुना रही । सन् 1999–2000 से सन् 2002–03 तक पिछले चार वर्षों में शिक्षकों की संख्या में सर्वाधिक वृद्धि बाँदा एवं चित्रकूट जनपदों में हुई है । बाँदा में शिक्षकों की संख्या 932 से बढ़कर 1682 एवं चित्रकूट में 367 से बढकर 876 हो चुकी थी ।

तालिका कमाँक–3.12 में 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में शिक्षकों की संख्या' से सम्बन्धित आँकड़ों को प्रदर्शित किया गया है । इस स्तर के विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या निराशाजनक पाई गई । सन् 1992–93 एवं सन् 2002–03 के मध्य पूरे क्षेत्र में शिक्षकों की संख्या में मात्र 1.05 गुना वृद्धि हुई । पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संख्या में कमशः 1.05 एवं 1.06 गुना की ही वृद्धि हुई । जनपदवार इन आँकड़ों का विश्लेषण करने पर यह तथ्य प्राप्त होता है कि पिछले ग्यारह वर्षों में झाँसी एवं जालौन जनपदों को छोड़कर शेष पांचो जनपदों में शिक्षकों की संख्या में वृद्धि के स्थान पर कमी प्राप्त होती है ।

तालिका कमाँक–3.8 एवं 3.10 के अनुसार माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या एवं छात्रों के नामांकन में जहाँ कमशः 1.62 एवं 1.33 गुना की वृद्धि हुई है वहीं शिक्षकों की संख्या में मात्र 1.05 गुना की वृद्धि हुई । पांच जिलों में तो शिक्षकों की संख्या में कमी हुई है । ललितपुर जिले में 2000–01 एवं 2002–03 के मध्य शिक्षकों की संख्या 371 से घटकर आधी 185 रह गयी है । इसी अवधि में झाँसी एवं महोबा जनपदों में भी शिक्षकों की संख्या में कमी देखी गई है । जबकि इन जिलों में स्कूलों एवं विद्यार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है ।

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षकों की संख्या में निरन्तरता प्राप्त नहीं होती है । किसी वर्ष शिक्षकों की संख्या बढ़ी तो अगले वर्ष शिक्षकों की संख्या में कमी हुई ।

तालिका कमाँक–3.13 में 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में प्रति लाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) की संख्या' प्रदर्शित की गई है । संकलित आँकड़ों से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि प्रति लाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति जालौन जनपद में सम्पूर्ण क्षेत्र में सबसे अच्छी रही है । इस श्रेणी में उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर यह

जानकारी प्राप्त होती है कि सम्पूर्ण क्षेत्र के आँकड़ों का औसत 1992–93 में 18.4 से बढ़कर सन् 2002–03 में 26.43 हो गया, यह वृद्धि 1.44 गुना रही है ।

तालिका क्रमाँक–3.14 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में प्रतिलाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक (कक्षा 9–12) विद्यालयों की संख्या' के आँकड़ों को प्रदर्शित कर रही है । यह आँकड़े मात्र इकाई के अंको में प्राप्त हुए हैं । जालौन जनपद में यह अनुपात सर्वाधिक एवं ललितपुर जनपद में निम्नतम प्राप्त होते हैं । उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में इस अनुपात में 1.26 गुना वृद्धि हुई, यह अनुपात 1992–93 के 4.16 से बढ़कर 2002–03 में 5.24 हो गया ।

'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) में अध्यापक–छात्र अनुपात का वर्णन' तालिका क्रमाँक–3.15 के माध्यम से किया गया है । इस तालिका में यह प्रदर्शित किया गया है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) के विभिन्न जनपदों में एक शिक्षक पर कितने छात्रों को शिक्षित करने का उत्तरादायित्व है । इस संदर्भ में यह तथ्य प्राप्त होता है कि जालौन जिले में एक शिक्षक पर सबसे अधिक विद्यार्थियों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है । झाँसी जनपद के शिक्षकों पर पिछले ग्यारह बर्षों में यह भार निरन्तर बढ़ता जा रहा है, सन् 1992–93 से लेकर 2002–03 तक यह अनुपात वृद्धि करते हुए क्रमशः 54.4, 49.5, 51.3, 56.4, 60.3, 61.0, 63.5, 65.9, 69.6, 76.7 से 79.3 हो गया है । तालिका क्रमाँक–3.9 एवं 3.11 भी यह सिद्ध करती है कि इस क्षेत्र में अध्यापक–छात्र अनुपात का मान लगातार बढ़ रहा है ।

'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में अध्यापक–छात्र अनुपात' से सम्बन्धित आँकड़े तालिका क्रमाँक– 3.16 में प्रदर्शित किये गये हैं । प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि इस श्रेणी के विद्यालयों में सबसे अच्छा अध्यापक–छात्र अनुपात हमीरपुर एवं ललितपुर जनपदों में है । ललितपुर जनपद में सन् 2000–02 एवं 2002–03

में यह अनुपात बिगड़ गया है । औसत रूप में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में अध्यापक–छात्र अनुपात का मान माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निरन्तर बढ़ता जा रहा है । सन् 1992–93 में यह अनुपात 41.7 था जो कि सत्र 2001–2002 तक बढ़कर 55.8 तक पहुँच चुका था । सत्र 2002–2003 में इस अनुपात में कुछ सुधार हो कर इसका मान 55.36 हुआ है ।

तालिका कमाँक–3.17 में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के समस्त जनपदों के आधार पर 'सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में पिछले एक दशक में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति' का प्राप्त आँकड़ों के आधार पर वर्षवार आंकलन प्रस्तुत किया गया है । इस तालिका में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के शिक्षा से सम्बन्धित आँकड़ों को 'विद्यालयों की संख्या', 'विद्यार्थियों की संख्या', 'शिक्षकों की संख्या', 'प्रति लाख जनसंख्या पर स्कूलों की संख्या' एवं 'अध्यापक–छात्र अनुपात' नामक शीर्षकों के अन्तर्गत वर्गीकृत कर प्रदर्शित किया गया है ।

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (कक्षा 6–12) की संख्या में प्रति वर्ष वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है । सत्र 2002–2003 तक सत्र 1992–93 से विद्यालयों की संख्या में 1.72 गुना वृद्धि पाई गई है । सत्र 1992–93 में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 1553 थी जो सत्र 2002–2003 तक बढ़कर 2674 तक पहुँची है ।

इसी अवधि में विद्यार्थियों की संख्या 475423 से 1.49 गुना बढ़कर 710184 तक पहुँची । यदि सत्र 1992–93 से सत्र 2001–2002 के मध्य विद्यार्थियों की संख्या का आकलन करें तब यह वृद्धि 1.52 गुना प्राप्त होती है ।

कक्षा 6–8 एवं कक्षा 9–12 के मध्य विद्यालयों की संख्या एवं विद्यार्थियों की संख्या में पिछले एक दशक का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कक्षा 6–8 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संख्या में 1.81 गुना वृद्धि हुई, वहीं कक्षा 9–12 तक के विद्यार्थियों की संख्या में 1.26 गुना ही वृद्धि प्राप्त होती है । इसी प्रकार कक्षा 6–8 वाले विद्यालयों की संख्या में 1.75 गुना वृद्धि हुई एवं कक्षा 9–12 वाले विद्यालयों की संख्या में 1.62 गुना वृद्धि प्राप्त हुई है ।

शिक्षकों की संख्या का भी उपरोक्त रूप से तुलनात्मक अध्ययन करने पर समान निष्कर्ष प्राप्त होता है । उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की संख्या में 1.52 गुनी वृद्धि प्राप्त हुई एवं माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यह वृद्धि 1.05 गुना प्राप्त हुई । सत्र 1992–93 में शिक्षकों का कुल संख्यात्मक योग 9828 था जो कि सत्र 2002–03 तक बढ़कर 12336 तक पहुँचा है । यह वृद्धि 1.26 गुना रही । विद्यालयों की संख्या एवं छात्रों के नामांकन में हुई वृद्धि की तुलना में शिक्षकों की संख्या में हुई वृद्धि आनुपातिक रूप से पर्याप्त नहीं है । अध्यापक–छात्र अनुपात के आँकड़ों से इस कथन की पुष्टि हो जाती है, क्योंकि अध्यापक–छात्र अनुपात में निरन्तर वृद्धि प्रदर्शित हो रही है ।

प्रति लाख जनसंख्या पर स्कूलों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है । यह वृद्धि कक्षा 6–8 एवं कक्षा 9–12 दोनों ही स्तरों पर देखने को मिली है । यद्यपि कक्षा 9–12 के स्तर पर यह अनुपात कक्षा 6–8 की तुलना में बहुत कम है ।

शोधकर्ता ने उपरोक्त वर्णित विश्लेषणों को अग्रिम भाग में प्रस्तुत इन 12 तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है । इस विश्लेषण के द्वारा बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र का समग्र एवं जनपदवार शैक्षिक विवरण प्रस्तुत कर इस क्षेत्र में 'माध्यमिक शिक्षा की दशा एवं दिशा' की संक्षिप्त व्याख्या करने का प्रयास किया है ।

तालिका क्रमाँक – 3.6

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में 'साक्षर व्यक्ति' एवं 'साक्षरता का प्रतिशत'

वर्ष	साक्षर व्यक्ति											
	1971			1981			1991			2001		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
झाँसी	189469	62772	252241	308296	113037	421333	417310	179330	596640	633803	351276	985079
जालौन	176047	46563	222610	269346	85160	354506	359371	138901	498272	526774	283214	809988
ललितपुर	59555	14657	74212	96699	26561	123260	144721	44992	189713	268530	120620	389150
बाँदा	185230	22133	207363	296148	61226	357374	418607	109657	528264	458330	206356	664686
हमीरपुर	105274	22881	128155	159958	40412	200370	355174	111087	466261	339494	159416	498910
महोबा	58604	13308	71912	90526	23321	113847	130255	40608	170863	207039	105359	312398
चित्रकूट	55329	7971	63300	85707	15298	101005	127776	29543	157319	269142	150416	419558
सम्पूर्ण योग	829508	190285	1019793	9306680	365015	1671695	1953214	654118	2607332	2703112	1376657	4179769

वर्ष	साक्षरता का प्रतिशत											
	1971			1981			1991			2001		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
झाँसी	40.9	15.4	28.90	50.60	21.40	37.00	66.76	33.76	51.60	80.11	51.21	66.69
जालौन	40.2	12–4	27.40	50.20	19.00	35.90	66.21	31.60	50.72	79.14	50.66	66.14
ललितपुर	25.3	7–3	16.90	31.1	9–0	21.30	45.22	16.62	32.12	64.45	33.25	49.93
बाँदा	–	–	19.00	–	–	23.30	51.50	16.44	35.70	69.89	37.10	54.84
हमीरपुर	32.50	8–00	21.10	40.80	12–10	27.60	55.13	20.88	39.64	72.76	40.65	58.10
महोबा	28.90	7–50	18.89	36.00	10–80	24.29	50.98	19.09	36.49	66.83	39.57	54.23
चित्रकूट	17.00	4–60	27.90	38.40	18–60	23.30	47.39	12–99	31.66	78.75	51.28	66.06
सम्पूर्ण योग	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

स्त्रोत :–
1) उत्तर प्रदेश राज्य एवं जिलों की अधिकारिक सरकारी वेबसाइट
2) उत्तर प्रदेश वार्षिकी
3) संख्यिकीय पत्रिकाएँ – झाँसी मण्डल (2003) एवं चित्रकूट धाम मण्डल (2003)
4) Uttaranchal and Uttar Pradesh at a glance 2005, Jagran research centre , Kanpur.

तालिका क्रमांक – 3.7

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) की संख्या

	1992–1993			1993–1994			1994–1995			1995–1996			1996–1997			1997–1998		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	211	36	247	212	36	248	225	36	261	237	36	273	237	36	273	239	36	275
जालौन	252	62	314	252	62	314	253	62	315	299	67	366	299	67	366	299	67	366
ललितपुर	102	19	121	99	20	119	103	18	121	103	18	121	150	18	168	154	18	172
बाँदा	241	55	296	296	60	356	296	60	356	524	106	630	228	46	274	200	50	250
हमीरपुर	229	56	285	229	56	285	148	45	193	160	53	213	162	56	218	192	63	255
महोबा	–	–	–	–	–	–	101	22	123	101	22	123	113	34	147	113	34	147
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	97	20	117
कुल योग	1035	228	1263	1088	234	1322	1126	243	1369	1424	302	1726	1189	257	1446	1294	288	1582

	1998–1999			1999–2000			2000–2001			2001–2002			2002–2003		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	249	37	286	249	37	286	249	37	286	249	37	286	249	37	286
जालौन	333	81	414	333	81	414	333	81	414	368	113	481	368	113	481
ललितपुर	185	71	256	189	18	207	189	18	207	208	18	226	219	47	266
बाँदा	269	50	319	267	52	319	316	69	385	329	69	398	329	69	398
हमीरपुर	223	68	291	223	74	297	228	74	302	232	66	298	256	71	327
महोबा	113	34	147	113	34	147	117	35	152	121	36	157	146	36	182
चित्रकूट	144	20	164	144	26	170	224	28	252	224	39	263	225	39	264
कुल योग	1516	361	1877	1518	322	1840	1656	342	1998	1731	378	2109	1792	412	2204

स्त्रोत : तथैव

तालिका क्रमाँक – 3.8

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) की संख्या

	1992–1993			1993–1994			1994–1995			1995–1996			1996–1997		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	55	17	72	55	17	72	54	18	72	55	18	73	55	18	73
जालौन	76	9	85	77	9	86	77	9	86	79	11	90	81	16	97
ललितपुर	14	4	18	14	4	18	15	4	19	15	4	19	15	4	19
बाँदा	57	9	66	59	9	68	59	9	68	96	10	106	28	10	38
हमीरपुर	43	6	49	43	6	49	32	5	37	33	5	38	33	5	38
महोबा	–	–	–	–	–	–	13	3	16	17	5	22	17	5	22
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	
कुल योग	245	45	290	248	45	293	250	48	298	295	53	348	229	58	287

	1997–1998			1998–1999			1999–2000			2000–2001			2001–2002			2002–2003		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	63	18	81	63	18	81	63	18	81	96	18	114	96	18	114	96	18	114
जालौन	81	16	97	76	16	92	76	16	92	76	16	92	108	19	127	109	19	128
ललितपुर	13	6	19	20	6	26	16	8	24	16	8	24	20	8	28	21	8	29
बाँदा	49	9	58	48	10	58	52	15	67	52	15	67	52	15	67	53	15	68
हमीरपुर	44	6	50	46	7	53	46	7	53	47	7	54	48	8	56	48	8	56
महोबा	17	5	22	17	5	22	17	5	22	20	8	28	22	8	30	29	8	37
चित्रकूट	21	3	24	21	3	24	22	3	25	26	3	29	31	6	37	32	6	38
कुल योग	288	63	351	291	65	356	292	72	364	333	75	408	377	82	459	388	82	470

स्त्रोत : तथैव

तालिका क्रमाँक – 3.9

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) में छात्रों की नामांकन संख्या

	1992–1993			1993–1994			1994–1995			1995–1996			1996–1997			1997–1998		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	24471	8776	33247	23311	8287	31598	25476	9116	34592	28014	10022	38036	29597	11054	40651	30149	11445	41594
जालौन	61691	14056	75747	61691	14056	75747	61692	14057	75749	60500	15500	76000	22636	9856	32492	22636	9856	32492
ललितपुर	8082	2593	10675	7525	2236	9761	9504	2562	12066	9452	3008	12460	9065	3412	12477	9553	2768	12321
बाँदा	40367	8845	49212	50067	8605	58672	51664	10821	62485	31736	7924	39660	31736	7924	39660	39302	14367	53669
हमीरपुर	27567	8447	36014	29580	9645	39225	20461	6995	27456	21505	7270	28775	21867	6503	28370	20931	6658	27589
महोबा	–	–	–	–	–	–	11349	4160	15509	11410	4494	15904	10940	4821	15761	11607	5222	16829
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	17751	3886	21637
कुल योग	162178	42717	204895	172174	42829	215003	180146	47711	227857	162617	48218	210835	125841	43570	169411	151929	54202	206131

	1998–1999			1999–2000			2000–2001			2001–2002			2002–2003		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	37067	12224	49291	32263	13402	45665	32805	15453	48258	34666	17035	51701	35512	17948	53460
जालौन	50350	20195	70545	72093	20393	92486	72125	20435	92560	72125	20435	92560	72125	20450	92575
ललितपुर	3977	2533	6510	20325	8454	28779	12291	3885	16176	19867	7382	27249	20722	8844	29566
बाँदा	67326	28453	95779	74935	33472	108407	70568	34532	105100	70568	34532	105100	70568	34532	105100
हमीरपुर	26171	12895	39066	27951	14387	42338	41670	24991	66661	29816	15867	45683	22021	13978	35999
महोबा	11607	5222	16829	11668	5242	16910	11982	5488	17470	12221	5535	17756	15458	9084	24542
चित्रकूट	20023	3886	23909	14817	5778	20595	16232	7245	23477	16232	7247	23479	20321	9004	29325
कुल योग	216521	85408	301929	254052	101128	355180	257673	112029	369702	255495	108033	363528	256727	113840	370567

स्त्रोत : तथैव

तालिका क्रमाँक – 3.10

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में छात्रों की नामांकन संख्या

	1992–1993			1993–1994			1994–1995			1995–1996			1996–1997		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	72988	17409	90397	73463	18836	92299	79451	21174	100625	81754	21050	102804	83163	21573	104736
जालौन	88770	17518	106288	89420	17549	106969	90540	17590	108130	91529	18195	109724	90333	17245	107578
ललितपुर	5469	1067	6536	5942	1359	7301	6133	2984	9117	5888	2653	8541	6923	4130	11053
बाँदा	34615	4806	39421	34920	4878	39798	39702	5840	45542	29175	3075	32250	29175	5244	34419
हमीरपुर	24616	3270	27886	23233	5558	28791	15970	4258	20228	17430	4558	21988	16957	4765	21722
महोबा	–	–	–	–	–	–	11768	4177	15945	12367	4299	16666	12367	4299	16666
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
कुल योग	226458	44070	270528	226978	48180	275158	243564	56023	299587	238143	53830	291973	238918	57256	296174

	1997–1998			1998–1999			1999–2000			2000–2001			2001–2002			2002–2003		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
झाँसी	82402	22879	105281	82828	37796	120624	83854	38994	122848	85999	41964	127963	88061	43820	131881	83338	40914	124252
जालौन	90333	17245	107578	90333	17245	107578	90743	18223	108966	90781	18250	109031	90881	18250	109131	90881	18255	109136
ललितपुर	6953	4151	11104	7296	3786	11082	7751	4246	11997	7751	4246	11997	8381	4871	13252	11420	4847	16267
बाँदा	31010	7387	38397	31937	4348	36285	32982	4634	37616	32982	4634	37616	32982	4634	37616	32982	4634	37616
हमीरपुर	16308	5201	21509	15957	5634	21591	17980	7484	25464	18254	7664	25918	18500	7691	26191	18297	7048	25345
महोबा	13175	3251	16426	13175	3251	16426	13391	3286	16677	13419	3346	16765	13426	3366	16792	9205	3582	12787
चित्रकूट	14606	4709	19315	14606	5509	20115	15285	4804	20089	16712	5283	21995	18300	5811	24111	10520	3694	14214
कुल योग	254787	64823	319610	256132	77569	333701	261986	81671	343657	265898	85387	351285	270531	88443	358974	256643	82974	339617

स्त्रोत : तथैव

तालिका क्रमांक – 3.11

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों(कक्षा 6–8) में शिक्षकों की संख्या

	1992–1993			1993–1994			1994–1995			1995–1996			1996–1997		
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
झाँसी	519	92	611	546	92	638	587	87	674	590	84	674	590	84	674
जालौन	494	127	621	483	127	610	483	128	611	517	135	652	493	178	671
ललितपुर	336	76	412	310	71	381	266	43	309	366	63	429	335	46	381
बाँदा	1271	113	1384	1036	254	1290	1038	256	1294	1038	256	1294	1067	297	1364
हमीरपुर	1022	208	1230	1040	220	1260	724	190	914	741	207	948	586	158	744
महोबा	–	–	–	–	–	–	252	87	339	286	85	371	287	85	372
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
कुल योग	3642	616	4258	3415	764	4179	3350	791	4141	3538	830	4368	3358	848	4206

	1997–1998			1998–1999			1999–2000			2000–2001			2001–2002			2002–2003		
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
झाँसी	594	88	682	594	88	682	601	92	693	601	92	693	582	92	674	582	92	674
जालौन	493	178	671	493	178	671	493	178	671	493	178	671	493	178	671	618	248	866
ललितपुर	333	50	383	345	55	400	493	108	601	301	47	348	512	132	644	534	192	726
बाँदा	753	227	980	740	192	932	740	192	932	1191	348	1539	1297	385	1682	1297	385	1682
हमीरपुर	585	178	763	944	144	1088	908	147	1055	1013	152	1165	859	267	1126	837	264	1101
महोबा	310	146	456	310	146	456	400	152	552	399	154	553	403	153	556	408	154	562
चित्रकूट	84	93	177	390	93	483	303	64	367	735	116	851	753	116	851	752	124	876
कुल योग	3152	960	4112	3816	896	4712	3938	933	4871	4733	1087	5820	4899	1323	6204	5028	1459	6487

स्रोत : तथैव

तालिका क्रमांक – 3.12

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में शिक्षकों की संख्या

	1992–1993			1993–1994			1994–1995			1995–1996			1996–1997		
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
झाँसी	1095	410	1505	1107	445	1552	1126	417	1543	1127	416	1543	1139	416	1555
जालौन	1507	214	1721	1496	213	1709	1496	213	1709	1510	215	1725	1516	215	1731
ललितपुर	239	82	321	149	78	227	254	79	333	262	107	369	230	87	317
बाँदा	889	143	1032	889	143	1032	891	147	1038	891	147	1038	938	170	1108
हमीरपुर	776	215	991	774	216	990	586	80	666	569	72	641	589	65	654
महोबा	–	–	–	–	–	–	243	93	336	241	97	338	241	97	338
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
कुल योग	4506	1064	5570	4415	1095	5510	4596	1029	5625	4600	1054	5654	4653	1050	5703

	1997–1998			1998–1999			1999–2000			2000–2001			2001–2002			2002–2003		
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
झाँसी	1169	420	1589	1169	420	1589	1171	425	1596	1189	459	1648	1173	446	1619	1165	454	1619
जालौन	1516	215	1731	1516	215	1731	1518	213	1731	1518	213	1731	1533	198	1731	1536	207	1743
ललितपुर	232	89	321	213	86	299	260	111	371	260	111	371	207	86	293	105	80	185
बाँदा	812	111	923	716	119	835	702	125	827	686	119	805	686	119	805	725	184	909
हमीरपुर	575	65	640	563	79	642	626	96	722	626	96	722	626	96	722	654	108	762
महोबा	310	58	368	314	54	368	318	56	374	310	59	369	280	72	352	233	68	301
चित्रकूट	361	35	396	357	39	396	333	45	378	277	35	312	308	37	345	300	30	330
कुल योग	4975	993	5968	4848	1012	5860	4928	1071	5999	4866	1092	5958	4813	1054	5867	4718	1131	5849

स्रोत : तथैव

तालिका क्रमांक – 3.13

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में प्रति लाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) की संख्या

	1992–1993	1993–1994	1994–1995	1995–1996	1996–1997	1997–1998	1998–1999	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003
	योग	योग	योग	योग	योग	योग	योग	योग	योग	योग	योग
झाँसी	16.8	16.6	17.1	17.6	16.7	16.6	16.9	16.5	16.4	16.2	16
जालौन	25.1	24.7	24.4	27.1	26.6	26.7	29.7	29.2	28.7	32.7	31.9
ललितपुर	15.5	14.9	14.8	–	–	–	–	–	20.8	22.3	25.7
बाँदा	15.6	18.5	18.2	30.8	13.2	17.4	21.9	21.8	25.4	26.0	25.6
हमीरपुर	19.0	18.7	12–5	–	–	–	–	–	28.7	28.0	30.4
महोबा	–	–	20.5	19.6	23.1	21.9	21.5	21.3	21.2	21.6	24.6
चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	30.9	31.5	30.8
औसत	18.4	18.68	17.92	23.78	19.9	20.65	22.5	22.2	24.59	25.47	26.43

स्त्रोत : तथैव

तालिका क्रमाँक — 3.14

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में प्रति लाख जनसंख्या पर मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9—12) की संख्या

	1992—1993	1993—1994	1994—1995	1995—1996	1996—1997	1997—1998	1998—1999	1999—2000	2000—2001	2001—2002	2002—2003
झाँसी	4—9	4—8	4—8	4—7	4—6	4—9	4—8	4—7	6—5	6—5	6—4
जालौन	6—8	6—8	6—7	6—7	7—0	7—1	6—6	6—5	6—4	8—6	8—5
ललितपुर	2—3	2—3	2—3	—	—	—	—	—	2—4	2—8	2—8
बाँदा	3—5	3—5	3—5	5—2	1—8	4—0	4—0	4—6	4—5	4—4	4—4
हमीरपुर	3—3	3—2	2—4	—	—	—	—	—	5—1	5—3	5—2
महोबा	—	—	2—7	3—5	3—5	3—3	3—2	3—2	3—9	4—1	5—0
चित्रकूट	—	—	—	—	—	—	—	—	3—6	4—4	4—4
औसत	4—16	4—12	3—73	5—03	4—23	4—83	4—65	4—75	4—63	5—16	5—24

स्त्रोत : तथैव

डैस को दशमलव स**मझें**

तालिका क्रमाँक – 3.15

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 6–8) में अध्यापक–छात्र अनुपात

	1992–1993	1993–1994	1994–1995	1995–1996	1996–1997	1997–1998	1998–1999	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003
झाँसी	54.4	49.5	51.3	56.4	60.3	61.0	63.5	65.9	69.6	76.7	79.3
जालौन	122.0	124.2	124.0	116.6	48.4	48.4	105.1	137.8	137.9	137.9	106.9
ललितपुर	25.9	25.6	39.0	29.0	32.7	32.2	16.3	47.9	46.5	42.3	40.7
बाँदा	35.6	45.5	48.3	30.6	29.1	54.8	102.8	116.3	68.3	62.5	62.5
हमीरपुर	29.3	31.1	30.0	30.4	38.0	36.2	35.9	40.1	57.2	40.6	32.7
महोबा	–	–	45.7	42.9	42.4	36.9	36.9	30.6	31.6	31.9	43.7
चित्रकूट	–	–	–	–	–	122.2	49.5	56.1	27.6	27.6	33.5
औसत	53.44	55.18	56.38	56.08	41.81	55.96	58.54	70.67	62.67	59.93	57.0

स्त्रोत : तथैव

तालिका क्रमाँक – 3.16

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के जनपदों में मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9–12) में अध्यापक–छात्र अनुपात

	1992–1993	1993–1994	1994–1995	1995–1996	1996–1997	1997–1998	1998–1999	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003
झाँसी	60.1	59.5	65.2	66.6	67.4	66.3	75.9	77.0	77.6	81.5	76.7
जालौन	61.8	62.6	63.3	63.6	62.1	62.1	62.1	62.9	63.0	63.0	62.6
ललितपुर	20.4	32.2	27.4	23.2	35.0	34.6	37.0	32.3	32.3	45.2	87.9
बाँदा	38.2	38.6	43.9	31.1	29.1	38.0	43.5	45.5	46.7	46.7	41.4
हमीरपुर	28.1	29.1	30.4	34.3	33.2	33.6	33.6	35.3	36.0	36.3	33.3
महोबा	–	–	47.5	49.3	49.3	44.6	44.6	44.6	45.4	47.7	42.5
चित्रकूट	–	–	–	–	–	48.8	50.8	53.0	70.5	69.9	43.1
औसत	41.7	44.4	46.3	44.7	46.0	46.9	49.6	50.1	53.1	55.8	55.36

स्रोत : तथैव

तालिका क्रमांक – 3.17

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में पिछले एक दशक में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति

सत्र	विद्यालयों की संख्या			विधार्थियों की संख्या			शिक्षकों की संख्या			प्रतिलाख जनसंख्या पर स्कूलों की संख्या (औसत)		अध्यापक – छात्र अनुपात (औसत)	
	कक्षा 6–8	कक्षा 9–12	कुल योग	कक्षा 6–8	कक्षा 9–12	कुल योग	कक्षा 6–8	कक्षा 9–12	कुल योग	कक्षा 6–8	कक्षा 9–12	कक्षा 6–8	कक्षा 9–12
1992 – 1993	1263	290	1553	204895	270528	475423	4258	5570	9828	18.40	4–16	53.44	41.7
1993 – 1994	1322	293	1615	215003	275158	490161	4179	5510	9689	18.68	4–12	55.18	44.4
1994 – 1995	1369	298	1667	227857	299587	527444	4141	5625	9766	17.92	3–73	56.38	46.3
1995 – 1996	1726	348	2074	210835	291973	502808	4368	5654	10022	23.78	5–03	56.08	44.7
1996 – 1997	1446	287	1733	169411	296174	465585	4206	5703	9909	19.90	4–23	41.81	46.0
1997 – 1998	1582	351	1933	206131	319610	525741	4112	5968	10080	20.65	4–83	55.96	46.9
1998 – 1999	1877	356	2233	301929	333701	635630	4712	5860	10572	22.50	4–65	58.54	49.6
1999 – 2000	1840	364	2204	355180	343657	698837	4871	5999	10870	22.20	4–75	70.67	50.1
2000 – 2001	1998	408	2406	369702	351285	720987	5820	5958	11778	24.59	4–63	62.67	53.1
2001 – 2002	2109	459	2568	363528	358974	722502	6204	5867	12071	25.47	5–16	60.00	55.8
2002 – 2003	2204	470	2674	370567	339617	710184	6487	5849	12336	26.43	5–24	57.00	55.36

स्त्रोत :–
1) उत्तर प्रदेश राज्य एवं जिलों की अधिकारिक वेबसाईट
2) उत्तर प्रदेश वार्षिकी
3) साँखियकीय पत्रिकाएँ – झाँसी मण्डल (2003) एवं चित्रकूट धाम मण्डल (2003)
4) Uttaranchal and Uttar Pradesh at a glance, 2005, Jagran research centre , Kanpur.
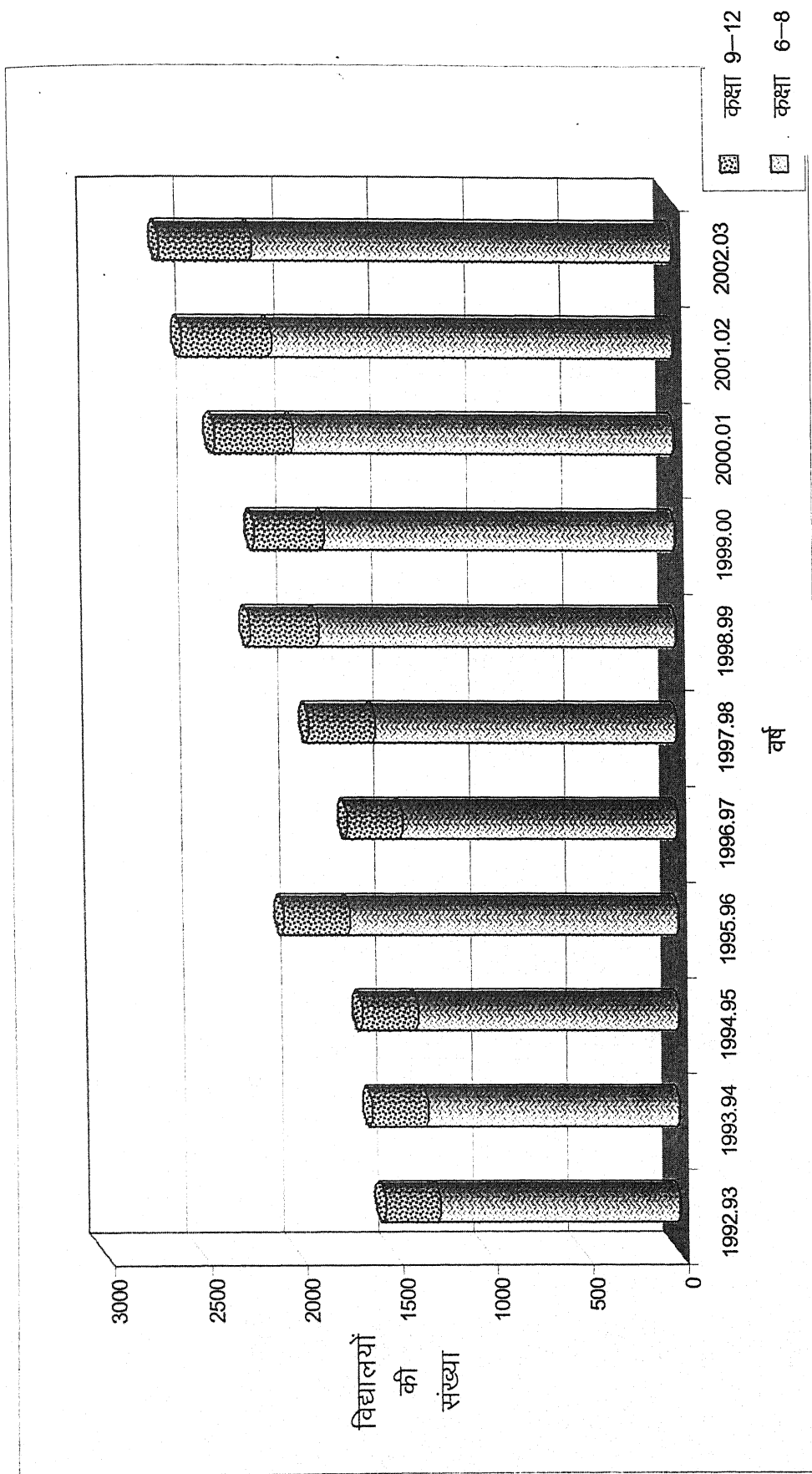
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की संख्या में पिछले एक दशक में वृद्धि की दण्डाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.5
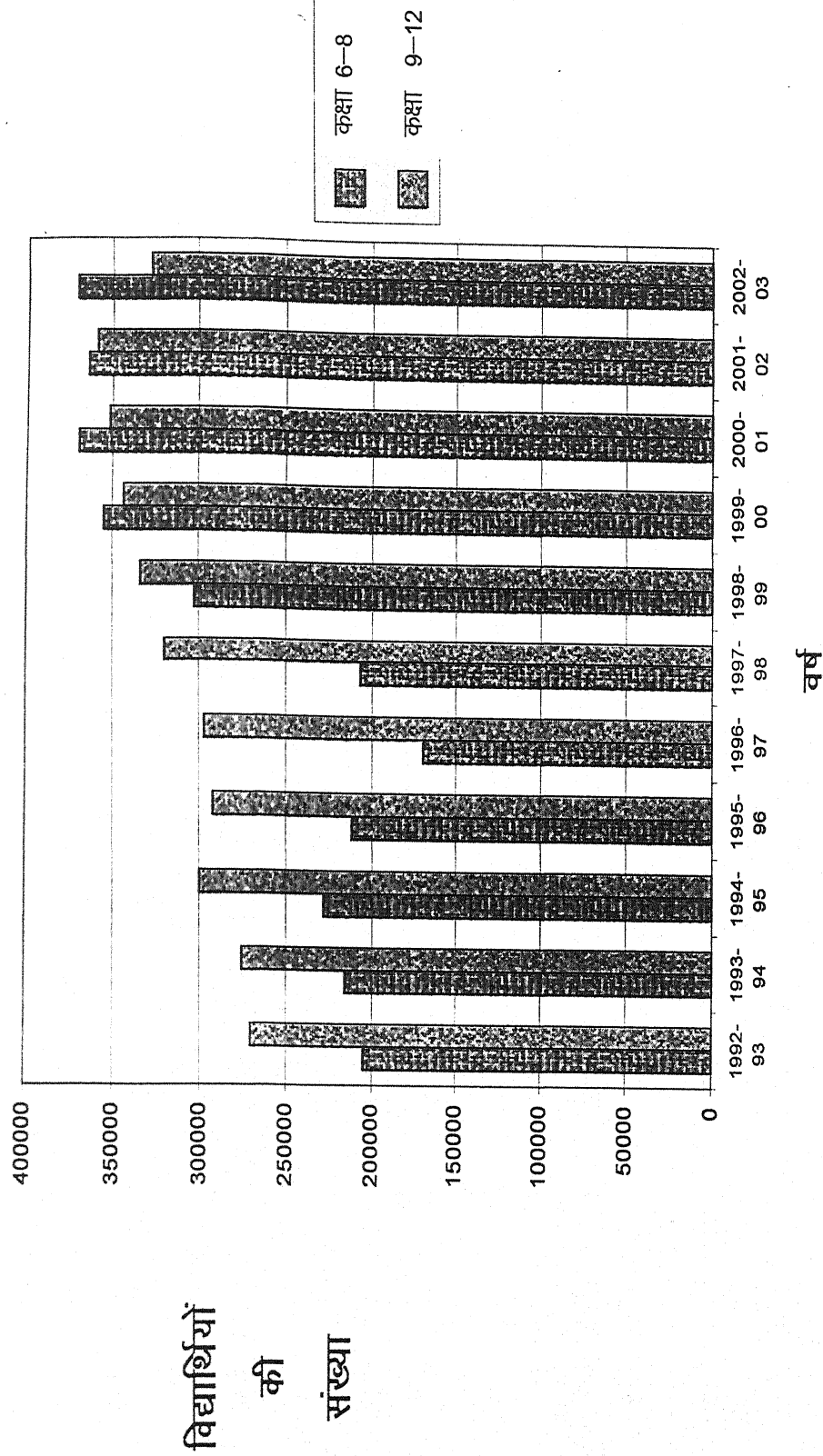
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या में पिछले एक दशक में वृद्धि की स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.5.।
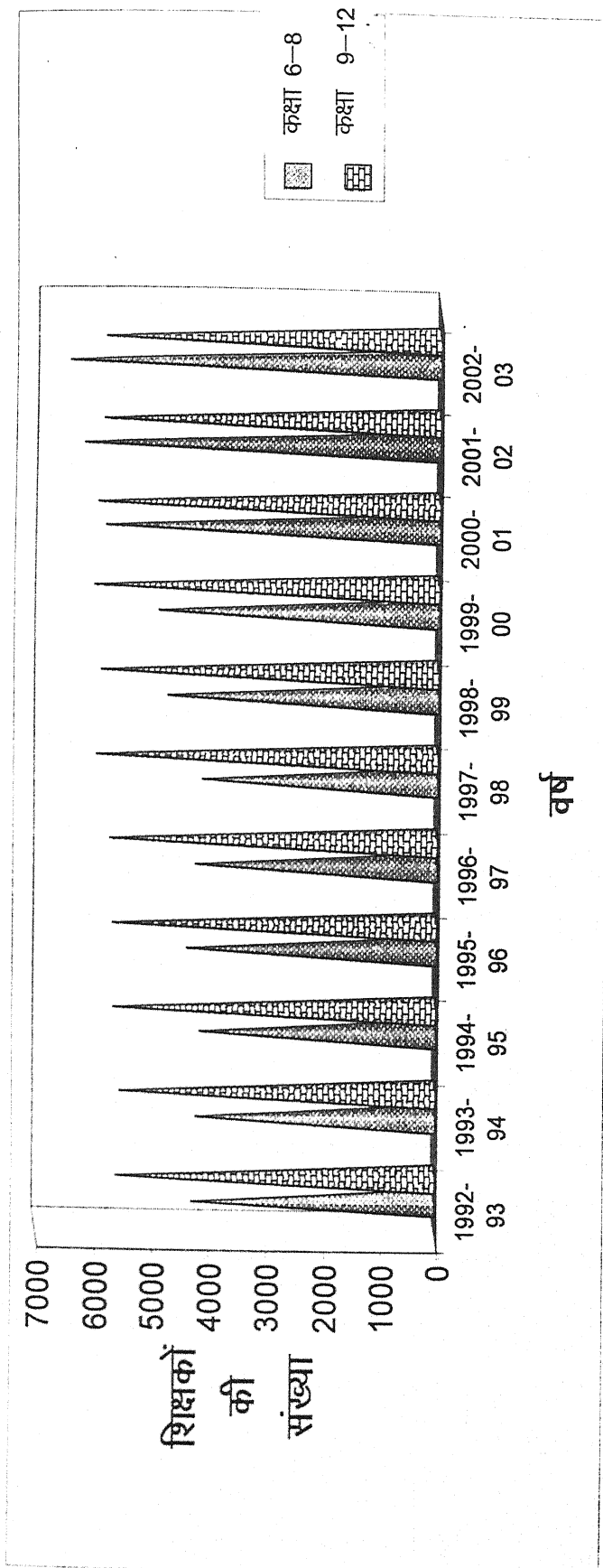
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में शिक्षकों की संख्या में पिछले एक दशक में वृद्धि की स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.6

3.2.1 विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान : एक परिचय

दो हजार वर्षों की दासता के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को भारत वर्ष ने स्वतंत्रता प्राप्त की । इस दिन हम भारतीयों ने राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं रक्षा क्षेत्रों में तो स्वतंत्रता प्राप्त कर ली परन्तु वैचारिक रूप से हम गुलाम ही रहे । हमारे मन–मस्तिष्क पर अन्तिम शासक अंग्रेजों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा । फलतः स्वतंत्रता पश्चात् भी हम अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त न हो सके । हमने अंग्रेजों के द्वारा स्थापित एवं विकसित व्यवस्था तंत्र को स्वतंत्रता पश्चात् भी कार्यरत बनाये रखा । कागजों पर भले ही 'भारत सरकार' लिखा जाने लगा परन्तु हमारे अधिकारीगणों की कार्यशैली एवं मानसिकता 'गुलामों' वाली ही बनी रही । फलस्वरूप स्वतंत्र भारत एवं परतंत्र भारत की छवि में कोई विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं हुआ ।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कमोवेश यही स्थिति देखने को प्राप्त हो रही थी । ईसाई मिशनरियों एवं अंग्रेज सरकार द्वारा स्थापित शिक्षा तंत्र एवं व्यवस्था में भारत सरकार द्वारा कोई परिवर्तन नहीं किया गया । शिक्षा संस्थान पराधीन भारत में गठित उद्देश्यों का ही पालन कर रहे थे । भारत सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्रोत्तर परिवर्तन एवं सुधार लाने के लिए सन् 1948 ईसवी में प्रसिद्ध शिक्षाविद् सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' का गठन किया । इस आयोग को भारत की वर्तमान आवश्यकता के अनुरूप उच्च शिक्षा में सुधार के लिए सुझाव देने को कहा गया था । आयोग ने उच्च शिक्षा में सुधार के साथ–साथ माध्यमिक शिक्षा में भी परिवर्तन एवं सुधार के लिए प्रशंसनीय सुझाव दिये । परन्तु इन प्रयत्नों से शिक्षा के चरित्र में बदलाव न लाया जा सका क्योंकि विद्यालयी शिक्षा का मूल आधार 'प्राथमिक शिक्षा' इस सुधारात्मक कार्य से अछूती रही । शिक्षा मदरसावादी, मार्क्सवादी तथा

मैकालेवादियों के चंगुल में पुस्तकीय, आंग्ल भाषा प्रधान एवं क्लर्क उत्पन्न करने वाली ही बनी रही । यह शिक्षा प्रणाली प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति अनादर भाव रखने वाली एवं राष्ट्रीय गौरव से हीन थी ।

3.2.1.1 विद्या भारती की स्थापना की पृष्ठभूमि –

स्वतंत्र भारत इस बात पर विचार मंथन कर रहा था कि हमारी शिक्षा कैसी हो ? उद्देश्य क्या हों ? यह हमारे देश के विकास में सहायक कैसे हो ? इसके द्वारा बालकों के मन में राष्ट्रीय भावना एवं गौरव का विकास किस प्रकार किया जाए ? हमारी हजारों वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति उनके मन में अनुराग एवं प्रीति कैसे जागृत की जाए ? इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अनेकों राष्ट्र भक्त व्यक्तियों एवं संस्थाओं के द्वारा पृथक–पृथक प्रयास प्रारम्भ किये गये ।

'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' देश की स्वतंत्रता प्राप्ति से कई वर्षों पूर्व ही भारतीयों में सुसुप्त राष्ट्रीय भावना, देश प्रेम एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम को पुनर्जाग्रत करने का गुरूतर, कठिन एवं श्रमसाध्य पुनीत कार्य धीर–गम्भीरता के साथ प्रारम्भ कर चुका था । स्वतंत्रता के पश्चात् संघ राष्ट्र निर्माण के कार्य में और भी गम्भीरता के साथ जुट गया । जब संघ ने यह अनुभव किया कि शिक्षा जगत् में एक निर्वात उत्पन्न हो रहा है, तब संघ ने उस पर भी विचार प्रारम्भ किया ।

यह निश्चित किया गया कि संघ राष्ट्र पुनर्निर्माण, भारतीय गौरव एवं मूल्यों तथा भारतीय संस्कृति का समर्थन करने वाले स्कूलों की सहायता करेगा एवं स्वयं भी इन उद्देश्यों पर आधारित विद्यालयों की स्थापना करेगा । इस कार्य हेतु संघ का सूत्र वाक्य था, 'अंधकार को क्यों धिक्कारें, अच्छा है एक दीप जलायें' । इस भावना से प्रेरित कुछ कार्यकर्ताओं ने इस दिशा में कार्य प्रारम्भ किया । इस विचारधारा का सर्वप्रथम विद्यालय स्वयंसेवकों के प्रयास से सन् 1946 ई. में कुरूक्षेत्र (अब हरियाणा मे) में 'गीता स्कूल' के नाम से प्रारम्भ किया गया । 'सरस्वती शिशु मन्दिरों' की श्रृंखला में सर्वप्रथम विद्यालय

गोरखपुर में स्वयंसेवकों के संयुक्त प्रयास से सन् 1952 ई. में 'पक्की बाग' में स्थापित किया गया । प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले इस विद्यालय की स्थापना का श्रेय श्री कृष्ण चन्द्र गाँधी को जाता है ।[1]

देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए अनेकों व्यक्तिगत् प्रयास भी किये जा रहे थे । भारत वर्ष के गौरव के पुनर्उत्थान के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में अपनाया गया । इस प्रकार के प्रयासों में एक प्रयास पं. दीन दयाल उपाध्याय जी के द्वारा भी किया गया था। अपने व्यक्तिगत् प्रयासों एवं जन सहयोग से 'भारतीय विद्यालय' के नाम से विद्यालयों की एक श्रृंखला स्थापित की थी । पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इस प्रकार के अनेकों विद्यालय स्थापित किये गये थे । यह विद्यालय स्थानीय नागरिकों के द्वारा स्थापित एवं संचालित किये गये । पं. दीन दयाल जी अपनी अत्यधिक व्यस्तता के कारण इन विद्यालयों पर ध्यान न दे सके । बाद में इन विद्यालयों को सरकारी सहायता प्राप्त होने लगी । 'सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय' होने के पश्चात् यह विद्यालय अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो गये ।[2]

सन् 1972 से माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती विद्या मन्दिरों' का संचालन प्रारम्भ हुआ ।[3] प्रारम्भ में इन विद्या मन्दिरों का स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 (उच्च प्राथमिक/जूनियर हाईस्कूल/मिडिल स्कूल) तक ही था । शनैः शनैः इन विद्यालयों की संख्या एवं इनके कक्षा स्तरों में वृद्धि होती गई ।

3.2.1.2 विद्या भारती की स्थापना –

सरस्वती शिशु मन्दिरों एवं सरस्वती विद्या मन्दिरों की संख्या उत्तर प्रदेश में तेजी से बढ़ी । अच्छी शिक्षा एवं संस्कार देने के कारण इन विद्यालयों ने समाज में एक विशेष सम्मान एवं लोकप्रियता अर्जित की । प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती शिशु मन्दिरों' एवं माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती विद्या मन्दिरों की संख्या में

1- Website – www.vidyabharti.org .
2. श्री प्रयाग नारायण साह, मंत्री, भारतीय शिक्षा समिति, उत्तर प्रदेश के साक्षात्कार पर आधारित ।
3- सिंह, सम्पत (सम्पादक), सरस्वती शिशु मन्दिर योजना स्वर्ण जयन्ती स्मारिका विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश ।

बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप उनके सही संचालन एवं नियोजित विकास के लिए एक प्रबन्ध समिति की आवश्यकता अनुभव की गई । इस कार्य हेतु उत्तर प्रदेश में 28 अगस्त 1958 में एक प्रदेश स्तरीय विद्यालय प्रबंध समिति की स्थापना की गई । इस समिति का नाम 'शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, उत्तर प्रदेश' रखा गया ।

अल्प समय में ही उपरोक्त प्रकार के प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना दिल्ली, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, बिहार सहित देश के अन्य राज्यों में होने लगी । विभिन्न राज्यों की भिन्न–भिन्न संस्कृति एवं सभ्यताओं के आधार पर इन विद्यालयों के नाम अलग–अलग प्रकार के रखे गये । यथा– गीता, विवेकानन्द, कृष्ण, सरस्वती, आदर्श आदि । इन सभी विद्यालयों का प्रबंधन स्थानीय स्तरों पर स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समितियाँ करती हैं । स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समितियों का प्रान्तीय स्तर पर प्रबन्धन एवं संचालन करने के लिए सभी प्रान्तों में 'प्रान्त स्तरीय समितियों' का गठन किया गया । उदाहरण के लिए पंजाब और चंडीगढ़ में 'सर्वहितकारी शिक्षा समिति' एवं हरियाणा में 'हिन्दू शिक्षा समिति' का गठन हुआ । इस प्रकार देश के कई प्रान्तों में कार्यरत् इन विद्यालयों के अच्छे एवं कुशल प्रबन्धन के लिए अलग–अलग प्रान्तीय शिक्षा समितियों का गठन हुआ ।

विद्यालयों की संख्या मे बढ़ोत्तरी होने पर शनैः शनैः प्रान्तीय समितियों की संख्या में भी वृद्धि हुई । इन सभी प्रान्तीय समितियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने एवं दिशा–निर्देश प्रदान करने के लिए एक 'राष्ट्रीय स्तर' के संगठन की आवश्यकता अनुभव हुई । इस प्रकार सम्पूर्ण देश में कार्यरत् 'शिशु मन्दिरों' एवं 'विद्या मन्दिरों' के कुशल संचालन के लिए सन् 1977 ईसवी में 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' स्थापित किया गया । इसका पंजीकृत कार्यालय लखनऊ में है । कार्यक्षेत्र एवं भार बढ़ने पर विद्या भारती का कार्यालय दिल्ली एवं कुरूक्षेत्र में भी स्थापित प्रारम्भ किये गये । इस अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से देश की समस्त क्षेत्रीय, प्रान्तीय एवं स्थानीय

समितियों को सम्बद्ध किया गया । इस प्रकार वर्तमान में देश का सबसे बड़ा गैर सरकारी अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' अस्तित्व में आया ।

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' एक रजिस्टर्ड संस्था है । इसका रजिस्ट्रेशन 'सोसाईटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट – 1861' की धारा 21 के अन्तर्गत हुआ है । 'विद्या भारती' से सम्बद्ध सभी विद्यालय अपने–अपने प्रान्तों की राज्य सरकारों से राजकीय नियमों के अन्तर्गत 'मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थान' हैं ।[1]

3.2.1.3 विद्या भारती के लक्ष्य एवं उद्देश्य –

सफलता इस बात पर निर्भर होती है कि कार्य के लक्ष्य एवं उद्देश्य कितने स्पष्ट एवं व्यवहारिक रूप में निर्मित किये गये हैं । प्रत्येक कार्य के आरम्भ में उसके लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का निर्धारण करना आवश्यक होता है । लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के अभाव में किये गये कार्य निरर्थक एवं परिणाम विहीन होते हैं । अतः कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य जितनी गम्भीरता, मेहनत, धैर्य, स्पष्टता एवं व्यवहारिक रूप से निर्धारित किये जायें, कार्य में सफलता प्राप्त करने की सम्भावनाएँ उतनी ही अधिक हो जाती हैं । इसी सूत्र का पालन करते हुए 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' ने 'Man Making Education' के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य बहुत ही स्पष्टता के साथ निर्धारित किये हैं । इनका ध्येय वाक्य है – सा विद्या या विमुक्तये । इस संस्थान के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. भारतीय संस्कृति एवं उसके जवीन के आदर्शों के अनुरूप एक एकीकृत शिक्षा की व्यवस्था का निर्माण करना ।

---

1. Website – www.vidyabharti.org.

2. छात्रों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास करने के लिये प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के विभिन्न स्तरों एवं विभिन्न प्रकारों के शैक्षिक संस्थानों की स्थापना करना एवं ऐसे शिक्षा संस्थानों को संगठित करना, बढ़ावा देना, निर्देशन देना एवं सहायता प्रदान करना ।

3. 'विद्या भारती' के आदर्शों के अनुरूप पूर्व से ही चल रहे ऐसे शिक्षा सस्थानों एवं संगठनों को सम्बद्धता प्रदान करना एवं उनकी कार्यप्रणाली में तालमेल स्थापित कर सहायता प्रदान करना ।

4. 'सम्बद्ध' शिक्षा सस्थानों एवं उनमें अध्ययनरत् योग्य एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों को लोन, दान, अनुदान, छात्रवृत्ति आदि के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करना ।

5. 'विद्या भारती' के आदर्शों के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित 'सर्कुलर्स,' 'पत्रिकाएँ' एवं 'पुस्तकों' की तैयारी, मुद्रण एवं प्रकाशन की व्यवस्था करना ।

6. छात्रों में साइन्टिफिक टैम्पर, शोध कार्यों में रूचि, विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न एवं विकसित करने लिए प्रयोगशालाओं एवं वैज्ञानिक संगठनों आदि की स्थापना करना । इस क्षेत्र में पहले से कार्यरत् विद्यालयों एवं अन्य संगठनों को सहायता देना ।

7. उपरोक्त उद्‌देश्यों की पूर्ति में पहले से कार्यरत् शिक्षकों को प्रशिक्षण देना एवं उनके शिक्षण कार्य को और प्रभावशाली बनाने के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना । इन दोनों कार्यों में संलग्न व्यक्तियों को सुरक्षा, पदोन्नति एवं वित्तीय सहायता प्रदान करना ।

8. 'विद्या भारती' के लक्ष्यों के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले अनुभवों एवं नवाचारों का विनिमय, विश्लेषण एवं चर्चा करने के लिए व्यवस्था करना ।

9. संस्कृति, कला एवं साक्षरता के क्षेत्रों में छात्रों की रूचि जाग्रत एवं विकसित करने के लिए समय–समय पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करना ।

10. विद्यालयों से सम्बद्ध अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करना ।

11. 'विद्या भारती' द्वारा अनुभवित एवं प्राप्त निष्कर्षों को केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकारों को प्रेषित करना ।

12. उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु धन की व्यवस्था करने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करना, चल एवं अचल सम्पत्ति का अधिग्रहण करना ।

13. उस प्रकार की सभी गतिविधियाँ करना जिनसे 'विद्या भारती' के लक्ष्यों की पूर्ति होती हो ।

14. 'विद्या भारती' की सभी गतिविधियाँ सेवा भाव की भावना से एवं पूर्णतः शिक्षा को समर्पित होंगी न कि धनोपार्जन के लिए ।

15. 'विद्या भारती' की सभी गतिविधियाँ एवं सेवाएँ सम्पूर्ण समाज को समर्पित होंगी, इसमें जाति, नस्ल, धर्म, लिंग, क्षेत्र एवं राजनैतिक आधार पर कोई भी भेदभाव नहीं होगा ।

16. समाज के मध्यम वर्गीय एवं निम्न–मध्यम वर्गीय बालक एवं बालिकाओं के लिए उच्च गुणवत्ता की शिक्षा की व्यवस्था करना । आदि ।

'विद्या भारती' के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'विद्या भारती' का एकमेव शैक्षिक लक्ष्य है – एक ऐसा राष्ट्रीय शिक्षा तंत्र विकसित करना

जो कि युवा पीढ़ी को इस प्रकार तैयार करे कि वह देश भक्ति एवं हिन्दुत्व की भावना से परिपूर्ण हो, जिसका सम्पूर्ण शारीरिक, मानिसिक़, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास हुआ हो, जो आधुनिक युग की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना एवं समाधान करने में सक्षम हो एवं अपने जीवन को देश के निर्धन पिछड़े, आदिवासियों और झुग्गी झोपड़ियों मे रहने वाले लोगों की सेवा एवं उनके उत्थान के लिए समर्पित कर सके, जिससे इन अभावग्रस्त विपन्न लोगों को आर्थिक शोषण, सामाजिक प्रताड़ना एवं अन्याय से छुटकारा दिलाया जा सके एवं स्वयं परस्पर समानता, सांस्कृतिक एकता एवं आर्थिक सम्पन्ता प्रदान करने वाले व्यक्ति के रूप में देखे जायें ।

3.2.1.4 विद्या भारती की संगठनात्मक संरचना –

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' अखिल भारतीय स्तर की रजिस्टर्ड संस्था है । इसने सम्पूर्ण देश में अपने से सम्बद्ध पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च सामान्य एवं व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले लगभग 24,794 शिक्षण संस्थाओं के कुशल एवं प्रभावी संचालन के लिए देश को ग्यारह क्षेत्रों में विभाजित किया है । प्रत्येक क्षेत्र का अपना एक मुख्यालय एवं स्वतंत्र कार्यकारिणी समिति है । प्रत्येक क्षेत्रीय समिति के अन्तर्गत विभिन्न राज्यस्तरीय समितियाँ कार्य कर रही हैं । यह विभिन्न राज्य स्तरीय समितियाँ जिला स्तर एवं स्थानीय स्तर पर विभिन्न विद्यालयों की प्रबंध कार्यकारिणी समितियों का संचालन करती हैं । वर्तमान में 'विद्या भारती' के अन्तर्गत सौ से भी अधिक राज्यस्तरीय समितियाँ विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का संचालन कर रही हैं यह सभी राज्यस्तरीय समितियाँ अपने–अपने राज्यों के नियमों के अनुसार पंजीकृत हैं ।

'विद्या भारती' से सम्बद्ध विभिन्न प्रकार के विद्यालयों को जन सामान्य 'सरस्वती शिशु मन्दिरों' के नाम से पुकारता है । वास्तविकता में विद्या भारती ने अलग–अलग स्तरों के विद्यालयों का नामकरण अलग–अलग किया हुआ है, इनके नामों

में राज्यवार परिवर्तन भी देखने को मिलता है । अधिकाँश विद्यालयों के नामों से 'सरस्वती' एवं 'मन्दिर' शब्द जुड़ा हुआ होता है ।

'विद्या भारती' स्कूलों को तीन प्रकारों की सम्बद्धता प्रदान करती है –

1. संचालित
2. संलग्न
3. निर्देशित या मार्गदर्शन प्राप्त ।

1. संचालित विद्यालय –

यह सम्बद्धता विद्या भारती उन विद्यालयों को प्रदान करती है जिनकी स्थानीय प्रबंध कार्यकारिणी समिति का गठन विद्या भारती की राज्यस्तरीय समितियों के द्वारा किया जाता है । इसका तात्पर्य है कि 'संचालित विद्यालय' का प्रबन्धन 'विद्या भारती' के नाम पर उसकी राज्य स्तरीय समिति प्रत्यक्ष रूप में करती है, जिसमें विद्यालयों का वित्तीय, शैक्षिक एवं सामान्य प्रबन्धन शामिल होता है ।

2. संलग्न विद्यालय –

'संलग्न' सम्बद्धता प्राप्त विद्यालयों की स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति में 'विद्या भारती' की राज्यस्तरीय समिति का मात्र प्रतिनिधित्व होता है । शिक्षा सम्बन्धी समस्त कार्य विद्या भारती के नियमों के अनुसार होता है । वित्तीय एवं सामान्य प्रबन्धन का कार्य सम्बन्धित प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति ही देखती है ।

3. निर्देशित या मार्गदर्शन प्राप्त विद्यालय –

इस प्रकार की 'सम्बद्धता' प्राप्त विद्यालयों की स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति में 'विद्या भारती' की राज्यस्तरीय समितियों का प्रतिनिधित्व नहीं होता है । अर्थात इन विद्यालयों के शैक्षिक, वित्त एवं सामान्य प्रबन्धन में 'विद्या भारती' का कोई हस्तक्षेप

नहीं होता है ऐसे विद्यालय 'विद्या भारती' से समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं तथा इसकी कुछ शैक्षिक गतिविधियों में भी भाग लेते हैं । ऐसे विद्यालयों के लिए हम कह सकते हैं कि यह 'विद्या भारती' की विचार धारा एवं उद्देश्यों का अनुगमन करते हैं, नियमों का नहीं ।

'विद्या भारती' के पदाधिकारियों में राष्ट्रीय अध्यक्ष, मंत्री एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री आदि होते हैं । 'विद्या भारती' की अपनी एक 'जनरल बॉडी' है । इसमें 'विद्या भारती' के अध्यक्ष, मंत्री (सचिव), राष्ट्रीय संगठन मंत्री तथा क्षेत्रीय एवं राज्य समितियों के संगठन सचिव एवं अखिल भारतीय तथा क्षेत्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञ सदस्य होते हैं । 'जनरल बॉडी' की वर्ष में कम से कम एक बार 'वार्षिक साधारण सभा' होती है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षारत् 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें' राज्य स्तर की 'भारतीय शिक्षा समिति, उत्तर प्रदेश पूर्व, अवध प्रान्त एवं 'जन शिक्षा समिति' अवध प्रान्त के अन्तर्गत आती हैं । यह राज्यस्तरीय समितियाँ 'पूर्वी उत्तर–प्रदेश' क्षेत्र के अन्तर्गत् कार्यरत् हैं। उत्तर 'पूर्वी प्रदेश' क्षेत्र का क्षेत्रीय कार्यालय 'सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ– 226020 में स्थित है ।

3.2.1.5 विद्या भारती का शैक्षिक पाठ्यक्रम –

'विद्या भारती' ने भारतीय मनीषियों के विचारों के आधार पर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया है । इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एक पाठ्यक्रम का भी निर्माण इसके द्वारा किया गया है । 'विद्या भारती' ने अपने विद्यालयों में राज्य सरकारों के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त बालकों के चहुमुखी विकास हेतु विभिन्न प्रकार की शिक्षाओं एवं विषयों को सम्मिलित किया है ।

देश को राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के एक सूत्र में पिरोने के लिए 'विद्या भारती' ने 'योग' 'शारीरिक शिक्षा', 'नैतिक शिक्षा', 'संगीत' एवं 'संस्कृत' जैसे पांच मूल

विषयों का अपने पाठ्यक्रम में समावेश किया हुआ है । इस शिक्षा को 'विद्या भारती' ने 'पंचमुखी शिक्षा' कहा है ।

3.2.1.6 विद्या भारती की परियोजनाएँ एवं अन्य गतिविधियाँ –

सन् 1977ई. में स्थापित इस अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान ने अति तीव्र गति से शिक्षा के सभी स्तरों पर अपना विकास एवं विस्तार किया है । सम्प्रति पूरे भारत में विद्या भारती से विभिन्न प्रकार की लगभग 24794 शिक्षण संस्थायें सम्बद्ध हैं । इन शिक्षण संस्थाओं में लगभग सवा लाख (1,20,751) आचार्य एवं आचार्याएँ तथा लगभग 28,38,051 बालक एवं बालिकाएँ अध्यापन एवं अध्ययनरत् हैं । 'विद्या भारती' आज न केवल सामान्य स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में वरन् शोधकार्य, आचार्य प्रशिक्षण, संस्कृत भाषा उन्नयन, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आचार्य प्रशिक्षण के क्षेत्रों में भी कार्य कर रही है ।[1]

'विद्या भारती' की मान्यता है कि विद्यालय शिक्षा के लिए नहीं हैं । विद्यालयों को सामाजिक समरसता, सामाजिक चेतना आदि कार्यों में भी संलग्न होना चाहिए । अतः 'विद्या भारती' ने इस क्षेत्र में भी कार्य प्रारम्भ किया । यह संगठन आज कुष्ट रोग से पीड़ित बालकों की शिक्षा (सुशील बालक गृह), पर्यावरण शिक्षा, प्रकाशन कार्य, स्वदेशी जागरण, संस्कार केन्द्रों, आदिवासी क्षेत्रों जैसे – अण्डमान–निकोबार द्वीप, हॉफलोंग, छोटा नागपुर सहित उत्तर–पूर्वी भारत में वनवासी शिक्षा जैसी कई परियोजनाओं का संचालन कर रहा है ।

बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए कई प्रतियोगिताओं का भी आयोजन इस संगठन द्वारा किया जाता है । जैसे – संस्कृति ज्ञान परीक्षा, अखिल भारतीय खेल कूद प्रतियोगिता, विज्ञान एवं सांस्कृतिक प्रश्न मंच प्रतियोगिता, वैदिक गणित प्रतियोगिता, विज्ञान प्रदर्शनी, निबंध लेखन प्रतियोगिता (छात्रों एवं आचार्यों दोनो के लिए) आदि ।

---

1. विद्या भारती प्रदीपिका, चैत्र से ज्येष्ठ, युगाब्द 5107 ।

शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत विद्वानों एवं शिक्षाविदों का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए विद्या भारती ने वर्ष 1980 ई. में 'राष्ट्रीय विद्वत परिषद' का गठन किया । इसके आज 500 से भी अधिक सदस्य हैं ।

शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य हेतु सन् 1980 ई. में लखनऊ में 'भारतीय शिक्षा शोध संस्थान' की स्थापना विद्या भारती द्वारा की गई ।

वर्तमान में विद्याभारती के तत्वाधान में उपरोक्त वर्णित प्रकार की 23 परियोजनाओं एवं गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है ।[1]

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान का लक्ष्य'–"इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामीण, वनवासी, गिरीकन्दराओं एवं झुग्गी–झोपडियों में रहने वाले दीन–दुःखी एवं अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतिओं, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो ।"[2]

---

1. Website – www.vidyabharti.org
2- भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज की विवरणिका मे लिखित ।

3.2.2 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की कार्य प्रणाली : एक परिचय

वर्तमान में सम्पूर्ण देश में मात्र माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 6–12) प्रदान करने वाली 5954 शैक्षिक संस्थाऐं 'विद्या भारती' से सम्बद्ध हैं । इनमें 1247 संस्थाऐं केवल उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित हैं । पूर्वी उत्तर प्रदेश में इनमें से 610 माध्यमिक शिक्षा संस्थान 'विद्या भारती' से सम्बद्ध हैं । इतनी बड़ी मात्रा में शिक्षा संस्थाओं का सुगमता से प्रशासन करने के लिए विद्या भारती ने सम्पूर्ण देश को ग्यारह क्षेत्रों में विभाजित किया हुआ है । इन ग्यारह क्षेत्रों में दो क्षेत्र उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत आते हैं । प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न समितियों द्वारा 'विद्या भारती' से सम्बद्ध शिक्षा संस्थाओं का संचालन किया जा रहा है । प्रस्तुत भाग में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की कार्यप्रणाली एवं उनकी प्रशासनिक व्यवस्था को संक्षेप में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

3.2.2.1 उत्तर प्रदेश में सरस्वती मन्दिर योजनाओं का संगठनात्मक ढ़ाँचा

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा उत्तर प्रदेश के विशाल एवं विस्तृत भू–भाग को अपने शैक्षिक एवं प्रशासनिक कार्यों की सुविधा की दृष्टि से 'पूर्वी उत्तर प्रदेश' एवं 'पश्चिमी उत्तर प्रदेश' नामक दो खण्डों में विभाजित किया गया है । पुनः इन खण्डों को छोटे–छोटे क्षेत्रों में विभाजित किया गया है । इन क्षेत्रों का नामकरण इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर किया गया है । पूर्वी उत्तर प्रदेश का विभाजन 'अवध प्रान्त' एवं 'काशी प्रान्त' में तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश का विभाजन 'बृज प्रान्त' एवं ' मेरठ प्रान्त' ~~उत्तर प्रदेश~~' में किया गया है ।

सरस्वती मन्दिर योजनाओं के विकास के साथ–साथ इनके प्रशासन को सुदृढ़ बनाने के लिए उत्तर प्रदेश में समय–समय पर विद्या भारती के अन्तर्गत विभिन्न समितियों का गठन किया गया है । वर्तमान समय में नगरीय क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा का 'कार्य शिशु शिक्षा समिति' एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा का कार्य 'जन शिक्षा समिति' संचालित कर रही है । माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर

बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा का कार्य संचालित करने के लिए अलग–अलग समितियाँ कार्यरत् हैं ।

'भारतीय श्री विद्या परिषद' माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्या मन्दिरों का कार्य उत्तर प्रदेश में संचालित कर रही है । 'भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश' सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल में सी.बी.एस.ई. बोर्ड से मान्यता प्राप्त बालक एवं सहशिक्षा वाले माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्या मन्दिरों की समिति के रूप में कार्यरत् है । यह समिति उच्चशिक्षा, तकनीकि शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का भी संचालन कानपुर, मथुरा, शिकारपुर आदि स्थानों पर कर रही है । माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त बालक एवं सहशिक्षा विद्या मन्दिरों के कार्य संचालन के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश पूर्व' का गठन किया गया है एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 'भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश पश्चिम' का गठन किया गया है । मात्र कक्षा 'षष्ठम्' से कक्षा 'अष्ठम्' तक के जूनियर हाईस्कूल/उच्च प्राथमिक विद्या मन्दिर विद्यालयों का कार्य 'भारतीय शिक्षा समिति' देख रही है ।

उपरोक्त वर्णित सभी समितियों का गठन पूर्वी एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश स्तर पर पृथक–पृथक किया गया है। उत्तर प्रदेश के दोनों क्षेत्रों में सृजित प्रत्येक प्रान्त में इन समितियों का अपना–अपना प्रशासनिक ढ़ाँचा है ।

'शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति' सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में 'आचार्य–प्रशिक्षण विद्यालयों' का प्रबन्ध का कार्य देख रही है । वर्तमान में यह समिति 'प्रकाशन' का कार्य भी करती है ।

'भारतीय शिक्षा परिषद, लखनऊ सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में सरस्वती मन्दिर योजनाओं की कक्षा 'पंचम्' एवं कक्षा 'अष्ठम्' की परीक्षाओं का संचालन करती है ।

इस के अतिरिक्त आचार्य– प्रशिक्षण विद्यालयों की बी.टी.सी. परीक्षाओं का संचालन भी यही परिषद कर रही है । यह परिषद उत्तर सरकार से मान्यता प्राप्त है ।

उपरोक्त वर्णन से शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि विद्या भारती ने उत्तर प्रदेश में अपनी शैक्षिक संस्थाओं के कुशल संचालन करने एवं कड़ा नियन्त्रण रखने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया है ।

3.2.2.2 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में विस्तार एवं संगठन –

उत्तर प्रदेश में देश के प्रथम सरस्वती शिशु मन्दिर का प्रारम्भ पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नगर में सन् 1952 ईसवी में हुआ था । भारतीय पद्धति पर आधारित, छोटे बच्चों के लिए शिशु मन्दिर की संकल्पना का विचार प्रथमतः प्रसिद्ध समाज सेवी और राजनेता श्री नानाजी देशमुख के मन में जागा था ।[1]

मान्नीय श्री कृष्णचन्द्र गाँधी ने इस संकल्पना को साकार रूप प्रदान किया था । पूज्यनीय श्री गुरू जी एवं मा. भाउराव देवरस इस योजना के प्रेरणा स्त्रोत थे ।[2]

बुन्देलखण्ड के ललितपुर (तत्कालीन झाँसी जिले का भाग) के मदनपुर क्षेत्र में देश का दूसरा सरस्वती शिशु मन्दिर प्रारम्भ हुआ था । इसके पश्चात् महोबा क्षेत्र (तत्कालीन हमीरपुर जिले का भाग) में सरस्वती शिशु मन्दिर योजना प्रारम्भ हुई थी । शनैः शनैः बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) के उरई, जालौन, कोंच एवं हमीरपुर क्षेत्रों में सरस्वती शिशु मन्दिरों की स्थापना हुई । यह समस्त विद्यालय प्राथमिक स्तर के थे । माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने सन् 1972 ई. से जूनियर कक्षाओं से अपना कार्य प्रारम्भ किया था ।[3] बुन्देलखण्ड के समाज ने भी इन विद्यालयों द्वारा माध्यमिक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करने की माँग की । सर्वप्रथम महोबा में सन् 1978 में माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती विद्या

1– सिंह, सम्पत (सम्पादक), सम्पादकीय, सरस्वती शिशु मन्दिर योजना स्वर्ण जयन्ती स्मारिका, 2002–2003, विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश ।

2- तथैव ।

3– तथैव ।

मन्दिर' विद्यालय की स्थापना हुई । इसी वर्ष बाँदा एवं राठ में भी विद्या मन्दिरों ने अपना कार्य प्रारम्भ किया । इस प्रकार सीमित क्षेत्रों से प्रारम्भ हुई सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने आज सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में अपना विस्तार कर लिया है। सत्र 2003–2004 में इस पूरे क्षेत्र में मात्र माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले बालक, बालिका एवं सहशिक्षा वाले साठ (60) से भी अधिक सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें शिक्षारत् है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र विद्या भारती की योजनान्तर्गत पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध प्रान्त क्षेत्र में आता है । फलस्वरूप यहाँ के माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट विद्या मन्दिर 'भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश पूर्व' द्वारा निर्देशित एवं संचालित किये जा रहे हैं ।

उच्च प्राथमिक विद्यालय/जूनियर हाईस्कूल स्तर के नगरीय क्षेत्रों के सरस्वती विद्या मन्दिरों का कार्य 'भारतीय शिक्षा समिति, अवध प्रान्त, पूर्वी उत्तर प्रदेश' द्वारा देखा जा रहा है । ग्रामीण क्षेत्रों के इसी स्तर के सरस्वती विद्या मन्दिरों का संचालन 'जन शिक्षा समिति, अवध प्रान्त पूर्वी उत्तर प्रदेश' द्वारा किया जा रहा है ।

भारतीय श्री विद्या परिषद, अवध प्रान्त, पूर्वी उत्तर प्रदेश' इस क्षेत्र में सरस्वती बालिका विद्या मन्दिरों के कार्यों का संचालन कर रही है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सातों जनपदों के कुल 47 विकास खण्डों में से 45 विकास खण्डों में 'विद्या भारती' किसी न किसी रूप में कार्य कर रही है । केवल 'जन शिक्षा समिति' के द्वारा ही 27 विद्या मन्दिर इस क्षेत्र में संचालित किये जा रहे हैं ।

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' अपने से सम्बद्ध विभिन्न समितियों द्वारा सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सातों जनपदों में माध्यमिक एवं

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले साठ (60) से भी अधिक 'विद्या मन्दिरों' का संचालन कर रहा है ।

शोधकर्ता ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में कार्यरत् 60 से भी अधिक सरस्वती विद्या मन्दिरों में से 58 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का 'जनपदवार', 'क्षेत्रवार', 'मान्यता का स्तर' एवं 'वर्ग' के आधार पर वर्गीकरण कर रेखाचित्रों के माध्यम से निम्नवत् प्रदर्शित किया है ।(विस्तृत सूची परिशिष्टका कमाँक 4 में संलग्न है।)
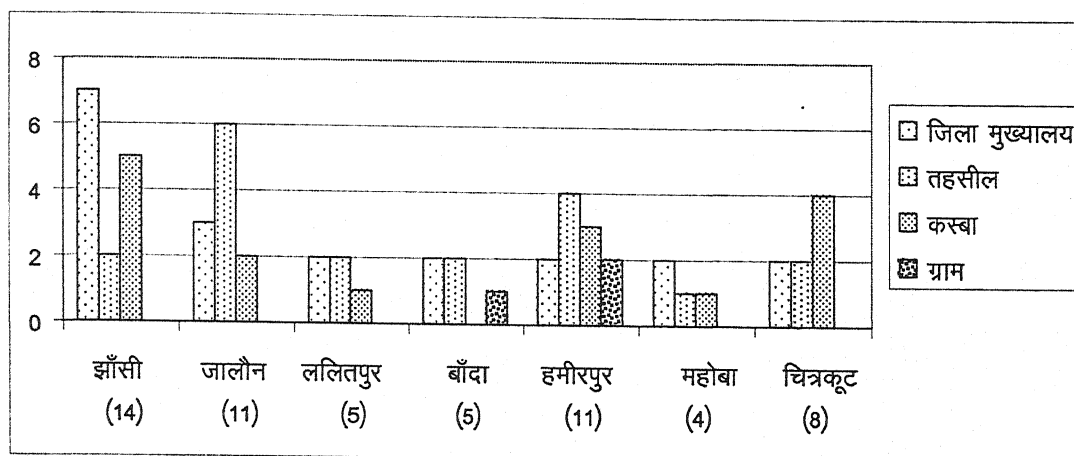
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के जनपदवार एवं क्षेत्रवार वितरण की स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.7
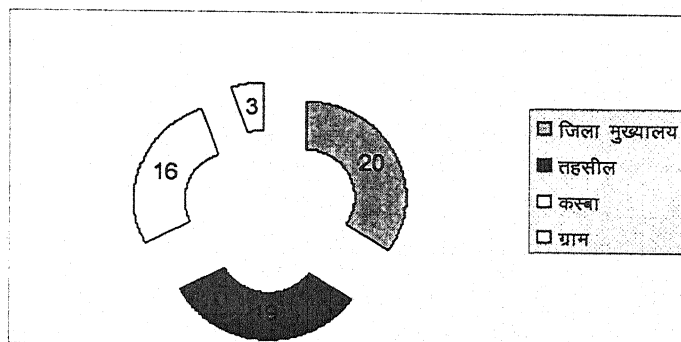
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की क्षेत्रवार वितरण की चक्राकृति रेखाचित्र कमाँक–3.8
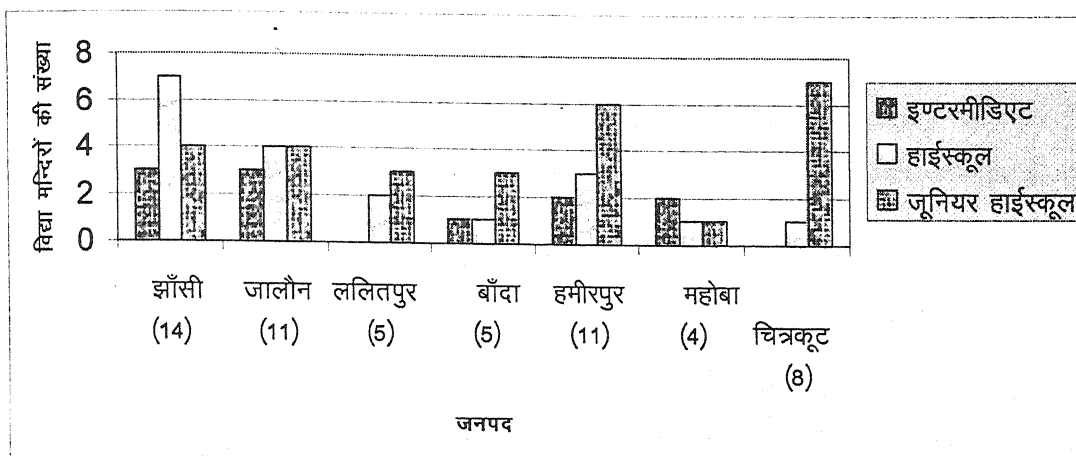
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के मान्यता स्तर की जनपदवार स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.9
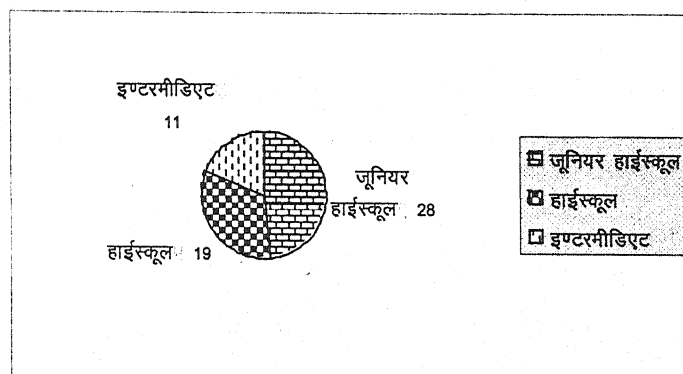
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के मान्यता स्तर की चकाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.10
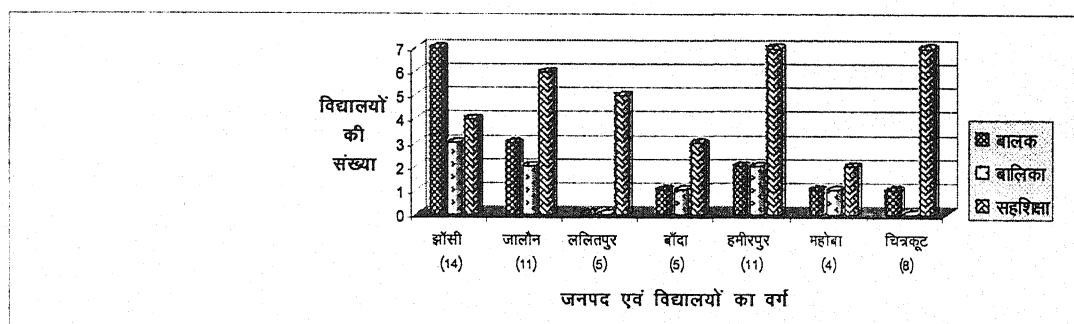
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के वर्गों की स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–3.11
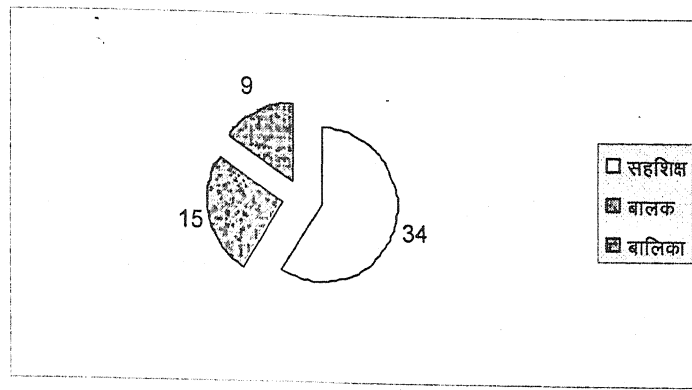
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के वर्गों की चक्राकृति रेखाचित्र कमाँक–3.12

3.2.2.3 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की दिनचर्या–

शोधकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य के सम्बन्ध में विभिन्न विद्या मन्दिरों से सम्पर्क किया गया । विद्या मन्दिरों में अपने भ्रमण के समय शोधकर्ता द्वारा इन विद्यालयों के विभिन्न किया कलापों का अध्ययन किया गया । अपने अध्ययन के दौरान शोधकर्ता द्वारा यह अवलोकन किया गया कि इन समस्त विद्यालयों की दैनिक कियाएँ लगभग समान हैं । विद्या भारती एवं प्रान्तीय समितियों द्वारा निर्धारित समय–सारिणी का अनुपालन इन विद्यालयों में हो रहा है ।

शोधकर्ता ने अपने निरीक्षण में पाया कि प्रत्येक विद्यालय लगभग छः घण्टे की अवधि तक शिक्षण कार्य करता है । इस समयावधि में विद्यालयों में प्रातःकालीन दैनिक 'वंदना' से लेकर अपरान्ह विद्यालय अवकाश के समय 'वन्देमातरम्' के गायन तक विविध किया–कलापों का आयोजन समय–सारिणी के अनुसार होता है । सभी आचार्य एवं विद्यार्थी अपने–अपने निर्धारित गणवेशों में विद्यालय समयानुसार उपस्थित होते हैं । इसके पश्चात् प्रत्येक विद्यालय अपनी–अपनी समय–सारिणी के अनुसार कार्य प्रारम्भ करता है । शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में इन विद्यालयों में जिन सामान्य दैनिक गतिविधियों का अवलोकन किया है उसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

1. सूचना बेला के उपरांत प्रत्येक कक्षाचार्य अपनी–अपनी कक्षाओं में जाकर छात्रों की उपस्थिति लेता है । तत्पश्चात वन्दना की बेला होने पर सभी छात्र अपनी–अपनी कक्षाओं से अपने कक्षाचार्य के साथ पंक्तिबद्ध होकर वन्दना स्थल पर पहुँचकर कक्षाशः पंक्तिबद्ध बैठते हैं । सभी विद्यार्थी अपने जूते अपनी–अपनी कक्षाओं में ही उतार कर वन्दना हेतु आते है ।

2. वन्दना स्थल पर 'विद्या की देवी सरस्वती' के अतिरिक्त 'ऊँ' एवं 'भारत माता' इत्यादि का स्वरूप भी विराजमान होता है । इन स्वरूपों के सम्मुख बैठ कर सभी विद्यार्थी एवं आचार्यगण, प्रधानाचार्य सहित दैनिक वन्दना करते हैं । वन्दना की किया लगभग आधा घण्टा चलती है ।

3. वन्दना का स्वरूप पूर्णतः आध्यात्मिक है । प्रथमचरण में वन्दना का प्रारम्भ प्रातः स्मरण के उवाच से होता है । इसके पश्चात् एकात्मता स्त्रोत एवं एकता मंत्र का सस्वर वाचन होता है । द्वितीय चरण में माँ सरस्वती के सम्मुख पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्जवलन के पश्चात् सरस्वती की वन्दना की जाती है । तृतीय चरण में 'ओंकार(ब्रह्मनाद) के नाद्ब के पश्चात् ध्यान, गायत्री मंत्र, हनुमान चालीसा, आरती, भारतमाता वन्दना एवं शान्ति पाठ होता है । इनमें कुछ कार्यकम दैनिक आधार पर सम्पन्न होते हैं ।

4. वन्दना के उपरांत प्रधानाचार्य का उद्बोधन एवं आवश्यक निर्देश दिये जाते है । किसी अतिथि के आगमन पर उनके द्वारा भी छात्रों को कुछ विचार प्रदान किये जाते हैं । इस प्रकार वन्दना समाप्ति के पश्चात् सभी छात्र अपनी–अपनी कक्षाओं में पंक्तिबद्ध होकर वापस जाते है ।

5. कक्षाओं में आठ बेलाओं तक शिक्षण कार्य चलता है । आठों बेलाओं की व्यवस्था समय–सारिणी के अनुसार चलती है । सभी शिक्षक अपने–अपने

विषयों की बेलाओं के अनुसार घण्टी बजने पर समय से कक्षाओं में उपस्थित होकर शिक्षण कार्य तल्लीनता के साथ करते हैं ।

6. सामान्यतः चार बेलाओं के पश्चात् भोजनावकाश होता है । भोजनावकाश के समय सभी छात्र एवं आचार्य एक स्थान पर, हाथ–पैर धो कर अपने–अपने भोजन के साथ उपस्थित होते हैं । सामूहिक रूप से बैठकर सभी लोग सर्वप्रथम 'भोजन मंत्र' का गायन करते है । भोजन मंत्र के पश्चात् सभी विद्यार्थी सामूहिक रूप से भोजन करते हैं ।

7. अन्तिम बेला में छात्रों की दैनन्दिनी का निरीक्षण होता है । दैनन्दिनी में अंकित गृहकार्य एवं अन्य सूचनाओं के निरीक्षण के पश्चात् सभी छात्र 'राष्ट्र वन्दना' हेतु विद्यालय प्रांगण में उपस्थित होते हैं। राष्ट्र वन्दना में सभी के द्वारा 'विद्यालय गीत' एवं 'वन्देमातरम्' का सस्वर गायन किया किया जाता है । तत्पश्चात् विद्यालय का अवकाश होता है ।

8. कुछ विद्यालयों में कमजोर विद्यार्थियों एवं कक्षा दशम् व द्वादश के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय अवकाश के उपरांत अतिरिक्त कक्षाओं का भी आयोजन किया जाता है ।

3.2.2.4 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की पंचपदी शिक्षण पद्धति–

विद्या भारती ने अपने द्वारा संचालित माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों में शिक्षण विधियों पर कुछ प्रयोग करते हुए अपनी अभिनव शिक्षण पद्धति का विकास किया है । इस शिक्षण पद्धति को 'पंचपदी शिक्षण पद्धति' का नाम दिया गया । अपनी इस अभिनव शिक्षण पद्धति को विद्या मन्दिरों ने प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षण पद्धतियों के समन्वित आधार पर विकसित किया है । इस

पद्धति में पाँच पद हैं, इसी आधार पर इसे पंचपदी शिक्षण पद्धति का नाम दिया गया है ।

पंचपदी शिक्षण पद्धति[1] के पांचों पद निम्नांकित हैं –

1– अधीति (अध्यापन–कार्य)

2– बोध (कक्षा–कार्य)

3– अभ्यास (गृह–कार्य)

4– प्रयोग (सह्पाठ्य–किया)

5– प्रसार (स्वाध्याय)

1. **अधीति (अध्यापन–कार्य)**– इस प्रथम पद में अध्यापक विषय–वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं । अध्यापक नवीन विषय को छात्रों के पूर्व–ज्ञान से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं । छात्र अपने अध्यापक के सहयोग से इस प्रस्तुत विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करते एवं उसका अध्ययन करते हैं । विषय की प्रकृति के अनुरूप पद्धति अपनाकर अर्थात अध्यापक के कथन को श्रवण कर , प्रश्नोत्तर, वाचन, प्रयोग आदि के माध्यम से छात्र विषय–वस्तु से सम्बन्धित तथ्यों एवं सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

2. **बोध (कक्षा–कार्य)**– इस द्वितीय चरण में छात्र विषय–वस्तु के मूल सिद्धान्त या तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं । मनन, पुनरावृत्ति, प्रश्नोत्तर, कक्षा में स्वयं उसका पुनः अभ्यास करके, अथवा प्रयोग करके बोध प्राप्त करते हैं । अध्यापक भी प्रश्न पूँछकर अथवा निरीक्षण के द्वारा यह जानने का प्रयास करते हैं कि छात्रों ने पाठ्य–वस्तु के मूल तत्व को ग्रहण किया है अथवा नहीं, तथा आवश्यकता के अनुसार उनकी सहायता करते हैं ।

---

1. तोमर, लज्जाराम, 1990, भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ –157 ।

3. अभ्यास (गृह–कार्य)– तृतीय चरण में छात्र अर्जित ज्ञान का अभ्यास करते हैं एवं उसमें परिपक्वता प्राप्त करते हैं । विभिन्न प्रकार से किये गये अभ्यास के द्वारा ही अर्जित ज्ञान चित्त में स्मृति–संस्कार के रूप में स्थायी बनता है । अध्यापक इसी दृष्टि से छात्रों को गृह–कार्य अथवा अभ्यास–कार्य देते हैं । छात्रों द्वारा किये हुए अभ्यास–कार्य का निरीक्षण अध्यापकों द्वारा किया जाता है जिससे छात्रों की त्रुटियों या भूलों में सुधार किया जा सके । अभ्यास–कार्य का रूप विविध, रूचिपूर्ण एवं पूर्व–नियोजित होता है । गृहकार्य पाठ्य–वस्तु के मूल तत्व को बार–बार तथा विभिन्न प्रकार से अभ्यास करने हेतु दिया जाता है । अतः इसमें विविधता आवश्यक है जिससे छात्रों में अभ्यास–कार्य के प्रति रूचि बनी रहे । अभ्यास–कार्य इस प्रकार का हो जिससे छात्रों में विभिन्न प्रकार की कुशलताओं का भी विकास हो सके ।

4. प्रयोग (सहपाठ्य–किया)– प्रत्येक ज्ञान जीवन में व्यवहार में लाने के उद्देश्य से ही अर्जित किया जाता है । अनुभवजन्य ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान होता है, अन्यथा वह केवल पुस्तकीय या शाब्दिक ज्ञान बनकर रह जाता है । इस सिद्धान्त के अनुसार ही इस चतुर्थ पद में प्रत्येक पाठ्य–वस्तु की ऐसी सहायता किया छात्रों द्वारा की जाती है जिसमें उसके द्वारा अर्जित ज्ञान का प्रयोग किया जा सके । यह सहपाठ्य किया विषयों की प्रकृति के अनुरूप अपनायी जाती है । भाषा एवं साहित्य के पाठ्य विषयों में अभिनय, अन्त्याक्षरी एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता, इतिहास में प्राचीन स्थलों का अवलोकन, सिक्कों का संग्रह, सर्वेक्षण, मानचित्र–रेखाचित्रों का अंकन, नागरिक शास्त्र में छात्र–संसद, छात्र–मन्त्रिमण्डल आदि का विद्यालय में संचालन करना, विज्ञान में मॉडल, चार्ट आदि का निर्माण करना, गणित में कक्ष, कीड़ास्थल आदि का क्षेत्रफल ज्ञात करना इत्यादि सहपाठ्य कियाएँ अर्जित ज्ञान को कियात्मक रूप देने हेतु अपनायी जाती हैं । अनुभव से ज्ञान प्राप्त करना या करके सीखना (लर्निग बाइ डूइंग) अर्थात किया–आधार–शिक्षण ही इस चतुर्थ पद में निहित सिद्धान्त है ।

5. प्रसार (स्वाध्याय)– विषय के अध्ययन, बोध, अभ्यास एवं प्रयोग के द्वारा प्राप्त ज्ञान को आत्मसात् कर उस ज्ञान का प्रसार अथवा विस्तार करना इस पद्धति का पंचम पद है ।

ज्ञान के प्रसार के लिए द्विविध प्रयास किये जाते हैं – (1) स्वाध्याय; (2) प्रवचन :

1. **स्वाध्याय** "स्वेन अधीयते इति स्वाध्यायम्" अर्थात अपने द्वारा जो अध्ययन किया जाय, उसे ही स्वाध्याय कहते हैं । इस दृष्टि से इस पंचम पद में ~~पद में~~ छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे नवीन अर्जित ज्ञान के विस्तार हेतु उससे सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन करें । अध्यापक इस सम्बन्ध में छात्रों को सुझाव देते हैं और उन्हें बताते हैं कि उनको सम्बन्धित विषय–सामग्री किस पुस्तक या पत्र–पत्रिका में उपलब्ध हो सकेगी । विद्यालय के पुस्तकालय में इस प्रकार की पुस्तकों एवं पत्र–पत्रकाओं की व्यवस्था करने का प्रयास किया जाता है । स्वाध्याय से छात्रों के अर्जित ज्ञान का विस्तार होता है तथा तुलनात्मक अध्ययन से पाठ्यविषय के सभी पक्ष स्पष्ट होते हैं । इससे छात्रों में ज्ञानार्जन हेतु आवश्यक अनुसन्धान–वृत्ति का विकास भी होता है ।

स्वाध्याय का अर्थ 'स्व' का अध्ययन भी है । इसका भावार्थ अर्जित ज्ञान का उपयोग 'स्व' अर्थात् आत्मा के विकास हेतु करना है । अध्यात्म की दृष्टि से तो वेदों के अथवा धर्मशास्त्रों के अध्ययन एवं उसके अर्थचिन्तन को ही स्वाध्याय कहते हैं । परन्तु यहाँ स्वाध्याय के द्वारा अर्जित ज्ञान का विस्तार, उस ज्ञान को अपने विकास के लिये लागू करना तथा उसका उपयोग अपने राष्ट्र एवं मानव–समाज की समस्याओं के समाधान में और उसके विकास में किस प्रकार किया जा सके, इसका अध्ययन एवं चिन्तन करना है ।

2. **प्रवचन**– उपार्जित ज्ञान को प्रवचन के द्वारा दूसरों को वितरित करने से ज्ञान एवं विद्या में वृद्धि होती है । यह शास्त्रसम्मत् एवं अनुभवजन्य सिद्धान्त है । साथ ही इससे स्वार्थपरता के स्थान पर परार्थपरता के उदात्त भाव का भी विकास होता है जो कि शिक्षा

या ज्ञानार्जन का मूल उद्देश्य है । जो ज्ञान मैंने प्राप्त किया है । उसको मैं दूसरों को प्रदान कर उनको लाभान्वित करूँ, यह वृत्ति विद्यार्थियों में जाग्रत करने का प्रयास किया जाता है ।

3.2.2.5 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का पाठ्यक्रम–

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान ने अपने देशव्यापी शिक्षा संस्थानों के लिए पाठ्यक्रम की एक रूपरेखा प्रस्तावित की है । सम्पूर्ण देश को शिक्षा के माध्यम से एक सूत्र में पिरोने के लिए विद्या भारती ने 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम' का निर्माण किया है । राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्याभारती से सम्बद्ध प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक के सभी विद्यालयों में पाँच विषयों का अध्ययन अनिवार्य रूप से होता है इन्हें आधारभूत विषय कहा जाता है । यह आधार भूत विषय हैं – शारीरिक व्यायाम, योग, संस्कृत, संगीत, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा ।

यह आधारभूत विषय 'विद्या भारती' की 'पंचमुखी शिक्षा' का ही अंग हैं ।
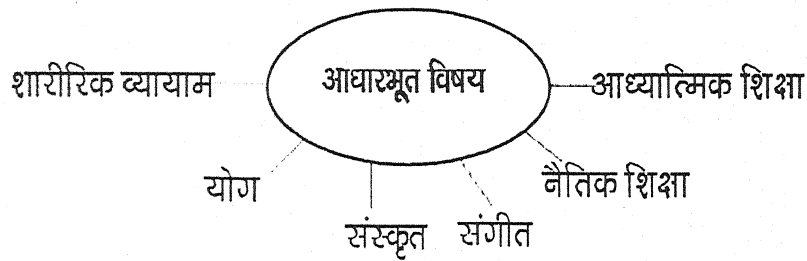
सरस्वती विद्या मन्दिरों में विद्यार्थियों को उपरोक्त आधारभूत विषय, कम्प्यूटर शिक्षा एवं अपनी–अपनी राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन करवाया जाता है । उच्च माध्यमिक (कक्षा दशम्) एवं उच्चतर माध्यमिक (कक्षा द्वादश) स्तर पर राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित बोर्ड परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना इन विद्यालयों के छात्रों के लिए अनिवार्य होता है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के विद्यार्थी आधारभूत विषय, कम्प्यूटर शिक्षा एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्य विषयों का अध्ययन करते हैं । माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली हाईस्कूल (कक्षा दशम्) एवं इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) की बोर्ड परीक्षाओं में इस परिषद से मान्यता प्राप्त इन 'विद्या मन्दिर' विद्यालयों के विद्यार्थी नियमित रूप से भाग लेते हैं ।

3.2.2.6 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आयोजित की जाने वाली पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ–

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में छात्रों को अनिवार्य पाठ्यविषयों के अध्ययन के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की सहपाठ्यगामी क्रियाओं में भाग लेना होता है । इन क्रियाओं को आयोजित करने का उद्देश्य है विद्यार्थियों को विषय ज्ञान के साथ–साथ भावात्मक एवं शारीरिक रूप से भी सबलता प्रदान करना । सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं छात्रों की शारीरिक सबलता, प्राणिक सन्तुलन, मानसिक सद्विचार, बौद्धिक विश्लेषण, आत्मिक उन्नयन एवं सेवा भाव जाग्रति हेतु आधार–भूत विषयों के शिक्षण के साथ–साथ निम्नलिखित पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन अपने यहाँ नियमित रूप से करते हैं ।

1. भाषण
2. वाद–विवाद
3. प्रश्न मंच
4. सदन व्यवस्था
5. विवेकानन्द औषध बैंक
6. विवेकानन्द पुस्तक बैंक
7. चित्रकला
8. एकांकी
9. विज्ञान प्रदर्शनी
10. हस्तलिखित पत्रिका
11. एन. सी. सी.
12. विभिन्न शारीरिक स्पर्धाएँ
13. स्काउटिंग–रेडक्रास
14. विद्वत परिषद
15. निबन्ध लेखन
16. संस्कृति ज्ञान परीक्षा
17. पर्यावरण शिक्षा
18. बाल शिविर
19. बाल मेला
20. श्रमनिष्ठा (शारीरिक श्रम के लिए प्रेरित करना, श्रमिक की वंदना करना आदि)

3.2.2.7 शैक्षिक पंचांग –

इन विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन व्यवस्थित रूप से करने के लिए एवं शैक्षिक क्रियाओं का नियोजन, सुव्यवस्था एवं समानता बनाये रखने के लिए इन विद्यालयों का एक 'शैक्षिक पंचांग' (कैलेण्डर) प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है ।

शैक्षिक पंचांग का प्रकाशन विद्या भारती की प्रत्येक प्रान्तीय समिति अपने–अपने स्तर पर; अपने कार्यक्रमों के अनुसार करती है । इस पंचांग में विद्यालयों के लिए न्यूनतम आवश्यक गतिविधियों का उल्लेख होता है । यह शैक्षिक पंचांग प्रत्येक विद्यालय में एवं प्रत्येक विद्यार्थी को उपलब्ध करवाया जाता है ।

3.2.2.8 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की संकुल पद्धति–

शिक्षा आयोग (1964–66) ने अपने प्रतिवेदन में देश के विद्यालयों की दशा सुधारने एवं उनमें संसाधनों को बढ़ाने के लिए कई सुझाव दिये थे । 'विद्यालय संकुल' इनमें एक अभिनव सुझाव था। विद्यालय संकुल के सम्बन्ध में शिक्षा आयोग का कहना था

कि एक जिले में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के साथ 4–6 प्राथमिक विद्यालय स्थानीय स्तर पर संलग्न होंगे । संलग्न प्राथमिक विद्यालयों का संचालन एवं विकास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के दिशा निर्देश में होगा । यह सभी विद्यालय एक–दूसरे के संसाधनों का आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करेंगे । इस प्रकार 'संकुल' के सभी विद्यालय समन्वित प्रयास करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि का प्रयास करेंगे ।

विद्या भारती ने शिक्षा आयोग की इस अवधारणा की महत्ता को समझते हुए इसे अपने विद्यालयों में अपनाया है । संकुल योजना को प्रभावी ढ़ंग से अखिल भारतीय आधार पर व्यवहार में लाने के लिए मा. लज्जाराम तोमर ने अत्याधिक प्रयास किया । इसी आधार पर सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में संकुल व्यवस्था कार्यरत् है, यद्यपि इसका स्वरूप शिक्षा आयोग द्वारा प्रस्तावित स्वरूप से कुछ भिन्न है । यहाँ वरिष्ठ माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालयों का संकुल न होकर समान विद्यालय स्तरों का संकुल बनाया गया है । अर्थात प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती शिशु मन्दिरों' का संकुल अलग होगा एवं माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले 'सरस्वती विद्या मन्दिर' संस्थानों का संकुल अलग होगा । इस प्रकार एक ही क्षेत्र में दो अलग–अलग संकुल कार्यरत् होंगे । क्षेत्र का निर्धारण विद्यालयों की संख्या के आधार पर किया जाता है । विद्यालयों की संख्या अधिक होने पर एक ही जिले में दो या अधिक संकुल कार्यरत् हो सकते हैं ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाएँ अपने विभिन्न विद्यालयों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संसाधनों एवं मानव शक्तियों का कुशलता पूर्वक दोहन करने के लिए 5–7 विद्या मन्दिरों के एक संकुल का निर्माण एक जनपद में करती हैं । एक संकुल के सभी विद्या मन्दिर यथा आवश्यकता एक–दूसरे के संसाधनों का उपयोग करते हैं । जैसे– प्रयोगशालाएँ, खेल–कूद के समान, खेल का मैदान, पुस्तकालय, वाहन, किसी विषय विशेष में निपुण आचार्य का दिशा–निर्देशन अन्य विद्यालयों के आचार्यों एवं छात्रों को प्रदान करवाना आदि ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं जनपदवार संकुलों का निर्माण कर एक–दूसरे के छात्रों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध करवा रहे हैं । इस प्रकार यह विद्यालय अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित प्रयास कर रहे हैं ।

3.2.3 भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज–एक अवलोकन

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं पर शोधकार्य करते हुए शोधकर्ता का अवलोकन रहा है कि पिछले एक दशक में इन विद्यालयों ने तेजी से विकास किया है । 'विकास' शब्द से यहाँ तात्पर्य है कि इन विद्यालयों ने अपनी खरीदी हुई भूमि पर बड़े–बड़े भवनों का निर्माण किया गया है, छात्रों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है, शिक्षकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, 'परिषद' परीक्षाओं में इन छात्रों की उपलब्धि सराहनीय रही है इसके साथ–साथ सामाजिक कार्यों में भी इन विद्यालयों ने अपना योगदान देकर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाये हैं ।

प्रस्तुत शोधकार्य के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने अनेकों 'विद्या मन्दिरों' का अवलोकन किया है । 'विकास' शब्द के उपरोक्त अर्थ के अन्तर्गत अनेकों विद्या मन्दिरों को रखा जा सकता है । शोधकर्ता ने यह पाया है कि 'भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, बालाजी मार्ग, झाँसी ने अल्प समय में जितना विकास किया है उसका उदाहरण बहुत ही कम देखने को मिलता है । यह विद्यालय 'विद्या मन्दिर' एवं 'समाज' के मध्य मधुर सम्बन्धों का एक अप्रतिम उदाहरण है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के क्रियाकलाप, प्रबन्धन एवं शैक्षिक योगदान की एक झलक प्रस्तुत करने के लिए यहाँ इस विद्यालय का शोधार्थी द्वारा किया गया अवलोकन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

विद्यालय का नाम– भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज ।
यह विद्यालय मात्र बालकों के लिए है ।

विद्यालय की भौगोलिक स्थिति– यह विद्यालय झाँसी नगर के बाहर उत्तर दिशा में झाँसी–ग्वालियर सड़क मार्ग से दाहिने ओर झाँसी–उन्नाव–बालाजी मार्ग पर लगभग दो किमी की दूरी पर बाँये हाथ पर स्थित है ।

विद्यालय का वातावरण – यह विद्यालय नगर के कोलाहल से दूर सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में स्थित है । 12 एकड़ के भू–खण्ड पर निर्मित यह विद्यालय मुख्य सड़क मार्ग पर स्थित है । सामने की ओर झाँसी–कानपुर रेल मार्ग है । यह दोनों मार्ग यातायात की दृष्टि से बहुत शांत है, फलतः इन मार्गों के यातायात से विद्यालय के वातावरण में ध्वनि प्रदूषण 'न' के बराबर उत्पन्न होता है । अतः इस विद्यालय की भौगोलिक स्थिति छात्रों को शांत चित्त से अध्ययन करने को प्रेरित करती है । विद्यालय परिसर में स्थान–स्थान पर वृक्षारोपण एवं बागवानी कर प्राकृतिक वातावरण को हरा–भरा एवं सुरम्य बनाने का प्रयास किया गया है ।

विद्यालय की स्थापना– विद्यालय के वर्तमान भवन का शिलान्यास सन् 1994 ईसवी में माननीय ब्रह्मदेव जी शर्मा (भाई जी) के द्वारा किया गया था । विद्यालय भवन का लोकार्पण 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' को माननीय अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री के कर–कमलों द्वारा दिनांक 17 जुलाई 1997 को किया गया था ।

इस विद्यालय की भूमि एवं भवन निर्माण में भानी देवी गोयल चैरिटेबिल ट्रस्ट का आर्थिक सहयोग रहा है । ट्रस्ट के आर्थिक सहयोग इस सरस्वती विद्या मन्दिर का नाम भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर रखा गया है ।

इस विद्यालय का प्रारम्भ बीसवीं शताब्दी के नौवे दशक के वर्ष 1987 में सरस्वती विद्या मन्दिर, दतिया द्वार, झाँसी के परिसर में स्वयं के भवन में हुआ था । उस समय इस विद्यालय का स्तर जूनियर हाईस्कूल का था । लगभग 40 विद्यार्थियों एवं कक्षा 6 एवं 7 से प्रारम्भ हुआ यह विद्यालय आज कक्षा षष्ठ से कक्षा द्वादश तक तीन–तीन वर्गों में 1100 छात्रों के साथ चल रहा है ।

विद्यालय का प्रबन्धन – यह गैर सरकारी विद्यालय 'विद्या भारती' से सम्बद्ध है । इसकी सम्बद्धता 'संचालित' स्तर की है । इसका संचालन 'भारतीय शिक्षा समिति, उत्तर प्रदेश पूर्व' द्वारा किया जा रहा है । विद्यालय का प्रबन्धन कुशलतापूर्वक करने के लिए स्थानीय स्तर पर एक प्रबन्धकार्यकारिणी समिति गठित की गई है । इस समिति में भानी देवी गोयल चैरिटेबिल ट्रस्ट, भारतीय शिक्षा समिति, उत्तर प्रदेश पूर्व एवं बाल कल्याण समिति, झाँसी के प्रतिनिधि होते हैं । इस समिति में प्रतिनिधियों का कार्यकाल एक निश्चित समय का होता है ।

विद्यालय की वित्तीय स्थिति – यह विद्यालय 'पूर्णतः स्ववित्त पोषित' श्रेणी का है । यह विद्यालय प्रदेश अथवा केन्द्र सरकार से किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं कर रहा है । इस विद्यालय का आर्थिक व्यय पूर्णतः छात्रों द्वारा प्राप्त शुल्क से ही पूरित होता है । समाज से कभी–कभी इस विद्यालय को दान आदि भी प्राप्त हो जाता है ।

विद्यालय की मान्यता– यह विद्यालय 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' इलाहाबाद द्वारा इण्टरमीडिएट' की मान्यता 'विज्ञान वर्ग' में प्राप्त है ।

इण्टरमीडिएट का पहला सत्र इस विद्यालय से वर्ष 2002 में उत्तीर्ण हुआ था ।

'हाईस्कूल' की मान्यता इस विद्यालय को इसी 'परिषद' से सत्र 1998 में प्राप्त हो चुकी थी । वर्ष 1999 में इस विद्यालय के हाईस्कूल का पहला बैच उत्तीर्ण हुआ था ।

विद्यालय के प्राचार्य – आकर्षक व्यक्तित्व के धनी श्रीमान् सुशील कुमार जी इस विद्यालय के प्राचार्य हैं । यह पद इन्होंने वर्ष 1995 में ग्रहण किया था । इसके पहले यह

सरस्वती विद्या मन्दिर, उरई के प्रधानाचार्य थे । इनके कुशल दिशा निर्देशन एवं कड़ी मेहनत के परिणामस्वरूप आज यह विद्यालय सफलता के कदम चूम रहा है ।

विद्यालय के शिक्षक – वर्तमान सत्र 2003–2004 में इस विद्यालय में 30 आचार्य छात्रों को शिक्षित करने का कार्य कर रहे है । अधिकाँश आचार्य उच्च शिक्षा एवं बी.एड. की उपाधि प्राप्त हैं । विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को उच्च स्तर का बनाये रखने में इन सभी शिक्षकों का योगदान सराहनीय है ।

विद्यालय में प्रवेश – इस विद्यालय में झाँसी नगर के अतिरिक्त आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक भी अध्ययन हेतु आते हैं । छात्रों का प्रवेश एक लिखित परीक्षा के माध्यम से होता है । इस प्रवेश परीक्षा की तिथि एवं पाठ्य विवरण प्रवेश हेतु इच्छुक छात्रों को एक विवरणिका के माध्यम से उपलब्ध करवा दिया जाता है । प्रवेश परीक्षा में प्राप्त अंको की 'मेरिट सूची' के आधार पर ही छात्रों को प्रवेश दिया जाता है ।

विद्यालय के विद्यार्थी – सभी विद्यार्थियों को विद्यालय गणवेश में ही विद्यालय में उपस्थित होना होता है । विद्यालय वेश में 'सफेद शर्ट', 'खाकी पेंट' एवं काले रंग के जूते निर्धारित हैं । सप्ताह में एक निर्धारित दिन, गुरूवार को, सफेद रंग का 'कुर्ता–पाजामा' पहन कर आना होता है । शीतकाल में 'नीले रंग' का स्वेटर पहनना होता है । वंदना के समय जब समस्त विद्यार्थी गणवेश में उपस्थित होकर प्रार्थना करते हैं उस समय दृश्य अत्यंत ही मनोहर लगता है ।

वर्तमान सत्र में एक हजार एक सौ से अधिक बालक इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । इतनी बड़ी मात्रा में बालकों के उपस्थित होते हुए भी, शोधकर्ता को कभी–कभी कोई अप्रिय दृश्य दृष्टिगोचर नहीं हुआ । यहाँ 'सेना' को तरह कठोर अनुशासन नही है । छात्रों का स्वानुशासन में रहकर 'बाल सुलभ चंचलताऐं' करना, देखने में अच्छा लगता है ।

विद्यालय भवन— विद्यालय भवन दो तलों वली एक विशाल इमारत है। यह भवन तीन ब्लाकों में विभाजित है । यह तीनों ब्लॉक आपस में जुड़े हुए हैं। तीनों ब्लाकों का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है । वर्तमान में इस भवन में कुल मिलाकर 40 विशाल 'अध्ययन कक्ष', विज्ञान उपकरणों से सुसज्जित 'विज्ञान प्रयोगशालायें' एवं दो सुसज्जित 'कम्प्यूटर कक्ष' हैं । प्रत्येक ब्लॉक में अलग—अलग बरामदे हैं । इस भवन के वातावरण को हरा—भरा एवं स्वास्थ्यप्रद रखने के लिये अलग डिजाइनों एवं आकारों के सैकड़ों गमले एवं कई फुलबारियां हैं । इन्हें देखकर मन प्रसन्न हो जाता है ।

कक्षा कक्ष — यह दो प्रवेश द्वारों वाले विशाल एवं हवादार हैं । प्रकाश की व्यवस्था हेतु सभी कक्षों में बड़ी—बड़ी खिड़कियां हैं । इन कक्षोंमें लगभग 60 छात्रों के अध्ययन हेतु बैठने के लिये पर्याप्त स्थान है। कक्षों का निर्माण इस तरह से करवाया गया है कि एक कक्षा का शिक्षण दूसरी कक्षा के शिक्षण को प्रभावित एवं अव्यवस्थित नही करता है ।

प्रयोगशालाएँ — विज्ञान के तीनों विषयों की प्रयोगशालाएँ सभी आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित हैं। प्रयोगशालाओं का आकार मानको के अनुरूप है।

कम्प्यूटर कक्ष — कम्प्यूटर शिक्षण हेतु दो विशाल कक्षों की व्यवस्था की गई है। इन दोनो कक्षों में 20 ~~से अधिक~~ से भी अधिक कम्प्यूटर 'कम्प्यूटर टेबिल' पर रखे हुए हैं। छात्रों के बैठने के लिए पर्याप्त मात्रा में स्टूलों का प्रबन्ध है। शिक्षण कार्य हेतु श्यामपट्ट की भी व्यवस्था है। कम्प्यूटर पर कार्य करते समय 'बिजली' की अव्यवस्था से छात्रों को असुविधा न हो इसके लिये प्रत्येक कम्प्यूटर के साथ यू.पी.एस. तो है ही इन्वरटर एवं जनरेटर की भी व्यवस्था की गयी है। इंटरनेट की भी सुविधा उपलब्ध है ।

पुस्तकालय — विद्यालय में पुस्तकालय की भी व्यवस्था है। जिसमें हजारों की संख्या में पुस्तकें अलमारियों में व्यवस्थित की गयी हैं । छात्र इसका समुचित उपयोग करते हैं।

पुस्तकालय के संबंध में शोधकर्ता का सुझाव है कि इसकी व्यवस्था सी.बी.एस.ई.. के मानको के अनुरूप की जानी चाहिए । एक पूर्णकालिक पुस्तकालयधीक्षक की नियुक्ति कर समय–सारणी में पुस्तकालय बेला को सुनिश्चित किया जाना चाहिए ।

क्रीड़ा – छात्रों के खेलने के लिए विशाल समतल मैदान चारदीवारी के घिरा हुआ है। वॉलीबाल, फुटबाल, क्रिकेट एवं ऐथलेटिक्स के लिए यह मैदान पर्याप्त है। क्रीड़ा से संबंधित उपकरणों को सुरक्षित रखने के लिए क्रीड़ा कक्ष की भी व्यवस्था की गई है ।

शौचालय – छात्रों की प्रसाधन सुविधा हेतु प्रत्येक ब्लॉक में एवं प्रत्येक तल पर पक्के एवं दरवाजे युक्त साफ सुथरे शौचालयों की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था की गयी है।

विद्यालय समय–सारणी– विद्यालय की समय–सारणी ऋतु व्यवस्था पर आधारित है। ग्रीष्मकाल में विद्यालय समय प्रातः 7.30 से अपरान्ह 1.30 बजे तक रहता है। शीतकाल में प्रातः 9.00 बजे से अपरान्ह 3.30 बजे तक रहता है । विद्यालय के समस्त कार्यक्रम समय–सारणी के अनुरूप व्यवस्थित हैं ।

विद्यालय का आरम्भ वंदना से होता है। वंदना के नियमित कार्यक्रमों में प्रातः स्मरण, गीता श्लोक, एकता मंत्र, सरस्वती वंदना, प्रेरक प्रसंग, ब्रह्मनाद, ध्यान, गायत्री मंत्र एवं शान्ति पाठ होता है। इनके साथ–साथ दैनिक आधार पर शिव महिमा स्त्रोत, हनुमान चालीसा, एकात्मता स्त्रोत, श्रीराम स्तुति, मानस पाठ आदि में से किसी एक का वाचन होता है । इसके पश्चात् कक्षा शिक्षण आरम्भ होता है। कक्षा शिक्षण समाप्त होने के पश्चात् सामूहिक गीत एवं वन्देमातरम् का गायन होता है। तत्पश्चात् विद्यालय आवकाश होता है ।

पाठ्यक्रम– उत्तर प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित विषयों एवं पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन इस विद्यालय में छात्रों द्वारा किया जा रहा है । इन निर्धारित विषयों के साथ–साथ 'विद्या भारती' द्वारा प्रस्तावित 'पंचमुखी शिक्षा पद्धति' का उपयोग किया जा रहा है। पंचमुखी

शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, व्यवसायिक, संगीत एवं नैतिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। संस्कृत एवं अंग्रेजी विषयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

शारीरिक विकास – बालकों के शारीरिक विकास के लिए उन्हें योग, व्यायाम, सूर्यनमस्कार, दण्ड, योग–चाप आदि का अभ्यास नियमित रूप से करवाया जा रहा है । इसके साथ–साथ बालको को 'विद्या भारती' एवं 'शिक्षा विभाग' द्वारा आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा हेतु अवसर प्रदान किये जा रहे हैं । इस विद्यालय के छात्र इन प्रतियोगिताओं में कई बार स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त कर चुके हैं ।

विद्या भारती वर्ष 2005 की राष्ट्रीय स्तर की खेलकूद प्रतियोगितायें इस विद्यालय में प्रस्तावित हैं ।

पाठ्य–सहगामी क्रियायें– छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु इस विद्यालय में शासन एवं विद्या भारती द्वारा प्रस्तावित क्रियाओं के साथ अन्य अनेक क्रियाओं का आयोजन किया जा रहा है । इनमें छात्र संसद, देश–दर्शन, छात्र शिविर एवं सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे आयोजन सम्मिलित हैं । सांस्कृतिक गतिविधियों में चित्रकला, निबन्ध लेखन, कहानी लेखन, कविता लेखन, नाट्य मंचन, वाद–विवाद, समूहगान, प्रश्नमंच, संस्कृति ज्ञान परीक्षा आदि आयोजित किये जा रहे हैं ।

शोधकर्ता ने यह अवलोकन किया है, कि इस विद्यालय के छात्र इन सभी गतिविधियों में उत्साह एवं रूचि के साथ प्रतिभागी बनते हैं ।

विद्यालय में स्काउटिंग का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है । 50 घोष वादक छात्रों का प्रशिक्षित घोष दल है । यह घोष दल विभिन्न अवसरों पर अपने घोष वादन कौशल का प्रदर्शन करता है ।

छात्रवृत्तियाँ– यह विद्यालय छात्रों को आर्थिक सहायता छात्रवृत्तियों एवं शुल्क मुक्ति के रूप में प्रदान करता है । आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को विभिन्न रूपों में शुल्क में छूट दी जाती है ।

यह विद्यालय बोर्ड परीक्षाओं में विद्यालय में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को क्रमशः 2100, 1500 एवं 1100 रूपयों की छात्रवृत्ति प्रदान कर रहा है । सम्पूर्ण विद्यालय में गृह वार्षिक परीक्षा में भी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को क्रमशः 1200, 900 एवं 600 रूपयों की छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जा रही हैं ।

यह विद्यालय अपने छात्रों को सामान्य छात्रवृत्ति परीक्षा, एकीकृत छात्रवृत्ति परीक्षा, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा तथा अनेकों संस्थाओं द्वारा आयोजित परीक्षाओं आदि की तैयारी हेतु सहयोग एवं उचित निर्देशन प्रदान कर रहा है ।

खेलकूद प्रतियोगिताओं में अखिल भारतीय स्तर पर स्वर्ण पदक विजेता छात्रों को 1000/– रूपये की धनराशि प्रदान कर यह विद्यालय अपने छात्रों को प्रोत्साहित करता है ।

अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों के छात्रों को सरकार की ओर से कभी–कभी छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं ।

छात्र उपलब्धियाँ – इस विद्यालय के छात्रों द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न प्रकार की शैक्षिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया जाता है । इन प्रतियोगिताओं में इस विद्यालय के छात्रों ने अनेकों पुरस्कार प्राप्त किये हैं । 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' की प्रदेश स्तरीय 'मेधावी छात्र सूची' में भी इस विद्यालय के छात्रों ने अपना स्थान बनाया है । विभिन्न स्तरों के विज्ञान मेलों में, भारतीय शिक्षा समिति, विद्या भारती एवं अन्य अनेकों संस्थाओं द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में इन छात्रों ने अनेकों पुरस्कार प्राप्त किये हैं ।

इस विद्यालय का छात्र आशीष तिवारी लगातार दो वर्ष 'उ. प्र. बाल वैज्ञानिक' का पुरस्कार उ. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा प्राप्त कर चुका है ।

छात्रावास – यह विद्यालय अपने यहाँ अध्ययनरत् छात्रों को सीमित संख्या में छात्रावास की सुविधा प्रदान कर रहा है । इस छात्रावास का नाम 'भरद्वाज सरस्वती छात्रावास' है । इस छात्रावास में छात्रों के निवास के लिए 6 कक्ष, 1 भोजन कक्ष, 1 भण्डार कक्ष 1 पाकशाला, 1 स्वागत कक्ष एवं 1 कार्यालय कक्ष है । एक निश्चित शुल्क प्रदान करने के पश्चात् छात्रों को भोजन, स्वल्पाहार, दूध, फल, घी, वस्त्रों की धुलाई एवं चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है ।

वाहन सुविधा – नगर के सुदूर स्थलों से छात्रों को लाने ले जाने के लिए विद्यालय ने दो बसों की सुविधा दी हुई है । अन्य छात्र अपने वाहनों से विद्यालय आना पसंद करते हैं ।

विद्यालय का शैक्षिक वातावरण – शोधकर्ता ने विभिन्न समयों पर अपने द्वारा किये गये इस विद्यालय के निरीक्षण के समय यहाँ की विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का गहराई से अध्ययन किया है । अपने अध्ययन में शोधार्थी ने यह पाया है कि निश्चित रूप से इस विद्यालय का शैक्षिक वातावरण आज के अन्य विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण से कई सन्दर्भों में उत्तम है । छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण हैं । छात्र अपने शिक्षकों का हृदय से सम्मान करते देखे जा सकते हैं । शिक्षक अपने छात्रों के हितों का पूरा ध्यान रखते हैं । शिक्षक छात्रों को पिता तुल्य दिशा–निर्देश देते हैं । प्रधानाचार्य को स्वयं शिक्षकों और छात्रों के समझ आदर्श का उदाहरण प्रस्तुत करते देखा जा सकता है । छात्रों को विविध शैक्षिक गतिविधियों में तल्लीन देखा जा सकता है । इस विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों का विद्यालयी आचरण प्रशंसनीय है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के अध्ययन से शोधकर्ता की यह अवधारणा पुष्ट होती है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें छात्रों के शैक्षिक उत्थान के लिए प्रयासरत् हैं ।

****

BHANI DEVI GOYAL SARASWATI VIDYA MANDIR INTER COLLEGE, BALAJI MARG, JHANSI

CLASS WISE TIME - TABLE SESSION : 2003 - 2004

Period	7.30 -	1	2	3	4	10.20 -	5	6	7	8	
Timing	7.55	7.55-8.35	8.35-9.10	9.10-9.45	9.45-10.20	10.45	10.45-11.25	11.25-12.00	12.00-12.35	12.35-1.10	1:10
6A		MATHS	SANSKRIT	SCIENCE	HINDI		MORAL (123) PHY(456)	SOCIAL SCIENCE	ESP(1) ART(23) COM(456)	ENGLISH	
6B		MATHS	SCIENCE	ENGLISH	ART(123) ESP(4) COM(56)		PHY(123) MORAL (456)	HINDI	SOCIAL SCIENCE	SANSKRIT	
6C		HINDI	ENGLISH	MATHS	SCIENCE		SOCIAL SCIENCE	SANSKRIT	COM(123) ART(456)	ESP(1) PHY(23) MORAL 456	V
7A		HINDI	SOCIAL SCIENCE	MORAL 123 ESP(4) PHY(56)	ENGLISH		MATHS	SANSKRIT	SCIENCE	ART(123) COM(456)	
7B	V	ENGLISH	SOCIAL SCIENCE	MATHS	COM(12) ESP(3) ART(456)		SANSKRIT	SCIENCE	HINDI	MORAL (123) PHY(456)	A
7C		SANSKRIT	SCIENCE	ART(123) COM(456)	HINDI		MATHS	ENGLISH	SOCIAL SCIENCE	PHY(13) ESP(2) MORAL 456	N
8A	A	SCIENCE	MATHS	MORAL 123 PHY(4) ESP(56)	SANSKRIT	R	SOCIAL SCIENCE	HINDI	ENGLISH	COM(123) ART(456)	
8B		SCIENCE	SOCIAL SCIENCE	SANSKRIT(12345) ESP(6)	MATHS		ENGLISH	COM(123) ART(456)	MORAL (123) PHY(456)	HINDI	D
8C	N	SCIENCE	MATHS	SOCIAL SCIENCE	SANSKRIT	E	ENGLISH	ART(123) COM(456)	HINDI	MORAL (12) PHY(456) ESP(3)	E
9A		ENGLISH	HINDI	SCIENCE	SCIENCE (123),(456)M ATHS	C	MATHS	PHY(123) ESP(456)	SANSKRIT (123),(456) COM	SOCIAL SCIENCE	
9B	D	MATHS	MATHS (123),(456)S CIENCE	ESP(123) PHY(456)	SOCIAL SCICNCE		ENGLISH	HINDI	COMP (123),(456) SANSKRIT	SCIENCE	M
9C		SCIENCE	SCIENCE (123),(456) MATHS	ENGLISH	HINDI	E	SANSKRIT (123),(456) COM	SOCIAL SCIENCE	MATHS	PHY(123) ESP(456)	A
10A	A	SOCIAL SCIENCE	HINDI	SANSKRIT	MATHS (123),(456) SCIENCE	S	SCIENCE	ENGLISH	ESP(23) PHY(1456)	MATHS	
10B		PHY(123) ESP(456)	ENGLISH	COMPUTER	HINDI		MATHS	MATHS (123),(456) SCIENCE	SCIENCE	SOCIAL SCIENCE	T
10C	N	MATHS	MATHS (123),(456)S CIENCE	SCIENCE	ENGLISH	S	HINDI	SOCIAL SCIENCE	PHY(123) ESP(456)	SANSKRIT(123),(456) COM	R
11A		MATHS	MATHS	HINDI	ENGLISH		CHEMISTRY	PHYSICS	PRA(12) PHYSICS	PRA(12) CHEMISTRY	
11B	A	ENGLISH	HINDI	MATHS	MATHS		PHYSICS	CHEMISTRY	PRA(34) PHYSICS	PRA(34) CHEMISTRY	A
11C		HINDI	ENGLISH	PHYSICS	CHEMISTRY		BIOLOGY	BIOLOGY (123),(456) PHYSICS	PRA(56) CHEMISTRY	PRA(56)	
12A		CHEMISTRY	PHYSICS	PRA(56)	PRA(56)		MATHS	MATHS	HINDI	ENGLISH	M
12B		PHYSICS	CHEMISTRY	MATHS	MATHS		PRACTICAL	PRACTICAL	ENGLISH	HINDI	
12C		PRACTICAL	PRACTICAL	CHEMISTRY	PHYSICS		ENGLISH	HINDI	BIOLOGY (123),(456) PHYSICS	BIOLOGY	

COM = COMPUTER , PHY = PHYSICAL & YOGA , ART = ARTS , PRA = PRACTICAL , ESP = ENGLISH SPEAKING PRACTICE SESSION

चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय

अनुसन्धान विधि

4.0 भूमिका— जिज्ञासा मानव का मूल स्वभाव है । यह मानव के आवश्यक गुणों में से एक गुण है । इस गुण ने ही मानव को क्रियाशील बनाया हुआ है । यह मानव को चिन्तन करने के लिए बाध्य करता है । चिन्तन प्रक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न जिज्ञासा को शांत करने के लिए मानव निरन्तर प्रयास करता है । वह उन कारणों को ढूँढ़ने का प्रयत्न करता है जिन्होनें उसके अन्दर घटना विशेष के प्रति कौतुहल पैदा किया । यथा—घटना के घटित होने के क्या कारण हैं ? घटना क्यों घटित हुई ? कैसे सम्पन्न हुई ? इत्यादि । मानव के द्वारा इन ढ़ेर सारे प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयास किये जाते हैं ।

किसी कार्य—कारण को जानने के लिए एक पूरी प्रक्रिया का पालन करना होता है । प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों का क्रमबद्ध रूप से पालन करने पर हमें अपनी जिज्ञासा शांत करने में कम समय लगता है । साथ ही साथ एक ऐसा स्पष्टीकरण प्राप्त होता है जिसके द्वारा अन्य व्यक्ति की भी जिज्ञासा शांत की जा सकती है । अतः ऐसी प्रक्रिया जिसे अपनाने पर एक ऐसा निश्चित तथ्य या सूचना प्राप्त होती है जो कि घटना के घटित होने के कारणों का स्पष्ट रूप से वर्णन करती है 'शोध' या 'अनुसन्धान' कहलाती है । साधारणतः अनुसन्धान के द्वारा उन मौलिक प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया जाता है जिनका उत्तर अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है ।

प्रत्येक व्यक्ति स्वभाव से एक शोधकर्ता होता है । वह जीवन भर नित्य कुछ नया जानने का प्रयास करता है । उसका यह प्रयास भले ही अपने आस—पड़ोस में रहने वाले व्यक्तियों का स्वभाव एवं व्यवहार जानने तक सीमित रहे या सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों को जानने तक । अनुसन्धानकर्ता कहते हैं कि

अनुसन्धान का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मानव का इतिहास । अज्ञात विषयों तथा घटनाओं का अन्वेषण करना वास्तव में मानव स्वभाव का अभिन्न अंग रहा है । अनुसन्धान के विषय में विस्तार से अध्ययन करने से पहले यह आवश्यक है कि अनुसन्धान का अर्थ समझ लिया जाये ।

4.1 अनुसन्धान का अर्थ – उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि अनुसन्धान अर्थात शोध कार्य द्वारा उन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया जाता है जिनका उत्तर साहित्य में उपलब्ध नहीं है या मानव की जानकारी में नही है । इसके द्वारा उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न किया जाता है जिनका समाधान उपलब्ध नहीं है और न ही मनुष्य की जानकारी में है ।

'शोध', 'गवेषणा' एवं 'अनुसन्धान' जैसे शब्दों को समानार्थी के रूप में प्रयोग किया जाता है । वास्तव में इन शब्दों के अर्थ में पर्याप्त समानता होते हुए भी अन्तर है फिर भी सामान्य रूप में अनुसन्धान एवं शोध को एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है ।

'शोध' शब्द से एक प्रकार की 'शुद्धि' 'संस्कार' या 'संशोधन' का भाव प्राप्त होता है । शोध शब्द का प्रयोग प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण, सारणीयन और कुछ–कुछ स्पष्टीकरण के लिए तो किया जा सकता है परन्तु इससे व्यापक निष्कर्षों तक पहुँचने का आभास नहीं होता है ।

'अन्वेषण', या 'गवेषणा' शब्द से 'शोध' जैसा व्यापक अर्थ प्रतीत नहीं होता है ।

'अनुसन्धान' शब्द का प्रयोग किसी वस्तु की खोज के लिए नहीं किया जाता है, बल्कि यह उस क्रिया या प्रक्रिया का द्योतक है जिसमें अनेक प्रकार के तत्वों

का एकत्रीकरण और अनेक आधारों पर व्यापक निष्कर्ष निकालना सम्मिलित है। वास्तव में अनुसन्धान एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है । 'अनुसन्धान' में नवीन तथ्यों की खोज की जाती है तथा नवीन सत्यों का प्रतिपादन किया जाता है ।

अनुसन्धान को अंग्रेजी भाषा में Research कहा जाता है जो दो शब्दों से मिलकर बना है –

Research = Re+Search

रिसर्च = रि + सर्च

'रि' का अंग्रेजी में अर्थ होता है 'बार–बार' तथा 'सर्च' का अर्थ है 'खोजना' । अर्थात अनुसन्धान का अर्थ हुआ 'खोज की पुनरावृत्ति' । अतः यह कहा जा सकता है कि अनुसन्धान एक सुसीमित क्षेत्र में किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण है ।

4.1.1 शोध के उद्देश्य – शोध के निम्नवर्णित उद्देश्य होते हैं –

1. भूत तथा वर्तमान की घटनाओं की स्थिति ज्ञात करना ।
2. चुनी गई घटनाओं की प्रकृति, गठन तथा प्रक्रिया की विशेषताओं को ज्ञात करना।
3. घटनाओं के विकास का इतिहास, होने वाले परिवर्तन तथा वर्तमान स्थिति को ज्ञात करना ।
4. चरों का सह–सम्बन्ध ज्ञात करना ।

4.1.2 शोध के सोपान – अनुसन्धान या शोध एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसे कुछ विशिष्ठ पदों या सोपानों में क्रमानुसार किया जाता है । समस्त शोध प्रक्रिया कई क्रियाओं का मिश्रण होती है तथा यह सभी क्रियाऐं एक दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं । अनुसन्धान या शोध को निम्न पदों में विभक्त किया जा सकता है –

1. शोध समस्या का स्वरूप ।
2. शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्यों का वर्णन ।
3. शोध की परिकल्पना का वर्णन ।
4. प्रदत्त संकलन की विधि का वर्णन ।
5. शोध परिणामों को प्रस्तुत करना ।
6. परिणामों की सार्थकता एवं उचित निष्कर्ष निकालना ।

डेविड जे. फ्रॉक्स ने शोध की योजना के निम्नलिखित 17 पद दिये हैं जो अधिक विकसित एवं तर्क संगत हैं, इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

4.1.3 (अ) अनुसन्धान की योजना –

1. प्रारम्भिक विचार अथवा आवश्यकता एवं समस्या का क्षेत्र ।
2. साहित्य का प्रारम्भिक सर्वेक्षण ।
3. विशिष्ठ शोध की समस्या का निश्चय ।
4. अनुसन्धान कार्य की सफलता का पूर्वानुमान ।
5. सम्बन्धित साहित्य का द्वितीय सर्वेक्षण ।
6. अनुसन्धान की प्रक्रिया का चयन ।
7. अनुसन्धान की परिकल्पना का निर्माण ।
8. आँकड़े प्राप्त करने की विधियों का निश्चय ।
9. आँकड़े प्राप्त करने के लिए उपकरणों का चुनाव अथवा निर्माण ।
10. आँकाड़ों के विश्लेषण की योजना तैयार करना ।
11. आँकड़ों को एकत्रित करने की योजना बनाना ।
12. जनसंख्या अथवा प्रतिदर्श का निश्चय करना ।
13. एक छोटे समूह का पूर्व अध्ययन एवं कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करना ।

4.1.4 (ब) शोध योजना का कियान्वयन–

14. आँकड़ों का संग्रह करना ।

15. आंकड़ों का विश्लेषण करना ।

16. अनुसन्धान का प्रतिवेदन तैयार करना ।

4.1.5 (स) प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग–

17. प्राप्त निष्कर्षों का प्रचार तथा कियान्वित करने पर बल देना ।

प्राचीन समय में अनुसन्धान का स्तर साधरण ही रहा । जैसे–जैसे मानव का वैज्ञानिक ज्ञान बढ़ा एवं विज्ञान का विकास हुआ अनुसन्धान को भी वैज्ञानिक स्वरूप देने के प्रयास हुए । इन प्रयासों के फलस्वरूप अनुसन्धान के विभिन्न रूप विकसित हुये एवं इसे विभिन्न प्रकारों से परिभाषित किया गया । आज अनुसन्धान की अनेकों परिभाषायें उपलब्ध हैं । विभिन्न शिक्षाविद्ों की कुछ परिभाषाऐं निम्न प्रकार हैं –

सी.सी. कोफोर्ड के शब्दों में – "अनुसन्धान चिन्तन की एक ऐसी कमबद्ध तथा विशुद्ध प्रविधि है, जिसमें विशिष्ट यन्त्रों, उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है , ताकि एक समस्या का अधिक समुचित समाधान उपलब्ध हो सके ।"

पी.एम. कुक के शब्दों में – "अनुसन्धान एक ऐसा ईमानदार, व्यापक तथा बौद्धिक अन्वेषण है, जिसमें एक दी गई समस्या से सम्बन्धित तथ्यों तथा उनमें अर्थों अथवा सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है अनुसन्धान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रामाणिक तथा पुष्टियोग्य होते हैं जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है ।"

पी.वी.यंग के शब्दों में – "अनुसन्धान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज अथवा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है तथा उनके उन अनुक्रमों, पास्परिक सम्बन्धों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करते हैं जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं ।"

रेडमेन एवं मोरी के अनुसार – "नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित प्रयास ही अनुसन्धान है ।"

एच.के.कपिल[1] के शब्दों में– "अनुसन्धान एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियन्त्रित अध्ययन है जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित चरों व घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथ वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों, नियमों तथा सिद्धान्तों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है ।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 'अनुसन्धान' एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा समस्याओं का समाधान करके ज्ञान में वृद्धि की जाती है । वस्तुतः ज्ञान–वृद्धि की प्रक्रिया ही अनुसन्धान है । सभी प्रकार के अनुसन्धान 'समस्या केन्द्रित' होते हैं । शिक्षण तथा व्यवहार के विकास की समस्याओं का समाधान शैक्षिक–अनुसन्धानों द्वारा किया जाता है ।

4.2 अनुसन्धान की सामान्य विशेषतायें –

अनुसन्धान की परिभाषाओं के आधार पर इसकी अधोलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है –

1. अनुसन्धान की प्रक्रिया से नवीन ज्ञान की वृद्धि एवं विकास होता है।

1- कपिल, एच.के., 1997, अनुसन्धान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक , आगरा ।

2. शोधकार्य में सामान्य नियमों तथा सिद्वान्तों के प्रतिपादन पर बल दिया जाता है।
3. शोधकार्य की प्रक्रिया वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा सुनियोजित होती है ।
4. शोधकार्य में विश्वसनीय तथा वैध प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है ।
5. यह तार्किक तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है ।
6. अनुसन्धान की प्रक्रिया में प्रदत्तों के आधार पर परिकल्पनाओं की पुष्टि की जाती है ।
7. इसमें व्यक्तिगत पक्षों, भावनाओं, विचारों तथा रूचियों को महत्व नहीं दिया जाता है ।
8. गुणात्मक तथा परिमाणात्मक प्रदत्तों की व्यवस्था कर उनका विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले जाते हैं ।
9. शोधकार्य में धैर्य रखना होता है, इसमें शीघ्रता नहीं की जा सकती है।
10. प्रत्येक शोधकार्य की अपनी विधियाँ तथा प्रविधियाँ होती है जो शोध के उद्‌देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं ।
11. प्रत्येक शोधकार्य से निष्कर्ष निकाले जाते हैं और सामान्यीकरण का प्रतिपादन किया जाता है ।
12. शोधकार्य चिन्तन की एक प्रविधि है ।

पी.एम. कुक ने अनुसन्धान की अधोलिखित विशेषताओं की व्याख्या की है –

1. अनुसन्धान एक ईमानदारी से की गई प्रक्रिया है ।
2. इसमें गहन अध्ययन किया जाता है ।
3. इसमें विवेक तथा समझदारी से काम लिया जाता है ।
4. समस्या के सन्दर्भ में तथ्यों की खोज की जाती है ।
5. अनुसन्धान के निष्कर्ष प्रामाणिक होते हैं ।
6. अनुसन्धान के निष्कर्षों की पुष्टि प्रमाणों द्वारा की जाती है ।

4.3 वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं शैक्षिक अनुसन्धान –

मानव ने अनुसन्धान प्रविधि का प्रयोग प्रारम्भ में संसार में घटित होने वाली भौतिकीय घटनाओं के अध्ययन में किया था । भौतिक अर्थात प्राकृतिक घटनाओं के अध्ययन में व्यक्तिगत् पक्षों, भावनाओं, विचारों आदि का महत्व नहीं होता है । इस प्रकार के अध्ययनों में वस्तुनिष्ठता एवं तार्किकता होती है । इस प्रकार के शोधकार्य को 'वैज्ञानिक शोध' या 'वैज्ञानिक अनुसन्धान' कहते हैं । वैज्ञानिक शोध दृश्य अनुभवों पर आधारित होते हैं, इनका आधार आनुभविक प्रमाण होता है । वैज्ञानिक शोधों में शोधकर्ता उन तथ्यों एवं नियमों पर विचार नहीं करता है जिनका वस्तुनिष्ठ रूप से प्रेक्षण नहीं किया जा सकता है ।

यह सर्व विदित है कि भौतिक विषयों का स्वरूप अधिकतर मूर्त, मात्रात्मक तथा निश्चित होता है । अतः भौतिक विषयों के शोध में 'वैज्ञानिक शोध पद्धति' अर्थात 'वैज्ञानिक विधि' का प्रयोग हाता है । सामाजिक विज्ञानों में 'वैज्ञानिक विधि के स्तर' के शोध कार्य अभी भी विकासशील अवस्था में ही हैं । इसका कारण यह है कि सामाजिक विज्ञानों की विषय–सामग्री का स्वरूप बहुत जटिल व चंचल है । इसमें कठोर प्रायोगिक पद्धति के द्वारा अध्ययन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । इन कठिनाइयों में कुछ का वर्णन कपिल[1] ने इस प्रकार किया है –

1. सामाजिक घटनाओं के भावात्मक स्वरूप से कठिनाई होती है क्योंकि सामाजिक घटनाओं व सम्बन्धों का स्वरूप सदैव अमूर्त, भावात्मक तथा गुणात्मक होता है ।
2. भावात्मक घटनाओं की कृत्रिम रूप से रचना में कठिनाई होती है ।
3. इन घटनाओं की रचना प्रयोगशाला में नहीं की जा सकती है।
4. सामाजिक घटनाओं में अनुरूपता का अभाव होता है अतः इनकी व्याख्या में सामान्य नियमों की रचना करना प्रायः कठिन होता है ।
5. संस्कृति के प्रभाव से शोधकर्ता का मुक्त होना सम्भव नहीं होता है ।

1- कपिल, एच.के., 1997, अनुसन्धान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक ,आगरा ।

6. सामाजिक घटनाऐं अत्यधिक जटिल होती हैं । इन घटनाओं तथा सम्बन्धों को अल्प समय में ठीक–ठीक समझना कठिन होता है ।

अतः उपरोक्त कारणों से समस्त सामाजिक अनुसन्धानों में प्रयोगिक पद्धति का व्यापक रूप से उपयोग उपयुक्त नहीं रहता है ।

शिक्षा का आधार तथा सम्बन्ध समाज होता है; अतः शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले शैक्षिक अनुसन्धान भी कहीं न कहीं इस प्रकार की शोध सम्बन्धी कठिनाइयों से ग्रसित रहते हैं ।

शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान से भिन्न है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धानों में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धानों में नवीन ज्ञान की वृद्धि के साथ उसकी व्यावहारिक उपयोगिता भी आवश्यक है । अतः शैक्षिक अनुसन्धानों का उद्देश्य नवीन ज्ञान की वृद्धि करना, नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक उपयोगिता होना एवं अनुसन्धान की समस्या का क्षेत्र शिक्षण या बालक का विकास होना चाहिए । कुल मिलाकर कहा जाए तो शिक्षा की प्रकिया को प्रभावशाली बनाना ही शैक्षिक अनुसन्धानों का उद्देश्य होता है । शर्मा[1] के अनुसार – शैक्षिक अनुसन्धान की समस्याओं में विविधता अधिक होती है इसलिए इसके प्रमुख चार उद्देश्य होते हैं ।

1. **सैद्धान्तिक उद्देश्य** – शैक्षिक अनुसन्धान में 'वैज्ञानिक शोध कार्यों' द्वारा नये सिद्वान्तों तथा नये नियमों का प्रतिपादन किया जाता है । इस प्रकार के शोध कार्य व्याख्यात्मक होते हैं । इस प्रकार के शोध कार्यों का प्राथमिक उद्देश्य नवीन ज्ञान की वृद्धि होती है । जिनका उपयोग शिक्षा की प्रकिया को प्रभावशाली बनाने में किया जाता है ।

---

1. शर्मा, आर. ए., 1998, शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ ।

2. **तथ्यात्मक उद्देश्य** – 'ऐतिहासिक शोध कार्यों' द्वारा नये तथ्यों की खोज की जाती है । इन तथ्यों के आधार पर वर्तमान को समझने में सहायता मिलती है । तथ्यात्मक उद्देश्यों की प्रकृति वर्णनात्मक होती है । नवीन तथ्यों की खोज से शिक्षा प्रक्रिया के विकास तथा सुधार में सहायता प्राप्त होती है ।

3. **सत्यात्मक उद्देश्य** – 'दार्शनिक शोध कार्यों' द्वारा नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है । इस प्रकार के शोध कार्यों द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों, सिद्धान्तों, शिक्षण विधियों तथा पाठ्यक्रम की रचना की जाती है ।

4. **व्यावहारिक उददेश्य** – 'शैक्षिक अनुसन्धानों के निष्कर्षों' का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिए । क्रियात्मक अनुसन्धान से शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है अर्थात इनका उद्देश्य व्यावहारिक होता है ।

4.4. अनुसन्धान के प्रकार –

शैक्षिक अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर इनका वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है । शैक्षिक अनुसन्धानों को योगदान की दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं –

4.4.1. मौलिक या मूलभूत अनुसन्धान –

ऐसे अनुसन्धानों में प्रायः व्यापक रूप से वैज्ञानिक तथ्यों, नियमें तथा सिद्वान्तों की खोज की जाती है । प्रायः ऐसे अनुसन्धान में सैद्धान्तिक ज्ञान की खोज पर अधिक बल दिया जाता है इस प्रकार के सैद्धान्तिक ज्ञान की अनुप्रयुक्ति भविष्य में ही हो सकती है । वर्तमान की समस्याओं से ऐसे अनुसन्धान का सम्बन्ध नहीं होता है ।

4.4.2. अनुप्रयुक्त अनुसन्धान –

ऐसे अनुसन्धान का सम्बन्ध प्रायः व्यावहारिक समस्याओं के वर्तमान समय के समाधान से रहता है । इस प्रकार के अनुसन्धान का ध्येय उपयोगितावादी होता है तथा उसके परिणामों को तत्काल ही उपयोग में लाया जा सकता है । क्रियात्मक अनुसन्धान इसी प्रकार के अनुसन्धान का उदाहरण है ।

मूलभूत अनुसन्धान तथा अनुप्रयुक्त अनुसन्धान पारस्परिक रूप से अलग अलग होते हुए भी व्यावहारिक रूप से एक दूसरे पर आश्रित भी हैं । मूलभूत अनुसन्धान जिन तथ्यों, सामान्य नियमों व सिद्धान्तों की रचना करता है अनुप्रयुक्त अनुसन्धान उनका उपयोग दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान में करता है ।

अनुसन्धान के कई और प्रकार से वर्गीकरण किये गये हैं । एडवर्ड तथा कॉनबैक (1952) ने अनुसन्धानों को समस्याओं के स्वरूप के आधार पर अग्रलिखित चार भागों मे वर्गीकृत किया है –

1. सर्वेक्षण अनुसन्धान
2. अनुप्रयुक्त अनुसन्धान
3. प्रविधि अनुसन्धान
4. सूक्ष्म अनुसन्धान

करलिंगर ने भी वैज्ञानिक अनुसन्धान को चार भागों में विभाजित किया है –

1. प्रयोगशाला प्रयोग
2. घटनास्थल प्रयोग
3. घटनास्थल अध्ययन या एक्स–पोस्ट फैक्टो अनुसन्धान
4. सर्वेक्षण अनुसन्धान

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि अनुसन्धान के उद्देश्य, स्थान, प्रतिचयन, नियन्त्रण, विषय सामग्री की प्रकृति तथा अध्ययन पद्धति के आधार पर अनेक रूप हो सकते हैं । कपिल[1] ने अध्ययन–सामग्री तथा अध्ययन में नियन्त्रण की कठोरता तथा परिशुद्धता के आधार पर अनुसन्धानों का निम्न रूपों में वर्गीकरण किया है–

1. ऐतिहासिक अनुसन्धान
2. सर्वेक्षण अनुसन्धान
3. पद्धतिपरक अनुसन्धान
4. घटनास्थल अध्ययन
5. घटनोत्तर अनुसन्धान
6. क्षेत्र प्रयोग अनुसन्धान
7. प्रयोगिक अनुसन्धान

प्रत्येक अनुसन्धान की व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक आधार पर अपनी ही विशेषतायें होती हैं, तथा प्रत्येक की विषय–सामग्री व अध्ययन–पद्धति भी अलग–अलग होती है । इतनी विभिन्न प्रकार की अनुसन्धान विधियाँ विकसित एवं उपलब्ध होने से शोधार्थियों को बहुत लाभ हुआ है । इन सभी अनुसन्धान विधियों को वैज्ञानिक स्वरूप देने के सफल प्रयास किये गये हैं । फलतः चाहे भौतिक विज्ञान का क्षेत्र हो या सामाजिक विज्ञान का, इन अनुसन्धान विधियों का उपयोग कर वैज्ञानिक विधि से अनुसन्धान कार्य किया जा सकता है । शैक्षिक अनुसन्धान जो कि सामाजिक अनुसन्धान का ही एक भाग है में भी उपरोक्त अनुसन्धान विधियों का प्रयोग कर वैज्ञानिक पद्धति का अनुसन्धान कार्य किया जा सकता है । कभी – कभी शैक्षिक अनुसन्धान की विषय–सामग्री में प्रायोगिक पद्धति का उपयोग व्यापक रूप से नहीं हो पाता है, फिर भी इन क्षेत्रों के अध्ययनों में वैज्ञानिक विधि–तन्त्र का यथा सम्भव कठोरता पूर्वक अनुसरण किया जाता है । इनमें उपयुक्त वैज्ञानिक नियन्त्रण अवश्य रहता है तथा सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन व

1- कपिल, एच.के., 1997, अनुसन्धान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक , आगरा, पेज–142 ।

विश्लेषण भी विशुद्ध सांख्यिकीय विधियों पर आधारित रहता है । अतः अनुसन्धान की ऐसी पद्धति को वैज्ञानिक उपागम कहा जाता है ।

शोधकर्ता को अपने शोध कार्य की पूर्णता के लिए शोध के उद्देश्य जनसंख्या, प्रतिदर्श, प्रतिदर्शन, चरों की प्रकृति, विषय–सामग्री की प्रकृति तथा अध्ययन पद्धति के आधार पर किसी न किसी अनुसन्धान विधि का चयन करना होता है। शोधकर्ता बहुत सी सावधानियों को अपनाते हुए समस्या के स्वरूप के आधार पर उपरोक्त वर्णित अनुसन्धान विधियों में से किसी उपयुक्त विधि को चुनता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पर कार्य करते हुए शोधकर्ता सम्बन्धित साहित्यों के अध्ययन तथा अपने अनुभवों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि किसी शोध कार्य को सम्पन्न करने में सामान्यतः दो या कभी–कभी अधिक अनुसन्धान विधियों का उपयोग आवश्यक हो जाता है । इन विधियों में एक विधि प्रमुख होती है जिसके आधार पर आँकड़ों का संग्रहण एवं विश्लेषण किया जाता है । दूसरी विधियाँ सहायक रूप में प्रयोग की जाती हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थी को दो अनुसन्धान विधियों का उपयोग उपयुक्त प्रतीत होता है । शोध के आँकड़ों के संग्रहण के लिए शोधार्थी को 'सर्वेक्षण विधि' उपयुक्त प्रतीत हुई है, अतः शोधार्थी ने प्रमुख विधि के रूप में 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया है । 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि' एवं 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षा का विकास' विषय के अध्ययन के लिए द्वितीयक विधि के रूप में 'ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि' का चयन किया ।

शोधार्थी ने अपने इस प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में 'सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि' तथा 'ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि' का प्रयोग किया है । अतः इन दोनों विधियों का संक्षिप्त वर्णन अग्र वर्णित है ।

4.5 ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि–

ऐतिहासिक अनुसन्धान का अर्थ समझने ~~करने~~ से पूर्व इतिहास और ऐतिहासिक ज्ञान की प्रकृति को जानना आवश्यक है । इतिहास के लिए अंग्रेजी भाषा में History (हिस्ट्री) शब्द का प्रयोग होता है । इसका मूल शब्द Historia (हिस्टोरिया) है । इसका अर्थ होता है 'जांच के द्वारा प्राप्त ज्ञान' । अब इसका अर्थ 'भूतकालीन' अभिलेख' तक ही सीमित रह गया है ।

4.5.1 ऐतिहासिक सामग्री की विशेषताऐं –

इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न ऐतिहासिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है । ऐतिहासिक सामग्री की कुछ मूल विशेषताऐं होती हैं जो उसे अन्य प्रकार के ज्ञान से अलग करती हैं ।

1. इतिहास की विषय सामग्री अपरिवर्तनीय भूतकालीन परिधि में बंधी होती है । भूतकालीन घटनाओं को न तो प्रस्तुत कर सकते हैं और न उसमें परिवर्तन कर सकते हैं । यह बन्द प्रकार के आँकड़े होते हैं जबकि विज्ञान के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता ऐसी सामग्री पर कार्य करता है जो खुली हुई है और उसे पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

2. ऐतिहासिक आँकड़ों की दूसरी विशेषता यह है, कि वे भूतकालीन अभिलेख के रूप में ही मिलते हैं, जिनका वर्तमान अध्ययन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध होता है । वास्तव में भूतकालीन अवशेषों को आधार पर उन घटनाओं को सजीव रूप में चित्रित करने का प्रयास किया जाता है । ऐतिहासिक आँकड़ों के विश्लेषण में व्यक्तिगत पक्षपात के लिए विशेष स्थान होता है । अतः ऐतिहासिक अनुसन्धान-कर्ता को ऐतिहासिक आँकड़ों के विश्लेषण में बहुत ही सतर्क रहना पड़ता है । वह

घटनाओं का प्रत्यक्ष दर्शक नहीं है, निरीक्षण करने और रिपोर्ट देने वाला कोई और था । अतः वस्तुनिष्ठता लाने में कठिनाई होती है ।

3. विज्ञान में वर्तमान के आधार पर भविष्य के विषय में पूर्व कथन करते हैं, परन्तु इतिहास में वर्तमान के आधार पर भूत का विश्लेषण करने का प्रयत्न करते हैं ।

इन विशेषताओं के कारण ऐतिहासिक अनुसन्धान अन्य अनुसन्धानों से भिन्न होता है और इन्हें ध्यान में रखकर कार्य करने वाला ही सफल होता है । वास्तव में ऐतिहासिक अनुसन्धान को उचित रूप में पूर्ण करना अत्यन्त कठिन है क्योंकि सही आँकड़े प्राप्त करने में बहुत कठिनाई होती है ।

4.5.2 ऐतिहासिक अनुसन्धान का अर्थ–

जॉन डब्ल्यूबेस्ट[1] के अनुसार –

"ऐतिहासिक अनुसन्धान का सम्बन्ध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है । इसके विभिन्न पद भूत के सम्बन्ध में एक नई सूझ पैदा करते हैं जिसका सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य से होता है"।

एफ.एल.ब्हिटनी के अनुसार –

"ऐतिहासिक अनुसन्धान भूत का विश्लेषण करता है । इसका उद्देश्य भूतकालीन घटनाक्रम, तथ्य और अभिवृत्तियों के आधार पर ऐसी सामाजिक समस्याओं का चिंतन एवं विश्लेषण करना है जिनका समाधान नहीं मिल सका है। यह मानव विचारों और क्रियाओं के विकास की दिशा की खोज करता है । जिसके द्वारा सामाजिक क्रियाओं के लिए आधार प्राप्त हो सके" ।

1- Best, J.W. & Kahn, J.V.,2005, Reasearch in education, 9th ed., Prentice-hall of india (p) ltd.,New Delhi.

4.5.3 ऐतिहासिक अनुसन्धान की समस्याऐं –

ऐतिहासिक अनुसन्धान को निम्नलिखित समस्याऐं अत्यधिक कठिन बना देती हैं –

1. उपयुक्त समस्या का चयन करना एक कठिन समस्या है । समस्या ऐसी होनी चाहिए जिसका समुचित अध्ययन एवं विश्लेषण सम्भव हो । अधिकतर नवप्रवेशी अनुसन्धानकर्ता बड़ी विस्तृत समस्या ले लेते हैं, जिसका निर्वाह करना कठिन हो जाता है । अतः समुचित सीमांकन आवश्यक है । विद्वानों का विचार है कि अनुसन्धान में किसी व्यापक समस्या के सर्वेक्षण मात्र से उत्तम होगा यदि संक्षिप्त समस्या का गहन अध्ययन किया जाये ।

2. उपयुक्त परिकल्पना के निर्माण से दिशा निर्देश मिलता है । इसका निर्माण एक कठिन कार्य है । उपयुक्त परिकल्पना के अभाव में ऐतिहासिक आँकड़ों कीप्राप्ति निरूद्देश्य संग्रह मात्र हो जाती है । जिसके आधार पर वर्तमान का समुचित विश्लेषण और भविष्य के लिए पूर्व कथन कठिन हो जाता है ।

3. आँकड़ों का संग्रह व विश्लेषण भी अनेक कठिनाइयाँ प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता उस काल की घटनाओं का प्रत्यक्ष दर्शक तो नहीं होता है, उसे प्राप्त सामग्री पर विश्वास करना पड़ता है तथा अपनी सूझ–बूझ से निष्कर्ष निकालना पड़ता है । अतः विश्वसनीय आँकड़ों की प्राप्ति के साथ ही साथ उनका समुचित विश्लेषण भी कठिन होता है। इसके लिए अनुसन्धानकर्ता में उच्च कोटि की कल्पना, बुद्धिमत्ता तथा सूझ आवश्यक है ।

4. यदि ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते समय उस काल की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति एवं व्यवस्था का समुचित ध्यान नहीं रखता जो किसी भी क्षेत्र के व्यक्तियों के चिंतन तथा व्यवहार को एक बड़ी सीमा

तक प्रभावित करता है ऐसे में उसके शोध कार्य का कोई महत्व नही रह जाता है । अतः इनके संदर्भ में विचार संगत्ता होना चाहिए ।

4.5.4 ऐतिहासिक अनुसन्धान के मूल उददेश्य –

यूं तो ऐतिहासिक अनुसन्धान के उतने उद्देश्य होंगे जितने अनुसन्धानकर्ता, पर मूल रूप में इसके निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं –

1. ऐतिहासिक अनुसन्धान का मूल उद्देश्य भूत के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सजग होना है । अधिकाँश वस्तुओं का कोई न कोई ऐतिहासिक आधार होता है । अतः किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार से समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है ।

2. ऐतिहासिक अनुसन्धान का दूसरा प्रमुख उद्देश्य शिक्षा मनोविज्ञान अथवा अन्य सामाजिक विज्ञानों में चिंतन को नई दिशा देने एवं नीति निर्धारण में सहायता करना है । वह यह भी स्पष्ट करता है कि आज नवीन कही जाने वाली वस्तुओं में नवीनता कहां तक है तथा बीच के परिवर्तनों में क्या प्रभाव पड़े हैं । इस प्रकार अनुसन्धान त्रुटियों के प्रति सतर्क कर मार्ग प्रशस्त करता है ।

3. ऐतिहासिक अनुसन्धान का तीसरा उददेश्य है वैज्ञानिकों की भूतकालीन तथ्यों के प्रति जिज्ञासा की तृप्ति एवं भूत, वर्तमान तथा भविष्य का सम्बन्ध स्थापन ।
4. ऐतिहासिक अनुसन्धान का एक उद्देश्य किसी क्षेत्र विशेष के व्यावसायिक कार्यकर्ताओं के लिए पूर्ण अनुभव के आधार पर भावी कार्यक्रम की रूप रेखा निर्धारित करने में सहायता करना है ।

5. यह इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि किन परिस्थितियों में, किन कारणों से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों ने एक विशेष प्रकार का व्यवहार किया है, उसका प्रभाव उनके ऊपर तथा समाज पर क्या पड़ा है ।

6. ऐतिहासिक अनुसन्धान इस तथ्य का भी विश्लेषण करता है कि आज जो सिद्धांत तथा कियाऐं व्यवहार में हैं , उसका उद्‌भव एवं विकास किन परिस्थितियों में हुआ है ।

4.5.5 ऐतिहासिक अनुसन्धान का महत्व –

1. इतिहास भूतकालीन घटनाओं के परिणामों को स्पष्ट करते हुए उसके गुण दोषों से परिचित कराता है । ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्थित वर्तमान कियाओं और प्रवृत्तियों के आधार का सम्यक विवेचन करता है इससे किसी उलझी समस्या का हल ढूँढ़ने में सहायता मिलती है । अतः ऐतिहासिक अनुसन्धान वर्तमान शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का हल ढूँढ़ने में सहायक होता है ।

2. ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में सिद्धांत एवं क्रिया पक्ष की आलोचनात्मक व्याख्या करता हुआ उनके वर्तमान स्वरूप की ऐतिहासिक एवं विकासात्मक स्थिति को स्पष्ट करता है ।

3. ऐतिहासिक अनुसन्धान भूतकालीन त्रुटियों से परिचित कराकर भविष्य के प्रति सतर्क करता है ।

4. शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक अनुसन्धान समाज एवं विद्यालय के सम्बन्धों की व्याख्या करता है तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में इसके कारणों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है ।

5. ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है ।

6. यह शिक्षा शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों तथा शोध कार्य में लगे अन्य व्यक्तियों के प्रति सम्मान प्रकट करता है ।

7. ऐतिहासिक अनुसन्धान अन्धविश्वासों एवं भ्रमों का निवारण करता है ।

4.5.6 ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता के गुण –

ऐतिहासिक अनुसन्धान का कार्य अत्यन्त कठिन है । अतः इसमें वही व्यक्ति सफल हो सकता है जिसमें निम्नलिखित गुण हों –

1. सांस्कृतिक रूचि
2. विश्वबंधुत्व की भावना
3. विषय से परिचय
4. विशिष्ट क्षेत्र का गहन ज्ञान
5. निष्पक्षता एवं मानसिक संतुलन
6. स्वस्थ मस्तिष्क व क्रमिक अध्ययन में रूचि

4.5.7 ऐतिहासिक अनुसन्धान के प्रकरण –

ऐतिहासिक अनुसन्धान की विषय वस्तु चुनने में निम्नलिखित दो तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक होता है –

1. ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करना जिसका पता न लगा हो ।
2. पुराने अनुसन्धान का संशोधन ।

अच्छे प्रकरण प्राप्त करने के उपाय –

निम्नलिखित दृष्टिकोण से अध्ययन करने में सरलता होती है

1. विषय विशेष का गहन अध्ययन ।
2. संदेहात्मक बुद्धि से साहित्य सर्वेक्षण ।
3. अन्वेषणात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण ।

4.5.8 ऐतिहासिक अनुसन्धान के सोपान –

ऐतिहासिक अनुसन्धान में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है –

1. समस्या की पहचान एवं परिभाषा करना
2. आँकड़ों का संकलन
3. आँकड़ों की अलोचना
4. आँकड़ों का अर्थापन

4.5.9 ऐतिहासिक अनुसन्धान में आँकड़ों की प्राप्ति के साधन –

जिज्ञासु अनुसन्धानकर्ता के लिए ऐतिहासिक साधन यह विचित्र विश्व ही है । सत्य की खोज के लिए उसे इसी विश्व में भ्रमण करना पड़ता है । यह विचित्र विश्व गुप्त रहस्यों एवं आच्छन्न तत्वों से परिपूर्ण है । इन रहस्यों का उदघाटन तथा

तत्वों का विश्लेषण एवं अन्वेषण इतिहास का प्रमुख लक्ष्य है । ऐतिहासिक साधनों का विभाजन निम्न प्रकार है –

1. **प्राथमिक साधन** – वे साधन जो घटना, व्यक्ति या संस्था के विषय में प्रथम साक्षी का कार्य करते हैं इस प्रकार के साधन घटना से तात्कालिक सम्बन्ध रखने वाले होते हैं, जिनके समक्ष वास्तव में घटना घटित होती है । इस प्रकार के साधनों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण हैं –

(अ) सचेतन रूप से प्रदर्शित सूचनाऐं –

अ–लिखित साधन – वृतान्त, कथा, जीवन वृतान्त, दैनन्दिनी, वंशावलियां, शिलालेख आदि ।

ब– मौखिक परम्परा – गाथाऐं, कहानियां, उपाख्यान आदि ।

स– कलात्मक उपलब्धि – ऐतिहासिक चित्र, मूर्तियां एवं सिक्के आदि ।

(ब) अवशेष एवं अचेतन प्रमाण पत्र – मानवीय अवशेष, भवन, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र एवं ललित कलायें आदि । इन अवेशषों से तत्कालीन घटना, काल विशेष या व्यक्ति विशेष के विषय में प्राथमिक ज्ञान होता है ।

2. **द्वितीयक साधन** – ऐतिहासिक घटना या व्यक्ति के विषय में जो कुछ तथ्य प्रदान करते हैं उनकी आवृत्ति उन साधनों के अन्तर्गत प्रत्यक्षतः समाहित नहीं रहती । एक व्यक्ति जो ऐतिहासिक विषय के सम्बन्ध में तात्कालिक घटना से सम्बन्धित व्यक्ति के मुँह से सुने–सुनाये वर्णन को अपने शब्दों में व्यक्त करता है ऐसे वर्णन को द्वितीयक साधन कहते हैं । यद्यपि इसमें सत्य का अंश रहता है किन्तु प्रथम साक्षी से द्वितीय

श्रोता तक पहुँचते–पहुँचते वास्तविकता में परिवर्तन आ जाता है । जिससे उसके दोष युक्त होने की सम्भावना रहती है ।

4.5.10 शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक इतिहास के साधन –

घटना की रिपोर्ट – इसके अन्तर्गत निम्नलिखित प्रमाण पत्र तथा ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं को लिया जाता है । उदाहरणार्थ – विद्यालय का वातावरण, विद्यालय भवन एवं साज सज्जा, छात्रों के सामूहिक चित्र, शैक्षिक किया अथवा मनोवैज्ञानिक प्रयोग में लगे अध्यापकों, मनोवैज्ञानिकों, छात्रों आदि के चित्र, डिप्लोमा, उपस्थिति रजिस्टर, प्रमाण–पत्र के नमूने, बैंक अभिलेख, पाठय पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, मानचित्र, डिजायन आदि ।

कुछ लिखित प्रमाण–पत्र निम्न हैं –

1. वैधानिक एक्ट, जैसे– संविधान, कानून, चार्टर आदि ।
2. अदालती फैसले ।
3. कार्यकारिणी या अन्य कार्यालय सम्बन्धी लेख ।
4. समाचार पत्र और पत्रिकाऐं ।
5. निजी सामग्री ।
6. साहित्यिक सामग्री आदि ।

4.5.11 ऐतिहासिक आँकड़ों का संग्रह एवं प्रयोग–

आँकड़ों का संग्रह करने के बाद विशेषज्ञों द्वारा प्रयोग हेतु परामर्श लेना चाहिए । इसके लिए तालिका बनानी होती है । संकलित आँकड़ों को विभिन्न प्रकरणों में विभाजित कर उनका वर्गीकरण करते हैं ।

4.5.12 आँकड़ों की आलोचना या मूल्यांकन–

आँकड़ों की आलोचना अथवा मूल्यांकन दो प्रकार को होता है, जो इस धारणा पर आधारित होता है कि यदि आँकड़े सत्य हैं तो उनसे लिखा गया इतिहास भी सत्य होगा । आँकड़ों के संग्रह के साथ–साथ उनका मूल्यांकन भी करना होता है, कि किसे तथ्य माना जाये और किसे सम्भावित माना जाये और किस आंकड़ें को भ्रम पूर्ण माना जाये । इसके लिए दो तथ्यों को ध्यान में रखते हैं ।

4.5.12.1 बाह्य आलोचना – इसमें इस तथ्य की जांच करते हैं कि प्राप्त आँकड़ा या प्रमाण पत्र अपने बाह्य स्वरूप की दृष्टि से उचित है अथवा नहीं । इसके अन्तर्गत लिखित प्रमाण पत्र की यथार्थता की जांच की जाती है । बाह्य आलोचना के अन्तर्गत आँकड़ों के रूप, रंग, समय, स्थान तथा परिणाम की दृष्टि से यथार्थता की जांच करते हैं । यह देखते हैं कि प्राप्त आँकड़ा जब लिखा गया, जिस स्याही से लिखा गया, लिखने में जिस शैली का प्रयोग किया गया तथा जिस प्रकार की भाषा लिपि रचना, हस्ताक्षर आदि प्रयुक्त हैं, वे सभी तथ्य मौलिक घटना के समय उपिस्थत थे या नहीं ?यदि नहीं, तो आँकड़ा जाली है ।

इसके परीक्षण हेतु निम्न तथ्यों पर ध्यान देते हैं –

1. लेखक कौन था ? उसका चरित्र और व्यक्तित्व कैसा था ?

2. सामान्य रिपोर्टर के रूप में उसकी योग्यता क्या थी ?

3. इस तथ्य के रिपोर्टर के रूप में उसकी विशेष योग्यता या विशिष्ट योग्यता क्या थी ? जैसे–

अ— सम्बन्धित घटना में रूचि कैसी थी ।

ब— घटना का निरीक्षण उसने किसी स्थिति में, किस मनःस्थिति से किया था ?

स— घटना की रिपोर्ट और उसके अध्ययन के लिए उसे क्या आवश्यक सामान्य और प्राविधिक ज्ञान उपलब्ध था ?

4. घटना के कितने समय पश्चात प्रमाण पत्र लिखा गया ?

5. प्रमाण पत्र किस प्रकार लिखा गया – स्मरण द्वारा, परामर्श द्वारा, देखकर या पूर्व ड्राफ्टों से मिलाकर ।

6. लिखित प्रमाण पत्र अन्य प्रमाण पत्रों से कहां तक मिलता है ।

आँकड़ों की यथार्थता का ज्ञान करने हेतु इतिहासकारों ने अलग—अलग विज्ञानों का अपने क्षेत्र में प्रयोग किया है । उदाहरणार्थ – शिला लेखों का अध्ययन करने के लिए इपिग्राफी, डिप्लोमा आदि का ज्ञान करने हेतु डिप्लोमेटिक्स, लिखावट का ज्ञान करने हेतु पैलियोग्राफी, तारीखों का ज्ञान करने हेतु फिलोलॉजी, स्याही हेतु केमिस्ट्री आदि के प्रयोग द्वारा आँकड़े के बाह्य स्वरूप के विषय में पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करने में सफलता मिलती है ।

4.5.12.2 आंतरिक आलोचना – इस प्रकार की आलोचना का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या लेखक विषय के साथ न्याय कर पाया है अथवा नहीं । इसमें निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देते है ।–

(क) लेखक किसी रूप में प्रभावित तो नहीं था ?

(ख) क्या तथ्य की जानकारी हेतु लेखक को पर्याप्त अवसर मिला था ?

(ग) क्या वर्णित घटना उसने स्वयं देखी थी ?

(घ) क्या विश्वसनीय निरीक्षण हेतु वह सक्षम था ?

(ड़) क्या लेखक का कोई विशेष उद्देश्य था ?

(च) क्या लेखक किसी दबाव या भय में था ?

(छ) घटना के कितने दिन पश्चात् उसने लिखा है ?

(ज) उसके लेख तथा अन्य लेखों में कितनी समानता है ?

(झ) लेखक की राष्ट्रीयता, पेशा, स्थिति, वर्ग, दलों से सम्बन्ध, धर्म, प्रशिक्षण आदि के विषय में क्या ज्ञात है ?

(ळ) अभिलेखों को तैयार करने के लिए उसमें प्रशिक्षण, मानसिक क्षमता, सामाजिक सार, अवधारणाऐं, रूचियां, भाषाई आदत कैसी थी ?

(ट) लेखक सही है या गलत ?

(ठ) अभिलेख में कोई धोखा तो नहीं किया गया ?

(ड) लेखक ने अभिलेख क्यों तैयार किया ?

(ढ) क्या लेखक ऐसी स्थिति में तो नहीं रख दिया गया था जिसमें उसे सत्य को छिपाना पड़ा हो ।

(ण) क्या उसने अधिकारियों को प्रसन्न कर उन्नति चाही थी ?

(त) क्या उसमें धार्मिक, राजनैतिक अथवा जातीय पूर्व धारणयें प्रबल थीं ?

(थ) क्या जनता को प्रसन्न करने हेतु उसने संवेग उभारा है ?

(द) क्या उसने सहित्यिक प्रवाह में सत्य को छिपाया है ?

इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर ऐतिहासिक आँकड़ों की आंतरिक समालोचना करने के पश्चात् ही अनुसन्धानकर्ता किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है ।

4.5.13 धनात्मक तथा ऋणात्मक ऐतिहासिक समालोचना– आंतरिक समालोचना को उस समय धनात्मक कहतें हैं, जब अनुसन्धानकर्ता का प्रयत्न अभिलेख का सत्य, वास्तविक और अक्षरशः अर्थ ज्ञात करने का होता है । आंतरिक समालोचना को उस समय ऋणात्मक कहते हैं जब अनुसन्धानकर्ता का प्रत्येक प्रयत्न अभिलेख की अविश्वसनीयता को ज्ञात करना रहता है ।

4.5.14 शिक्षा तथा मनोविज्ञान में ऐतिहासिक अनुसन्धान की प्रक्रिया–ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता को निम्न प्रक्रिया अपनाने में सरलता होती है –

1. ऐसे क्षेत्र का चुनाव करना जिसमें पर्याप्त प्रमाण एवं अनुसन्धान सामग्री प्राप्य हो ।
2. जहां तक सम्भव हो प्राथमिक साधन ही प्रयोग करें ।
3. आवश्यकतानुसार सामान्य रूप से माध्यमिक साधनों का भी प्रयोग कर सकते हैं ।
4. सुपरिभाषित समस्या पर कार्य प्रारम्भ करें ।
5. व्यक्तिगत पक्षपातों से सदैव बचते रहें ।
6. विभिन्न परिस्थितियों एवं वातावरण की स्थिति के संदर्भ में अध्ययन को आगे बढ़ायें ।
7. कार्य कारण सम्बन्ध पर विशेषज्ञ ध्यान दें ।
8. विभिन्न आँकड़ों के आधार पर अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त करें ।

निम्नलिखित तथ्यों से बचने का प्रयास करें –

1. आँकड़ों को अत्यन्त सरल बनाने का दुष्प्रयास न करें ।
2. स्वल्प सामग्री के आधार पर ही सामान्यीकरण न करें ।

3. सामान्य और विशिष्ट तथ्यों को एक दृष्टि से न देखें ।

4. बहुत व्यापक समस्या न लें, जो पूर्ण न हो ।

5. माध्यमिक आँकड़ों पर ही विश्वास न कर लें ।

6. अनेक व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त तथ्यों को उचित मानने से न चूकें ।

7. व्यक्तिगत पक्षपात से बचने का प्रयास करें ।

8. वर्णन नीरस न हो ।

9. शब्दों के पूर्व निश्चित अर्थ को छोड़कर नये अर्थ में उसे न लें ।

4.5.15 ऐतिहासिक अनुसन्धान का क्षेत्र – वैसे तो ऐतिहासिक अनुसन्धान का क्षेत्र इतना ही व्यापक है, जितना स्वयं जीवन किन्तु संक्षेप में इसके क्षेत्र में निम्नलिखित को सम्मिलित कर सकते हैं –

1. बड़े शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के विचार ।
2. संस्थाओं एवं प्रयोगशालाओं द्वारा किये गये कार्य ।
3. विभिन्न कालों में शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक विचारों के विकास की स्थिति ।
4. एक विशेष प्रकार की विचारधारा का प्रभाव और उसके स्रोत ।
5. शिक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था ।
6. पुस्तक, सूची की तैयारी । आदि ।

4.5.16 ऐतिहासिक शोध प्रबन्ध के मूल्यांकन हेतु मानदण्ड –

1. समस्या स्पष्ट रूप से परिभाषित एवं अनुसन्धान के योग्य हो ।
2. निश्चित लेखक, स्थान और समय के अनुसार स्रोत का वर्गीकरण हो ।

3. अध्ययन परिसीमित एवं शोधकर्ता की पहुँच के अन्तर्गत हो ।

4. शोध प्रबन्ध की व्यवस्था तार्किक आधार पर हो ।

5. तथ्यों की समुचित व्यवस्था की गई हो ।

6. स्रोत पर्याप्त रूप में हों तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक दोंनो प्रकार के साधान प्रयोग में आये हों ।

7. साधन उचित एवं विश्वसनीय हों ।

8. शोध प्रबन्ध भावी अनुसन्धान के लिए सुझाव प्रस्तुत करे ।

9. अध्ययन में समय एवं धन का ध्यान रखा गया हो ।

10. कम से कम दो स्वतंत्र साक्षियों द्वारा तथ्यों की जांच कर ली गई हो ।

11. समस्या हल करने योग्य हो ।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर किसी ऐतिहासिक शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन किया जा सकता है ।

4.6 सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि –

सामाजिक–वैज्ञानिक शोध में 'सर्वेक्षण शोध' का बहुत महत्व है । सर्वेक्षण शोध का प्रयोग समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा शिक्षा के शोधों में अधिक होता है । यह एक अप्रयोगात्मक प्रकार का शोध है । इस प्रकार के शोध कार्यों में सर्वे शोधकर्ता अपने शोध के आधार पर स्वाभाविक परिस्थतियों में व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों द्वारा दिखलाई गई मनोवृत्ति तथा मत, उनकी धार्मिक तथा राजनैतिक सम्बन्धता आदि का अध्ययन करता है ।

सर्वे शोधकर्ता शोध समस्याओं का अध्ययन करके जनसंख्या के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है । सामाजिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में सर्वेक्षण एक समस्या से सम्बन्धित आँकड़ों के संकलन का महत्वपूर्ण साधन व उपकरण है । शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षण 'विवरणात्मक अनुसन्धान' का एक अभिन्न तथा महत्वपूर्ण अंग रहा है । विवरणात्मक अनुसन्धान का स्वरूप अत्यधिक विषम, व्यापक व विस्तृत हाता है । कपिल[1] लिखते हैं कि अब अधिकतर सर्वेक्षण अनुसन्धान का अध्ययन, विवरणात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत न करके, अलग करना ही अधिक तर्क–संगत जान पड़ता है ।

4.6.1 सर्वेक्षण का अर्थ –

सर्वेक्षण का अंग्रेजी रूपान्तर Survey होता है । यह दो शब्दों से मिलकर बना है - Sur+Vey I Sur शब्द Sor पर तथा Vey शब्द Veeir पर आधारित है । यहाँ Sor का अर्थ Over तथ Veeir का अर्थ to look है । इस प्रकार Survey का सम्मिलित मूल अर्थ 'ऊपर से देखना', 'अवलोकन करना' अथवा 'अन्वेषण करना' होता है । वैबेस्टर शब्दकोष[2] के अनुसार सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण होता है, जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है । जैसे– स्कूलों का सर्वेक्षण ।

4.6.2 सर्वेक्षण अनुसन्धान का अर्थ –

सर्वेक्षण के अन्तर्गत कई प्रकार के सर्वे किये जाते हैं । यथा – यथास्थिति सर्वेक्षण, सामाजिक सर्वेक्षण व अन्य साधारण सर्वेक्षण । वैज्ञानिक कठोरता के इस युग में अब सर्वेक्षण के द्वारा अध्ययन में प्रतिचयन प्रक्रिया को विशेष महत्व दिया जाने लगा है । इस प्रक्रिया के अन्तर्गत अध्ययन के लिए सम्भाव्यता सिद्वान्त के आधार पर केवल एक समष्टि के प्रतिदर्श द्वारा ही एक सामाजिक अथवा शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित एक समस्या अथवा स्थिति के विषय में ऐसे प्रतिनिधि आँकड़े संकलित किये जा सकते हैं जो कि सम्बन्धित

1- कपिल, एच.के., 1997, अनुसन्धान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक, आगरा, पेज–147 ।

2. Webester's new collegiate dictionary, 1949, p-855.

समष्टि के स्वरूप को लगभग पूर्णरूपेण प्रतिबिम्बित करते हैं । ऐसे वैज्ञानिक प्रतिचयन पर आधारित सर्वेक्षण को ही 'प्रतिदर्श सर्वेक्षण' कहते हैं, तथा ऐसे वैज्ञानिक प्रतिदर्श सर्वेक्षण पर आधारित अध्ययनों को 'सर्वेक्षण अनुसन्धान' कहते हैं ।

करलिंगर (1986) के शब्दों में सर्वे शोध को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है, "सर्वे शोध में छोटी एवं बड़ी जनसंख्या (समष्टि) का अध्ययन उसी जनसंख्या से प्रतिदर्श का चयन करके किया जाता है ताकि समाजशास्त्रीय चरों तथा मनोवैज्ञानिक चरों के तुलनात्मक आपतन, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके ।"

4.6.3 सर्वेक्षण अनुसन्धान की विशेषताएं –

सिंह[1] (2002) ने सर्वेक्षण अनुसन्धान की विशषताओं का वर्णन इस प्रकार किया है –

1. इस प्रकार के शोध में सर्वे शोधकर्ता अपना अध्ययन समष्टि से चुने गये प्रतिदर्श के आधार पर करता है । समष्टि के सभी सदस्यों को वह इसलिए सम्मिलित नहीं कर पाता है क्योंकि इसमें तरह–तरह की कठिनाइयाँ सामने आती हैं ।

2. सर्वे शोध में मनोवैज्ञानिक चरों तथा समाज–शास्त्रीय चरों के अन्तर सम्बन्धों का पता लगाया जाता है तथा समष्टि में उनके वितरण एवं प्रसार की सम्भावना की खोज की जाती है ।

3. सर्वे शोध अप्रयोगात्मक होता है । फलस्वरूप इसमें शोधकर्ता स्वतंत्र चर में जोड़–तोड़ नहीं कर पाता है और न ही प्रयोज्यों का यादृच्छिक आवंटन ही कर पाता है।

अग्रवाल[2] के अनुसार सर्वेक्षण अनुसन्धान की कुछ प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार हैं –

1- सिंह, अरूण कुमार, 2003, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली ।

2- Aggarwal, J.C., 2003, Educational research : an introduction, Arya Book Depot, New Delhi.

1. इस विधि के अन्तर्गत एक ही समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आँकड़े प्राप्त किये जाते हैं ।
2. इसका सम्बन्ध व्यक्तियों की विशेषताओं से नहीं होता है ।
3. इसके अन्तर्गत स्पष्ट परिभाषित समस्या पर कार्य किया जाता है ।
4. विशिष्ट एवं कल्पनापूर्ण नियोजन आवश्यक होता है ।
5. इसके निश्चित व विशिष्ट उद्‌देश्य होते हैं ।
6. आँकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में सावधानी आवश्यक होती है ।
7. सर्वेक्षण जटिलता में अधिक परिवर्तनशील होते है ।
8. यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों के संगठित ज्ञान को विकसित नहीं करता है ।
9. यह ज्ञान में वृद्धि करता है, क्योंकि जो कार्य किया जाता है उसके लिये अपेक्षित प्रदत्त प्रदान किये जाते हैं ।
10. यह भविष्य के विकास के क्रम में सूचना देता है ।
11. यह वर्तमान नीतियों का निर्धारण करता है तथा वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है ।
12. यह कई उपकरणों के निर्माण में सहायता करता है जिसके द्वारा हम शोध प्रक्रिया को पूरा करते हैं ।
13. यह आवश्यक रूप से अनुप्रस्थ उपागम का पालन करता है ।
14. यह स्थानीय समस्याओं के समाधान के बारे में उपयुक्त सूचनायें देता है ।
15. सर्वे शोध गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों प्रकार का होता है ।
16. सर्वेक्षण अनुसन्धान से प्राप्त निष्कर्षों की या तो मौखिक रूप से या गणितीय रूप से व्याख्या की जा सकती है
17. प्रयोगों की अपेक्षा सर्वे अधिक वास्तविक होते हैं क्योंकि यह घटनाओं का अध्ययन उनकी वास्तविक स्थितियों में करते हैं ।

4.6.4 सर्वेक्षण अनुसन्धान का वर्गीकरण –

शोध विधियों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया जाता है । वर्गीकरण में कोई न कोई आधार अथवा मानदण्ड का प्रयोग किया जाता है। साधारणतः अनुसन्धान की विधियों का वर्गीकरण शोध–उद्‌देश्यों, घटनाओं, समय तथा शोध के स्वरूप के आधार पर किया गया है । जार्ज जे. मुले ने अनुसन्धान विधियों को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया है। यथा– सर्वेक्षण, ऐतिहासिक एवं प्रयोगिक विधियाँ । सर्वेक्षण विधि को पुनः चार संवर्गों में वर्गीकृत किया है –

1. विवरणात्मक सर्वेक्षण
2. विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण
3. विद्यालय सर्वेक्षण
4. सामाजिक सर्वेक्षण

शोध विधियों को अनुदैर्ध्य एवं अनुप्रस्थ उपागमों के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है । सर्वेक्षण विधि अनुप्रस्थ उपागम में वर्गीकृत की गई है ।

सर्वेक्षण को विषय सामग्री, उद्‌देश्यों व विधियों के आधार पर विभिन्न प्रकारों से वर्गीकृत किया गया है । मोसर ने सामाजिक सर्वेक्षण का वर्गीकरण चार रूपों में किया है ।

1. जनसंख्या सर्वेक्षण
2. सामाजिक पर्यावरण सम्बन्धी सर्वेक्षण
3. सामाजिक क्रियाओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण
4. विचार तथा अभिवृत्ति सम्बन्धी सर्वेक्षण ।

एक ओर विशिष्ट उद्देश्यों के आधार पर सर्वेक्षण के सात प्रकार बतलाये गये हैं । दूसरी ओर सर्वेक्षणों के सामान्य प्रकार चार बतलायें गये हैं । करलिंगर ने सर्वेक्षणों का वर्गीकरण सूचना–संकलन की विधियों के आधार पर निम्न प्रकार से किया है –

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार सर्वेक्षण
2. डाक प्रश्नावली सर्वेक्षण
3. दूरभाष सर्वेक्षण
4. सामाजिक सर्वेक्षण या पैनल सर्वेक्षण
5. नियन्त्रित प्रेक्षण सर्वेक्षण

कपिल ने शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षणों के वर्गीकरण का वर्णन करते हुए इन्हें चार भागों में वर्गीकृत किया है –

1\. विद्यालय सर्वेक्षण

2\. प्रलेखी सर्वेक्षण

2\. अनुवर्ती सर्वेक्षण

3\. मूल्यांकन सर्वेक्षण

इनका विस्तृत वर्णन निम्न प्रकार है –

4.6.5 शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षणों का वर्गीकरण–

शैक्षिक उद्देश्यों के सन्दर्भ में सर्वेक्षणों का वर्गीकरण प्रायः निम्न प्रकार से किया जाता है

4.6.5.1 विद्यालय सर्वेक्षण – इसका सम्बन्ध विद्यालय जीवन के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों से रहता है, जिनमें मुख्य पक्ष हैं : –

1. विद्यालयों के भवन की स्थिति, रचना, विभिन्न कक्षाओं की व्यवस्था व भौतिक वातावरण की उपयुक्तता ।

2. प्रशासन सम्बन्धी समस्याएँ तथा कठिनाइयाँ ।

3. वित्तीय व्यवस्था तथा नीतियां ।

4. शैक्षिक पाठ्यक्रम व उसके उद्देश्य ।

5. प्रचलित शिक्षण–पद्धति का अध्ययन ।

6. विद्यार्थियों की निष्पत्ति तथा सम्प्राप्ति का अध्ययन ।

7 विद्यार्थियों की मानसिक योग्यताओं, अभिक्षमताओं व अभिरूचियों आदि अध्ययन ।

8. कर्मचारी वर्ग की योग्यताओं, कुशलताओं व मनोबल का अध्ययन ।

9. सामान्य अनुशासन, समायोजन व मनोरंजन सामग्री का अध्ययन ।

10. विद्यालय–प्रशासन तथा उसमें निहित मानवीय तत्वों का मूल्यांकन ।

इस प्रकार यहां स्पष्ट है कि विद्यालय सर्वेक्षण के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण विषय–सामग्रियों के अध्ययन की आवश्यकता रहती है । भौतिक स्तर पर विद्यालय की स्थिति, स्थान, भवन–रचना, विभिन्न कक्षाओं, प्रयोगशालाओं व अन्य भौतिक सुविधाओं के अध्ययन का अंकन करना होता है । विद्यालय के जीवन में प्रशासन सम्बन्धी तथा वित्तीय स्थिति सम्बन्धी अनेक समस्यायें समय–समय पर उदित होती रहती हैं। उनके समझने तथा समाधान में सामयिक सर्वेक्षणों से महत्वपूर्ण सहायता उपलब्ध होती है । इसके अतिरिक्त, सर्वेक्षणों के माध्यम से विद्यालय के उद्देश्यों व पाठयक्रमों का भी अध्ययन किया जाता है । विद्यार्थियों की निष्पत्ति, सम्प्राप्ति व शिक्षण पद्धति का मूल्यांकन किया जाता है, तथा उपयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा उनकी मानसिक योग्यताओं,

अभियोग्यताओं, अभिरूचियों, अनुशासन व समायोजन के स्तरों आदि का मूल्यांकन किया जाता है । साथ ही साथ, विद्यालय के कर्मचारी–वर्ग की योग्यताओं, कुशलताओं व मनोबल का भी सर्वेक्षण किया जाता है तथा विद्यालय के परिवेश, प्रबन्ध, संगठन व प्रशासन में मानवीय तत्वों व सम्बन्धों का भी निरीक्षण किया जाता है ।

4.6.5.2 प्रलेखी सर्वेक्षण – ऐसे सर्वेक्षण में अनेक प्रकार के अभिलेखों व प्रलेखों का अध्ययन रहता है । कुछ प्रलेख ऐसे होते हैं जिनमें पाठयक्रमों की विविधताओं व विशेषताओं का वर्णन रहता है । दूसरे कुछ अभिलेख ऐसे होते हैं जिनमें विद्यार्थियों की पूर्वनिष्पत्तियों व वर्तमान की सम्प्राप्तियों तथा उपलब्धियों का विवरण रहता है । इसके अतिरिक्त, कुछ अभिलेख ऐसे होते है, जिनमें विद्यालय के पिछले वर्षों के वार्षिक प्रतिवेदनों तथा वित्तीय स्थितियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत रहता है । विद्यालय–सम्बन्धी ऐसे विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिए अन्य शासकीय प्रतिवेदनों के अभिलेखों उनके प्रारूपों, दैनन्दनियों, सूचियों, प्रपत्रों व पत्रिकाओं के अध्ययन की आवश्यकता होती है ।

4.6.5.3 अनुवर्ती सर्वेक्षण – इसका ध्येय शिक्षा सम्बन्धी ऐसी घटनाओं, समस्याओं,कठिनाइओं, तथा स्थितियों का अध्ययन करना होता है कि जिनसे शैक्षिक प्रगति तथा उन्नति प्रभावित होती है । इसके लिए शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया जाता है तथा प्रचलित पठन–पाठन विधियों, शिक्षण–पद्धतियों, विभिन्न चयन–प्रक्रमों, पदोन्नति नियमों, शिक्षकों के त्याग–पत्रों आदि का अनुवर्ती अध्ययन इस प्रयोजन से किया जाता है ताकि शिक्षा–जगत की इन गतिविधियों व कार्यकलापों का स्वरूप ठीक–ठीक मूल्यांकित किया जा सके तथा भविष्य में इन अनुभवों के आधार पर उपयुक्त सुधार किया जा सके व भावी शैक्षिक नियोजन व नीति–निर्धारण में अतीत की त्रुटियों से मार्ग–दर्शन उपलब्ध हो सके तथा इस सम्बन्ध में वर्तमान स्थिति की उपयुक्तता व अनुपयुक्तता का आकलन किया जा सके ।

4.6.5.4 मूल्यांकन सर्वेक्षण – पाठ्यक्रम, विद्यालय, विद्यार्थी, शिक्षण–पद्धति व शिक्षक आदि शिक्षा से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण तत्व ऐसे होते हैं जिनके मूल्यांकन की समय–समय पर निरन्तर आवश्यकता पड़ती रहती है, ताकि शैक्षिक उपलब्धियों व उपनतियों का यथार्थ व विशुद्ध ज्ञान सतत रूप से उपलब्ध होता रहे । ऐसे सर्वेक्षण में अधिकतर मानवीय तत्वों के मापन व मूल्यांकन पर अधिक बल रहता है। ऐसे अध्ययन के लिए व्यक्तित्व अनुसूचियों, चिन्हांकन सूचियों, पदांकन विधियों, निर्धारण मापनियों व अभिवृत्ति मापनियों आदि का व्यापक उपयोग किया जाता है । इस प्रकार के अध्ययनों से शैक्षिक प्रगति के सम्बन्ध में पूर्व–कथन किया जा सकता है तथा वर्तमान स्थिति के विषय में आकलन लगाया जा सकता है ।

4.6.6 सर्वेक्षण अनुसन्धान का विधि–तन्त्र –

करलिंगर के अनुसार सर्वेक्षण अनुसन्धान के लिए पहले एक निश्चित योजना तैयार करनी चाहिए । इस योजना के अन्तर्गत अनुसन्धान कार्यक्रम की पूर्ण रूपरेखा की रचना की जाती है तथा उस रूप रेखा के मुख्य छः चरण होते हैं । अग्रवाल ने इसी आधार पर विद्यालय सर्वेक्षण के मुख्य सोपानों का वर्णन किया है ।

1. प्रथम पद में योजना तैयार करने के लिए सर्वेक्षण अनुसन्धान समस्या को निश्चित तथा स्पष्ट रूप प्रदान किया जाता है । इस कार्य हेतु इस सोपान में समस्या का स्पष्टीकरण, समस्या के उद्देश्यों का निर्माण, समस्या के अध्ययन हेतु उपयुक्त यन्त्र का चयन जैसे–साक्षात्कार, अनुसूची अथवा डाक–प्रश्नावली आदि का चयन एवं अनुसन्धान प्रतिमान की रचना जैसे कार्यों की योजना तैयार की जाती है ।

2. द्वितीय पद में समष्टि के आधार पर प्रतिचयन की योजना तैयार की जाती है । इस सोपान में समष्टि के स्वरूप को सीमाबद्ध करना, प्रतिचयन की व्याख्या एवं यादृच्छिक प्रतिदर्श के उपयोग के महत्व पर कार्य किया जाता है ।

3. तृतीय पद में विद्यालयों के सर्वेक्षण अनुसन्धान हेतु उपयुक्त उपकरण की संरचना की जाती है । विद्यालय सर्वेक्षण के उद्देश्यों के आधार पर प्रश्नोत्तरी, परीक्षण, रेटिंग स्केल, स्कोर कार्ड, अनुसूची या साक्षात्कार अनुसूची आदि में से किसी एक या दो या दो से ज्यादा उपकरणों का भी उपयोग किया जाता है ।

4. चतुर्थ पद में उपयुक्त उपकरणों की सहायता से समस्या से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन किया जाता है इस कार्य हेतु घटना स्थल पर अध्ययन, कमबद्ध रूप से क्षेत्र कार्यकर्ताओं के अध्ययन की जाँच करना एवं असहयोगी उत्तरदाताओं से सम्पर्क करना होता है ।

5. पंचम पद में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन का कार्य किया जाता है । इस प्रकिया में अनुकियाओं का संकेतीकरण, अन्तर्वस्तु विश्लेषण एवं अनुकियाओं का सारणीयन किया जाता है ।

6. षष्ठम पद में उपर्युक्त पाँचों पदों के आधार पर विद्यालय सर्वेक्षण अनुसन्धान का प्रतिवेदन तैयार कर प्रस्तुत किया जाता है । इस प्रतिवेदन में विद्यालय सर्वेक्षण का निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये जाते हैं ।

अनुसन्धान प्रतिवेदन को छः अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत किया जा सकता है । यथा –

1. प्रस्तावना – अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व ।
2. समस्या – चयन, पृष्ठभूमि, सीमांकन आदि ।
3. उपकरण एवं आँकड़ों का संकलन ।
4. विश्लेषण एवं अर्थापन ।
5. अध्ययन एवं सुझाव ।
6. परिशिष्ट।

सर्वेक्षण अनुसन्धान के उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण विधि का मुख्य उद्देश्य होता है कि समस्या के वर्तमान स्वरूप के संबन्ध में ज्ञान प्राप्त करना । अर्थात समस्या या घटना का विवरण देना । इस प्रकार सर्वेक्षण अनुसन्धान से तीन प्रकार की सूचनायें एकत्रित की जाती हैं –

I. वर्तमान स्थिति क्या है ?

II. हम क्या चाहते हैं ?

III. उन्हें कैसे पा सकते है ?

करलिंगर (1986) के अनुसार सर्वेक्षण अनुसन्धान के शिक्षा जगत् में अनेक उपयोग हैं परन्तु फिर भी, इस क्षेत्र में इसका व्यापक उपयोग नहीं हो रहा है । सर्वेक्षण के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन अत्यधिक उपयुक्त रहता है। इसके द्वारा शिक्षा सम्बन्धी तथ्यों के संकलन में विशेष सुविधा मिलती है । विद्यालय सर्वेक्षण अनुसन्धान, विशेषतः सामयिक(पैनल) सर्वेक्षण के उपयोग की विद्यालयों में व्यवस्था, शिक्षण पद्धतियों के मूल्यांकन व सामान्य प्रगति के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है । इससे शिक्षा व्यवस्था के प्रति समुदाय की अभिवृत्तियों व विश्वासों की जानकारी में भी सहायता मिलती है ।

शोधार्थी ने सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि की विविध विशेषताओं का महत्व समझते हुए तथा अपने शोध शीर्षक की प्रकृति के आधार पर अपने शोध कार्य हेतु इसका उपयोग करने का निश्चय किया । शिक्षा के क्षेत्र में शोधकार्य हेतु इस विधि की उपयोगिता का महत्व देखते हुए शोधार्थी को शोधकार्य हेतु इस विधि का उपयोग उचित लगा ।

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में 'विद्यालय सर्वेक्षण अनुसन्धान' एवं 'प्रलेखी सर्वेक्षण अनुसंधान' विधियों का समुचित उपयोग करने का प्रयास किया है।

उपरोक्त वर्णित दोनों अनुसन्धान विधियों का उपयोग करते हुए शोधार्थी ने अपने शोधकार्य "बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन" हेतु विभिन्न स्रोतों से प्रमाणिक, वैध एवं विश्वसनीय सूचनाओं एवं आँकड़ों का संग्रह किया ।

4.7 शोधकर्ता द्वारा प्रयुक्त अनुसन्धान विधि–तन्त्र का विश्लेषण –

बुन्देलखण्ड क्षेत्र का फैलाव उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश दो राज्यों में है । ऐसे में शोधार्थी ने अपने शोधकार्य का सीमांकन करते हुए उत्तर प्रदेश क्षेत्र के बुन्देलखण्ड को चुना । इस का विस्तार वर्तमान उत्तर प्रदेश के सात जिलों में है । बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक वर्णन दोनों राज्यों के सम्मिलित बुन्देलखण्ड के रूप में प्राप्त होता है । ऐसे में शोधार्थी को बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सीमांकन में थोड़ी कठिनाई अनुभव हुई । इस शोध प्रबन्ध में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड के इतिहास एवं भूगोल का ही वर्णन किया गया है ।

'विद्या भारती' एवं 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं' का इतिहास एवं विकास की जानकारी प्राप्त करने लिए इनसे सम्बन्धित साहित्यों का अध्ययन करने के

साथ ही साथ इण्टरनेट के स्रोतों का भी उपयोग किया गया है । इन संस्थाओं से सम्बद्ध वरिष्ठ अधिकारियों एवं प्रधानाचार्यों से शोधार्थी ने साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी एकत्रित की है ।

उत्तर प्रदेश में एवं उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत सम्मिलित सात जिलों में शिक्षा के विकास का अध्ययन करने के लिए विभिन्न सरकारी अभिलेखों, शोधग्रन्थों एवं अन्य स्त्रोतों का उपयोग किया गया है ।

शोधार्थी ने शोध के लिए आँकड़े प्राथमिक स्रोतों एवं गौढ़ स्रोतों से प्राप्त करने का प्रयत्न किया है । शोधकर्ता ने लिखित और मौखिक माध्यमों में – वृतांत, कथा, जीवन वृतांत, दैनन्दनी, वंशावलियों, शिलालेखों, गाथाओं, कहानियों, उपाख्यान, चित्र एवं मूर्तियों आदि से प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किया है ।

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिए प्रतिचयनित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के विद्यालयों का वातावरण, विद्यालय भवन, साज–सज्जा, छात्र–छात्राओं का शैक्षिक विकास, शैक्षिक क्रियाऐं, विद्यालयों की समयावधि, विकास, पाठ्य पुस्तकों सहित विद्यालय के विषय में अन्य बहुत सी जानकारियाँ एकत्रित कीं । इसके साथ–साथ समाचार पत्रों के लेख, पत्रिकायें, निजी सामग्री एवं साहित्य सामग्री को अपने शोध में सम्मिलित किया है ।

उपर्युक्त विधियों से प्राप्त आँकड़ों एवं बिन्दुओं को विद्यालयवार एकत्रित कर, विभिन्न प्रकरणों में विभजित कर, सूची बनाकर उनका वर्गीकरण किया है। वर्गीकरण करते समय विद्यालय का स्थान, पाठयक्रम, पाठय पुस्तकें, शिक्षा का माध्यम, विद्यालयों की मान्यता, परीक्षा प्रणाली, भवन, परीक्षाफल, छात्र संख्या, प्रवेश प्रक्रिया, आर्थिक स्रोत,

शासन के नियम आदि बिन्दुओं को यथा स्थान सारणी बनाकर उनका वर्गीकरण किया गया है ।

शोधकर्ता ने मूल्यांकन करते समय आँकड़ों को आंतरिक एवं बाह्य आधार पर कमबद्ध किया है । शोधकर्ता ने प्राथमिक स्रोतों एवं माध्यमिक स्रोतों को कमबद्ध एवं तथ्यपूर्ण तरीके से लेकर परीक्षण किया एवं शोध की आलोचना लिखते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा –

1. इतिहासकारों में लेखक कौन था ? उसका व्यक्तित्व एवं योग्यता कैसी थी ?
2. घटना की स्थिति, रूचि, समय अन्य प्रमाण पत्रों से कहां तक मिलता है ?
3. लेखक का प्रभावित होना, पर्याप्त अवसर, प्रत्यक्षदर्शिता, निरीक्षण, दबाव, भय, धारणायें आदि लेखक में विद्यमान तो नहीं थी ।

शोधार्थी ने अपने शोध को सरल बनाने के लिए निम्न प्रकिया का पालन किया –

1. शोधार्थी ने शोध के लिए ऐसे क्षेत्र को चुनाव किया जिसमें पर्याप्त प्रमाण और अनुसन्धान सामग्री उपलब्ध थी ।

2. शोधार्थी का प्रयास यह रहा है कि प्राथमिक साधन ही शोध में स्थान पा सकें, तथा आवश्यकतानुसार सामान्य रूप से माध्यमिक साधन भी शोध में हों ।

3. शोधार्थी ने शोध शीर्ष को परिभाषित कर शोध को आगे बढ़ाया एवं व्यक्तिगत पक्षपातों का बचाव कर परिस्थतियों, वातावरण की स्थिति के संदर्भ में शोध में

कार्य–कारण सम्बन्धों एवं आँकड़ों के आधार पर अर्थ पूर्ण निष्कर्ष निकाले गये है ।

शोधार्थी ने अपने शोध में निम्न त्रुटियों से बचने का प्रयास किया है – आँकड़ों को शोध हेतु सरल बनाने का प्रयास नहीं किया और न ही स्वल्प सामग्री को आधार बनाया है । सामान्य एवं विशिष्ट तथ्यों में भेद रखा है ।

शोधार्थी ने विद्यालय सर्वेक्षण के लिए डाक–प्रश्नावली सर्वेक्षण, साक्षात्कार सर्वेक्षण तथा दूरभाष सर्वेक्षणों का सम्मिलित रूप में उपयोग किया है ।

शोधार्थी ने सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के सर्वेक्षण में सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि की प्रतिदर्श चयन प्रक्रिया का पालन किया है जिससे वह अपने शोधकार्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर सके । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में उच्च प्राथमिक/जूनियर हाईस्कूल/मिडिल स्तर (कक्षा 6–8), माध्यमिक स्तर के हाई स्कूल (कक्षा 9–10) तथा इण्टरमीडिएट स्तर (कक्षा 11–12) की शिक्षा देने वाले 60 से भी अधिक सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थायें बालक एवं बालिकायें को शिक्षा देने का कार्य सत्र 2003–2004 तक कर रही हैं । शोधार्थी ने हाईस्कूल स्तर या इण्टरमीडिएट स्तर तक की शिक्षा देने वाले ही सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का चयन अपने शोधकार्य में प्रतिदर्श हेतु किया है । हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की शिक्षा देने वाले बालक एवं बालिका विद्या मन्दिर विद्यालयों की संख्या बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में, सत्र 2003–2004 तक, तीस (30) थी । शोधकर्ता ने इन समस्त तीसों विद्या मन्दिरों को अपने शोध कार्य में प्रतिदर्श के रूप में उपयोग किया है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सातों जिलों में फैले हुए सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का सर्वेक्षण कोई आसान कार्य नहीं था। कम समय में इन सभी

विद्यालयों का सर्वेक्षण करने के लिए शोधार्थी ने एक स्वनिर्मित प्रश्नावली को तैयार कर उसे डाक के माध्यम से प्रतिदर्श समस्त विद्यालयों मे प्रेषित किया । तत्पश्चात् उनका संग्रह शोधार्थी द्वारा किया गया ।

शोधार्थी ने 113 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से विद्यालय का स्थापना वर्ष, भवन, छात्र संख्या, विद्यालय समिति के विषय में जानकारी, वित्त व्यवस्था, प्रवेश प्रक्रिया, हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या एवं प्रतिशत, कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था, निर्देशन एवं परामर्श सेवा की व्यवस्था, आसन व्यवस्था, लोकतांत्रिक भावना, राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों के विकास की व्यवस्था, विद्यालय उपलब्धि, आचार्य वेतन एवं दैनिक क्रियाओं आदि से सम्बन्धित विषयों का व्यापक सर्वेक्षण कर अपने शोधकार्य के लिए आँकड़े एकत्रित किये हैं।

शोधार्थी ने विद्यालयशः प्रश्नावलियों से आँकड़े एकत्रित कर विभिन्न सारणियों का निर्माण किया । शोध के उद्देश्यों को दृष्टिगत् रखते हुए आँकड़ों का सारणीयन किया गया है । सारणीयन के पश्चात् आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है । ग्राफों एवं पाईचार्टों के माध्यम से आँकड़ों को प्रस्तुत कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है । इस प्रकार प्रतिदर्शों से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर शोधकर्ता ने सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का वर्णन किया है ।

शोधार्थी द्वारा विद्यालयों से आँकड़े एवं विभिन्न सूचनायें एकत्रित करने के लिए प्रयुक्त की गई प्रश्नावली को परिशिष्टका क्रमाँक 6 में संलग्न किया गया है ।

4.8 शोधकार्य हेतु प्रयुक्त प्रतिदर्श का विश्लेषण –

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सम्पूर्ण भू–भाग में 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' से सम्बद्ध साठ (60) से भी अधिक सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान यहाँ के निवासियों को विद्यालयी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं । यह शिक्षा संस्थान 'जूनियर हाईस्कूल', 'हाईस्कूल' एवं 'इण्टरमीडिएट' स्तरों की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में यह शिक्षा संस्थान मुख्यतः जिला मुख्यालय, तहसील एवं कस्बा स्तर पर शिक्षारत् हैं । यह विद्यालय 'बालक', 'बालिका' एवं 'सहशिक्षा' तीनो वर्गों के हैं ।

शोधार्थी ने अपने शोधकार्य की वैधता, विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता को उच्च श्रेणी का बनाने के लिए बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में कार्यरत् 60 से भी अधिक सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में से केवल उन्हीं शिक्षा संस्थानों का चयन किया गया है जो कम से कम 'हाईस्कूल स्तर' की मान्यता प्राप्त हों । सत्र 2003–2004 तक इस प्रकार के 30 विद्यालय बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) में शिक्षारत् हैं । इनमें से 11 विद्या मन्दिर इण्टरमीडिएट स्तर की भी मान्यता प्राप्त हैं ।

शोधकर्ता ने हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त इस क्षेत्र के समस्त तीसों सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को अपने शोध अध्ययन में सम्मिलित किया है । इस प्रकार शोधार्थी द्वारा इस क्षेत्र के हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त समस्त 30 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को 'प्रतिदर्श' के रूप में प्रयुक्त किया गया है ।

शोधकर्ता को प्रतिदर्श के 30 विद्या मन्दिर संस्थाओं में से 23 संस्थानों से समय से, पूर्णरूप से पूरित प्रश्नावलियाँ प्राप्त हुईं । इन्हीं 23 संस्थाओं के 'प्रतिदर्श' का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा रहा है ।

(प्रतिदर्श सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की विस्तृत सूची परिशिष्टका कमाँक –5 में संलग्न है ।)

शोधार्थी द्वारा प्रयुक्त न्यादर्श के सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् प्रस्तुत 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का 'जनपद' एवं 'क्षेत्रवार' विवरण प्रस्तुत करती हुई 'दण्डाकृति' रेखाचित्र कमाँक 4.1 से यह स्पष्ट है कि न्यादर्श में सर्वाधिक आठ (8) विद्यालय झाँसी जनपद के 6 विद्यालय जालौन जनपद के, एक ललितपुर का, दो (2) बाँदा के, तीन (3) हमीरपुर के, दो (2) महोबा एवं एक चित्रकूट जनपद का है ।

'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों के प्रतिदर्श की 'क्षेत्रवार' 'चक्राकृति' रेखाचित्र कमाँक 4.2 से स्पष्ट है कि न्यादर्श में मात्र 3 विद्यालय कस्बे के हैं; शेष 20 में से 10 जिला मुख्यालयों पर एवं 10 तहसीलों पर स्थित हैं ।

प्रतिदर्श में सर्वाधिक संख्या (11) 'बालक वर्ग' के संस्थानों की है । 'सहशिक्षा' के 8 एवं 'बालिकाओं' के 4 संस्थान प्रतिदर्श में सम्मिलित हैं । यह विश्लेषण 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के न्यादर्श का विद्यालय के वर्गानुसार 'चक्राकृति' रेखाचित्र कमाँक–4.3 से स्पष्ट है। 'बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिरर संस्थाओं के प्रतिदर्श का 'विद्यालय का मान्यता स्तर के आधार पर रेखा चित्र कमाँक 4.4 यह स्पष्ट कर रहा है कि न्यादर्श में इण्टरमीडिएट की मान्यता स्तर के 11 विद्यालय एवं मात्र हाईस्कूल स्तर की मान्यता के 12 विद्यालय हैं ।

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शोध समस्या "बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का

अध्ययन'', का अध्ययन, विश्लेषण एवं निष्कर्ष बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) के सातों जनपदों के जिला मुख्यालय, तहसील एवं कस्बे के 'बालक', 'बालिका', एवं 'सहशिक्षा' के मात्र 'हाईस्कूल' मान्यता प्राप्त 12 विद्या मन्दिर एवं 'इण्टरमीडिएट' की मान्यता प्राप्त 11 विद्या मन्दिरों के प्रतिदर्श के आधार पर सम्पन्न एवं निगमित किया गया है ।
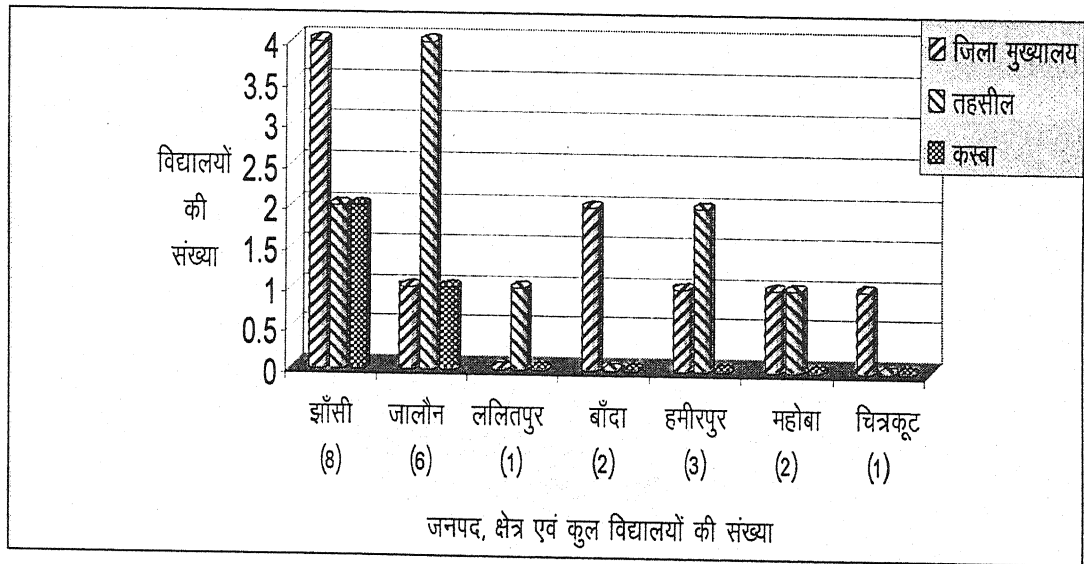
बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का जनपद एवं क्षेत्रवार विवरण प्रस्तुत करती हुई स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–4.1
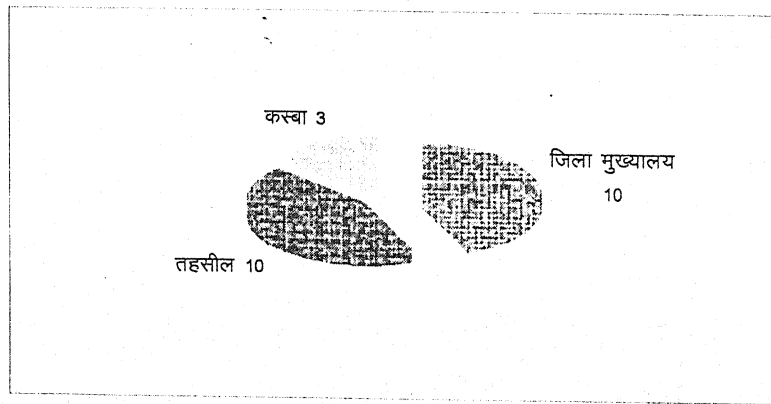
बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श की क्षेत्रवार विवरण की चक्राकृति रेखाचित्र कमाँक–4.2
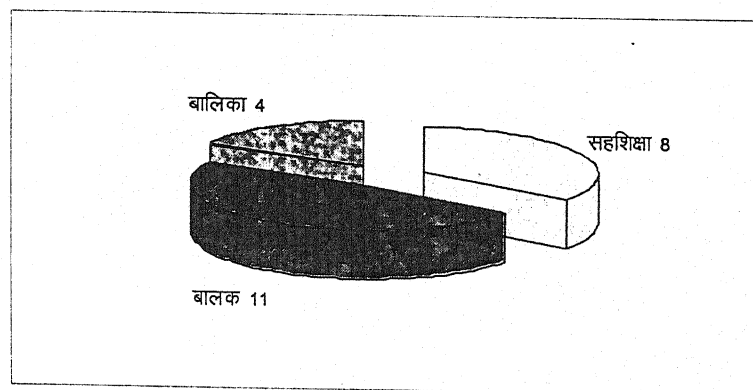
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का विद्यालय के वर्गानुसार चक्राकृति रेखाचित्र कमाँक–4.3
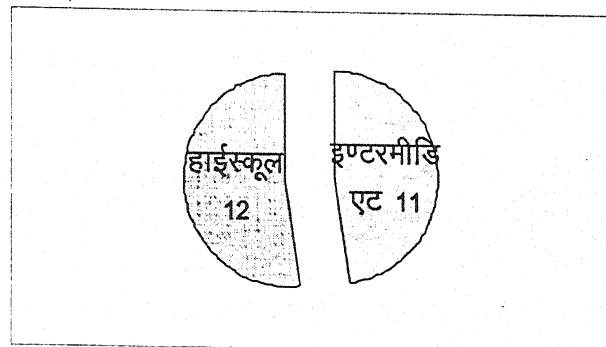
बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रतिदर्श का विद्यालय का मान्यता स्तर के आधार पर चक्राकृति रेखाचित्र कमाँक–4.4

पंचम
अध्याय

पंचम अध्याय

आँकड़ों का वर्गीकरण विश्लेषण एवं सांख्यकीय व्याख्या

आँकड़ों का संग्रहण एक अत्यन्त ही जटिल प्रकिया है । शोध कार्य के निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर शोधकर्ता द्वारा सम्बन्धित आँकड़ों को संकलित एवं एकत्रित किया गया है । इस जटिल प्रक्रिया के पश्चात् एक दुरूह कार्य प्रारम्भ होता है, संग्रहीत आँकड़ों का वर्गीकरण करना । शोधार्थी अपने शोध कार्य के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को लक्ष्य बनाकर संग्रहित आँकड़ों का वर्गीकरण इस प्रकार करता है कि वर्गीकृत आँकड़ों का अर्थापन एवं विश्लेषण कर तार्किक एवं अर्थपूर्ण व्याख्या की जा सके ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा किये जा रहे शैक्षिक योगदान का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र का चयन किया है । इस क्षेत्र में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाली सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की संख्या साठ (60) से भी अधिक है । यह संस्थाऐं इस सम्पूर्ण क्षेत्र के जिला मुख्यालय, तहसील, कस्बा एवं ग्राम स्तर पर कार्यरत् हैं । शोधकर्ता ने प्रतिदर्श प्रविधि का उपयोग कर इस क्षेत्र में 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' द्वारा मान्यता प्राप्त सभी विद्या मन्दिर संस्थाओं को अपना प्रतिदर्श बनाया । इस परिषद से इस क्षेत्र में तीस संस्थाऐं (सत्र 2003–2004 में) 'हाईस्कूल' व 'इण्टरमीडिएट' स्तर की मान्यता प्राप्त कर चुकी थीं । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं किसी अन्य 'परिषद' से मान्यता प्राप्त नही हैं ।

शोधकर्ता द्वारा 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' से मान्यता प्राप्त इस क्षेत्र के इन सभी तीसों 'विद्या मन्दिरों' को प्रतिदर्श बनाकर अपने शोधकार्य के लिए

आँकड़े एकत्रित करने का लक्ष्य रखा गया । प्रतिदर्श विद्या मन्दिरों में से तेईस (23) विद्या मन्दिरों से शोधकर्ता को सकारात्मक सहयोग प्राप्त हुआ । इन तेईस (23) विद्या मन्दिरों से स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से शोधकर्ता ने आँकड़ों को एकत्रित किया है ।

शोधकर्ता ने अपने द्वारा संग्रहित किये गये आँकड़ों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए उन्हें सरल, सुबोध एवं तार्किक रूप में विभिन्न तालिकाओं में वर्गीकृत करने का निश्चय किया ।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा संग्रहित आँकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं सांख्यकीय व्याख्या प्रस्तुत की गई है । यह कार्य अत्यन्त लम्बा एवं जटिलताओं से पूर्ण है । संग्रहित आँकड़ों की तार्किक, अर्थ पूर्ण व्याख्या एवं सरल अवबोध हेतु शोधकर्ता ने इस कार्य को दो चरणों में पूर्ण किया है ।

फलतः प्रस्तुत अध्याय को दो खण्डों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम खण्ड – खण्ड– 'क' – आँकड़ों का वर्गीकरण
द्वितीय खण्ड – खण्ड– 'ख' – आँकड़ों का विश्लेषण एवं सांख्यकीय व्याख्या

खण्ड –'क' – इस प्रथम चरण में प्रतिदर्श सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं से प्राप्त आँकड़ों को विभिन्न शीर्षकों के अर्न्तगत चौबीस (24) तालिकाओं में क्रमबद्ध एवं वर्गीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

खण्ड – 'ख' – इस द्वितीय चरण में खण्ड–'क' की तालिकाओं का क्रमशः गहन रूप में विश्लेषण कर, रेखाचित्रों के माध्यम से सरल शब्दों में व्याख्या प्रस्तुत की गई है । व्याख्या द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित 'शोध परिकल्पनाओं' की सत्यता या असत्यता का वर्णन भी प्रस्तुत किया गया है ।

खण्ड – 'क'

आँकडों का वर्गीकरण

तालिका क्रमाँक – 5.1

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना से सम्बन्धित सूचनाएँ

क्र0	विद्यालय का नाम एवं स्थान	स्थापना वर्ष	स्थापना वर्ष में संचालित कक्षाएँ	स्थापना वर्ष में विद्यालय का स्तर	स्थापना वर्ष में भवन का स्वामित्व	विद्यालय का वर्ग	शिक्षण का माध्यम
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	1987	6 से 7	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	बालक	हिन्दी
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	1993	6	जूनियर हाईस्कूल	स0शि0म0	बालक	हिन्दी
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	1994	6 से 7	जूनियर हाईस्कूल	दान का	सहशिक्षा	हिन्दी
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	1985	6	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	सहशिक्षा	हिन्दी
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	1997	6	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	बालक	हिन्दी
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	1988	6	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	सहशिक्षा	हिन्दी
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	1979	6	जूनियर हाईस्कूल	स0शि0म0	बालक	हिन्दी
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	1983	6 से 8	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	बालक	हिन्दी
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	1989	6	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	सहशिक्षा	हिन्दी
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	1979	6 से 8	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	बालक	हिन्दी
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	1985	6	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	सहशिक्षा	हिन्दी
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	1988	6 से 8	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	सहशिक्षा	हिन्दी
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	1978	6	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	बालक	हिन्दी
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	1980	6	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	बालक	हिन्दी
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	1978	6 से 8	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	बालक	हिन्दी
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	1986	6	जूनियर हाईस्कूल	किराये का	सहशिक्षा	हिन्दी
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	1978	6 से 7	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	बालक	हिन्दी
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	1986	6 से 8	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	सहशिक्षा	हिन्दी
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	1985	6	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	बालक	हिन्दी
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	1995	6	जूनियर हाईस्कूल	दान का	बालिका	हिन्दी
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	2000	6	इण्टरमीडिएट	स0शि0म0	बालिका	हिन्दी
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	1993	6 से 8	जूनियर हाईस्कूल	स्वयं का	बालिका	हिन्दी
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	1991	6	जूनियर हाईस्कूल	स0शि0म0	बालिका	हिन्दी

तालिका क्रमाँक – 5.2

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना से वर्तमान सत्र (2003 – 2004) तक विद्यालय भवनों की दशा एवं स्थिति

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	स्थापना के समय			वर्तमान समय में (सत्र 2003–2004 तक)		
		भवन का स्वामित्त	भवन की दशा	भवनों में कक्षों की संख्या	भवन का स्वामित्त	भवन की दशा	भवनों में कक्षों की संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	स्वयं का	पक्काएवंछप्पर	4	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	37
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	स.शि.मं.का.	पक्का कंक्रीट	1	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	20
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	अन्य के द्वारा	पक्का कंक्रीट	10	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	12
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	29
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	किराये का	पक्का कंक्रीट	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	18
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	किराये का	पक्का कंक्रीट	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	14
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	स.शि.मं.का.	पक्का कंक्रीट	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	38
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	किराये का	पक्का कंक्रीट	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	35
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	किराये का	पक्काएवंछप्पर	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	16
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	किराये का	पक्काएवंछप्पर	–	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	28
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	स्वंय का	पक्का कंक्रीट	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	13
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	13
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	किराये का	पक्काएवंछप्पर	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	30
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	किराये का	कच्चा छप्पर	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	34
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	5	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	30
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	किराये का	कच्चा छप्पर	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	14
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	स्वयं का	पक्काएवंछप्पर	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	40
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	20
19	वै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	4	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	10
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	दान का	पक्का कंक्रीट	3	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	10
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	स.शि.मं.का.	पक्का कंक्रीट	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	12
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	स्वयं का	पक्काएवंछप्पर	6	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	18
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	स.शि.मं.का.	पक्का कंक्रीट	2	स्वयं का	पक्का कंक्रीट	12

तालिका क्रमाँक – 5.3

वर्तमान समय में (सत्र 2003–2004 तक) सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के विद्यालय भवनों में कक्षों का उपयोग

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	वर्तमान समय मे संचालित कक्षाएँ	कक्षों की कुल संख्या	कक्षा कक्षों की संख्या	प्रयोगशाला कक्षों की संख्या	प्रशासनिक उपयोग हेतु कक्षों की संख्या	पुस्तकालय कक्षों की संख्या	क्रीड़ा कक्षों की संख्या	संगीत कक्षों की संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	6 से 12	37	21	6	3	1	1	1
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	6 से 10	20	12	3	2	1	1	1
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	6 से 10	12	7	1	2	1	1	0
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	6 से 12	29	14	4	3	1	1	1
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	6 से 10	18	10	3	2	0	0	0
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	6 से 10	14	9	1	2	1	0	0
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	6 से 12	38	21	3	3	1	1	1
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	6 से 12	35	19	4	4	1	1	1
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	6 से 10	16	10	3	2	1	0	0
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	6 से 12	28	16	4	3	1	1	1
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	6 से 10	13	7	1	2	1	0	0
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	6 से 10	13	10	1	1	1	0	0
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	6 से 12	30	21	3	3	1	0	1
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	6 से 12	34	16	6	2	0	0	1
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	6 से 12	30	17	5	2	1	0	1
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	6 से 10	14	10	1	2	0	0	1
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	6 से 12	40	18	5	2	1	1	1
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	6 से 12	20	13	1	2	1	0	0
19	वै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	6 से 10	10	5	1	2	1	0	0
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	6 से 10	10	8	1	1	0	0	0
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	6 से 12	12	8	2	2	0	0	0
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	6 से 10	18	12	3	2	0	0	1
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	6 से 10	12	9	1	1	0	0	1

तालिका क्रमाँक – 5.4

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को विभिन्न स्तरों की मान्यता प्राप्ति का वर्ष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	जूनियर हाईस्कूल की मान्यता प्राप्ति का वर्ष	हाईस्कूल की मान्यता प्राप्ति का वर्ष	इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्ति का वर्ष	हाईस्कूल की मान्यता प्रदान करने वाली परिषद का नाम	इण्टरमीडिएट की मान्यता प्रदान करने वाली परिषद का नाम	इण्टरमीडिएट में मान्यता प्राप्त वर्ग
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	1990	2000	2002	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	1997	2000	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	1999	2002	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	1985	1997	2002	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	1998	2002	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	1992	2000	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	1980	1991	1996	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	1986	1994	1996	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	1992	1997	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	1980	1995	1999	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	1988	2001	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	1988	2003	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	1980	1995	2001	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञानएवंवाणिज्य
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	1980	1995	1999	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	1980	1997	1999	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	1988	2001	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	1980	1995	1998	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	1986	1999	2003	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
19	बै.भा.स. वि.म.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	1987	2001	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	1998	2000	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
21	स.बालिका वि.म.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	2000	उ0प्र0 बोर्ड	उ0प्र0 बोर्ड	विज्ञान
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	1998	1999	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	1993	2003	–	उ0प्र0 बोर्ड	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.5

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों एवं आचार्यों की संख्या में सत्रशः क्रमिक वृद्धि एवं प्रति आचार्य छात्र अनुपात

क्र.स.	विद्यालय का नाम एंव स्थान	2003 – 2004			2002 – 2003			2001 – 2002			2000 – 2001		
		छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	1100	31	35.5	1008	30	33.6	840	26	32.3	810	22	36.8
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	465	12	38.8	460	12	38.3	400	10	40	350	8	43.8
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	300	9	33.3	290	9	32.2	260	7	37.1	200	5	40
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	830	25	33.2	800	20	40	750	17	44.1	700	17	41.2
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	360	13	27.7	299	11	27.2	240	10	24	205	9	22.8
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	323	13	24.9	302	11	27.5	244	9	27.1	266	9	29.6
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	1124	34	33.1	1106	35	31.6	1113	33	33.7	1075	32	33.6
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	1250	30	41.7	1100	30	36.7	900	28	32.1	860	25	34.4
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	356	13	27.4	350	13	26.9	354	12	29.5	340	11	30.9
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	975	22	44.3	900	22	40.9	885	22	40.2	801	20	40.1
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	325	12	27.1	350	11	31.8	300	10	30	360	11	32.7
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	317	14	22.6	172	14	12–3	163	13	12–5	147	11	13.4
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	1284	35	36.7	1183	33	35.8	1050	30	35	980	28	35
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	1150	26	44.2	1050	24	43.8	1080	22	49.1	1030	18	57.2
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	750	24	31.3	760	20	38	790	18	43.9	730	19	38.4
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	410	14	29.3	358	13	27.5	260	12	21.7	245	10	24.5
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	450	17	26.5	460	17	27.1	470	17	27.6	450	17	26.5
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	439	14	31.4	349	12	29.1	285	11	25.9	269	12	22.4
19	वै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	295	8	36.9	282	8	35.3	280	8	35	270	8	33.8
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	172	11	15.6	154	11	14	183	10	18.3	173	8	21.6
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	341	11	31	225	9	25	180	7	25.7	70	5	14.0
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	285	13	21.9	265	12	22.1	228	10	22.8	165	9	18.3
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	250	11	22.7	195	9	21.7	156	9	17.3	128	6	21.3

तालिका क्रमाँक – 5.5 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	1999 – 2000			1998 – 1999			1997 – 1998			1996 – 1997		
		छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	790	19	41.6	635	15	42.3	560	12	46.7	416	11	37.8
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	280	8	35	260	8	32.5	200	6	33.3	180	4	45
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	130	5	26	120	4	30	106	4	26.5	89	4	22.3
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	660	16	41.3	600	15	40	550	15	36.7	430	14	30.7
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	175	8	21.9	170	6	28.3	178	4	44.5	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	252	7	36	249	8	31.1	218	8	27.3	214	9	23.8
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	1006	30	33.5	965	30	32.2	882	30	29.4	859	30	28.6
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	850	25	34	810	25	32.4	775	24	32.3	750	24	31.3
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	342	11	31.1	348	10	34.8	114	10	11–4	112	9	12–4
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	760	18	42.2	775	15	51.7	700	15	46.7	600	15	40
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	340	11	30.9	320	12	26.7	280	10	28	215	8	26.9
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	143	12	11–9	148	12	12–3	167	11	15.2	152	12	12–7
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	905	20	45.3	875	20	43.8	615	20	30.8	600	20	30
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	1028	18	57.1	990	18	55	850	15	56.7	800	15	53.3
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	705	18	39.2	600	16	37.5	615	11	55.9	500	11	45.5
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	260	8	32.5	210	7	30	180	5	36	180	5	36
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	435	17	25.6	400	17	23.5	380	17	22.4	320	15	21.3
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	262	12	21.8	267	12	22.3	259	11	23.5	194	11	17.6
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	162	6	27	162	6	27	160	6	26.7	157	6	26.2
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	160	10	16	162	7	23.1	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	38	5	7–6	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	137	9	15.2	111	8	13.9	81	7	11–6	79	6	13.2
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	95	4	23.8	65	4	16.3	72	3	24	84	3	28

तालिका क्रमाँक – 5.5 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	1995 – 1996			1994 – 1995			1993 – 1994			1992 – 1993		
		छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	340	101	34	315	10	31.5	270	9	30	235	8	29.4
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	185	4	46.3	175	4	43.8	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	248	14	17.7	205	13	15.8	210	13	16.2	204	12	17
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि.मऊरानीपुर, झाँसी	220	9	24.4	196	7	28	198	8	24.8	181	6	30.2
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	813	30	27.1	764	28	27.3	660	25	26.4	678	24	28.3
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	510	24	21.3	470	24	19.6	400	22	18.2	230	22	10–5
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	110	7	15.7	108	6	18	101	5	20.2	56	4	14.00
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	565	15	37.7	560	15	37.3	450	8	56.3	390	8	48.8
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	210	7	30	200	6	33.3	176	5	35.2	160	4	40
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	143	11	13.00	167	11	15.2	151	12	12.600	130	10	13-00
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	575	20	28.6	560	15	37.3	510	15	34	490	15	32.6
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	790	12	65.8	760	12	63.3	700	12	58.3	630	12	52.5
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	315	12	26.3	340	12	28.3	310	11	28.2	290	11	26.4
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	175	4	43.8	180	4	45	178	4	44.5	160	4	40
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	315	16	19.7	275	12	22.9	238	12	19.8	240	12	20
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	202	11	18.4	184	10	18.4	167	6	27.8	133	4	33.3
19	वै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	156	6	26	155	6	25.8	150	5	30	142	5	28.4
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	75	5	15	67	4	16.8	55	4	13.8	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	94	3	31.3	65	3	21.7	42	3	14	28	2	14

तालिका क्रमाँक –5·5 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	1991 – 1992			1990 – 1991			1989 – 1990			1988 – 1989		
		छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात	छात्र संख्या	आचार्य संख्या	आचार्य छात्र अनुपात
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	180	8	22.5	125	8	15.6	75	7	10.700	77	4	19.3
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	200	12	16.7	180	10	18	178	10	17.8	150	6	25
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	158	5	31.6	123	4	30.8	–	–	–	–	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	636	23	27.7	549	21	26.1	481	16	30.1	360	12	30
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	210	21	10	175	21	8.300	140	18	7.800	130	18	7.200
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	44	3	14.7	20	2	10	–	–	–	–	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	365	8	45.6	350	8	43.8	355	8	44.4	330	8	41.3
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	150	4	37.5	–	–	–	–	–	–	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	118	8	14.8	106	5	21.2	73	5	14.6	26	3	8.700
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	450	14	32.1	435	13	33.5	430	12	35.8	300	11	27.3
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	605	10	60.5	500	10	50	475	8	59.8	400	7	57.1
15	स.बाल म.इ.का., राठ , हमीरपुर	305	10	30.5	285	11	25.9	300	9	33.3	260	9	28.9
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	165	4	41.3	160	4	40	150	4	37.5	–	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	235	10	23.5	230	10	23	210	9	23.3	200	9	22.2
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	107	4	26.8	75	4	18.8	83	4	20.8	56	4	14
19	वै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	140	5	28	140	5	28	135	5	27	130	4	32.5
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.म.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	12	2	6	–	–	–	–	–	–	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.6

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः कक्षा – अष्टम (8वीं) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	2003–2004		2002–2003		2001–2002		2000–2001		1999–2000		1998–1999	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	150	150	165	165	155	155	150	150	148	148	150	150
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	81	81	84	84	84	84	85	84	61	61	71	71
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	48	48	64	64	57	57	36	36	41	41	34	34
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	120	118	118	118	115	115	113	110	110	108	105	105
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	78	78	57	57	40	40	30	30	22	22	22	22
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	65	65	56	55	53	53	67	67	81	80	65	64
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	161	161	162	162	150	150	153	153	152	152	158	158
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	105	105	105	105	105	105	110	110	110	110	105	105
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.म.उ.मा.वि., एट, जालौन	66	66	56	56	65	65	63	63	60	60	62	61
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोच, जालौन	104	104	105	103	120	117	110	110	116	112	112	102
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	51	51	58	58	36	36	61	61	66	66	80	80
12	स.उ.मा.वि.म.वि., महरौनी,ललितपुर	69	69	44	44	58	58	51	51	45	45	48	48
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	162	160	160	160	155	154	145	140	143	143	140	140
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	150	150	150	148	145	140	143	140	140	135	132	102
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	105	103	128	124	121	117	111	109	117	116	112	110
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	72	72	79	79	56	56	64	64	70	70	37	37
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	32	32	36	36	40	40	60	60	67	67	72	72
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	85	84	65	64	56	56	70	65	48	48	60	60
19	बै.भा.स. वि.म.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	56	56	55	55	54	54	50	50	50	50	50	50
20	स.बा.वि.म.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	42	40	31	30	42	40	30	30	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.म.,दतिया द्वार, झाँसी	55	55	--	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.म.इ.का., जालौन	64	64	54	52	40	40	44	44	21	21	23	23
23	स.बालिका.विद्या मन्दिर , बाँदा	48	48	49	48	33	33	30	30	28	28	18	18

तालिका क्रमाँक – 5.6 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	1997–1998		1996–1997		1995–1996		1994–1995		1993–1994		1992–1993	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	152	152	145	145	88	88	86	86	82	82	80	80
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	31	31	21	21	28	28	35	35	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	27	27	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	100	98	90	89	80	80	80	79	85	85	83	80
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	25	25	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	67	67	70	68	75	74	48	48	68	66	47	46
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	155	155	153	153	149	149	139	139	121	121	153	153
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	110	110	110	110	110	110	105	105	105	105	–	–
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	63	62	62	62	60	60	62	62	60	59	24	24
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	112	110	94	94	98	98	96	96	94	92	93	93
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	72	71	42	42	50	49	40	40	36	36	21	21
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी.ललितपुर	52	52	44	44	25	25	25	25	27	27	22	22
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	134	130	125	123	110	110	100	100	88	88	80	80
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	135	130	128	125	120	118	135	130	130	128	125	120
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	117	115	84	83	84	81	100	97	86	84	76	74
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	40	40	20	20	28	28	40	40	35	35	20	20
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	74	74	76	76	70	70	89	89	72	72	85	85
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	39	39	50	50	57	57	46	46	43	43	37	37
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	50	50	46	46	45	45	45	45	42	42	42	42
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	26	26	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	20	20	22	22	16	16	12	12	12	12	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.6 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	1991–1992		1990–1991		1989–1990		1988–1989		1987–1988		1986–1987	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	75	75	64	64	33	33	11	11	–	–	–	–
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	80	79	78	75	75	75	60	60	43	42	38	37
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	33	33	35	35	–	–	–	–	–	–	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	135	135	102	102	121	121	88	88	86	86	61	61
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.म.उ.मा.वि., एट. जालौन	24	24	20	20	–	–	–	–	–	–	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	91	91	92	90	95	93	90	88	81	80	72	70
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	16	16	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	24	24	15	15	–	–	–	–	–	–	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	78	78	75	75	72	72	70	70	65	63	49	48
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	120	120	100	99	75	75	60	60	50	50	45	45
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	93	90	68	63	81	80	67	66	66	64	65	63
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	29	29	26	26	18	18						
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	83	83	81	81	79	79	60	60	57	57	52	52
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	25	25	28	28	16	16	17	17	12	12		
19	वै.भा.स. वि.म.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	42	42	40	40	40	40	38	38	35	35	30	30
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.7

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः कक्षा–दशम् (हाईस्कूल)में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	2003–2004		2002–2003		2001–2002		2000–2001		1999–2000		1998–1999	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	157	157	113	113	155	149	122	112	70	70	62	62
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	97	97	96	96	48	48	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	69	60	37	34	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	117	116	112	99	102	90	95	94	80	78	50	49
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	45	44	37	29	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	72	70	35	35	33	33	30	26	26	22	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	161	161	204	188	173	162	178	177	163	154	154	152
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	180	179	135	132	110	109	105	103	90	90	85	82
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	80	77	100	90	87	67	48	46	51	51	48	32
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	175	153	169	118	164	117	123	73	103	67	101	94
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	53	52	65	60	53	48	62	55	–	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	30	28	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	227	227	220	220	210	210	148	145	136	127	118	112
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	181	176	150	140	156	125	136	103	125	111	102	101
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	114	112	131	123	129	104	112	92	99	83	71	69
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	87	83	56	50	–	–	–	–	–	–	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	91	76	120	95	112	90	117	88	117	87	121	101
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	70	53	48	40	42	39	29	25	31	21	–	–
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	60	59	51	46	32	30	19	18	–	–	–	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	28	28	30	30	40	40	30	29	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	45	45	35	32	17	16	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	48	43	57	57	29	25	26	22	18	15	9	9
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	33	33	22	21	23	21	–	–	–	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.7 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एंव स्थान	1997–1998		1996–1997		1995–1996		1994–1995		1993–1994		1992–1993	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	56	53	36	36	21	21	–	–	–	–	–	–
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	30	30	25	24	–	–	–	–	–	–	–	–
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	154	147	155	155	140	134	124	124	93	88	113	104
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	85	82	80	79	60	60	60	60	60	57	–	–
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	65	50	67	67	52	51	55	53	–	–	–	–
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	100	93	95	90	90	90	–	–	–	–	–	–
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	63	61	45	41	47	47	28	28	–	–	–	–
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	48	47	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	96	87	56	55	46	46	–	–	–	–	–	–
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.8

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः कक्षा द्वादश (इण्टरमीडिएट) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	2003–2004		2002–2003		2001–2002		2000–2001		1999–2000		1998–1999	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	145	127	90	87	56	56	–	–	–	–	–	–
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	92	92	50	47	–	–	–	–	–	–	–	–
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	93	93	118	117	96	95	74	73	79	76	61	59
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	185	184	170	169	160	160	130	129	120	115	115	110
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	137	132	70	68	62	62	40	35	20	19	46	26
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	97	92	57	57	52	–	–	–	–	–	–	–
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	115	107	79	71	97	84	78	65	–	–	–	–
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	88	86	93	65	57	50	48	47	42	40	–	–
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	60	57	60	58	58	56	47	45	32	32		–
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	50	50	45	40	37	36	28	26	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.8 का शेष

क्र.स.	विद्यालय का नाम एंव स्थान	1997–1998		1996–1997		1995–1996		1994–1995		1993–1994		1992–1993	
		नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या	नामांकित छात्र संख्या	उत्तीर्ण छात्र संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	29	29	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.9

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं छात्रों द्वारा माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0 की 'हाईस्कूल' एवं 'इण्टरमीडिएट' परीक्षाओं की 'मेधावी छात्रों' की प्रदेश सूची में स्थान प्राप्ति का विवरण

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	हाईस्कूल की प्रदेश सूची में स्थान	इण्टरमीडिएट की प्रदेश सूची में स्थान
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	1996 में 16वाँ स्थान , 2002 में 13वाँ स्थान	2003 में 23 वाँ स्थान
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	2001मे8वां एवं 11वां स्थान, 2002मे13वा,21वा22वा,23वास्थान	–
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	1994में 18वां,1998में10वां,2003में13वां,23वां स्थान	2003 में 17वां स्थान
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	1997 में 18 वां स्थान	–
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	1995 में 18वां,1997 में 16वां स्थान	1999 में 3 रा स्थान , 2001 में 23 वां स्थान
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	–	
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	2002 में 22वें स्थान एंव 23 वें स्थान पर दो छात्र	2002 में 18 वां स्थान
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	1999में7वां,16वां,19वां,21वां,एवं 2003 में25वांस्थान	2001 में 18 वां स्थान
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	–	2002 में 9 वां स्थान
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	2000 में 24 वां स्थान	–
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	2001 में 5 वां स्थान	–
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	2003में2रा,16वां,17वां,2004में 17वां,18वां,21,25वां	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	–	–
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.10

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्र प्रवेश प्रक्रिया सम्बन्धी जानकारी

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	प्रारम्भिक वर्षों में प्रवेश प्रक्रिया	वर्तमान समय में प्रवेश प्रक्रिया	हाईस्कूल में प्रवेश प्रक्रिया	इण्टरमीडिएट में प्रवेश प्रक्रिया	छात्रों का सन्तुष्टी स्तर	प्रवेश प्रक्रिया विद्यालय व्यवस्था में सहयोगी
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	सीधे प्रवेश	लिखित परिक्षा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	उल्लेख नही	हाँ
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	–	उल्लेखनही	हाँ
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	मैरिट	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा एवं मैरिट	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	मैरिट	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	सीधे प्रवेश	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	लिखित परीक्षा एवं मैरिट	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	लिखित परीक्षा	–	पूर्ण सन्तुष्ट	हाँ

तालिका क्रमाँक – 5.11
सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के आय के स्त्रोत

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	आर्थिक आधार पर विद्यालय का स्तर	वर्तमान में विद्यालय का आर्थिक स्त्रोत	किसी गैर सरकारी संस्था से आर्थिक सहायता की प्राप्ति	गैर सरकारी संस्था से सहायता प्राप्त मद का नाम	गैर सरकारी आर्थिक सहायता की वर्तमान स्थिति	गैर सरकारी आर्थिक सहायता के बन्द होने का वर्ष
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान,डोनेशन	नही	–	–	–
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान,डोनेशन	नही	–	–	–
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान,डोनेशन	नही	–	–	–
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	स्ववित्त पोषित	शुल्क, सासद /विधायक निधि	नही	–	–	–
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	स्ववित्त पोषित	शुल्क	नही	–	–	–
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	स्ववित्त पोषित	शुल्क,दान	नही	–	–	–

तालिका क्रमाँक – 5.12
सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आसन व्यवस्था

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	छात्रों के बैठने के लिए व्यवस्था	आचार्यों के बैठने के लिए व्यवस्था	विद्यालय में विद्यार्थीयों के लिए काष्ठोपकरण (फर्नीचर) उपलब्ध है
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष नही	900
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	500
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	250
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	900
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	400
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	400
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	उल्लेख नही
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	1300
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	400
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	775
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	345
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष नही	317
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	1200
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	1200
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	1000
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष नही	215
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	500 सेट
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	380
19	वै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	काष्ठोपकरण	आचार्य कक्ष	350
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्या कक्ष	उल्लेख नही
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	काष्ठोपकरण	आचार्या कक्ष नही	400
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	काष्ठोपकरण	आचार्या कक्ष	उल्लेख नही
23	स.बालिका.वि.मं.बाँदा	काष्ठोपकरण	आचार्या कक्ष	267

तालिका क्रमाँक – 5.13

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की संख्या

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	पुस्तकालय में कुल उपलब्ध पुस्तकों की संख्या	पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य पुस्तकों की संख्या
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	2000	100
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	उल्लेख नही	उल्लेख नही
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	250	100
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	3000	2000
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	500	200
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	200	125
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	4000	1000
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	3000	1000
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	3811	121
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	5362	357
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	456	250
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	572	413
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	1500	500
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	1650	150
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	उल्लेख नही	उल्लेख नही
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	650	150
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	1000	200
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	500	100
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	1000	800
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	उल्लेख नही	उल्लेख नही
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	410	112
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	900	230
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	550	400

तालिका क्रमाँक – 5.14

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	कम्प्यूटर शिक्षा की उपलब्धता	कक्षाएँ जिन के लिए कम्प्यूटर शिक्षा उपलब्ध है	उपलब्ध कम्प्यूटरों की संख्या	इण्टरनेट की सुविधा की उपलब्धता	कम्प्यूटर शिक्षा का व्यवस्थापक
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	हाँ	6 से 10	20	हाँ	विद्यालय
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	हाँ	6 से 8	10	नही	विद्यालय
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	हाँ	6 से 10	10	नही	विद्यालय
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	हाँ	6 से 10	25	हाँ	विद्यालय
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	हाँ	6 से 9	12	नही	विद्यालय
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	हाँ	6 से 9	5	नही	व्यक्तिगतसंस्था
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	हाँ	6 से 9	16	नही	विद्यालय
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	6 से 9	15	नही	विद्यालय
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	हाँ	6 से 9	6	नही	व्यक्तिगतसंस्था
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	हाँ	6 से 12	20	नही	व्यक्तिगतसंस्था
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	हाँ	6 से 8	2	नही	व्यक्तिगतसंस्था
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	हाँ	6 से 10	8	नही	विद्यालय
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	हाँ	6 से 12	15	नही	व्यक्तिगतसंस्था
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	हाँ	6 से 12	11	नही	विद्यालय
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	हाँ	6 से 11	15	हाँ	विद्यालय
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	हाँ	6 से 10	5	नही	विद्यालय
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	हाँ	6 से 8	5	नही	विद्यालय
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	हाँ	6 से 8	7	नही	व्यक्तिगतसंस्था
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	हाँ	6 से 8	8	नही	व्यक्तिगतसंस्था
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	हाँ	6 से 9	4	नही	विद्यालय
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	हाँ	6 से 10	6	नही	विद्यालय
22	आनन्दीबाईहर्ष स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	हाँ	6 से 10	6	नही	व्यक्तिगतसंस्था
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	हाँ	6 से 10	6	नही	व्यक्तिगतसंस्था

तालिका क्रमाँक – 5.15
सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रबन्ध

क्र0स0	विद्यालय का नाम एवं स्थान	स्वंय के क्रीड़ा स्थल की उपलब्धता	उपलब्ध खेलों के नाम	क्रीड़ा शिक्षकों की संख्या	विद्यालय में आयोजित की जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विवरण
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	हाँ	बैडमिंटन,वॉलीबाल,हाकी,कबड्डी,हैंडबाल,खो–खो	2	स्काउट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
2	म. अ. स.वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	हाँ	फुटबाल,वॉलीबाल, एथलेटिक्स	1	वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
3	स.उ.मा.वि.मं., पारीछा , झाँसी	हाँ	खो–खो,कबड्डी,फुटबाल,व वॉलीबाल,एथलेटिक्स	1	स्काउट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ,
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	हाँ	अधिकाँश खेल	1	स्काउट,वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	हाँ	कबड्डी,खो–खो, बैडमिंटन	1	स्काउट,वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	हाँ	–	0	स्काउट,वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगताएँ, शारीरिक प्रदर्शन,बालमेला,विज्ञानप्रदर्शनी
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	हाँ	एथलेटिक्स	1	वार्षिकोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगताएँ, शारीरिक प्रदर्शन,कला,निबंध,भाषण
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	कबड्डी,खो–खो, फुटबाल	2	वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगताएँ , शारीरिक प्रदर्शन
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	हाँ	कबड्डी,फुटबाल,वॉलीबाल, खो–खो,बैडमिंटन	1	स्काउट,वार्षिकोत्सव, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
10	सरस्वती वि.मं.इं.का., कोंच, जालौन	हाँ	अधिकांश खेल	1	स्काउट, वार्षिकोत्सव, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	नही	गोला चक्क,कुश्ती, बैडमिंटन	1	स्काउट, वार्षिकोत्सव, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	हाँ	खो–खो,कबड्डी,फुटबाल,व वॉलीबाल,एथलेटिक्स	1	सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
13	स.वि.मं.इं.का.,बाँदा	नही	कबड्डी,वॉलीबाल, खो–खो,बैडमिंटन	1	वार्षिकोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ शारीरिक प्रदर्शन
14	स.वि.मं.इं.का., हमीरपुर	नही	कबड्डी,वॉलीबाल, खो–खो,क्रिकेट	0	वार्षिकोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ शारीरिक प्रदर्शन, विज्ञान मेला
15	स.बाल मं.इं.का., राठ , हमीरपुर	हाँ	कबड्डी, खो–खो,एथलेटिक्स	1	स्काउट, वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	नही	कबड्डी,वालीबाल, खो–खो,क्रिकेट	1	स्काउट, वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
17	स.वि.मं.इं.का., महोबा	हाँ	अधिकाँश खेल	1	स्काउट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
18	स.वि.मं.इं.का.,चरखारी ,महोबा	हाँ	बैडमिंटन	0	स्काउट, वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, शारीरिक प्रदर्शन
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	नही	–	0	स्काउट, वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम, शारीरिक प्रदर्शन
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	नही	–	1	सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ शारीरिक प्रदर्शन
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	हाँ	वॉलीबाल,बैडमिंटन, खो–खो	0	सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इं.का., जालौन	हाँ	बैडमिटन , रस्सी	1	वार्षिकोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ, मेला
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	हाँ	कबड्डी ,बैडमिंटन, खो–खो	1	सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ

तालिका क्रमाँक – 5.16
सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में संगीत शिक्षा का प्रबन्ध

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	संगीत शिक्षा की उपलब्धता	संगीत शिक्षकों की संख्या	उपलब्ध वाद्य यन्त्रों के नाम
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	हाँ	2	हारमोनियम , तबला ,घोष
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	हाँ	1	हारमोनियम,तबला,नाल,मंजीरा,ढपली,बाँसुरी
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	नही	0	उपलब्ध नही
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , बाँसुरी
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	नही	0	तबला , हारमोनियम
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	नही	0	उल्लेख नही
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	नही	0	हारमोनियम , तबला , ढोलक , मंजीरा
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	1	ढोलक , तबला , सिन्थेसाइजर
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , ढपली
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	हाँ	1	हारमोनियम , तबला
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	नही	0	हारमोनियम , तबला
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	हाँ	1	हारमोनियम,तबला,ढोलक,मंजीरा,झींका,ढपली
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , ढोलक
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	हाँ	2	हारमोनियम,तबला,करताल,मंजीरा,ढपली
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , ढोलक
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	हाँ	2	हारमोनियम,तबला,करताल,मंजीरा,ढपली
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , घोष
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	नही	0	हारमोनियम , तबला
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	हाँ	1	हारमोनियम , तबला
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , ढोलक , ढपली
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , ढोलक
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	हाँ	1	हारमोनियम , तबला , घोष
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	हाँ	1	हारमोनियम , तबला

तालिका क्रमाँक – 5.17

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में शिक्षकों को उपलब्ध सुविधाएँ

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	शासन द्वारा घोषित वेतनमान की देयता	भविष्य निधि/ग्रेच्यूटी/बीमा में से शिक्षकों को प्राप्त सुविधाएँ	शासकीय नियमों के अनुरूप अवकाश सुविधाओं की उपलब्धता
1	भा0दे0स0वि0म0इण्टर का0 झाँसी	नही	भविष्य निधि	नही
2	म0 अग0 स. वि.म.उ.मा.वि. झाँसी	नही	भविष्य निधि , बीमा	नही
3	स.उ.म.वि.मं. पारीछा , झाँसी	समकक्ष	भविष्य निधि	हाँ
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	नही	भविष्य निधि , बीमा	हाँ
5	स.वि.मं.उ.मा.वि.मोंठ , झाँसी	नही	नही	हाँ
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	नही	भविष्य निधि	हाँ
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	नही	भविष्य निधि	नही
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	भविष्य निधि	हाँ
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	नही	भविष्य निधि	हाँ
10	सरस्वती वि.मं.इ.का. कोंच, जालौन	हाँ	भविष्य निधि , ग्रेच्यूटी	हाँ
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	नही	भविष्य निधि , ग्रेच्यूटी , बीमा	हाँ
12	स.उ.मा.वि.मं.वि. महरौनी,ललितपुर	समकक्ष	भविष्य निधि	हाँ
13	स.वि.मं.इ.का. बाँदा	समकक्ष	नही	हाँ
14	स.वि.मं.इ.का. हमीरपुर	नही	भविष्य निधि , बीमा	हाँ
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	समकक्ष	नही	हाँ
16	स.वि.मं.हाईस्कूल.मौदहा ,हमीरपुर	नही	नही	हाँ
17	स.वि.मं.इ.का. महोबा	नही	भविष्य निधि	हाँ
18	स.वि.मं.इ.का. चरखारी ,महोबा	नही	भविष्य निधि	हाँ
19	बै0भा0.स0 वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	नही	भविष्य निधि	नही
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	नही	भविष्य निधि	हाँ
21	स.बालिका वि.मं.दतिया द्वार, झाँसी	नही	भविष्य निधि	हाँ
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	नही	स्थाई शिक्षिकाओं को भविष्य निधि , बीमा	हाँ
23	स.बालिका.वि.मं.उ.मा.वि. बाँदा	नही	नही	हाँ

तालिका क्रमाँक – 5.18

सरस्वती विद्यामन्दिर संस्थाओं में प्रयुक्त पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	विद्यालय में प्रयुक्त पाठ्यक्रम	प्रयुक्त पाठ्यक्रम के प्रति राज्य सरकार का दृष्टिकोण बाधा कारक	प्रयुक्त शिक्षण विधियों के नाम	प्रयुक्त शिक्षण शैलियों के प्रति छात्र दृष्टिकोण	प्रयुक्त शिक्षण शैलियों से छात्रों में रटने की प्रवृत्ति का विकास
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	उल्लेख नही	उल्लेख नही
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	हाँ
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	हाँ
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	उ0प्र0 शासन	नही	पंचपदीय	सन्तुष्ट	नही

तालिका क्रमाँक – 5.19

सरस्वती विद्यामन्दिर संस्थाओं में स्थानीय प्रबन्ध समिति की भूमिका

क्र.स.	विद्यालय का नाम एंव स्थान	विद्यालय संचालन में उ0प्र0 शासन के नियमों का पालन	स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति का विद्यालय कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप	स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति द्वारा विद्यालय को दिये जाने वाले सुझावों का कार्य क्षेत्र
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,आचार्य निष्कासन
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	हाँ	नही	आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,आचार्यनिष्कासन,पाठयसहगामीक्रियाएँ
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	हाँ	नही	समस्त क्षेत्रों में
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	हाँ	नही	समस्त क्षेत्रों में
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	नही	नही	आचार्यचयन , वेतन , अवकाश , शिक्षण विधि
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,आचार्य निष्कासन
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,आचार्यनिष्कासन,पाठयसहगामीक्रियाएँ,आन्तरिक व्यवस्था
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,छात्र चयन आचार्यचयन,वेतन,पाठयसहगामीक्रियाएँ
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	हाँ	नही	समस्त क्षेत्रों में
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,छात्र चयन,आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,शिक्षण विधियां
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	नही	नही	उल्लेख नही
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्य चयन,वेतन,पाठयसहगामीक्रियाएँ
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,आचार्यनिष्कासन
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	हाँ	हाँ	समस्त क्षेत्रों में
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	हाँ	नही	समस्त क्षेत्रों में
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	हाँ	हाँ	समस्त क्षेत्रों में
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन ,पाठयसहगामीक्रियाएँ
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन,वेतन, पाठयसहगामीक्रियाएँ
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	आशिंक	नही	समस्त क्षेत्रों में
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	हाँ	नही	समस्त क्षेत्रों में
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	हाँ	नही	आचार्यचयन,वेतन,शिक्षण विधियाँ ,अवकाश,आचार्यनिष्कासन
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	हाँ	नही	समस्त क्षेत्रों में
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	हाँ	नही	प्रवेश प्रक्रिया,आचार्यचयन,वेतन,अवकाश,आचार्यनिष्कासन,पाठ्यसहगामीक्रियाएँ

तालिका क्रमाँक – 5.20
सरस्वती विद्यामन्दिर संस्थाओं को सामाजिक सहयोग

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	एक संस्था/विचारधारा से जुड़े होने के कारण		
		जनता से प्राप्त सहयोग	समाज में छवि	शासन के द्वारा उत्पन्न कोई हस्तक्षेप
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	हाँ	उल्लेख नही	नही
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	हाँ	देशभक्त ,राष्ट्रभक्त	नही
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	हाँ	सम्मानीय स्थिति	नही
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	हाँ	उत्तम	नही
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	हाँ	संस्कारित शिक्षा केन्द्र	नही
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	हाँ	अच्छी	नही
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	हाँ	अच्छी	नही , मा0शि0परिषद,उ0प्र0 से 'ए' श्रेणी की मान्यता
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	अच्छी	हाँ
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	हाँ	उत्तम	नही
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	हाँ	–	नही
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	अपेक्षित सहयोग नही	अच्छी छवि, आचार्यों को सम्मान	नही
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	हाँ	उत्तम	नही
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	हाँ	अच्छी	नही , 'ए' श्रेणी की मान्यता
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	हाँ	–	नही
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	हाँ	उत्तम	नही
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	नही	–	नही
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	हाँ	सर्वोत्तम	नही
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	हाँ	अच्छी	नही
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	हाँ	अतिउत्तम	नही
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	हाँ	आदर्श एंव स्वच्छ	नही
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	हाँ	–	–
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	हाँ	अच्छी	नही
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	हाँ	अच्छी	नही

तालिका क्रमाँक – 5.21
सरस्वती विद्यामन्दिर संस्थाओं में निर्देशन एवं स्वास्थ्य सेवा

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	निर्देशन सेवाओं की उपलब्धता	निर्देशन सेवाओं का क्षेत्र	स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता	शासन द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता	स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने हेतु छात्रों से शुल्क की प्राप्ति
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	नही	–	हाँ	नही	नही
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	हाँ	शिक्षण एंव भविष्य हेतु	हाँ	हाँ	नही
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	हाँ	–	हाँ	नही	हाँ
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	हाँ	स्पष्ट नही	हाँ	नही	हाँ
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	हाँ	–	हाँ	हाँ	नही
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	नही	–	हाँ	हाँ	नही
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	नही	–	हाँ	नही	नही
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	हाँ	–	नही	नही	नही
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	हाँ	–	हाँ	नही	नही
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	–	–	–	–	–
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	नही	–	हाँ	नही	नही
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	हाँ	स्पष्ट नही	हाँ	हाँ	नही
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	हाँ	–	हाँ	हाँ	नही
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	हाँ	–	हाँ	हाँ	हाँ
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	हाँ	–	हाँ	नही	नही
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	हाँ	–	हाँ	हाँ	हाँ
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	हाँ	–	हाँ	नही	नही
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	हाँ	स्पष्ट नही	हाँ	नही	नही
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	हाँ	विज्ञान	हाँ	हाँ	नही
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	नही	–	हाँ	नही	नही
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	हाँ	स्पष्ट नही	हाँ	नही	नही
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	नही	–	हाँ	नही	नही
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	नही	–	हाँ	नही	नही

तालिका क्रमाँक – 5.22

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में नामांकित छात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	अध्ययनरत् छात्रों का अंचल / क्षेत्र	अध्ययनरत् छात्रों में क्षेत्र की प्रमुखता	छात्रों द्वारा विद्यालय में प्रवेश लेने का प्रमुख कारण
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	शहरी	शहरी	आर्थिक
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	ग्रामीण एवं शहरी	ग्रामीण	सामाजिक
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	ग्रामीण एवं शहरी	ग्रामीण एवं शहरी	आर्थिक , सामाजिक , धार्मिक
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक , धार्मिक
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	ग्रामीण एवं शहरी	ग्रामीण	–
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	ग्रामीण	शहरी	सामाजिक
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	ग्रामीण एवं शहरी	ग्रामीण	धार्मिक
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सर्वांगीण विकास
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	ग्रामीण एवं शहरी	ग्रामीण	धार्मिक
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	ग्रामीण एवं शहरी	ग्रामीण	सामाजिक
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	ग्रामीण	ग्रामीण	सामाजिक
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	ग्रामीण एवं शहरी	शहरी	सामाजिक

तालिका क्रमाँक – 5.23

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावना एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु प्रयास

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	लोकतांत्रिक भावना का विकास करने हेतु आयोजित कार्यक्रम	लोकतांत्रिक प्रयासों के प्रति प्रधानचार्यों का दृष्टिकोण	राष्ट्रीय चेतना विकसित करने हेतु प्रयत्न	राष्ट्रीय चेतना के विकास में पाठ्यक्रम का सहयोग	प्रधानचार्य का छात्रों में जागृत राष्ट्रीय चेतना के प्रति सन्तुष्टी स्तर
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	मात्र एक प्रयास	जयन्तियाँ मनाना	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	जयन्तियाँ	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	मात्र एक प्रयास	जयन्तियों का आयोजन	हाँ	अर्द्ध सन्तुष्ट
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	स्पष्ट उल्लेख नही	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	मात्र एक प्रयास	–	हाँ	उल्लेख नही
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	सहभोज / छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय / सहभोज	अर्द्ध सन्तुष्ट	स्पष्ट उल्लेख नही	हाँ	उल्लेख नही
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	छात्र संसद / मंत्रीमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	जयन्ती,राष्ट्रीय पर्वो का आयोजन	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	अर्द्ध सन्तुष्ट	वर्तमान समस्याओं से अवगत कराना	हाँ	सन्तुष्ट
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	प्रशिक्षण वर्ग, अभ्यासवर्ग	हाँ	सन्तुष्ट
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	–	–	हाँ	उल्लेख नही
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	अर्द्ध सन्तुष्ट	जयन्तियां,प्रेरक,प्रसंग	हाँ	अर्द्ध सन्तुष्ट
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	स्पष्ट उल्लेख नही	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	छात्र शिविर / छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	स्वदेशी कार्यक्रम देशादर्शन	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	सांस्कृतिक एंव राष्ट्रीयकार्यक्रम,नैतिक शिक्षा	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	स्पष्ट उल्लेख नही	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीयकार्यक्रम,नैतिक शिक्षा	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	अर्द्ध सन्तुष्ट	राष्ट्रीयपर्वो काआयोजन	हाँ	अर्द्ध सन्तुष्ट
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	देशदर्शन, छात्र–शिविर,जयन्तियां	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी,चित्रकूट	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	राष्ट्रीय पर्व, जयतियों ,राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	पूर्ण सन्तुष्ट	राष्ट्रीय पर्व, जयतियों ,राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा	हाँ	उल्लेख नही
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	–	राष्ट्रीय पर्व, जयतियों ,राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा	हाँ	पूर्ण सन्तुष्ट
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	अर्द्ध सन्तुष्ट	जयन्तियाँ	हाँ	उल्लेख नही
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	छात्र संसद / मंत्रिमण्डल / न्यायालय	मात्र एक प्रयास	जयन्तियां,प्रेरक,प्रसंग	हाँ	उल्लेख नही

तालिका क्रमाँक – 5.24

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में रोजगारपरक कौशलों के प्रशिक्षण हेतु प्रयत्न

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	विद्यालयों में सिखलाये जाने वाले रोजगारपरक कौशलों का वर्णन
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का., झाँसी	मोमबत्ती बनाना
2	म. अ. स. वि.मं.उ.मा.वि., झाँसी	नही
3	स.उ.म.वि.मं., पारीछा , झाँसी	मोमबत्ती एंव चॉक बनाना
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव , झाँसी	नही
5	स.वि.मं.उ.मा.वि., मोंठ , झाँसी	नही
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर, झाँसी	नही
7	स.वि.मं.इ.का., उरई , जालौन	मोमबत्ती बनाना , स्याही बंनाना
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का., जालौन	मोमबत्ती , अगरबत्ती , खिलौना
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट, जालौन	पुस्तक कला के माध्यम से
10	सरस्वती वि.मं.इ.का., कोंच, जालौन	नही
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी , जालौन	पुस्तक कला के माध्यम से पतंग,फिरकी,पुस्तक बांईडिग,चाक,मोमबत्ती,मिटटी के खिलौने बनाना
12	स.उ.मा.वि.मं.वि., महरौनी,ललितपुर	पुस्तक कला के माध्यम से
13	स.वि.मं.इ.का.,बाँदा	स्पष्ट उल्लेख नही
14	स.वि.मं.इ.का., हमीरपुर	स्पष्ट उल्लेख नही
15	स.बाल मं.इ.का., राठ , हमीरपुर	नही
16	स.वि.मं.हाईस्कूल,मौदहा ,हमीरपुर	स्पष्ट उल्लेख नही
17	स.वि.मं.इ.का., महोबा	नही
18	स.वि.मं.इ.का.,चरखारी ,महोबा	नही
19	बै.भा.स. वि.मं.उ.मा.वि.कर्बी,चित्रकूट	नही
20	स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार, झाँसी	अन्य संस्थाओं के सहयोग से सिलाई आदि का प्रशिक्षण
21	स.बालिका वि.मं.,दतिया द्वार, झाँसी	मोमबत्ती एवं अगरबत्ती बनाना
22	आनन्दीबाईहर्षे स.बा.वि.मं.इ.का., जालौन	नही
23	स.बालिका.वि.मं. , बाँदा	सिलाई , कढ़ाई , बुनाई

5.2 आँकड़ों का विश्लेषण एवं सांख्यकीय व्याख्या–

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षारत् 60 से भी अधिक सरस्वती विद्या मन्दिर शिक्षा संस्थाओं में से 30 संस्थाओं को न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रयुक्त किया गया है । प्रतिदर्श के तीस में से तेईस (23) विद्यालयों से प्राप्त आँकड़ों को विस्तृत अध्ययन हेतु वगीकृत एवं व्यवस्थित रूप में 24 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत तालिकाबद्ध कर इस अध्याय के प्रथम भाग "खण्ड–क" में प्रस्तुत किया गया है । प्रस्तुत खण्ड में तालिकाबद्ध आँकड़ों का विश्लेषण कर अनकी सविस्तार व्याख्या प्रस्तुत की गई है । प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या को सुबोध, सुगम्य एवं सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए सांख्यकीय विश्लेषण एवं रेखाचित्रों का उपयोग किया गया है । शोधार्थी ने आवश्यकतानुसार उपयुक्त रेखा चित्रों का उपयोग प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या एवं निष्कर्ष निगमन हेतु यथा स्थानों पर किया है ।

5.2.1 तालिका कमाँक 5.1 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
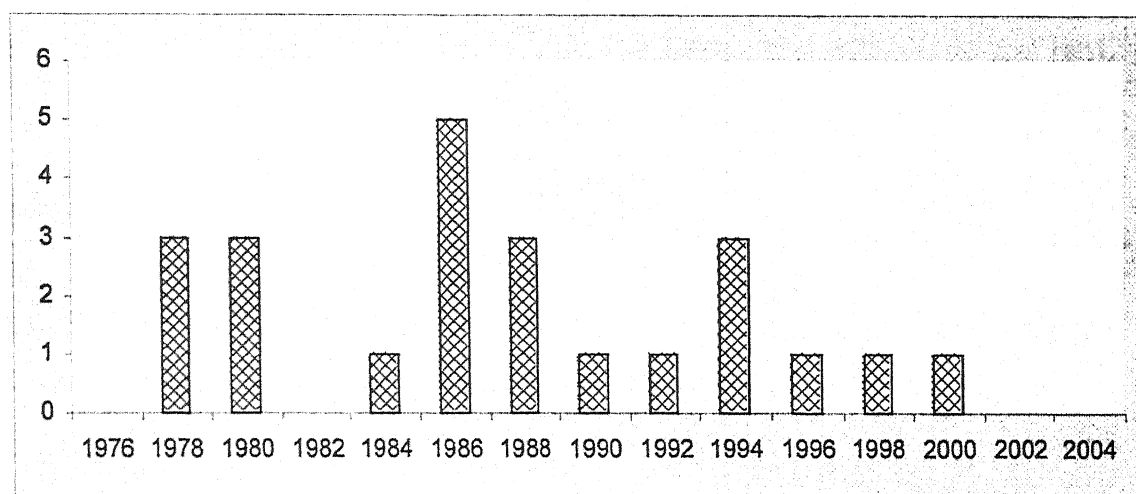
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की संख्यात्मक वृद्धि को दो–दो वर्षों के अन्तराल पर दर्शाता दण्डाकृति रेखाचित्र कमाँक –5.1–

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षारत् सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में से प्रतिदर्शित 23 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना से सम्बन्धित आँकड़े दर्शा रहे रेखाचित्र कमाँक 5.1 से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में सर्वप्रथम सन् 1978 में तीन विद्या मन्दिरों की स्थापना हुई थी । इन तीनों विद्यालयों में सबसे पहले महोबा के सरस्वती विद्या मन्दिर की स्थापना हुई थी । अगले दो वर्षों में पुनः 3 विद्यालयों की स्थापना हुई , तत्पश्चात् अगले 4 बर्षो में मात्र एक विद्यालय सन् 1983 में जालौन में प्रारम्भ किया गया। वर्ष 1985 एवं 1986 में अभी तक के सर्वाधिक 5 विद्यालयों की स्थापना हुई । ततपश्चात् सन् 1988 एवं 1994 को छोड़कर, जिनमें 3–3 विद्यालयों की स्थापना हुई थी, सन् 2000 तक प्रत्येक दो वर्षों में एक–एक विद्यालय की स्थापना हुई ।

न्यादर्श से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर शोधार्थी यह व्याख्या करने में सक्षम है कि सन् 1978 ई. से लेकर सन् 2000 ई. तक 22 वर्षों में औसतन प्रत्येक वर्ष एक सरस्वती विद्या मन्दिर बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थापित किया गया जो वर्तमान में कम से कम हाईस्कूल एवं उससे उपर इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं ।
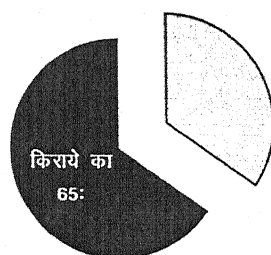
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की स्थापना के समय भवन के स्वामित्व को दर्शाती चकाकृति रेखाचित्र कमाँक –5.2–

भवन के स्वामित्व की स्थिति को दर्शाते रेखाचित्र कमाँक 5.2 से स्पष्ट है कि लगभग 65% विद्यालयों ने शिक्षण का प्रारम्भ स्वयं के भवन से ही किया था ।

सरस्वती शिशु मन्दिर के एवं दान में प्राप्त भवनों को इन विद्यालयों के स्वयं के भवन के रूप में ही गणना में सम्मिलित किया गया है ।
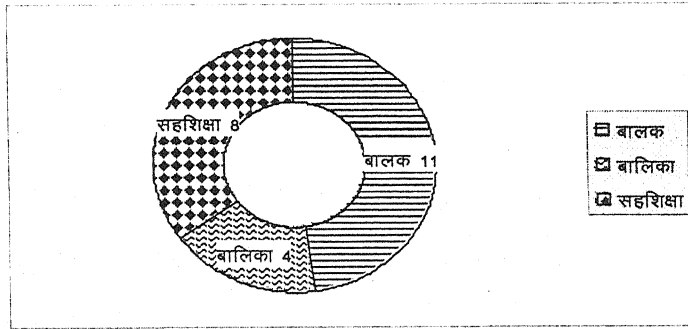
बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के वर्ग को प्रदर्शित करती हुई चकाकृति रेखाचित्र कमाँक –5.3–

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के 'वर्ग' को प्रदर्शित करता हुआ रेखाचित्र कमाँक 5.3 यह व्याख्या कर रहा है कि प्रतिदर्श विद्या मन्दिरों में तीनों प्रकार के विद्यालय कार्य कर रहे हैं । सर्वाधिक 47.8 प्रतिशत विद्यालय 'बालक वर्ग' के हैं, इनमें केवल लड़के ही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । 34.8% विद्यालयों में लड़कें एवं लड़कियाँ दोनों अध्ययनरत् हैं। 17.4% विद्यालयों को केवल बालिकाओं को माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है । इस रेखाचित्र से स्पष्ट है कि विद्या मन्दिरों के माध्यम से बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर समान रूप से ध्यान दिया जा रहा है ।

तालिका कमाँक 5.1 के आधार पर यह भी स्पष्ट है कि मात्र एक अपवाद छोड़कर समस्त विद्यालयों ने जूनियर हाईस्कूल के स्तर से अपना शैक्षिक कार्य प्रारम्भ किया था। 14 विद्यालयों ने तो मात्र कक्षा 6 से अपनी शैक्षिक यात्रा प्रारम्भ की थी । अपवाद, सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर, दतिया द्वार, झाँसी ने सीधे इण्टरमीडिएट स्तर से अपना शैक्षणिक कार्य प्रारम्भ किया, इसका कारण यह है कि यह विद्यालय पहले बालक वर्ग से मान्यता प्राप्त था ।

'शिक्षण के माध्यम' के आधार पर बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सभी सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान 'हिन्दी माध्यम' के विद्यालयों के रूप में शिक्षारत् हैं ।

इसका कारण शोधार्थी यह समझ पा रहा है कि इस हिन्दी क्षेत्र के निवासी इन विद्यालयों के साथ तादात्म स्थापित कर सकें ।

तालिका कमाँक 5.1 से यह भी परिलक्षित होता है कि इन विद्यालयों के विकास के प्रारम्भिक वर्षों में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के तत्कालीन हमीरपुर, बाँदा एवं जालौन जिले की निवासियों ने इन विद्यालयों के इस क्षेत्र में विकसित होने में महती भूमिका निभाई है । झाँसी जिले मे पहला विद्या मन्दिर वर्ष 1985 में चिरगाँव में एवं ललितपुर जिले में पहला विद्या मन्दिर महरौनी में सन् 1988 में प्रारम्भ हुआ था । न्यादर्श विद्यालयों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर सम्प्रति सर्वाधिक विद्या मन्दिर झाँसी जिले में हैं । सबसे कम विद्या मन्दिर महोबा जिले में हैं ।

5.2.2 तालिका कमाँक 5.2 के आधार पर विश्लेषण एवं व्याख्या –
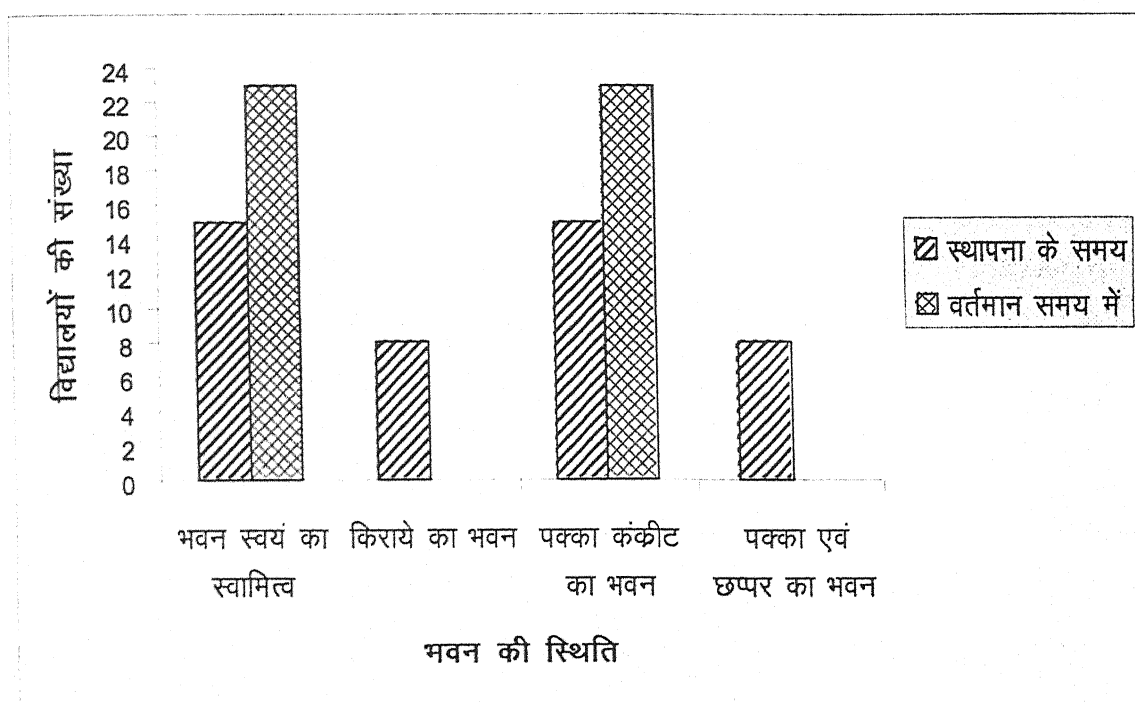
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के भवनों की वर्तमान सत्र (2003–2004) में स्थिति एवं दशा की इन विद्यालयों के स्थापना के समय भवनों की स्थिति एवं दशा से तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती हुई स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक 5.4–

तालिका क्रमाँक 5.2 में प्रदर्शित आँकड़ों के विश्लेषण उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि न्यादर्श विद्या मन्दिरों ने भूमि एवं भवन के आधार पर बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) में अच्छी प्रगति की है । इन सभी विद्यालयों ने स्वामित्व की दिशा की ओर बढ़ते हुए स्वयं के स्वामित्व वाले भवन तैयार कर लिये हैं । भवनों को पक्का एवं कंक्रीट के द्वारा मजबूत तैयार किया गया है ।
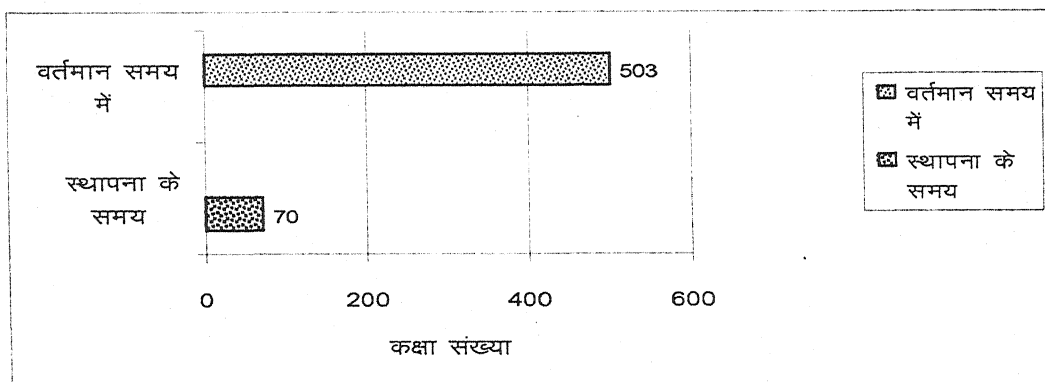
सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के, वर्तमान सत्र (2003–2004) में, भवनों में कक्षों की संख्या एवं स्थापना के समय भवनों में कक्षों की संख्या दर्शाता दण्डाकृति रेखा चित्र क्रमाँक 5.5–

जहाँ तक इन विद्यालयों में कमरों की संख्या का प्रश्न है वहाँ वर्तमान में शोध के समय अध्ययन में शामिल 23 विद्यालयों में कमरों की कुल संख्या 503 थी । इन विद्यालयों की स्थापना के समय कक्षों की कुल संख्या मात्र 70 थी । सम्प्रति इन समस्त विद्यालयों में औसत रूप से लगभग बाइस (21.9) कमरे हैं ।

इस विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता यह निष्कर्ष निगमित कर पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने भूमि एवं भवन के सम्बन्ध में स्थायित्व प्राप्त कर लिया है । भवनों पर इन विद्यालयों के स्वयं के स्वामित्व ने अभिभावकों के मन से इन विद्यालयों की अनिश्चितता की आशंका को समाप्त किया है । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के अभिभावक इन संस्थाओं के भविष्य के प्रति आश्वस्त हुए हैं । भूमि एवं भवन सम्बन्धी इस स्थिरता ने इन विद्यालयों की प्रबन्धकार्यकारिणी समितियों को भविष्य में इन विद्यालयों के विस्तारण एवं गुणवत्ता

उन्नयन हेतु उचित दिशा में कदम उठाने के लिए समय प्रदान किया है । फलस्वरूप इन संस्थाओं द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य की प्राप्ति हो रही है । दूसरी ओर इन संस्थाओं के मजबूत भवनों ने विद्यार्थियों एवं अभिभवकों के मन से असुरक्षा की भावना को दूर किया है । इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु वर्ष भर साफ–सुथरा एवं स्वच्छ वातावरण इन संस्थाओं के द्वारा उपलब्ध किया जा रहा है ।

5.2.3 तालिका कमाँक–5.3 में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–
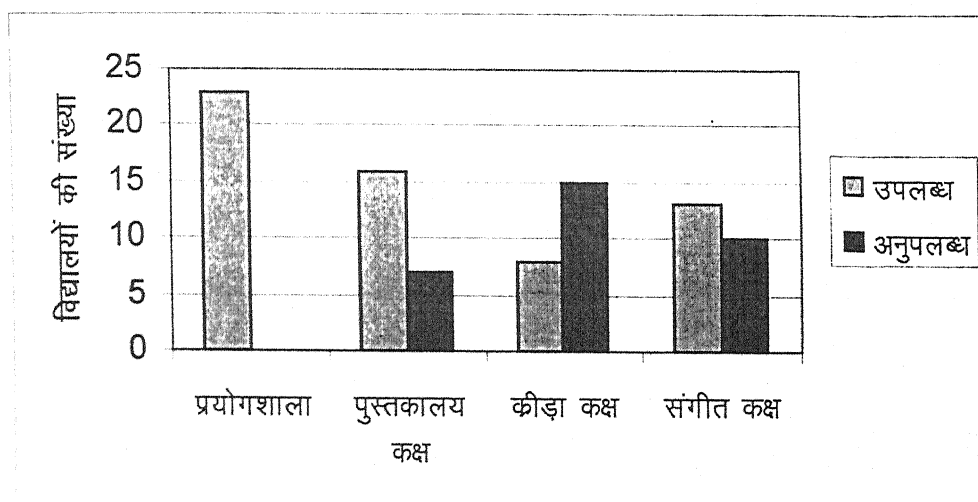
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में प्रयोगशाला, पुस्तकालय कक्ष, कीड़ा कक्ष एवं संगीत कक्षों की उपलब्धता के सम्बन्ध में सूचना प्रदान करता हुआ स्तम्भाकृति रेखाचित्र तालिका कमाँक 5.6–

इस रेखा चित्र के आधार पर विश्लेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के पास वर्तमान समय में उपयुक्त मात्रा में कक्ष उपलब्ध हैं । प्रतिदर्श विद्यालयों से प्राप्त विभिन्न सूचनाओं के आधार पर शोधकर्ता यह कह सकने की स्थिति में है कि इन विद्यालयों में नामाँकित छात्र संख्या के अनुपात में कक्षा शिक्षण हेतु समुचित मात्रा में कमरे उपलब्ध हैं ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित सरस्वती विद्या मन्दिरों में प्रयोगशालायें उपलब्ध हैं । इन प्रयोगशालाओं में कम्प्यूटर कक्ष भी सम्मिलित हैं ।

पुस्तकालय कक्ष, क्रीड़ा कक्ष एवं संगीत कक्षों की उपलब्धता की दृष्टि से बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित इन विद्यालयों की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती है । आँकड़ों के आधार पर तैयार किया गया स्तम्भाकृति रेखाचित्र क्रमाँक –5. 6 शोधार्थी के इस कथन की पुष्टि करता है । इन तीनों वर्गों में सर्वाधिक असंतोष की स्थिति क्रीड़ा कक्ष की है, जहाँ 23 विद्यालयों में से मात्र 8 विद्यालयों ने अपने यहाँ इस कक्ष की व्यवस्था की हुई है । अवलोकन उपरांत शोधकर्ता को इन कक्षों की स्थिति संतोष जनक प्राप्त नहीं हुई है ।

उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि जिन विद्या मन्दिरों में छात्र संख्या तुलनात्मक रूप से कम है एवं कमरों की संख्या भी कम है इस प्रकार के सातों विद्यालयों में पुस्तकालय कक्ष उपलब्ध नहीं है ।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता यह अनुभव कर रहा है कि क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने कक्षा शिक्षण हेतु उचित व्यवस्था की हुई है जिससे छात्रों को विषयगत् ज्ञान सुविधापूर्ण तरीके से उपलब्ध कराया जा सके । यद्यपि इन विद्यालयों को अभी भी पाठ्येत्तर क्रियाओं हेतु छात्रों को उचित संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है ।

5.2.4 तालिका कमाँक–5.4 की व्याख्या–
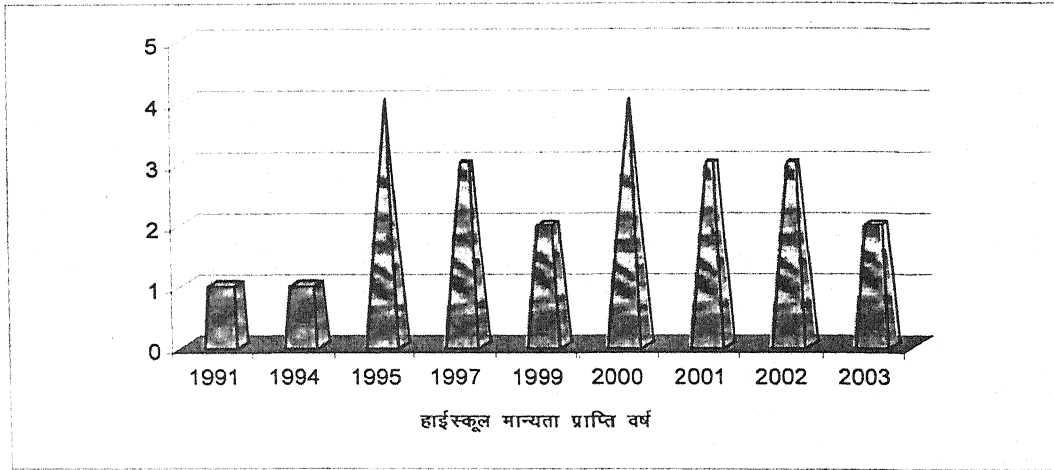
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त करने का सत्रशः विवरण प्रदान करता हुआ दण्डाकृति रेखा चित्र कमाँक –5.7–

आँकड़ों के आधार पर शोधकर्ता को यह जानकारी प्राप्त होती है कि इन संस्थाओं द्वारा 'जूनियर हाईस्कूल' से 'हाईस्कूल' तक उच्चीकृत होने में बहुत अधिक समय का उपयोग किया गया है । सर्वाधिक 17 वर्षों का समय 'सरस्वती बाल मन्दिर इण्टर कालेज', राठ (हमीरपुर) के द्वारा लिया गया, जबकि इस विद्यालय की स्थापना जूनियर हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त करने से भी दो वर्ष पूर्व हो चुकी थी । इस प्रकार इस विद्यालय ने अपनी स्थापना से 19 वर्षों बाद हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त की है । 5 विद्यालयों ने हाईस्कूल तक पहुँचने में 15 वर्षों का समय लिया, 1 विद्यालय ने 14 वर्षों का, 3 विद्यालयों ने 13 वर्षों का, एक विद्यालय ने 12 वर्षों का, एक ने ग्यारह वर्षों का, 2 ने 10 वर्षों का तथा अन्य 2 ने 8 वर्षों का समय हाईस्कूल तक उच्चीकृत होने में लिया है। बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में मात्र 6 विद्यालयों ने ही 5 वर्षों के अन्दर अपने आपको 'जूनियर हाईस्कूल' से 'हाईस्कूल' तक उच्चीकृत किया है । इन समस्त विद्यालयों ने हाईस्कूल की मान्यता 'माध्यमिक शिक्षा परिषद', उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से प्राप्त की हुई है ।
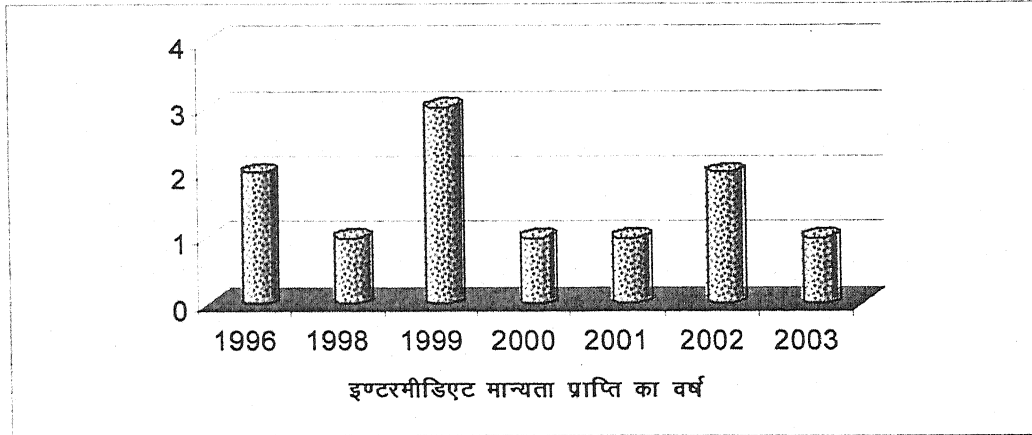
बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त करने का सत्रशः विवरण प्रदान करती हुई दण्डाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.8–

न्यादर्शित विद्यालयों में से मात्र 11 विद्यालय सत्र 2003–2004 में इण्टरमीडिएट स्तर की मान्यता प्राप्त हैं । इन सभी 11 विद्यालयों ने हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त होने के पश्चात् 5 वर्षों के भीतर ही 'माध्यमिक शिक्षा परिषद', उत्तर प्रदेश से इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त कर ली । यह मान्यता इन्होंने 'विज्ञान वर्ग' में प्राप्त की हुई है । एक विद्यालय को वर्ष 2003 में इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त हुई है । इसका परीक्षा परिणाम सत्र 2005 में घोषित होगा ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की मान्यता स्तर को प्रदर्शित करता हुआ वृत्ताकार रेखाचित्र कमाँक –5.9–

तालिका क्रमाँक–5.4 के आधार पर तैयार रेखाचित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगत् हो रहा है कि सन् 1994 के पश्चात् से बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने तेजी से विकास करते हुए हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तरों की मान्यता प्राप्त की है । सन् 1999 से प्रतिवर्ष किसी न किसी जिले में किसी न किसी सरस्वती विद्या मन्दिर ने हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त की है । सन् 1998 से प्रतिवर्ष कम से कम एक विद्या मन्दिर इण्टरमीडिएट तक उच्चीकृत हुआ है ।

समस्त विश्लेषणों एवं व्याख्याओं के आधार पर शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकाल पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षारत् यह सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं शैक्षिक स्थायित्व की ओर तेजी से अग्रसर हैं । इसका लाभ यह हो रहा है कि जैसे–जैसे यह विद्यालय हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट तक उच्चीकृत होते जा रहे हैं इनकी ओर छात्रों का आकर्षण बढ़ रहा है । अभिभावकों में जागरूकता आ रही है । वह अपने पाल्यों को एक बार इन विद्यालयों में प्रवेश दिलवाने के उपरांत उनकी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के प्रति निश्चिन्त हो रहे हैं । फलस्वरूप जैसे ही इनमें से कोई विद्यालय हाईस्कूल या इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त कर रहा है । उसके यहाँ छात्र नामांकन तेजी से बढ़ रहा है । यह तथ्य प्राप्त आँकड़ों से सिद्ध हो रहा है ।

तालिका क्रमाँक 5.1, 5.2, 5.3 एवं 5.4 के विश्लेषणों के उपरांत शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोध परिकल्पना क्रमाँक प्रथम, 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संख्यात्मक प्रगति, श्रेणी उन्नयन, भवनों की दशा एवं उनमे छात्रों के लिए उपलब्ध संसाधनों में निरन्तर संतोषजनक वृद्धि हो रही है,' सत्य सिद्ध होती है ।

5.2.5 तालिका कमाँक 5.5 के आधार पर व्याख्या–
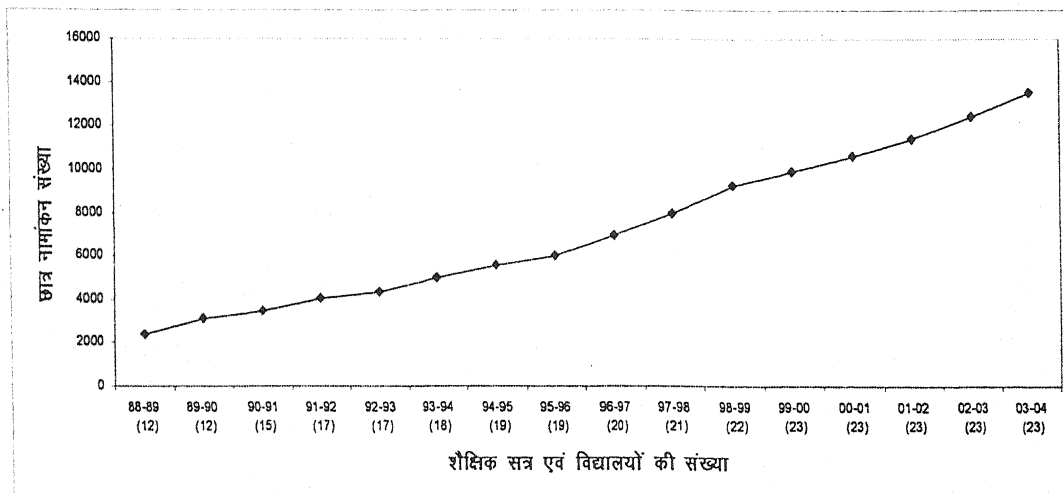
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः अध्ययनरत् छात्रों की नामांकन संख्या का रैखिक रेखाचित्र कमाँक –5.10–
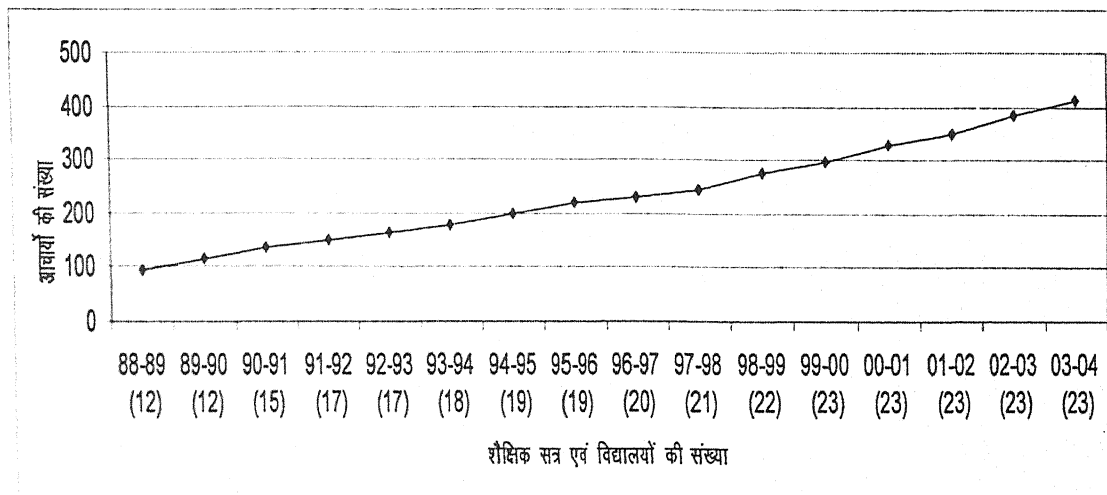
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः शिक्षणरत् आचार्यो की संख्या का रैखिक रेखाचित्र कमाँक –5.11–

तालिका कमाँक –5.5 में पिछले 16 वर्षों में छात्रों एवं आचार्यों की संख्या का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है । न्यादर्श विद्यालयों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह सिद्ध हो रहा है कि बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में शिक्षारत् सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्र संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है । छात्र संख्या में वृद्धि के

अनुपात में आचार्यों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है । रेखाचित्रों में निरन्तर उठती हुई रेखायें इस तथ्य की पुष्टि कर रही हैं ।

विगत पाँच वर्षों के आँकड़ों में तुलनात्मक गणना करने पर छात्र संख्या में सत्र 1999–2000 से लेकर सत्र 2003–2004 तक क्रमशः 107.3% ,107.2%,107.4%, 108.8%, एवं 109.2% की वृद्धि प्राप्त होती है । यह आँकड़े यह दर्शा रहे हैं कि इन विद्यालयों की कुल छात्र संख्या में वृद्धि प्रतिवर्ष लगभग एक निश्चित दर से हो रही है ।

आचार्यों की संख्या में सत्र 1999–2000 से लेकर सत्र 2003–2004 तक क्रमशः 108%, 111.1% , 106.4%, 110%, 106.7% की वृद्धि प्राप्त होती है । आचार्यों की संख्या में भी वृद्धि लगभग एक स्थिर अनुपात में हुई है ।

अतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में एक स्थिर दर से छात्र संख्या में वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि दर की तुलना अध्याय–तृतीय में प्रस्तुत तालिका क्रमाँक 3.9 एवं 3.10 से करने पर इन विद्यालयों में प्राप्त छात्र वृद्धि दर तुलनात्मक रूप से अधिक प्राप्त होती है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम वाले अन्य विद्यालयों में जिस तरह से छात्र नामांकन अनियन्त्रित रूप से बढ़ रहा है उस तुलना में इन विद्यालयों की छात्र संख्या में नियन्त्रित वृद्धि देखकर शोधार्थी आश्चर्यचकित था । शोधकर्ता द्वारा इस नियन्त्रित वृद्धि का कारण खोजने पर उसे एक रोचक तथ्य प्राप्त हुआ कि 'विद्या भारती' 'विद्या मन्दिरों' पर कड़ा नियंत्रण रख रही है एवं गुणवत्ता को बनाये रखने का प्रयास इन विद्यालयों द्वारा करवा रही है । विद्या मन्दिरों में छात्र संख्या बढ़ाने की आज्ञा तभी प्राप्त होती है जब विद्यालय भवन में नया कमरा एवं काष्ठोपकरण तैयार हो जाते हैं ।

एक विद्यालय में अधिकतम छात्र संख्या निर्धारित करने की अलिखित नीति को 'विद्या भारती' की उत्तर प्रदेश ईकाई ने अपनाया हुआ है । शोधार्थी की दृष्टि में यह विद्या भारती का एक प्रशंसनीय कदम है जो कि इस संस्था ने अपने विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता को निरन्तर बढ़ाने एवं नियन्त्रित रखने के उद्देश्य से अपनाया हुआ है । अतः बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिरों में छात्रों की समस्त सुविधाओं का ध्यान रखते हुए शिक्षण कार्य सम्पन्न किया जा रहा है ।
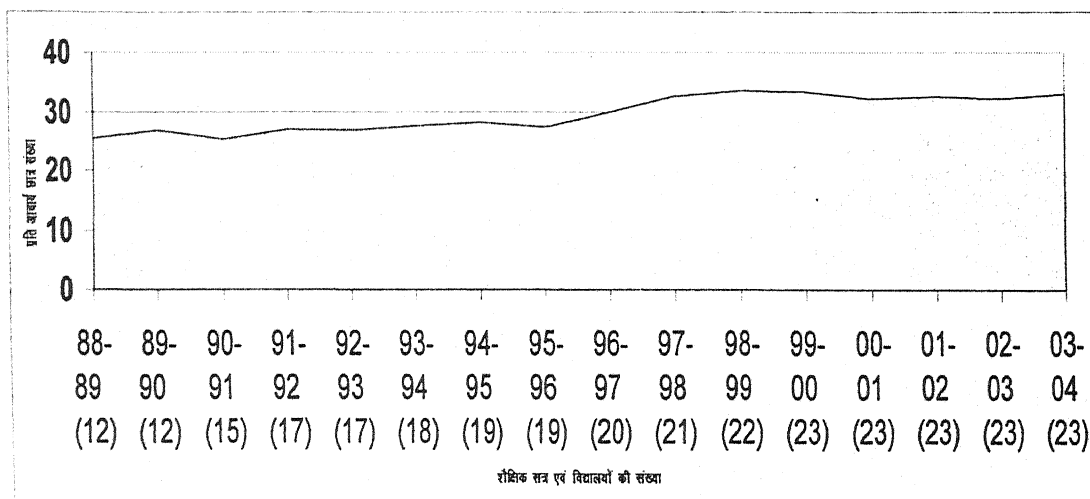
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सत्रशः प्रति आचार्य छात्र संख्या (आचार्य : छात्र) का रैखिक रेखाचित्र कमाँक–5.12–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आचार्य–छात्र अनुपात का अध्ययन करने पर शोधार्थी ने उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर पाया कि सन् 1988–1989 से इन सम्पूर्ण विद्यालयों में आचार्य–छात्र अनुपात का औसत 25.5 से कमशः बढ़ते हुए सत्र 2003–2004 तक 32.9 तक पहुंच गया है । आचार्य–छात्र अनुपात के औसत का प्रदर्शन रेखाचित्र कमशः 5.12 के माध्यम से किया गया है ।

इस रेखाचित्र से शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि जैसे–जैसे इन विद्यालयों की लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है इनमें छात्रों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हो रही है, परन्तु उसी अनुपात में शिक्षकों की नियुक्ति नही की जा रही है । इन विद्यालयों का पृथक–पृथक अध्ययन करने पर सबसे खराब स्थिति हमीरपुर जिले के सरस्वती विद्या

मन्दिर इण्टर कालेज में प्राप्त होती है । परन्तु यहाँ एक संतोष करने वाली बात यह है कि इस विद्यालय ने तेजी से इस अनुपात में सुधार करते हुए कभी 65.8(सत्र 1995–1996) रहे आचार्य–छात्र अनुपात को सत्र 2002–2003 एवं 2003–2004 तक 44.0 (लगभग) तक पहुंचा दिया है । कुछ विद्यालयों को छोड़कर अन्य विद्यालयों में आचार्य–छात्र अनुपात सम्पूर्ण औसत के निकट ही रहा है । समस्त प्रतिदर्श विद्यालयों में आचार्य–छात्र अनुपात का सम्पूर्ण औसत 32 एवं 33 के मध्य रहा है । जो कि शिक्षाविद्ों द्वारा स्वीकार्य प्रति शिक्षक 35 छात्र के मानक से बेहतर है ।

अध्याय तृतीय में प्रदर्शित तालिका कमाँक–3.17 'सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में पिछले एक दशक में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति' में वर्णित अध्यापक–छात्र अनुपात अधिकतम 70.67 एवं न्यूनतम 41.81 प्राप्त होता है । इस तालिका से इसी क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों के आचार्य–छात्र अनुपात का तुलनात्मक अध्ययन करने पर शोधकर्ता यह अवबोध कर रहा है कि इन विद्या मन्दिरों में आचार्य–छात्र अनुपात सम्पूर्ण क्षेत्र की तुलना में सदैव ही कम रहा है । अर्थात इन संस्थाओं में कार्यरत् आचार्यों को सम्पूर्ण क्षेत्र के शिक्षकों की तुलना में कम छात्रों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी प्रदान की जा रही है । इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं प्रति आचार्य छात्र संख्या न्यूनतम रखने का प्रयास करते हुए शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने का निरन्तर प्रयत्न कर रही हैं ।

5.2.6 तालिका कमाँक–5.6 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
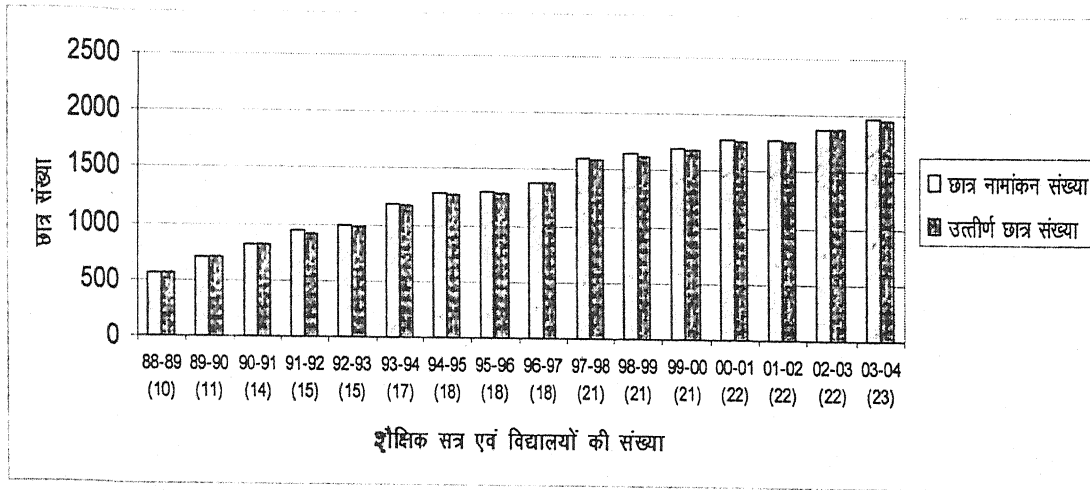
बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में कक्षा–अष्टम् में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या का सत्रशः विवरण प्रस्तुत करता हुआ रेखाचित्र कमाँक–5.13

उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण करने पर यह तथ्य प्राप्त होता है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में कक्षा अष्टम में नामांकित छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है । नामांकन में वृद्धि से इन विद्यालयों के कक्षा अष्टम् के परीक्षाफलों में कोई कमी देखने हो प्राप्त नही हुई है । कक्षा अष्टम् में उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत आँकड़ों के आधार पर लगभग 98% से 99% के मध्य है ।

तालिका कमाँक– 5.5 एवं 5.6 के विश्लेषणों के आधार पर शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोध परिकल्पना कमाँक द्वितीय,'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में छात्र नामांकन एवं आचार्यों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है तथा आचार्य–छात्र अनुपात मानकों के अनुरूप है,' सत्य सिद्ध होती है ।

5.2.7 तालिका कमाँक –5.7 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
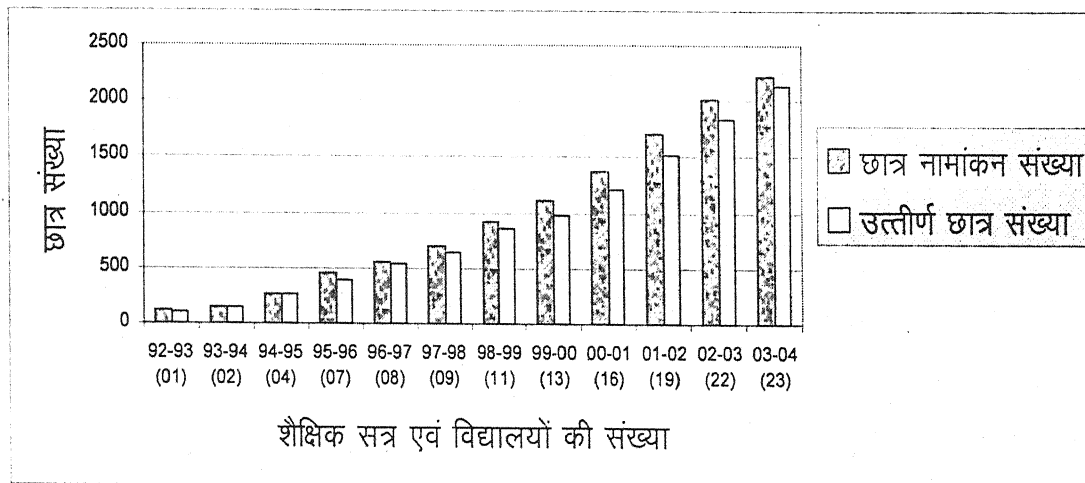
बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के हाईस्कूल (कक्षा–दशम्) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या को सत्रशः प्रदर्शित करता हुआ स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.14–
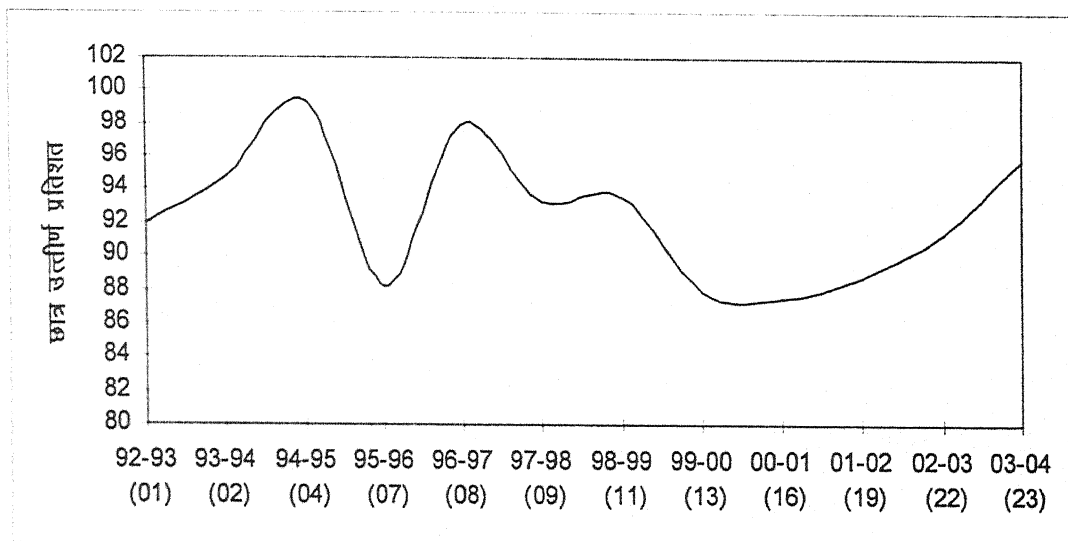
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में हाईस्कूल (कक्षा दशम्) में नामांकित छात्रों का सत्रशः उत्तीर्ण प्रतिशत के प्रदर्शन का रैखिक रेखाचित्र कमाँक–5.15–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने जैसे–जैसे हाईस्कूल स्तर की मान्यता प्राप्त की ~~प्राप्त की~~ है, इन विद्यालयों में हाईस्कूल

में छात्रों की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है । सत्र 2003–2004 में न्यादर्श (23) विद्यालयों मे 2220 बालक एवं बालिकाओं ने हाईस्कूल की परीक्षा दी थी । इस सत्र में औसतन प्रत्येक विद्यालय में लगभग 96.5 विद्यार्थी नामांकित थे । विद्यालयों का पृथक–पृथक अध्ययन हमें यह जानकारी प्रदान कर रहा है कि अपवाद स्वरूप एक दो विद्यालयों को छोड़कर प्रत्येक विद्यालय में हाईस्कूल में छात्रों का नामांकन लगातार बढ़ रहा है ।

तालिका कमाँक–5.7 में प्रदर्शित हाईस्कूल में छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत के आँकड़ों के रेखाचित्र कमाँक 5.15 का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि छात्र नामांकन में निरन्तर वृद्धि होने के पश्चात् भी इन विद्यालयों में छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत सदैव बहुत उच्च रहा है । प्रस्तुत आँकड़ों में न्यूनतम उत्तीर्ण प्रतिशत 87.5% एवं उच्चतम उत्तीर्ण प्रतिशत 99.3% रहा है । सत्र 2003–2004 में इन समस्त विद्यालयों का औसत उत्तीर्ण प्रतिशत 95.9% रहा ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का हाईस्कूल का औसत उत्तीर्ण प्रतिशत 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' के सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के हाईस्कूल के उत्तीर्ण प्रतिशत की तुलना में सदैव अधिक रहा है । इस निष्कर्ष से शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में इन सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने शिक्षा के उच्चतम मानकों का निर्धारण किया हुआ है । इस क्षेत्र के छात्रों के शैक्षिक उन्नयन में यह शिक्षा संस्थाऐं कड़ी मेहनत कर शत–प्रतिशत परीक्षाफल प्रदान करने का प्रयास ईमानदारी से कर रही हैं । सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के अन्य शिक्षा संस्थाओं के समक्ष एक मानक प्रस्तुत कर चुनौती प्रस्तुत कर रही हैं ।

5.2.8 तालिका कमाँक–5.8 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
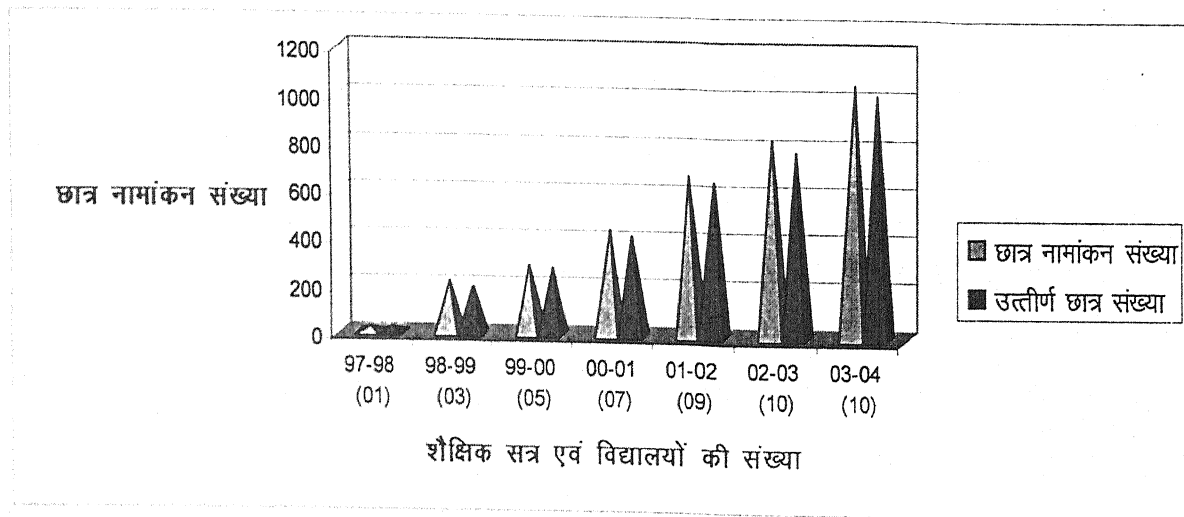
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में इण्टरमीडिएट (कक्षा–द्वादश) में छात्र नामांकन एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या का सत्रशः स्तम्भाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.16–
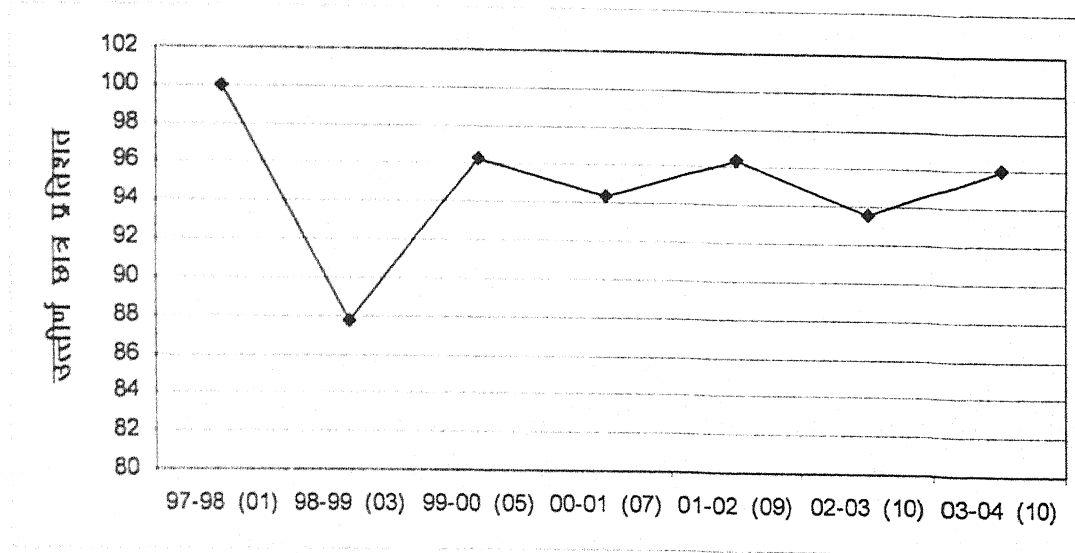
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में इण्टरमीडिएट में नामांकित छात्रों का सत्रशः उत्तीर्ण प्रतिशत प्रदर्शित करता हुआ रैखिक रेखाचित्र कमाँक–5.17–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने इण्टरमीडिएट स्तर की मान्यता सत्र 1997–1998 से प्राप्त करना प्रारम्भ किया था ।

अतः इस क्षेत्र में इण्टरमीडिएट के स्तर पर इन विद्यालयों का इतिहास ज्यादा पुराना नही है । सत्र 1997–1998 में मात्र एक विद्यालय इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त था । इसके पश्चात् इन विद्यालयों ने तेजी से इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त करना प्रारम्भ किया तथा सत्र 2003–2004 तक इण्टरमीडिएट मान्यता प्राप्त सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की संख्या बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में 11 तक पहुँच चुकी है । वर्ष 2003 में बाँदा के बालिका विद्या मन्दिर को मान्यता प्राप्त हुई है। इसका इण्टरमीडिएट का पहला बैच सत्र 2005 में परिषद की परीक्षा देगा । इसी कम में इन विद्यालयों में इसी स्तर पर छात्रों के नामांकन में तेजी से वृद्धि दृष्टिगत् हो रही है । पिछले चार सत्रों में इण्टरमीडिएट स्तर पर छात्रों के नामांकन में सवा दो गुने (2.39) से भी ज्यादा की वृद्धि हुई है, जहाँ संख्या 445 से 1062 तक पहुँची ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के इण्टरमीडिएट का परीक्षाफल सदैव अति उच्च स्तर का रहा है । इन विद्यालयों का इस स्तर पर औसत उत्तीर्ण प्रतिशत न्यूनतम 87.8% (1998–1999) और अधिकतम औसत उत्तीर्ण प्रतिशत 100% (1997–1998) रहा है । इन आँकड़ों से शोधार्थी यह निष्कर्ष निकाल पा रहा है कि इन विद्यालयों ने इण्टरमीडिएट स्तर पर भी शिक्षा की गुणवत्ता के उच्च मानक निर्धारित किए हैं । यहाँ गौर करने वाला तथ्य यह है कि यह समस्त विद्यालय 'विज्ञान वर्ग' में मान्यता प्राप्त हैं ।

शोधकर्ता यह भी समझ पा रहा है कि इन विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी कड़ी मेहनत करने में विश्वास करते है एवं उनके अध्यापक भी अपने विद्यार्थियों के साथ उतना ही दिल लगाकर मेहनत के साथ अपना योगदान देते हैं । प्रबन्ध तंत्र एवं प्रधानाचार्यों की नीतियाँ अच्छा परीक्षा परीणाम प्राप्त करने में सहायक हैं ।

5.2.9 तालिका कमाँक–5.9 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्रों द्वारा हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर पर अनेकों बार 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' की प्रतिवर्ष घोषित की जाने वाली 'मेरिट सूची' में अपना स्थान बनाया गया है । 'परिषद' द्वारा प्रतिवर्ष 'हाईस्कूल' एवं 'इण्टरमीडिएट' परीक्षाओं में पूरे प्रान्त में प्रथम पच्चीस स्थानों पर आने वाले छात्रों की पृथक–पृथक सूची की घोषणा की जाती है । इस सूची में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिरों के छात्र 'हाईस्कूल स्तर' पर सत्र 2003–2004 तक कुल मिलाकर 32 बार अपना नाम उज्जवल कर चुके हैं । 'इण्टरमीडिएट स्तर' पर सत्र 2003–2004 तक इन विद्यालयों के छात्र 7 बार अपना नाम मेरिट सूची में स्वर्णाक्षरों में अंकित करवा चुके हैं ।

हाईस्कूल स्तर पर मेरिट सूची में अभी तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन 'बैजनाथ भारद्वाज सरस्वती विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय, कर्वी (चित्रकूट) विद्यालय का रहा है । इसके 7 छात्र मेरिट सूची में अपना नाम अंकित करवा चुके हैं । इसके पश्चात 6 स्थान चिरगाँव के 'सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज' के छात्रों ने पाये हैं ।

इण्टरमीडिएट स्तर की 'मेरिट सूची' में 'सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, कोंच' (जालौन) के 2 छात्र स्थान प्राप्त कर चुके हैं ।

इस विश्लेषण से शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकाल पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में कार्यरत् सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं निश्चित ही यहाँ के छात्रों को उच्चगुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें इस स्तर पर तैयार कर रही हैं कि यहाँ के छात्र सम्पूर्ण प्रान्त के छात्रों के समकक्ष खड़े हो पाने की स्थिति में आ चुके हैं ।

तालिका कमाँक 5.7, 5.8 एवं 5.9 के विश्लेषणों के उपरांत शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोध परिकल्पना कमाँक तृतीय, 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्र हाईस्कूल (कक्षा दशम्) एवं इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) स्तरों की परीक्षाओं में उत्तम श्रेणी का प्रदर्शन कर रहे हैं', सत्य सिद्ध होती है ।

5.2.10 तालिका कमाँक–5.10 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
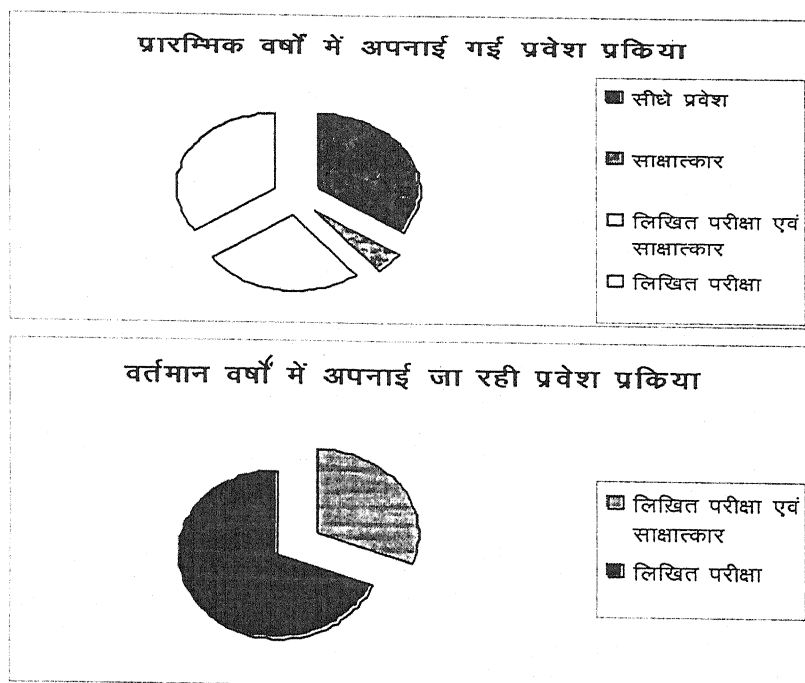
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों को प्रवेश देने के लिए अपनाई जाने वाली प्रकियाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती हुई चकाकृत्तियाँ रेखाचित्र कमाँक–5.18–

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में अपनी–अपनी स्थापना के समय विभिन्न प्रकार की प्रवेश प्रक्रियों का उपयोग किया था । 14 संस्थाओं ने लिखित परीक्षा या लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार विधि को अपनाया था । मात्र 9 संस्थाओं ने साक्षात्कार एवं सीधे प्रवेश देने की प्रक्रिया को अपनाया था।

वर्तमान समय में किसी भी संस्थान ने उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रवेश देने के लिए सीधे प्रवेश, साक्षात्कार या मेरिट की विधि को नहीं अपनाया हुआ है। 16 संस्थान वर्तमान में छात्रों को अपने यहाँ लिखित परीक्षा में उनके प्रदर्शन के आधार पर प्रवेश देने की नीति को अपनाये हुए हैं । 7 संस्थान लिखित परीक्षा के साथ–साथ छात्रों का साक्षात्कार में प्रदर्शन देखकर उन्हें प्रवेश दे रहे हैं । इन संस्थाओं ने यही नीतियाँ हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तरों पर छात्रों को प्रवेश देने के लिए अपनाई हुई हैं ।

प्रवेश प्रकिया के सन्दर्भ में छात्रों की संतुष्टी के प्रश्न पर सभी प्रधानाचार्यों ने पूर्ण संतुष्टी का भाव प्रदर्शित किया है । समस्त प्रधानाचार्यों ने इस प्रश्न पर भी सकारात्मक उत्तर दिया है कि उनके यहाँ अपनाई जा रही प्रवेश प्रक्रिया उन्हें विद्यालय में व्यवस्था बनाये रखने में सहयोग प्रदान कर रही है ।

उपरोक्त विश्लेषणों से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि जैसे–जैसे इन संस्थाओं में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या बढ़ती गई है इन संस्थाओं ने ज्यादा पारदर्शी प्रवेश प्रकिया अपनाना प्रारम्भ किया है ।

5.2.11 तालिका कमाँक–5.11 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के आय के स्त्रोतों का विश्लेषण करने पर शोघार्थी ने पाया कि इस क्षेत्र की समस्त सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं 'स्वावित्त पोषित' श्रेणी की हैं । भारत सरकार एवं प्रान्तीय सरकार से यह शिक्षा संस्थाऐं किसी भी मद में कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं कर रही हैं । न ही किसी गैर सरकारी संस्था से यह संस्थाऐं आर्थिक सहायता प्राप्त कर रही हैं ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं प्रमुखतः छात्रों द्वारा प्राप्त 'प्रवेश शुल्क' एवं 'शिक्षण शुल्क' द्वारा ही संचालित हो रही हैं । विद्यालय भवन, आचार्यों का वेतन, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का वेतन एवं अन्य व्यय हेतु इन विद्यालयों में छात्रों से प्राप्त शुल्कों का ही उपयोग हो रहा है । 15 विद्यालयों ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें दान भी प्राप्त होता है । एक विद्यालय ने सांसद एवं विधायक निधि प्राप्त होने की भी स्वीकारोक्ति की है ।

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि दान, डोनेशन एवं सांसद/विद्यायक निधि इन विद्यालयों की आय का नियमित स्त्रोत नही हैं । यह अनुदान के रूप में प्राप्त होते हैं जो कि अनियमित है। यह अनुदान कुछ निर्धारित मदों पर ही

व्यय किये जाते हैं । जैसे–विद्यालय भवन का विस्तार, पुस्तकों का कय, कम्प्यूटरों की खरीद एवं रखरखाव, काष्ठोकरण आदि । शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का वेतन छात्रों से प्राप्त शुल्कों से ही दिया जाता है ।

शोधार्थी ने यह पाया कि इन विद्यालयों द्वारा छात्रों से प्राप्त किये जाने वाला शिक्षण शुल्क तथाकथित अंग्रेजी माध्यम वाले पब्लिक स्कूल एवं कान्वेन्ट स्कूलों द्वारा छात्रों से वसूले जाने वाले शुल्क की तुलना में बहुत कम है ।

शोधकर्ता इस विश्लेषण से यह समझ पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की आर्थिक स्थिति एवं 'हिन्दी माध्यम' के विद्यालयों के प्रति समाज के मध्यमवर्गीय लोगों की 'वितृष्णा' के बावजूद यह सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं 'स्ववित्त पोषित' आधार पर ईमानदारी के साथ सबसे अच्छा कार्य करने का प्रयास कर रही हैं ।

5.2.12 तालिका कमाँक 5.12 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में न्यादर्श के आधार पर, विद्यार्थियों के लिए 12000 से भी अधिक काष्ठोपकरण उपलब्ध हैं । इन समस्त विद्यालयों में सभी छात्रों की आसान व्यवस्था के लिए कुर्सी, मेज, बेंच आदि उपलब्ध हैं ।

इस विवरण से शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि यह विद्यालय अपने सभी विद्यार्थियों के लिए आराम से बैठकर अध्ययन करने हेतु सुविधायें प्रदान कर रहे हैं ।

आचार्यों की सुविधाओं के लिए अधिकांश सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने अपने यहाँ 'आचार्य कक्ष' की व्यवस्था की हुई है । आँकड़ों के आधार पर 23 विद्या मन्दिरों में से 19 विद्यालयों में 'आचार्य कक्ष' उपलब्ध है केवल 4 विद्यालयों ने ही अपने यहाँ 'आचार्य कक्ष' की सुविधा प्रदान नहीं की हुई है ।

शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं अपने छात्रों एवं आचार्यों के लिए संतोषजनक रूप से संसाधन उपलब्ध कर रही हैं ।

5.2.13 तालिका कमाँक–5.13 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
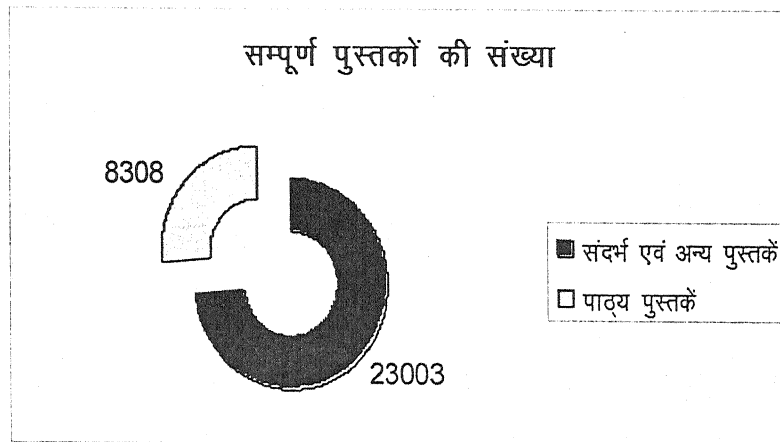
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों का चकाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.19–

इस रेखाचित्र से यह प्रदर्शित हो रहा है कि इन विद्यालयों ने अपने यहाँ सन्दर्भ पुस्तकों की उपलब्धता पर अधिक ध्यान दिया है । अच्छे पुस्तकालयों की यही पहचान होती है कि वह अपने विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन के लिए ज्यादा से ज्यादा विविधता पूर्ण जानकारी प्रदान करने वाली पुस्तकें उपलब्ध करे । शोधार्थी ने अपने अध्ययन में पाया कि इन संदर्भ पुस्तकों में भारतीय इतिहास, महापुरूषों की जीवनियाँ, संघ साहित्य के साथ–साथ हिन्दी के उच्चकोटि के निबन्ध, कहानी संग्रह, कविता संग्रह आदि उपलब्ध हैं । इन पुस्तकालयों में नियमित रूप से समाचार पत्र एवं पत्रिकाऐं भी आती हैं । छात्रों को नियमित रूप से अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं । 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान', 'भारतीय शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' की सभी ईकाइयों, 'शिशु शिक्षा समिति, उत्तर प्रदेश' की सभी ईकाइयों आदि के द्वारा प्रकाशित मासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक पत्रिकाओं को नियमित रूप से इन पुस्तकालयों में मंगाया जाता है ।

तालिका कमाँक 5.3 एवं 5.13 के विश्लेषणों के आधार पर शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में पुस्तकालयों की दशा संतोषजनक ही कही जा सकती है ।

5.2.14 तालिका कमाँक–5.14 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में उपलब्ध कम्प्यूटर शिक्षा सम्बन्धी जानकारी प्रदान करती चकाकृतियाँ रेखाचित्र कमाँक–5.20–

तालिका कमाँक– 5.14 के विश्लेषण से यह जानकारी प्राप्त हो रही है कि सभी प्रतिदर्शित सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने अपने यहाँ कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था की हुई है । यह प्रशंसनीय कार्य है । इन सभी विद्यालयों में सत्र 2003–2004 में कुल मिलाकर 237 कम्प्यूटर उपलब्ध थे । प्रति विद्यालय कम्प्यूटरों का औसत 10.3 प्राप्त होता है । 13551 छात्रों के आधार पर औसतन 57.2 छात्रों पर एक कम्प्यूटर उपलब्ध है। सामान्य तौर पर इन विद्यालयों में यह शिक्षा कक्षा षष्टम् से अष्टम् तक के छात्रों के लिए उपलब्ध है ।

विद्या मन्दिरों में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रबन्धन के लिए दो प्रकार की व्यवस्थाऐं प्राप्त हुई हैं । पहली व्यवस्था में 14 विद्यालयों ने स्वयं कम्प्यूटरों की व्यवस्था की हुई है एवं अपने यहाँ कम्प्यूटर आचार्य की नियुक्ति की हुई है । दूसरी व्यवस्था के अन्तर्गत 9 विद्यालयों ने कम्प्यूटर शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं उत्तरदायित्व निजी व्यक्तिगत संस्थाओं पर छोड़ा हुआ है ।

शोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि मात्र 03 विद्यालयो ने अपने यहाँ इण्टरनेट की व्यवस्था की हुई है ।

शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने अपने यहाँ छात्रों को कम्प्यूटर जगत एवं सूचना तकनीकी की सामान्य जानकारी प्रदान करने मात्र के लिए कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था की हुई है । यद्यपि कुछ विद्यालय इस दिशा में गम्भीरता से कार्य कर रहे हैं, उन्होंनें अपने यहाँ सुव्यवस्थित कम्प्यूटर लैब में 15 से 25 तक कम्प्यूटरों की व्यवस्था इण्टरनेट सहित की हुई है ।

5.2.15 तालिका कमाँक–5.15 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

स्वयं के क्रीड़ा स्थल की उपलब्धता
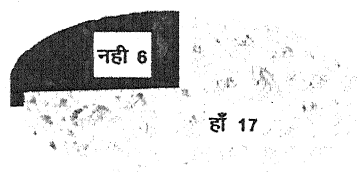
कीड़ा शिक्षकों की व्यवस्था
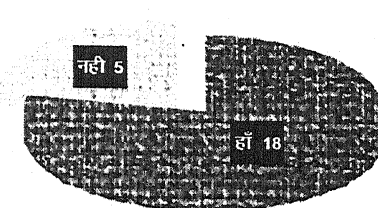
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रबन्धों को दर्शाता चकाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.21–

तालिका कमाँक 5.15 का विश्लेषण यह सूचना प्रदान कर रहा है कि यह संस्थाऐं छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रयास कर रही हैं । छात्रों के खेलकूद के लिए 17 विद्यालयों के पास स्वयं के कीड़ा स्थल हैं । 18 विद्यालयों ने अपने यहाँ कीड़ा एवं शारीरिक शिक्षक को नियुक्त किया हुआ है । इन विद्यालयों ने अपने यहाँ खो–खो, कबड्डी जैसे स्वदेशी खेलों के साथ–साथ फुटबाल, वालीबाल, बैडमिंटन, हैंडबाल जैसे खेलों की भी व्यवस्था की हुई है । एथलेटिक्स, गोलाफेंक, चक्काफेंक के संसाधनों को भी कुछ विद्यालयों ने अपने छात्र –छात्राओं को उपलब्ध करवाया हुआ है ।

शोधार्थी ने प्रश्नावली में पूँछे गये प्रश्नों के माध्यम से यह जानकारी भी प्राप्त की है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के

मध्य संकुल स्तर, मण्डल स्तर एवं क्षेत्रीय स्तरों पर प्रतिवर्ष खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है । इन विद्यालयों के विद्यार्थी 'विद्या भारती' द्वारा आयोजित प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी भाग लेने के लिए जाते हैं। यहाँ के विद्यार्थियों ने कई बार इन स्तरों पर पुरस्कार प्राप्त किये हैं ।

शोधकर्ता द्वारा इन विद्यालयों में आयोजित की जाने वाली पाठ्यसहगामी क्रियाओं के विवरण से यह समझा जा सका है कि यह विद्यालय अपने छात्रों के लिए विविधतापूर्ण पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन वर्ष भर करते हैं । इन क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के बारे में विविध जानकारी प्राप्त करते हैं । छात्रों के मानसिक विकास में यह क्रियायें महती भूमिका अदा करती हैं । छात्रों में सामाजिक गुणों का भी विकास इन क्रियाओं के माध्यम से इन विद्यालयों में किया जा रहा है ।

अतः शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने अपने यहाँ छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए संतोषजनक प्रबंध किये हुए हैं ।

5.2.16 तालिका कमाँक–5.16 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में संगीत शिक्षा अधिकारिक पाठ्यकम में सम्मिलित नही है । तदापि इन विद्यालयों ने अपने यहाँ संगीत शिक्षा एवं शिक्षकों की व्यवस्था की हुई है । संगीत शिक्षा की उपलब्धता के प्रश्न पर 17 विद्यालयों ने 'हाँ' में एवं 6 विद्यालयों ने 'नही' में उत्तर दिया । संगीत शिक्षक की उपलब्धता पर भी केवल 17 विद्यालयों ने धनात्मक उत्तर दिया । इन 17 विद्यालयों में से 3 विद्यालयों में दो–दो शिक्षक एवं अन्य विद्यालयों में एक–एक शिक्षक नियुक्त है ।

हारमोनियम, तबला, ढ़ोलक, आदि वाद्य यन्त्रों के नाम पर, 2 विद्यालयों को छोड़कर अन्य, 17 विद्यालयों में उपलब्ध हैं ।कुछ विद्यालयों में सम्पूर्ण 'घोष' उपलब्ध है ।

अपने अध्ययन द्वारा शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि इन विद्यालयों ने संगीत को पाठ्य विषय न होते हुए भी अपने विद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थान दिया है । इसका कारण यह है कि यह विद्यालय अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत् हैं । सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं दैनिक प्रार्थना के लिए प्रमुख रूप से संगीत शिक्षा का उपयोग किया जा रहा है ।

5.2.17 तालिका कमाँक–5.17 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
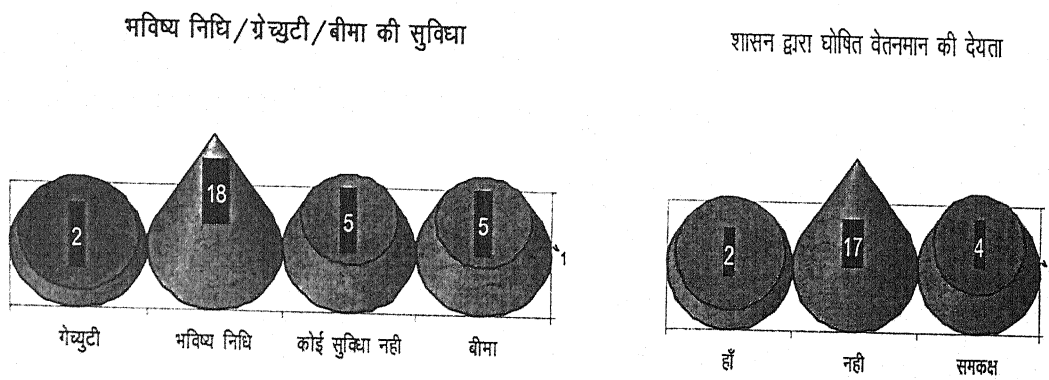
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में शिक्षकों को देय वेतनमान सम्बन्धी चकाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.22–

अच्छे विद्यालयों की परिभाषा में छात्रों को उपलब्ध सुविधाओं, वातावरण के साथ–साथ शिक्षकों की आत्मसंतुष्टी सर्वाधिक महत्व रखती है । शिक्षकों की आत्मसंतुष्टी में प्रथम स्थान शैक्षिक वातावरण एवं शिक्षकों को प्राप्त होने वाले सम्मान का ही होता है । तत्पश्चात् भौतिक सुविधाऐं एवं वेतन महत्व रखते हैं । आज के मंहगाई वाले दौर में धन का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है । अतः वर्तमान में शिक्षकों के लिए वेतन भी महत्व रखने लगा है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में से मात्र दो ही विद्यालयों ने यह स्वीकार किया है कि वह शिक्षकों को शासन के द्वारा घोषित वेतन मान प्रदान कर पा रहे हैं । 4 विद्यालय 'समकक्ष स्तर' का ही वेतन प्रदान कर रहे

है । शिक्षकों को विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा अनुमोदित भविष्य निधि, ग्रेच्युटी एवं बीमा वाली त्रिलाभ योजनाओं का भी लाभ इन संस्थाओं के शिक्षकों को प्राप्त नही हो पा रहा है । मात्र 2 विद्यालयों ने ग्रेच्युटी एवं 5 विद्यालयों ने बीमा का भी लाभ अपने शिक्षकों को देना स्वीकार किया है । 8 विद्यालयों ने यह स्वीकार किया है कि वह शिक्षकों को भविष्य निधि का लाभ देते हैं । शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में यह पाया कि भविष्य निधि कटौती एवं अंशदान में शासकीय नियमों के पालन में शिथिलता है । शासकीय नियमों के अनुरूप अवकाश के नियमों का भी पालन नहीं हो रहा है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में शिक्षकों को भौतिक सुख–सुविधायें एवं पूर्ण वेतन प्राप्त न होने की दशा में भी प्रधानाचार्यों ने प्रश्नोत्तरी में यह स्वीकार किया है कि विद्यालय में उपलब्ध एवं प्राप्त सुविधाओं के प्रति शिक्षकों में संतोष है । बहुत ही कम प्रधानाचार्यों ने असंतोष व्यक्त किया है ।

शोधार्थी ने इसका विश्लेषण करने पर कई ऐसे कारक पाये हैं जो शिक्षकों को संतोष प्रदान कर रहे हैं । जैसे– विद्यालय में छात्रों से मिलने वाला सम्मान, अभिभावकों का आचार्यों के प्रति आदर भाव, समाज में सम्मानित दृष्टि से देखा जाना, परिश्रम के प्रति प्रशंसा प्राप्त होना, विद्यालय की विचारधारा से सहमत होना आदि । इसके अतिरिक्त आचार्य यह भलीभाँति जानते हैं कि स्वावित्त पोषित विद्यालय की आर्थिक सीमाएं होती हैं ।

शोधकर्ता ने यह भी पाया है कि इन विद्यालयों के शुल्क के समकक्ष अन्य विद्यालय भी छात्रों से शुल्क प्राप्त कर रहे हैं । परन्तु उन विद्यालयों द्वारा अपने शिक्षकों को सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों की तुलना में आधा वेतन ही प्रदान किया जा रहा है ।

उपरोक्त विश्लेषणों से शोधकर्ता यह समझ पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के आचार्य कम वेतन एवं काम के अधिक दवाब के बाद भी आन्तरिक

प्रेरणा से प्रेरित होकर शांत भाव से छात्रों को शिक्षित करने में पूरे मनोयोग से समर्पित हैं ।

तालिका कमाँक 5.11 एवं 5.17 के विश्लेषणों के उपरांत शोधकर्ता की प्रस्तावित शोध परिकल्पना कमाँक पंचम, 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं आर्थिक स्त्रोतों के आधार पर शिक्षकों को सरकारी नियमों के अनुरूप वेतन प्रदान कर रही हैं', असत्य सिद्ध होती है ।

5.2.18 तालिका कमाँक– 5.18 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) के सभी सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम का पालन किया जा रहा है । फलतः राज्य सरकार द्वारा इन विद्यालयों के कार्य में कोई भी बाधा उत्पन्न नहीं की जाती है । शिक्षण विधि के प्रश्न पर सभी विद्यालयों ने 'विद्या भारती' द्वारा अनुमोदित 'पंचपदीय' प्रणाली के उपयोग की जानकारी दी है । पंचपदीय प्रणाली के साथ–साथ विषयों के आधार पर प्रायोगिक एवं अन्य विधियों का भी उपयोग शिक्षकों के द्वारा किया जा रहा है। अपने द्वारा प्रयोग की जा रही विधियों के प्रति सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने छात्रों के दृष्टिकोण को संतुष्टीकारक बतलाया है । मात्र 2 प्रधानाचार्यों के अतिरिक्त सभी प्रधानाचार्यों का कहना है कि उपयोग की जा रही शिक्षण शैलियों से छात्रों में रटने की प्रवृत्ति का विकास नहीं हो रहा है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा नियमित विद्यालयी शिक्षण कार्य सम्पन्न करने के साथ–साथ रविवार एवं अवकाश के दिनों में भी अतिरिक्त कक्षाओं के द्वारा छात्रों को शिक्षित किया जाता है । कुछ विद्यालयों ने यह भी बतलाया है कि वह रात्रिकालीन कक्षाओं का आयोजन कर कठिन विषयों की विशेष कक्षायें संचालित करते हैं । आचार्यों के द्वारा कमजोर छात्रों को अलग से समय दे कर उनकी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है ।

शोधार्थी ने यह पाया कि सरस्वती विद्या मन्दिरों के आचार्य वास्तव में अपने छात्रों के साथ पूरे मनोयोग से कड़ी मेहनत करते हैं एवं छात्र भी अपनी क्षमताओं से अधिक प्रदर्शन करने को उत्साहित हैं ।

5.2.19 तालिका कमाँक–5.19 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में विद्यालय संचालन हेतु उत्तर प्रदेश शासन के स्ववित्तपोषित विद्यालय योजना के नियमों का पालन किया जा रहा है ।

सरस्वती विद्या मन्दिरों के सभी प्रधानाचार्यों, केवल एक को छोड़कर, ने यह स्वीकार किया है कि स्थानीय प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति विद्यालय संचालन के उनके कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करती है । प्रधानाचार्य शैक्षिक कार्यों में स्वयं निर्णय लेते हैं । प्रबन्धकार्यकारिणी पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों को छोड़कर प्रवेश प्रकिया, आचार्य चयन एवं निष्कासन, वेतन, अवकाश एवं पाठ्य सहभागी कियाओं के बारे में अपने सुझाव प्रदान करती है ।

इस तालिका के विश्लेषण से शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकाल पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का संचालन पूर्णतः प्रबन्ध कार्यकारिणी समितियों के हाथ में ही है । अन्तिम निर्णय प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति द्वारा लिया जाता है ।

5.2.20 तालिका कमाँक–5.20 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं एक राष्ट्रीय संस्था 'विद्या भारती' द्वारा संचालित की जा रही हैं । इस अखिल भारतीय संस्थान की अपनी विचारधारा के आधार पर पूरे राष्ट्र में एक अलग ही पहचान है । 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' अपनी इस विशेष पहचान के आधार पर अपने विद्यालयों में एक अलग ही प्रकार का वातावरण तैयार किये हुए है । अतैव सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की समाज के अन्दर

एक अलग ही प्रकार की छवि का निर्माण हुआ है । सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों की विशेष छवि ने उन्हे जनता के मध्य लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करबाई है ।

जनता से सहयोग प्राप्त होने के प्रश्न पर दो प्रधानाचार्यों का अनुभव अच्छा नहीं रहा है । इनके अतिरिक्त सभी प्रधानाचार्यों ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें जनता से सहयोग प्राप्त होता है । समाज में इन विद्यालयों की देशभक्त एवं राष्ट्रभक्त छवि के साथ–साथ संस्कारित शिक्षा केन्द्र के रूप में उत्तम छवि है ।

प्रधानाचार्यों के अनुसार इन विद्यालयों की विशेष छवि के कारण कभी इन्हें शासन के द्वारा कोई भी परेशानी नहीं हुई है । 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' ने 'सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, उरई' एवं 'सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, बाँदा' को 'ए' श्रेणी की मान्यता प्रदान की हुई है ।

इस विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता का निष्कर्ष है कि सरस्वती विद्या मन्दिरों की विशेष छवि ने इन्हें समाज में विशेष स्थान प्रदान कर जनता का सहयोग प्राप्त करवाया है ।

तालिका कमाँक 5.10, 5.18, 5.19 एवं 5.20 के विश्लेषणों के उपरांत शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोध परिकल्पना कमाँक षष्ट, **'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सरकारी पाठ्यकम एवं नियमों का पालन हो रहा है तथा जनता के मध्य इनकी छवि अच्छी है', आँशिक भागों को छोड़कर सत्य सिद्ध होती है ।**

5.2.21 तालिका कमाँक–5.21 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के प्रधानाचार्यों को सम्भवतः 'निर्देशन सेवाओं' का अर्थ स्पष्ट नहीं है । मात्र एक प्रधानाचार्य ने 'शिक्षण एवं भविष्य हेतु' निर्देशन सेवा उपलब्ध है, उत्तर दिया है । 14 प्रधानाचार्यों ने निर्देशन सेवा उपलब्धता की स्वीकारोक्ति के पश्चात् भी उसके क्षेत्र के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं किया ।

उपरोक्त विश्लेषण से शोधार्थी यह समझ पर रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के लिए कोई औपचारिक 'निर्देशन सेवा' उपलब्ध नहीं है। 'स्वास्थ्य सेवाओं' के बारे में 21 प्रधानाचार्यों का कहना है उनके यहाँ छात्रों को स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध हैं । शासन द्वारा स्वस्थ्य सेवाओं की सुविधा मात्र 8 विद्यालयों ने प्राप्त की है । अधिकाँश विद्यालयों का कहना है कि वह छात्रों को स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाऐं उपलब्ध करने का कोई अतिरिक्त शुल्क छात्रों से नहीं लेते हैं ।

शोधकर्ता इस तालिका के विश्लेषण से यह समझ पा रहा है कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं वर्तमान समय में छात्रों के लिए निर्देशन सेवाओं एवं स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति गम्भीर नहीं हैं ।

5.2.22 तालिका कमाँक–5.22 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
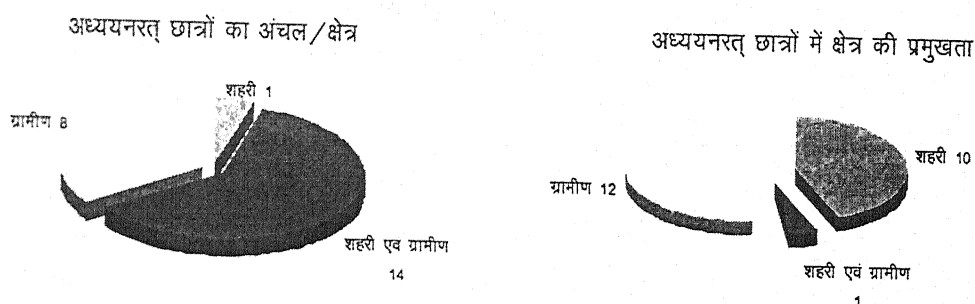
बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्रों की क्षेत्रीय पृष्ठभूमि को प्रदर्शित करती हुई चकाकृतियाँ रेखाचित्र कमाँक–5.23–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के छात्रों की क्षेत्रीय पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने पर शोधार्थी ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि सभी विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी साथ–साथ अध्ययन कर रहे हैं । 8 विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकायें बाहुल्यता के साथ अध्ययन् हेतु आ रहे हैं । शेष 15 विद्यालयों में ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आ रहे हैं ।

अध्ययनरत् छात्रों में किस क्षेत्र के छात्रों की प्रमुखता है ? इस प्रश्न के उत्तर का विश्लेषण करने पर शोधार्थी को यह परिणाम प्राप्त हुआ कि 10 विद्यालयों में ग्रामीण छात्रों की बाहुल्यता है । 12 विद्यालयों में शहरी छात्रों की बाहुल्यता है । शेष एक में दोनों क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के छात्र लगभग समान संख्या में हैं .।

इस विश्लेषण से शोधकर्ता यह निष्कर्ष प्राप्त कर पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों की संख्या अधिक है । यहाँ एक तथ्य यह भी उल्लेखनीय है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की संख्या सर्वाधिक तहसील स्तरों पर ही है । कस्बा स्तर पर भी यह विद्यालय कार्यरत हैं ।

अधिसंख्यक प्रधानाचार्यों ने छात्रों द्वारा इन विद्यालयों में प्रवेश लेने का प्रमुख कारण सामाजिक माना है । धार्मिक कारण कहने वाले मात्र 2 प्रधानाचार्य हैं । मात्र एक ने प्रमुख कारण आर्थिक माना है ।

5.2.23 तालिका कमाँक 5.23 का विश्लेषण एवं व्याख्या–
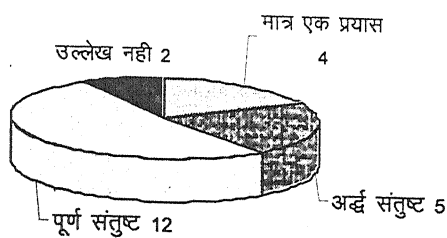
लोकतांत्रिक प्रयासों के प्रति प्रधानाचार्यों का दृष्टिकोण
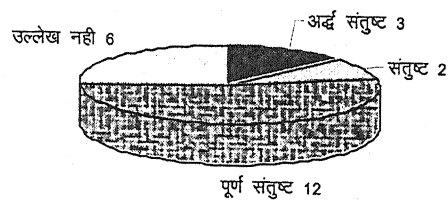
छात्रों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रति के प्रति प्रधानाचार्यों का दृष्किोण

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावना एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों के प्रति प्रधानाचार्यों के दृष्टिकोणों को प्रदर्शित करती हुई चकाकृति रेखाचित्र कमाँक–5.24

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावना विकसित करने हेतु कई उपक्रम किये जाते हैं । प्रमुख विधि है छात्र संसद का निर्माण । देश की लोकसभा एवं न्यायव्यवस्था की कार्यप्रणाली का एक अनुभव प्रदान करने लिए सभी विद्यालयें में छात्र संसद का गठन किया जाता है । इस संसद के अन्तर्गत मंत्रिमण्डल एवं न्यायालयों का गठन किया जाता है । बाल सभा के आयोजन का भार पूर्णतः छात्रों पर ही होता है ।

अध्यापक–छात्र सम्बन्धों में भी लोकतांत्रिक भावनाओं का ध्यान रखा जाता है । सामूहिक सभायें, समूह भोज, सामूहिक किया कलापों जैसे कार्यों को दैनिक रूप से आयोजित किया जाता है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं द्वारा छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं का विकास करने हेतु जो उपाय किये जा रहे हैं उनकी सफलता के प्रति प्रधानाचार्यों का भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है । 4 प्रधानाचार्य इन उपायों को मात्र एक प्रयास मानते हैं । प्रयुक्त उपायों के प्रति 5 प्रधानाचार्य 'अर्द्ध संतुष्ट' हैं । 12 प्रधानाचार्यों ने

'पूर्ण संतुष्ट' होने का भाव प्रदर्शित किया है । 2 प्रधानाचार्य किसी भी प्रकार की धारणा नहीं बना सके ।

शोधार्थी इस विश्लेषण से यह समझ पा रहा है कि यह शिक्षा संस्थान अपने यहाँ छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं का विकास करने हेतु सक्रिय एवं प्रयत्नशील हैं, परन्तु अभी इनकी सफलता का कसौटी पर खरा उतरना शेष है ।

सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं अपने छात्रों में राष्ट्रीय चेतना एवं अवबोध विकसित करने में निरन्तर प्रयासरत् हैं । इस कार्य हेतु छात्रों को 'वन्दना' से लेकर 'वन्देमातरम्' तक प्रतिदिन कई किया कलाप करवाये जाते हैं । नियमित रूप से राष्ट्रीय चरित्रों की जयन्तियाँ मनाकर उनके कार्यों के बारे में छात्रों को जागरूक किया जाता है । राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन, देशाटन, छात्र शिविर, राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा एवं राष्ट्रीय आपदा में सहायता प्रदान कर छात्रों को देश के लिए चिन्तन करने को प्रेरित एवं उत्तेजित किया जाता है ।

यद्यपि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के समस्त प्रधानाचार्य इस बात से सहमत हैं कि उनके विद्यालय में प्रयुक्त पाठ्यकम छात्रों में राष्टीय चेतना का विकास करने में सहायक है । तदापि यह सभी प्रधानाचार्य छात्रों में जाग्रत राष्ट्रीय चेतना के प्रति विभिन्न प्रकार का संतुष्टी स्तर व्यक्त रहे हैं ।

छः (6) प्रधानाचार्य तो अपना मत ही तैयार नहीं कर सके । 3 प्रधानाचार्यों ने 'अर्द्ध संतुष्ट' होने का मत दिया । 2 प्रधानाचार्यों ने संतुष्ट होने का भाव प्रदर्शित किया। शेष 12 प्रधानाचार्य बन्धुओं ने अभ्यास में लिये जा रहे प्रयासों से छात्रों में जाग्रत राष्ट्रीय चेतना के प्रति 'पूर्णतः संतुष्ट' होने का उल्लेख किया है ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के अन्दर राष्ट्रीय चेतना विकसित करने के लिए अपनाये जा रहे उपायों के प्रति शोधार्थी

का मत है कि इस प्रकार के प्रयास इन विद्यालयों के द्वारा किया जाना सराहनीय है, परन्तु इनकी सफलता का भी मूल्यांकन करने की आवश्यकता है ।

तालिका कमाँक–5.23 के विश्लेषणसेशोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोध परिकल्पना कमाँक– सप्तम्, 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं बालकों में लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास, राष्ट्रीय चेतना का विकास एवं उनका सर्वांगीण विकास करने में सक्षम भूमिका का निर्वाहन कर रही हैं, सत्य सिद्ध होती है ।

5.2.24 तालिका कमाँक–5.24 का विश्लेषण एवं व्याख्या–

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में 8 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं अपने यहाँ छात्रों को किसी प्रकार के रोजगारपरक कौशल सिखलाने का प्रयत्न कर रही हैं । 9 विद्यालयों ने स्पष्ट रूप से इस सन्दर्भ में किसी भी प्रकार के प्रयासों से मना किया है । 3 विद्यालयों ने स्पष्ट भाषा में उत्तर नहीं दिया है । 'हाँ' में उत्तर देने वाले विद्यालयों ने अपने यहाँ चॉक बनाना, मोमबत्ती बनाना, स्याही, अगरबत्ती, खिलौने बनाने जैसे कौशलों का उल्लेख किया है । कुछ ने पुस्तक कला को रोजगार परक कौशल माना है । दो बालिका विद्यालयों ने अपने यहाँ लड़कियों के लिए सिलाई आदि का प्रबन्ध किया हुआ है ।

शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकाल पा रहा है कि बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं अभी रोजगारपरक, व्यवसायिक माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने के प्रति पूर्णरूप से गम्भीर नहीं हैं । बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के विकास के लिए इस दिशा में इन संस्थाओं को आज की मांग के अनुसार कदम उठाने अभी शेष हैं ।

तालिका कमाँक 5.12, 5.13, 5.14, 5.15, 5.16, 5.21, 5.22 एवं 5. 24 के विश्लेषणों के आधार पर शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोध परिकल्पना कमाँक चतुर्थ, 'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु संतोषजनक रूप से कार्य कर रही हैं,' आँशिक भागों को छोड़कर सत्य सिद्ध होती है ।

*** ********************** ***

षष्ठम् अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.0 निष्कर्ष – ''बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन'' शीर्षक के अन्तर्गत किये गये शोधकार्य में निर्धारित उद्‌देश्यों के आधार पर शोधकर्ता निम्न निष्कर्षों पर पहुँचा है –

6.1 शोध कार्य के निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्धारित उद्‌देश्यों के आधार पर प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् शोधकर्ता निम्न निष्कर्षों पर पहुँचा है –

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संख्यात्मक प्रगति, श्रेणी उन्नयन, भवनों की दशा एवं उनमें छात्रों के लिए उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करना', उद्‌देश्य के आधार पर शोधार्थी को निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संख्यात्मक रूप से तीव्र गति से प्रगति की है ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के समस्त जिला मुख्यालयों सहित तहसीलों, कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर लगभग समान रूप से ध्यान दे रहे हैं ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने पिछले एक दशक में तेजी से हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर तक अपने विद्यालयों का उन्नयन किया है ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं 'स्वयं के स्वामित्व' वाले पक्के एवं कंक्रीट भवनों में समस्त छात्रों के बैठने के लिए कक्ष, कष्ठोपकरण एवं शौचालयों की व्यवस्था किये हुए हैं ।

– बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र की जनसंख्या एवं शिक्षा की मांग की तुलना में इन संस्थाओं की संख्या एवं छात्र धारण क्षमता अभी कम है ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में छात्र नामांकन में वृद्धि, नामांकित छात्रों की भौगोलिक पृष्ठभूमि, आचार्यों की संख्या में वृद्धि एवं आचार्य–छात्र अनुपात का अध्ययन करना', के उद्‌देश्य के आधार पर शोधकर्ता के निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं –

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के नामांकन की दर में सतत् रूप से वृद्धि हो रही है ।

– बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले छात्रों का अनुपात अधिक है ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्र नामांकन वृद्धि के अनुपात में शिक्षकों (आचार्यों) की संख्या में वृद्धि संतोषजनक ही है ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आचार्य–छात्र अनुपात मानकों के अनुरूप है ।

'कक्षा अष्टम्, हाईस्कूल (कक्षा दशम्) एवं इण्टरमीडिएट (कक्षा द्वादश) स्तरों की परीक्षाओं में बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्रों के प्रदर्शन एवं उपलब्धियों का अध्ययन करना', उद्देश्य के आधार पर शोधकर्ता के निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं –

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में कक्षा अष्टम् में छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत सदैव शत प्रतिशत की श्रेणी का रहा है ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्रों का 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षाओं में प्रदर्शन, छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत के आधार पर , सदैव अति उच्च श्रेणी का रहा है ।

– बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्र 'माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश' की प्रदेशस्तरीय मेधावी छात्र सूची में अपना स्थान निरन्तर बना रहे हैं ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों एवं उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करना', उद्देश्य के आधार पर शोधकर्ता द्वारा निम्न निष्कर्ष निगमित होते हैं –

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान अपने छात्रों के शारीरिक विकास हेतु संतोषजनक रूप में ही प्रयास कर रहे हैं ।

— सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के लिए कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है ।

— सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में छात्रों के मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु समुचित मात्रा में संसाधन उपलब्ध हैं ।

— सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान छात्रों के मानसिक, बैद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु संतोषजनक रूप में क्रिया–कलापों का आयोजन कर रहे हैं ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के आर्थिक स्त्रोतों एवं शिक्षकों को प्राप्त होने वाले वेतन की जानकारी प्राप्त करना', उद्देश्य के अनुसार शोधकर्ता द्वारा निगमित निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं –

— सभी सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान स्ववित्त पोषित श्रेणी के हैं एवं छात्रों से प्राप्त होने वाला शुल्क ही इनकी आय का नियमित स्त्रोत है ।

— सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आचार्यों का वेतनमान न तो सरकारी वेतन के अनुरूप है न ही इन्हें 'त्रिलाभ' प्राप्त हो रहे हैं ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में सरकारी पाठ्यक्रम एवं नियमों के पालन किये जाने की स्थिति का अध्ययन करना', के उद्देश्य के आधार पर शोधकर्ता के निष्कर्ष निम्न हैं –

— सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान छात्रों के प्रवेश हेतु पारदर्शी प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में 'उत्तर प्रदेश शासन' के पाठ्यक्रम का परिचालन कर रहे हैं ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाऐं उत्तर प्रदेश शासन के 'स्ववित्तपोषित विद्यालय नियमों' के अनुरूप बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संचालित की जा रही हैं ।

'सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं, राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रभक्ति के विकास के लिए किये जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना', उद्देश्य के अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा निगमित निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं –

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास हेतु सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान छात्रों में राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रभक्ति के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करा रहे हैं ।

सुझाव–

6.2 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को सुझाव–

– बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं को ग्रामीण एवं पिछड़े भागों में अभी और विस्तार एवं विकास करने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

– इन संस्थानों को ललितपुर, बाँदा, महोबा, एवं चित्रकूट जिलों में अपने विस्तार पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ।

– जूनियर हाईस्कूलों का तेजी से हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर तक उच्चीकरण करने की आवश्यकता पर ध्यान देना चाहिए ।

– इन संस्थाओं को अपने यहाँ पुस्तकालयों, कीड़ा कक्षों, कीड़ा स्थलों एवं संगीत कक्षों की उपलब्धता एवं सुनिश्चितता तथा उनकी स्थिति में सुधार करने की ओर ध्यान देना चाहिए ।

– इन संस्थानों को इण्टरमीडिएट स्तर पर 'विज्ञान वर्ग' के साथ–साथ 'वाणिज्य' एवं 'कला' वर्गों पर भी ध्यान देना चाहिए ।

– इन संस्थानों को वर्तमान युग के लिए आवश्यक कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करने की औपचारिकता न निभाते हुए गम्भीर प्रयासों की ओर ध्यान देना चाहिए ।

– छात्रों को और अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए इन संस्थाओं द्वारा सर्वप्रथम आचार्यों की आर्थिक स्थिति को सुधारने एवं चिन्ताओं को कम करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए ।

– आचार्यों को अधिक कियाशील एवं उनकी मानसिक स्थिति की ओर सुदृढ़ करने के लिए उन पर से कार्यों का दबाव एवं तनाव कुछ कम करना चाहिए ।

– छात्रों के मनोरंजन एवं सर्वांगीण विकास के उद्देश्यों के अन्तर्गत विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन प्रतिवर्ष नियमित रूप से होना चाहिए ।

– किशोरावस्था के छात्रों की विभिन्न समस्याओं को दृष्टिगत् रखते हुए इन संस्थानों को अपने यहाँ निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं, स्वास्थ्य सेवाओं एवं रोजगार परक कौशलों के प्रशिक्षण पर ध्यान देना चाहिए ।

– इन संस्थाओं को अपनी विद्यार्थी धारण क्षमता में वृद्धि करना चाहिए ।

6.3 अग्रिम शोधकार्य हेतु सुझाव –

प्रस्तुत शोध विषय पर कार्य करते हुए शोधकर्ता को यह अनुभव हुआ कि यह विषय अति विस्तृत एवं जटिल है । इस शोध से सम्बन्धित विषयों पर कोई विशेष शोधकार्य नहीं हुआ है । अपने शोधकार्य के सीमांकन के अन्तर्गत शोधकर्ता बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के कुछ कार्यों का ही अध्ययन कर सका है । शोधकर्ता यह अनुभव कर रहा है कि इन संस्थाओं के कार्यों पर अभी और शोध की आवश्यकता है । अतः शोधकर्ता अग्रिम शोध कार्यों हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा है –

– 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' के संगठन एवं कार्यों का अध्ययन ।

– 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर चलाये जा रहे विद्यालयों का राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तरों पर अध्ययन ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में अध्ययनरत् छात्रों का सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के कार्यों से तुलनात्मक अध्ययन ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं, राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्र भक्ति के विकास हेतु अपनाये जा रहे कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का किन्हीं प्रमाणिक उपकरणों द्वारा अध्ययन ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों की पृष्ठभूमि एवं आर्थिक स्थिति का उनके छात्रों एवं शैक्षणिक कार्यों पर प्रभाव ।

– सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के पुरातन छात्रों के माध्यम से इन विद्यालयों के 'दर्शन' एवं प्रभावशीलता का आलोचनात्मक अध्ययन करना ।

****

परिशिष्टका

एवं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट –1
उत्तर प्रदेश के मानचित्र में बुन्देलखण्ड क्षेत्र
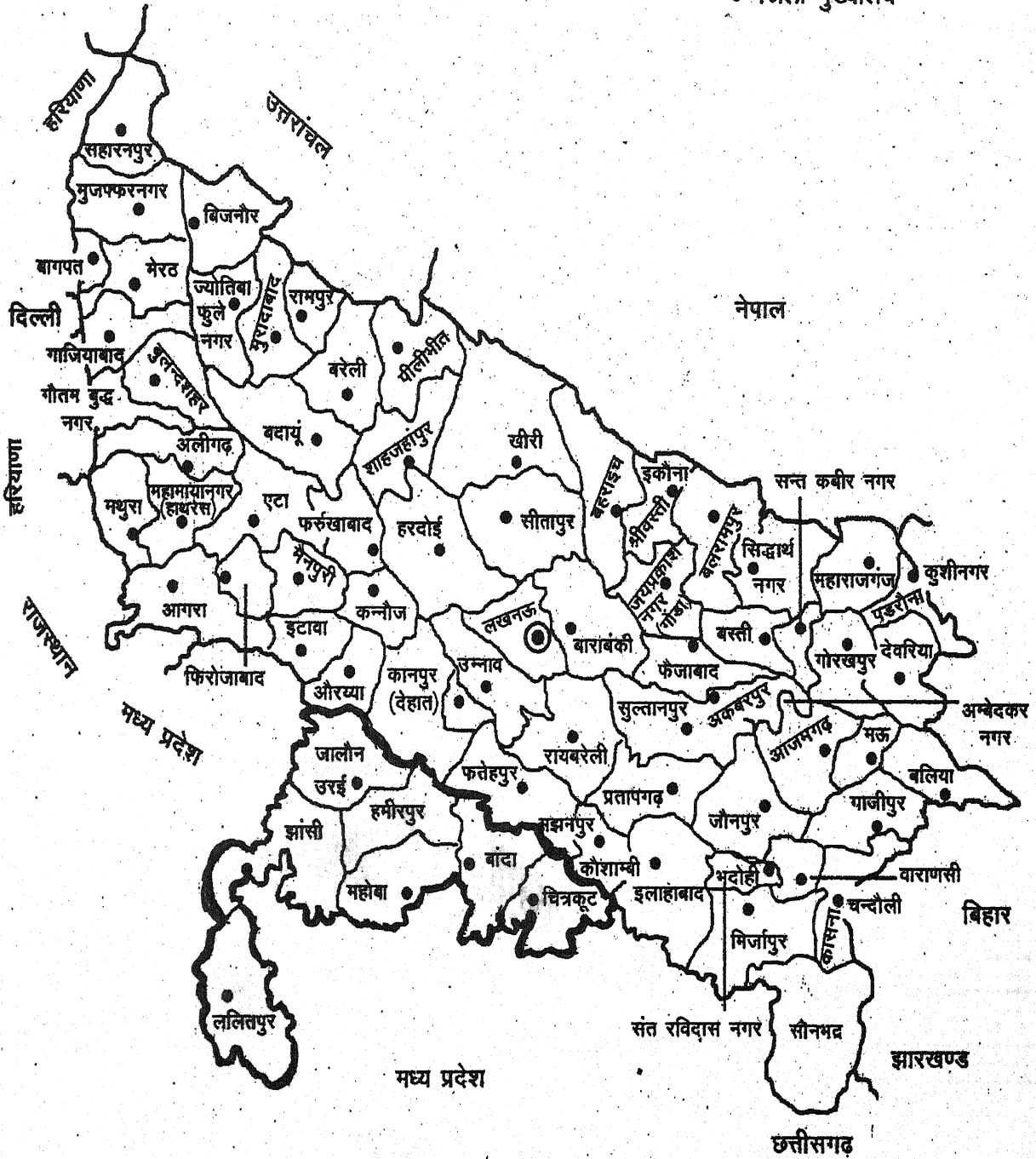
झाँसी-मण्डल
N
1 C.M. = 10 KMS
रामपुरा
माधौगढ़
जालौन
कुठौंद
नदी गाँव
रेढर
कोंच
उरई
कालपी
महेवा
कदौरा
डकोर
कोटरा
एट
समथर
मोंठ
एरच
बामौर
ककरवई
गुरसराय
गरौठा
चिरगाँव
बड़ागाँव
झाँसी
रक्सा
बबीना
बरुआ सागर
मऊरानीपुर
टोड़ी फतेहपुर
लहचूरा
बंगरा
कटेरा
तालबेहट
पुराकला
जखौरा
बार
बानपुर
ललितपुर
महरौनी
बिरधा
पाली
सौजना
मड़ावरा
मदनपुर
गिरार
NH25
NH26
कानपुर को
इलाहाबाद को
सागर
भोपाल को
राजघाट बाँध
माताटीला बाँध
क्र.सं. | विवरण | संकेत
1- राज्य/जनपद सीमा
2- विकास खण्ड सीमा
3- तहसील सीमा
4- जनपद/तहसील मुख्या०
5- विकास खण्ड मुख्यालय
6- नदियाँ
7- बाँध
8- रेलवे लाईन
9- नेशनल हाईवे
10- थाना
(अली मुहम्मद खाँ)
कार्टोग्राफिक असिस्टेंट
झाँसी
(बी० राम)
उपनिदेशक अर्थ एवं संख्या
झाँसी मण्डल झाँसी

मानचित्र:- चित्रकूटधाम मण्डल, बाँदा
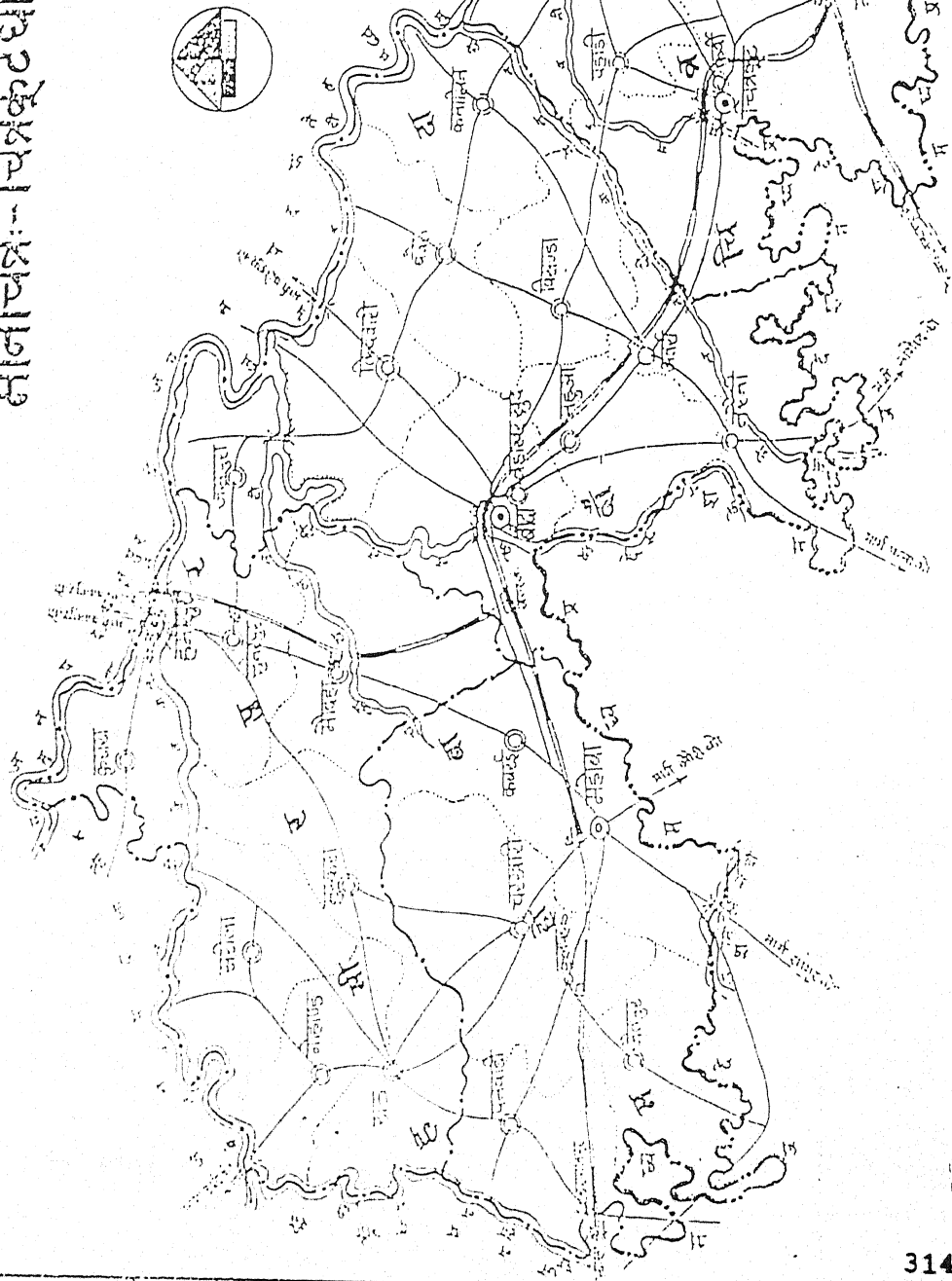
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के कार्यों की वर्तमान स्थिति

क्र0स0	विद्यालय इकाई	उत्तर क्षेत्र	प.उत्तर प्रदेश क्षेत्र	पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र	बिहार क्षेत्र	पूर्वोत्तर क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र	दक्षिण मध्य क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र	राजस्थान क्षेत्र	मध्य क्षेत्र	सर्वयोग
1	शिशु वाटिका युक्त विद्यालय	203	–	–	950	300	–	614	269	–	600	712	3648
2	स्वतंत्र शिशु वाटिका	206	2	17	11	1	662	88	111	406	43	75	1622
3	प्राथमिक विद्यालय कक्षा 5 तक	252	1123	1210	643	220	365	284	242	378	289	3555	8561
4	माध्यमिक विद्यालय कक्षा 8 तक	124	471	411	327	150	152	240	96	217	220	1310	3718
5	उच्च माध्यमिक वि. कक्षा 10 तक	118	81	133	163	83	98	223	39	351	136	204	1629
6	उच्चत्तर मा.वि. कक्षा 12 तक	44	85	66	12	–	2	12	40	106	22	218	607
7	महाविद्यालय	2	1	–	2	–	–	5	1	6	3	–	20
8	प्रशिक्षण महा विद्यालय	1	2	2	2	–	2	–	2	6	–	2	19
9	तकनीकी विद्यालय	–	–	–	–	–	–	3	1	2	–	–	6
10	एकल आचार्य विद्यालय	135	228	198	209	195	18	26	–	13	85	1158	2265
11	संस्कार केन्द्र	138	421	842	252	–	111	83	–	104	250	498	2699
12	कुल शिक्षण संस्थाएँ	1223	2414	2879	2571	949	1410	1578	801	1589	1648	7732	24794
13	कुल आचार्य + आचार्याएँ	7021	13108	13308	8876	4549	9377	7650	5156	9391	7422	14893	120751
14	कुल छात्र + छात्राएँ	140752	335992	390446	195247	77063	146904	180976	115018	267164	189553	798936	2838051
15	आवासीय विद्यालय	9	6	17	15	15	32	12	10	7	14	12	149
16	बालिका विद्यालय	9	35	35	11	0	0	5	0	14	83	12	204
17	वनवासी विद्यालय	22	0	14	305	199	34	80	15	112	41	1283	2105
18	ग्रामीण विद्यालय	680	1570	1994	1482	518	601	747	569	544	601	4670	13976
19	सीमाँत क्षेत्रों में विद्यालय	9	23	55	41	20	7	0	0	29	0	0	184

स्त्रोत :– प्रदीपिका (चैत्र से ज्येष्ठ, 2005) , विद्या भारती प्रकाशन ।

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में 'विद्या भारती' से सम्बद्ध सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं की जनपदवार तालिकाबद्ध सूची

जिला – झाँसी

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज	बालाजी मार्ग , झाँसी – 284003	जिला मुख्यालय	इण्टरमीडिएट	बालक
2	महाराजा अग्रसेन सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय	शिवपुरी रोड, नदी के किनारे, सीपरी , झाँसी	जिला मुख्यालय	हाईस्कूल	बालक
3	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय	कटरा ,मऊरानीपुर, झाँसी – 284204	तहसील	हाईस्कूल	सहशिक्षा
4	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय	समथर ,झाँसी – 284304	कस्बा	हाईस्कूल	बालक
5	सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज	मेन रोड़ ,चिरगांव , झाँसी – 284801	कस्बा	इण्टरमीडिएट	सहशिक्षा
6	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय	केशव नगर ,मोठ , झाँसी – 284303	तहसील	हाईस्कूल	बालक
7	सरस्वती उच्चत्तर माध्यमिक विद्या मन्दिर	पारीछा कालोनी , पारीछा , झाँसी – 284305	कस्बा	हाईस्कूल	सहशिक्षा
8	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय	कैलाश पर्वत के पास , बरूआसागर, झाँसी – 284201	कस्बा	हाईस्कूल	बालक
9	श्री शंकरलाल सेठ सरस्वती विद्या मंदिर	बड़ागांव गेट बाहर , नारायण बाग, झाँसी – 284002	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	बालक
10	सरस्वती विद्या मंदिर	जलनिगम तिराहा , बबीना कैन्ट, झाँसी – 284401	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	बालक
11	सरस्वती बालिका विद्या मंदिर	दतिया द्वार बाहर , झाँसी – 284002	जिला मुख्यालय	इण्टरमीडिएट	बालिका
12	रघुनाथ सहाय जैन सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय	जैन धर्मशाला के पास, सदर बाजार , झाँसी – 284001	जिला मुख्यालय	हाईस्कूल	बालिका
13	महात्मा गाँधी सरस्वती विद्या मन्दिर	राजघाट , नन्दनपुरा , झाँसी	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
14	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	दीनदयाल नगर , झाँसी	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	बालिका

जिला – जालौन

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज	रामनगर, झाँसी रोड़ ,ऊरई, जालौन – 285001	जिला मुख्यालय	इण्टरमीडिएट	बालक
2	स्वामी विवेकानन्द इण्टर कॉलेज	बालम भट्ट, जालौन – 285123	तहसील	इण्टरमीडिएट	बालक
3	सेठ भगवती प्रसाद सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	राजमार्ग, झाँसी रोड़ ,पो0–एट, जालौन–285123	कस्बा	हाईस्कूल	सहशिक्षा
4	सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज	गल्ला मण्डी परिसर, कोंच, जालौन–285205	तहसील	इण्टरमीडिएट	बालक
5	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	बड़ा बाजार, कालपी, जालौन–285205	तहसील	हाईस्कूल	सहशिक्षा
6	सरस्वती विद्या मंदिर	नया रामनगर, उरई,जालौन–285001	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
7	सेठ गोविन्दास सरस्वती विद्या मन्दिर	माधवगढ़, जालौन–285123	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
8	आनन्दी बाई हर्षे सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज	बालम भट्ट, जालौन – 285123	तहसील	हाईस्कूल	बालिका
9	अर्चना महेश्वरी सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	राजेन्द्र नगर, ऊरई, जालौन–285001	जिला मुख्यालय	हाईस्कूल	बालिका
10	सरस्वती विद्या मंदिर	बजरिया ,कोंच,जालौन	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
11	केदारनाथ सरस्वती विद्या मन्दिर	नदी गाँव जालौन	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा

जिला – ललितपुर

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	सरस्वती विद्या मन्दिर	चौबयाना , ललितपुर , 284403	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	सह शिक्षा
2	सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्या मन्दिर	नाराहट रोड , महरौनी , ललितपुर – 284405	तहसील	हाईस्कूल	सह शिक्षा
3	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	पाली , ललितपुर	कस्बा	हाईस्कूल	सह शिक्षा
4	सरस्वती विद्या मन्दिर	तालबेहट , ललितपुर	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सह शिक्षा
5	सरस्वती विद्या मन्दिर	सिविल लाइन्स, ललितपुर	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	सह शिक्षा

जिला – बाँदा

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	सरस्वती विद्या मन्दिर ,इण्टर कॉलेज	आम बाग , चुंगी चौकी , शास्त्रीनगर , बाँदा – 210001	जिला मुख्यालय	इण्टरमीडिएट	बालक
2	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	केनपथ , बाँदा – 210001	जिला मुख्यालय	हाईस्कूल	बालिका
3	सरस्वती विद्या मन्दिर	डाक बंगले के पास , नरैनी , बाँदा	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
4	सरस्वती विद्या मंन्दिर	बबेरू , बाँदा	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
5	सरस्वती विद्या मंन्दिर	पैलानी , बाँदा	ग्राम	जूनियर हाईस्कूल	सह शिक्षा समिति

जिला – हमीरपुर

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज	रानी लक्ष्मी बाई पार्क, हमीरपुर,–210301	जिला मुख्यालय	इण्टरमीडिएट	बालक
2	सरस्वती बाल मन्दिर इण्टर कॉलेज	रामलीला मैदान के सामने , राठ, हमीरपुर – 210431	तहसील	इण्टरमीडिएट	बालक
3	सरस्वती विद्या मन्दिर हाईस्कूल	मौदहा , पोस्ट – रागौल, हमीरपुर – 210507	तहसील	हाईस्कूल	सहशिक्षा
4	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	पुराना बेतवा घाट , हमीरपुर	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	बालिका
5	सुमन भारती शान्ति निकेतन सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	चरखारी रोड , राठ , हमीरपुर – 210431	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	बालिका
6	जगन्नाथ सरस्वती विद्या मन्दिर	कुरारा , हमीरपुर	कस्बा	हाईस्कूल	सहशिक्षा
7	सरस्वती विद्या मंदिर	सरीला , हमीरपुर	तहसील	हाईस्कूल	सहशिक्षा
8	सरस्वती विद्या मन्दिर	गाँव – आकौना , राठ , हमीरपुर	ग्राम	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
9	सरस्वती विद्या मन्दिर	गाँव–गोहाण्ड , त0 – राठ हमीरपुर	ग्राम	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
10	सरस्वती विद्या मन्दिर	सुमेरपुर , हमीरपुर	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
11	सरस्वती विद्या मन्दिर	अरतरा , त0 – मौदहा , हमीरपुर	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा

जिला – महोबा

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज	आल्हा चौक , महोबा – 210427	जिला मुख्यालय	इण्टरमीडिएट	बालक
2	सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज	पुराना महल , चरखारी , महोबा – 210427	तहसील	इण्टरमीडिएट	सहशिक्षा
3	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	आल्हा चौक , रामकथा मार्ग , महोबा	जिला मुख्यालय	हाईस्कूल	बालिका
4	सरस्वती विद्या मन्दिर	सूपा , चरखारी , महोबा	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा

जिला – चित्रकूट

क्र0स0	विद्यालय का नाम	पूर्ण पता	क्षेत्र	मान्यता स्तर	वर्ग
1	बैजनाथ भारद्वाज सरस्वती विद्या मन्दिर उ.मा.विद्यालय	शंकर बाजार , कर्बी ,चित्रकूट – 210205	जिला मुख्यालय	हाईस्कूल	बालक
2	सरस्वती विद्या मन्दिर	गांधी नगर , मानिकपुर ,चित्रकूट – 210205	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
3	सरस्वती विद्या मन्दिर	महावीर नगर , मानिकपुर , चित्रकूट – 210208	तहसील	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
4	सरस्वती विद्या मन्दिर	शिवरामपुर , कर्बी , चित्रकूट	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	बालिका
5	सरस्वती विद्या मन्दिर	सीतापुर , चित्रकूट	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
6	सरस्वती विद्या मन्दिर	भरतकूप , चित्रकूट	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
7	सरस्वती विद्या मन्दिर	राजापुर , त0 – कर्बी चित्रकूट	कस्बा	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा
8	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	शंकर बाजार , कर्बी , चित्रकूट	जिला मुख्यालय	जूनियर हाईस्कूल	सहशिक्षा

प्रतिदर्श बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं से प्राप्त प्रश्नावलियों का जनपदवार विवरण

क्र.स.	विद्यालय का नाम एवं स्थान	जनपद	क्षेत्र	विद्यालय का वर्ग	विद्यालय का मान्यता स्तर	तत्कालीन प्रधानाचार्य (सत्र–2003–2004 में)
1	भा.दे.गो.स.वि.म.इण्टर का.	झाँसी	जिला मुख्यालय	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री सुशील कुमार
2	म0 अग्र. स. वि.म.उ.मा.वि.	झाँसी	जिला मुख्यालय	बालक	हाईस्कूल	श्री रतन सिंह
3	स.उ.म.वि.मं. पारीछा	झाँसी	कस्बा	सहशिक्षा	हाईस्कूल	श्रीमहेश कुमार श्रीवास्तव
4	स.वि.मं.इ.का., चिरगाँव	झाँसी	कस्बा	सहशिक्षा	इण्टरमीडिएट	श्री पवन कुमार द्विवेदी
5	स.वि.मं.उ.मा.वि,मोंठ	झाँसी	तहसील	बालक	हाईस्कूल	श्री राम गोपाल त्रिपाठी
6	स.वि.मं.उ.मा.वि,मऊरानीपुर	झाँसी	तहसील	सहशिक्षा	हाईस्कूल	श्री सुशील पराशर
7	स.वि.मं.इ.का., उरई	जालौन	जिला मुख्यालय	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री शिवपाल विश्वकर्मा
8	स्वामी विवेकानन्द इ.का.	जालौन	तहसील	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री सुरेन्द्र नाथ पटैरिया
9	सेठ भ0प्र0 स.वि.मं.उ.मा.वि., एट,	जालौन	कस्बा	सहशिक्षा	हाईस्कूल	श्री परशुराम
10	सरस्वती वि.मं.इ.का. कोंच	जालौन	तहसील	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री चन्द्र प्रकाश निरंजन
11	स.वि.मं.उ.मा.वि., कालपी	जालौन	तहसील	सहशिक्षा	हाईस्कूल	श्री कृष्ण कान्त द्विवेदी
12	स.उ.मा.वि.मं.वि. महरौनी	ललितपुर	तहसील	सहशिक्षा	हाईस्कूल	श्री मानसिंह निराला
13	सरस्वती विद्या मन्दिर इं. का.	बाँदा	जिला मुख्यालय	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री शिव बली सिंह
14	सरस्वती विद्या मन्दिर इं. का.	हमीरपुर	जिला मुख्यालय	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री शरदादीन यादव
15	स.बाल मं.इ.का., राठ	हमीरपुर	तहसील	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री नरेन्द्र सिंह
16	स.वि.मं.हाईस्कूल.मौदहा	हमीरपुर	तहसील	सहशिक्षा	हाईस्कूल	श्री भगवान सिंह सेंगर
17	सरस्वती विद्या मन्दिर इं. का.	महोबा	तहसील	बालक	इण्टरमीडिएट	श्री बिपिन बिहारी द्विवेदी
18	स.वि.मं.इ.का. चरखारी	महोबा	तहसील	सहशिक्षा	इण्टरमीडिएट	श्री हम्मीर सिंह
19	बै0भा0स0 वि.मं.उ.मा.वि.कर्वी	चित्रकूट	जिला मुख्यालय	बालक	हाईस्कूल	श्री शिव बरन त्रिपाठी
20	र.स.जैन स.बा.वि.मं.उ.मा.वि.,सदर बाजार	झाँसी	जिला मुख्यालय	बालिका	हाईस्कूल	श्रीमती अर्चना अवस्थी
21	स.बालिका वि.मं.दतिया द्वार	झाँसी	जिला मुख्यालय	बालिका	इण्टरमीडिएट	सुश्री कल्पना
22	आनन्दीबाई हर्षे स.बा.वि.मं.इ.का.	जालौन	तहसील	बालिका	हाईस्कूल	श्रीमती अर्चना जोशी
23	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर	बाँदा	जिला मुख्यालय	बालिका	हाईस्कूल	श्रीमती अमिता सिंह

परिशिष्ट–6

महोदय मैं शिक्षा शास्त्र विषय में पी. एच. डी. उपाधि हेतु शोधार्थी हूँ । मेरा शोध विषय है – "बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन ।"

प्रस्तुत प्रश्नावली उपरोक्त शोध कार्य हेतु प्रयुक्त की जानी है । इस प्रश्नावली में आपके विद्यालय के शैक्षिक कार्य से सम्बन्धित कुछ प्रश्न लिखे हुए हैं । इन प्रश्नों के आपके द्वारा दिये गये उत्तरों को पूर्णतयः गोपनीय रखा जायेगा । इन उत्तरों का उपयोग केवल उपरोक्त शोध कार्य हेतु किया जाएगा । इसके सम्बन्ध में जो भी निष्कर्ष आयेंगे उनसे आपको भी अवगत कराया जायेगा ।

आलोक –
1. प्रश्नों में प्रयुक्त शब्द "वर्तमान समय में" का तात्पर्य सत्र 2003–2004 तक है ।
2. प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के सामने या उसके नीचे उपलब्ध स्थान में ही दें ।
3. जिन प्रश्नों के सामने विकल्प दिये गये हैं कृपया उन पर सही का निशान लगायें ।
4. यदि विद्यालय सह शिक्षा पद्धति का है तो कृपया बालक एवं बालिकाओं की संख्याओं का प्रत्येक स्थान पर अलग–अलग उल्लेख करें ।

"प्रश्नावली"

विद्यालय /संस्था का नाम –

पूरा पता –

1. यह विद्यालय किस वर्ष में स्थापित हुआ ?..

2. विद्यालय को संचालित करने वाली संस्था का नाम क्या है ?.......................................

3. स्थापना वर्ष में विद्यालय किस स्तर तक था ? जू.हाईस्कूल/हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट

4. स्थापना वर्ष में विद्यालय भवन किसका एवं कैसा था ? स्वयं का/किराये का

5. स्थापना वर्ष में विद्यालय की छात्र संख्या कितनी थी ?..

6. स्थापना वर्ष में विद्यालय में शिक्षकों की संख्या कितनी थी ?..................................

7. स्थापना वर्ष में विद्यालय किस कक्षा से किस कक्षा तक था ?.................................

8. स्थापना वर्ष में विद्यालय में प्रत्येक कक्षा के कितने वर्ग थे ?..................................

9. स्थापना वर्ष में विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या कौन थे/थीं ?.......................

10. वर्तमान में विद्यालय किस कक्षा से किस कक्षा तक है ?..

11. वर्तमान में विद्यालय में प्रत्येक कक्षा के कितने वर्ग हैं ?..

12. वर्तमान में विद्यालय में प्रत्येक वर्ग में लगभग कितनी छात्र संख्या है ?...................

13. विद्यालय को जूनियर हाई स्कूल की मान्यता किस वर्ष में प्राप्त हुई थी ?...............

14. विद्यालय को हाई स्कूल की मान्यता किस वर्ष में प्राप्त हुई थी ?..............................

15. विद्यालय को हाई स्कूल की मान्यता किस परिषद से प्राप्त है ?

U.P.Board / CBSE/ICSC

16. हाईस्कूल के मान्यता वर्ष में विद्यालय में हाईस्कूल छात्रों की संख्या कितनी थी ?

17. वर्तमान में हाई स्कूल में कुल छात्र संख्या कितनी है ?

18. विद्यालय को इण्टरमीडिएट की मान्यता किस वर्ष में प्राप्त हुई थी ?

19. विद्यालय को इण्टरमीडिएट की मान्यता किस परिषद से प्राप्त है ?

U.P.Board / CBSE/ICSC

20. इण्टरमीडिएट के मान्यता वर्ष में विद्यालय में इण्टरमीडिएट छात्रों की संख्या क्या थी ?

21. वर्तमान में इण्टरमीडिएट में कुल छात्र संख्या कितनी है ?

22. विद्यालय को इण्टरमीडिएट की मान्यता किस–किस वर्ग में प्राप्त है ?

Science /Arts/ Commerce.

23. स्थापना वर्ष से अब तक विद्यालय में शिक्षण का माध्यम कौन सी भाषा रही है ? हिन्दी/अंग्रेजी/दोनों

24. विद्यालय का वर्ग कौन सा है ? बालक/बालिका/ सह शिक्षा

25. विद्यालय के स्थापना वर्ष से सत्र 2003.2004 तक प्रत्येक वर्ष कुल नामांकित छात्रों की संख्या कितनी रही ?

सत्र	कक्षा 8 में छात्र सं.	कक्षा 10 में छात्र सं.	कक्षा 12 में छात्र सं.	विद्यालय की कुल छात्र सं.	सत्र	कक्षा 8 में छात्र सं.	कक्षा 10 में छात्र सं.	कक्षा 12 में छात्र सं.	विद्यालय कीं कुल छात्र सं.
2004					1993				
2003					1992				
2002					1991				
2001					1990				
2000					1989				
1999					1988				
1998					1987				
1997					1986				
1996					1985				
1995					1984				
1994					1983				

26. विद्यालय के स्थापना वर्ष से सत्र 2003–2004 तक प्रत्येक वर्ष आचार्यो की कुल संख्या कितनी रही ?

2003–04...................., 2002–03....................,2001–02...................,2000–01....................,
1999–20000..............., 1998–99....................,1997–98...................,1996–97....................,
1995–96....................., 1994–95....................,1993–94...................,1992–93....................,
1991–92....................., 1990–91....................,1989–90...................,1993–94....................,
1992–93....................., 1991–92....................,1990–91...................,1989–90....................,
1988–89....................., 1987–88....................,1986–87...................,1985–86....................,
1984–85....................., 1983–84....................,1982–83...................,1981–82....................,
1980–81....................., 1979–80

27. वर्तमान समय में विद्यालय में प्रशिक्षित आचार्यों की संख्या कितनी है ?...................

28. वर्तमान समय में विद्यालय मे अप्रशिक्षित आचार्यों की संख्या कितनी है ?

29. विद्यालय में प्रारम्भिक वर्षों में छात्रों के प्रवेश के लिए कौन सी प्रकिया अपनाई जाती थी ?

सीधे प्रवेश / मेरिट / साक्षात्कार / लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार / लिखित परीक्षा

30. वर्तमान में विद्यालय में छात्रों के प्रवेश के लिए कौन सी प्रकिया अपनाई जा रही है ? सीधे प्रवेश / मेरिट / साक्षात्कार / लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार / लिखित परीक्षा

31. वर्तमान में हाई स्कूल स्तर पर छात्रों के प्रवेश की कौन सी प्रकिया अपनाई जा रही है ? सीधे प्रवेश / मेरिट / साक्षात्कार / लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार / लिखित परीक्षा

32. वर्तमान में इण्टरमीडिएट स्तर पर छात्रों के प्रवेश की कौन सी प्रकिया अपनाई जा रही है ? सीधे प्रवेश / मेरिट / साक्षात्कार / लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार / लिखित परीक्षा

33. क्या वर्तमान प्रवेश प्रकिया से छात्र संतुष्ट रहते हैं ? पूर्ण संतुष्ट / अर्द्ध संतुष्ट / असंतुष्ट

34. क्या वर्तमान प्रवेश प्रकिया विद्यालय की व्यवस्था बनाने में सहयोग प्रदान करती है ? हाँ / नहीं

35. विद्यालय में जूनियर हाई स्कूल (कक्षा 8) में मान्यता वर्ष से सत्र 2003–2004 तक प्रत्येक वर्ष नामांकित छात्रों की संख्या एवं उत्तीर्ण छात्रो की संख्या कितनी रही ?

सत्र	नामांकित छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **का प्रतिशत**	सत्र	नामांकित छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **का प्रतिशत**
2004				1993			
2003				1992			
2002				1991			
2001				1990			
2000				1989			
1999				1988			
1998				1987			
1997				1986			
1996				1985			
1995				1984			
1994				1983			

36. विद्यालय में हाई स्कूल कक्षा में मान्यता वर्ष से सत्र 2003–2004 तक प्रत्येक वर्ष नामांकित छात्रों की संख्या एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या कितनी रही ?

सत्र	नामांकित छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **का प्रतिशत**	सत्र	नामांकित छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **की संख्या**	उत्तीर्ण छात्रों **का प्रतिशत**
2004				1993			
2003				1992			
2002				1991			
2001				1990			
2000				1989			
1999				1988			
1998				1987			
1997				1986			
1996				1985			
1995				1984			
1994				1983			

37. विद्यालय में इण्टरमीडिएट कक्षा में मान्यता वर्ष से सत्र 2003–2004 तक प्रत्येक वर्ष नामांकित छात्रों की संख्या एवं उत्तीर्ण छात्रों की संख्या कितनी रही ?

सत्र	नामांकित छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत	सत्र	नामांकित छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत
2004				1993			
2003				1992			
2002				1991			
2001				1990			
2000				1989			
1999				1988			
1998				1987			
1997				1986			
1996				1985			
1995				1984			
1994				1983			

38. विद्यालय में हाई स्कूल छात्रों के द्वारा परिषद की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने का विवरण सत्रशः क्या रहा ? इस सम्बन्ध में कोई विशेष बात जो आप उल्लेख करना चाहें ।

....

39. विद्यालय के इण्टरमीडिएट छात्रों के द्वारा परिषद की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने का विवरण सत्रशः क्या रहा ? इस सम्बन्ध में कोई विशेष बात जो आप उल्लेख करना चाहें ।

....

....

40. यह विद्यालय आर्थिक स्त्रोतों के आधार पर किस श्रेणी में आता है ?

पूर्ण शासकीय सहायता प्राप्त / अर्थ शासकीय सहायता प्राप्त / स्ववित्त पोषित

41. क्या यह विद्यालय किसी गैर सरकारी संस्था से आर्थिक सहायता प्राप्त करता है ? यदि हां तो इस संस्था का नाम भी लिखें । हाँ / नहीं

42. सहायता प्रदान करने वाली गैर सरकारी संस्था किस देश से सम्बन्धित है ?

43. गैर सरकारी संस्था से विद्यालय को किस मद में सहायता मिलती है ?

भवन / वेतन / फर्नीचर / छात्रवृत्ति / प्रयोगशाला / पुस्तकालय......................................

44. गैर सरकारी आर्थिक सहायत की वर्तमान दशा क्या है ?

लगातार प्राप्त हो रही है / कभी कभी प्राप्त होती हैं / बन्द हो गई है ।

45. प्राप्त होने वाली गैर सरकारी आर्थिक सहायता किस वर्ष से मिलना बन्द हो गई थी ?

46. वर्तमान समय में विद्यालय के आर्थिक स्त्रोत क्या–क्या / कौन से हैं ?......................

प्रवेश शुल्क / शिक्षण शुल्क / दान / डोनेशन / ट्रस्ट / चेरिटी या अन्य कोई

47. स्थापना वर्ष में विद्यालय के भवन की दशा कैसी थी ?

कच्चा एवं छप्पर / पक्का एवं छप्पर / पक्का कंक्रीट का..

48. स्थापना वर्ष में विद्यालय भवन में कितने कक्ष थे ?..

49. वर्तमान में विद्यालय के भवन का स्वामित्त किसका है ?.........स्वयं का / किराये

50. वर्तमान में विद्यालय के भवन के भवन की दशा कैसी है ?.

कच्चा एवं छप्पर / पक्का एवं छप्पर / पक्का कंक्रीट का

51. वर्तमान में विद्यालय भवन में कुल कितने कक्ष हैं ?...

52. इन कक्षों में से विद्यार्थियों की कक्षायें कितने कक्षों में लगती है ?..............................

53. इन कक्षों में से प्रयोगशाला कितने कक्षों में है ?...

54. प्रशानाचार्य कक्ष एंव कार्यालय के उपयोग हेतु कितने कक्ष उपयोग में आते हैं ?........

55. विद्यालय में अध्यापकों के बैठने के लिए क्या व्यवस्था है ?..

56. विद्यालय में छात्रों के बैठने के लिए क्या व्यवस्था है ?...

57. विद्यालय में कुल कितना फर्नीचर है ?...

58. विद्यालय में पुस्तकालय में कक्षों की संख्या कितनी है ?.......................................

59. विद्यालय पुस्तकालय में कुल कितनी पुस्तकें उपलब्ध है ?..

60. उपलब्ध पुस्तकों में पाठयक्रम सम्बन्धी पुस्तकें कितनी है ?..

61. विद्यालय में क्रीड़ा कक्षों की संख्या कितनी है ?..

62. विद्यालय में कौन–कौन से खेलों की व्यवस्था है ?..

63. विद्यालय में क्रीड़ा/व्यायाम शिक्षकों की संख्या कितनी है ?.......................................

64. क्या विद्यालय के पास स्वयं का क्रीड़ा स्थल है ? हाँ/नहीं

65. क्या विद्यालय के विद्यार्थियों का जिला स्तर या उससे ऊपर के स्तर पर खेलकूद में कोई स्मरणीय योगदान रहा है ? विवरण दें –...

66. विद्यालय में आयोजित की जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विवरण दें ।
एन.सी.सी./स्काउट/वार्षिकोत्सव/सांस्कृतिक कार्यक्रम/क्रीड़ा प्रतियोगिताएं/
शारीरिक प्रदर्शन/कोई अन्य (उल्लेख करें) ....

67. क्या विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है ? हाँ/नही

68. कम्प्यूटर शिक्षा किस कक्षा से किस कक्षा तक उपलब्ध है ?..

69. विद्यालय में कम्प्यूटरों की संख्या कितनी है ?..

70. क्या विद्यालय में इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध है ? हाँ/नही

71. विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था कौन कर रहा है ? विद्यालय/व्यक्तिगत संस्था

72. क्या विद्यालय में संगीत शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है ? हाँ/नही

73. संगीत शिक्षा किस कक्षा से किस कक्षा तक उपलब्ध है ?...

74. विद्यालय में कौन–कौन से वाद्ययंत्र उपलब्ध हैं ?...

75. विद्यालय में संगीत शिक्षकों की संख्या कितनी है ?...

76. विद्यालय में संगीत शिक्षा के लिए कितने कक्ष उपयोग में आते हैं ?.........................

77. क्या विद्यालय पर उत्तर प्रदेश शासन के नियम लागू होते हैं ?...............................

78. क्या विद्यालय में शिक्षकों को शासन द्वारा घोषित वेतनमान दिये जाते हैं ?

हाँ/नहीं/समकक्ष

79. क्या विद्यालय के शिक्षकों को वे सभी सुविधायें प्राप्त हैं जो शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को प्राप्त है ? भविष्य निधि/ग्रेच्यूटी/बीमा

80. क्या शिक्षकों को अवकाश सुविधायें शासकीय नियमों के अनुरूप प्राप्त होती हैं ?

हाँ/नही

81. क्या विद्यालय में शिक्षकों की भविष्य निधि की कटौती शासकीय मापदण्डों के अनुरूप है ? हाँ/नही

82. क्या इन परिस्थितियों में विद्यालय के शिक्षक अपने आप को संतुष्ट महसूस करते हैं ? हाँ/नही

83. क्या विद्यालय को जनता से पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है ? हाँ/नही

84. एक संस्था/विचारधारा विशेष से जुड़े होने के कारण इस विद्यालय की समाज में छवि कैसी है ?

....

85. एक संस्था/विचारधारा विशेष से जुड़े होने के कारण क्या विद्यालय को शासन की ओर से कोई बाधा उत्पन्न की जाती है/प्रतिबन्ध लगाया जाता है ? हाँ/नही

86. विद्यालय में जूनियर हाईस्कूल, हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट में कौन सा पाठ्यक्रम लागू किया गया है ?...

87. इस पाठ्यक्रम को अपनाने में क्या राज्य सरकार कोई बाधा उत्पन्न करती है ? हाँ/नही

88. विद्यालय में शिक्षण की कौन–कौन सी विधियां अपनाई जा रही है ?............................

89. क्या शिक्षण की इन शैलियों से छात्र संतुष्ट हैं ? हाँ/नही

90. क्या यह शिक्षण शैलियां छात्रों में रटने की प्रवृत्ति का विकास करती है ? हाँ/नही

91. क्या विद्यालय में छात्रों की सहायता के लिए निर्देशन सेवायें उपलब्ध है ? हाँ/नही

92. विद्यालय में निर्देशन सेवायें किन किन क्षेत्रों में उपलब्ध कराई गई है ?......................

93. क्या विद्यालय में छात्रों के लिए समुचित स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध हैं ? हाँ/नही

94. क्या विद्यालय में शासन द्वारा भी स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराई जाती है ?

हाँ / नही

95. क्या इन स्वास्थ्य सेवाओं के लिए छात्रों से कोई शुल्क लिया जाता है ? हाँ / नही

96. इस विद्यालय में किन–किन अंचलों या क्षेत्रों से छात्र अध्ययन के लिए आते हैं ?

97. विद्यालय में अध्ययन के लिए आने वाले छात्रों में किस क्षेत्र के छात्रों की प्रमुखता है ?..

98. विद्यालय में अध्ययन हेतु छात्र किस आधार पर /कारण से आते हैं ?

आर्थिक / सामाजिक / धार्मिक

99. क्या विद्यालय की प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति विद्यालय के कार्यों में अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप करती है ? हाँ / नही

100. विद्यालय की प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति विद्यालय के किन–किन कार्यो में अपने सुझाव देती है ? प्रवेश प्रकिया /छात्र चयन / आचार्य चयन / पाठ्यकम / शिक्षण विधियाँ / वेतन / अवकाश / आचार्य निष्कासन / पाठ्य सहगामी कियायें / अन्य.............

....

101. विद्यालय में छात्रों में लोकतांत्रिक भावना / आदतों का विकास करने के लिए कौन कौन से कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है ?..

....

....

102. आप की राय में यह कार्यक्रम छात्रों में किस सीमा तक लोकतांत्रिक भावना का विकास करते हैं ? मात्र एक प्रयास/अर्द्ध संतुष्ट/पूर्ण संतुष्ट/असंतुष्ट

103. छात्रों में लोकतांत्रिक भावना का विकास करने के लिए और कौन–कौन से प्रयास आपकी राय में आवश्यक हैं ?...

104. विद्यालय में बालकों में राष्ट्रीय चेतना का विकास करने के लिए कौन–कौन से प्रयास किये जा रहे हैं ?..

....

105. क्या विद्यालय का पाठ्यक्रम छात्रों में राष्ट्रीय चेतना क विकास करने में सहायक है ? हाँ/नही

106. विद्यालय के छात्रों में विकसित राष्ट्रीय चेतना के सम्बन्ध मे आप कहां तक संतुष्ट है ?..

....

107. क्या विद्यालय में छात्रों को राजगारपरक कोई कौशल सिखलाया जाता है ? (यदि है तो उल्लेख करें) ?...

108. विद्यालय में शैक्षणिक रूप से कमजोर छात्रों की किस प्रकार सहायता की जाती है ?..

109. आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की सहायता के लिए विद्यालय क्या योगदान देता है ?..

110. विद्यालय एवं अभिभावकों के मध्य सम्पर्क का क्या माध्यम है ?..

....

111. विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा कौन–कौन से सामाजिक कार्य किये जा रहे हैं ?..........

....

112. विद्यालय की कोई विशेषता या कोई विशेष उपलब्धी जिसका आप वर्णन देना चाहें ?...

....

....

....

113. विद्यालय की दैनिक सामान्य गतिविधियों का विस्तार पूर्ण विवरण दीजिये ।

दिनांक –

हस्ताक्षर एवं मुहर –

प्रधानाचार्य / प्रधानाचार्या का पूरा नाम

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्निहोत्री, डॉ. रवीन्द्र, भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर ।
- अस्थाना, डॉ. बिपिन, 1999, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
- एचीन्सन, सी.यू., 1909, ट्रीटीज इन्गेजमेन्ट्स एण्ड सनद्, कलकत्ता ।
- एटकिन्सन (Eds), बुन्देलखण्ड गजेटियर ।
- ओड़, डॉ. लक्ष्मीलाल के. , 1994, शिक्षा की दर्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।
- कनिंघम, 1869, ए आर्कलॉजिकल सर्वे रिर्पोट, भाग–21, वाराणसी ।
- कपिल, डॉ. एच.के., 1997, अनुसन्धान विधियाँ (व्यवहारिक विज्ञानों में), हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक, आगरा ।
- कपिल, डॉ. एच. के., सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), सप्तम् संस्करण , विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
- कृष्णमूर्ति, जे., 1998, शिक्षा संवाद : छात्रों और शिक्षकों से, कृष्णमूर्ति फाउडेशन इंडिया, वाराणसी ।
- गुप्त, रामबाबू, भारतीय शिक्षा का इतिहास, सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, कानपुर ।
- चौबे, डॉ. एस. पी. एवं चौबे, डॉ. अखिलेश, 2002, शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाज शास्त्रीय आधार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ ।
- जैन एवं डॉ. सोलंकी (सम्पादक), उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान, उपकार प्रकाशन, आगरा ।
- डब्ल्यू , एच.एल. तथा मेल्सटन, जे.एस.,1892, इम्पेरियर झाँसी सैटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद।
- जोशी, ई.वी., 1965, झाँसी गजेटियर, लखनऊ ।
- डायोसिस कमेटी, 1940 , हिस्टोरिकल स्कैच ऑफ दि इलाहाबाद डायोसिस ।
- ड्रेक , वॉकमैन डी. एल., 1909, जालौन गजेटियर, इलाहाबाद ।
- ड्रेक, वॉकमैन डी.एल. , 1909, बाँदा गजेटियर, इलाहाबाद ।
- तिवारी, गोरेलाल, 1933, बुन्देलखण्ड का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
- त्रिपाठी, मोतीलाल , 1980, बुन्देलखण्ड दर्शन, शारदा साहित्य कुटीर, झाँसी ।
- तोमर, लज्जाराम, 1990, भारतीय शिक्षा के मूलतत्व, सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, नयी दिल्ली ।
- पन्निकर, के.एम., 1966., सर्वे ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, मुम्बई ।
- पाठक, पी.डी., भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

– पाठक, एस. पी., 1987, झाँसी ड्यूरिंग दि ब्रिटिश रूल, रामानन्द विद्या भवन, नई दिल्ली ।
– पाण्डेय, रामशकल, शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
– बत्रा, दीनानाथ, 2000, शिक्षा में त्रिवेणी, विद्या भारती प्रकाशन, कुरूक्षेत्र ।
– बुन्देली, राधाकृष्ण एवं बुन्देली, सत्यभामा, 1989, बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा ।
– भार्गव, डॉ. महेश, 1997, आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव, आगरा ।
– मिश्रा, के. सी., चंदेल और उनका राजस्व काल, वाराणसी ।
– मैलेसन, के., लाइफ ऑफ इण्डियन आफीसर्स ।
– राय, पारसनाथ, 1989, अनुसन्धान परिचय, षष्ठम् संस्करण्, आगरा ।
– रावर्टस, पी.ई. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया ।
– लाल, रमन बिहारी, 2002, भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ ।
– लाल, रमन बिहारी, 2002, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ ।
– वर्मा, डॉ. आर. पी. सिंह एवं सिंह, प्रो. पृथ्वी, विद्यालय प्रबन्ध एवं शिक्षा की समस्याएँ, प्रथम संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
– वर्मा, डॉ. आर.पी. सिंह एवं उपाध्याय, डॉ. राधा बल्लभ, 1995, विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
– विद्यालंकार, जय चन्द्र, भारत भूमि और उसके निवासी ।
– शर्मा, आर. ए., 1995, विद्यालय संगठन तथा शिक्षा प्रशासन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ ।
– शर्मा, आर. ए., 1998, शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
– श्रीवास्तव, डॉ. रमेशचन्द्र (सम्पादक), बुन्देलखण्ड : साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा ।
– श्रीवास्तव, डॉ. रामजी(सम्पादक),1999, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक मापन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
– सक्सेना, एन.आर.एस. , शिक्षा के सैद्धान्तिक एवं सामाजशास्त्री आधार, सूर्या प्रकाशन, मेरठ ।
– सिंह, अरूण कुमार, 2002, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली ।
– सिन्हा, एस. एन., दि रिवॉल्ट ऑफ 1857 ।
– सिंह, आर.एल., 1971, इण्डिया ए रीजनल जौगरफी, एन.सी.एस.आई., बनारस ।
– सुखिया, एस.पी., 1997, विद्यालय प्रशासन संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
– हयारण, रामचन्द्र, बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य ।

- Aggarwal, J.C., 2002, Educational research: An Introduction, Arya book depot, New Delhi .
- Aggarwal, J.C., 2004, Development of educational system in india, Shipra publications, Delhi.
- Aggarwal, J.C., Theory and principles of education Shipra publication, Delhi.
- Agnihotri,Sanjiv (Eds), 2005, Uttaranchal and uttar pradesh at a glance 2005 : District wise statistical overview, Jagran research centre, Kanpur.
- Ali, S.M. , 1966, The ecography of the puranas.
- Best, John W. and Kahn, James V., 2005, Research in education, 9th ed , Prentice-Hall of india (P) Ltd., New Delhi.
- Batnagar,Dr.R.P.& Agarwal, Dr. Vidya, 1999, Educational administration - supervision, Planning and financing, 5th ed, Surya publications, Meerut.
- Safaya, R.N., 1997, Development planning and problems of indian education, Dhanpat rai publishing Company (P) Ltd., New Delhi.
- Safaya, R. N. & Shaida, B.D., School administration & organisation, 20th ed, Dhanpatrai publishing company (P) Ltd., New Delhi.
- School Education in uttar pradesh : Status , issues and future perspective, 2003, NCERT, New Delhi.
- Sidhu, K.S., 2000, School organisation and administration, Sterling publishers private limited, New Delhi.
- Sidhu, K.S., 2001, Methodology of research in education, Sterling publishers private limited, New Delhi.
- Uttar Pradesh Annual 1995-96, Information and public relations department, Uttar pradesh, Lucknow.
- What makes a good school ? , A chapter in the Industry's role in school education, Confederation of indian industry (CII).

पत्रिकाएँ –

- आलोक, 1999, शिशु शिक्षा समिति, अवध प्रान्त, उत्तर प्रदेश।
- दर्पण, 1998, अंक –अष्टम, भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश, निरालानगर, लखनऊ।
- दर्पण, 2004, अंक – चतुर्दश, भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश, निराला नगर, लखनऊ।
- प्रदीपिका, चैत्र से ज्येष्ठ, 2005, विद्या भारती प्रकाशन ।
- प्राची, 2003, प्राची जनजाति सेवा न्यास, मथुरा ।
- सेवा चेतना, जनवरी – जून , 2004, भाउराव देवरस सेवा न्यास ।
- स्वर्णांजुरी : स्वर्ण जयन्ती स्मारिका, 2003, विद्या भारती पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र, नेहरू नगर, गाजियाबाद ।

- उत्तर प्रदेश एक अध्ययन, 2005, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा ।
- उत्तर प्रदेश वार्षिकी, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश की वार्षिक पत्रिका ।
- सांख्यिकीय डायरी, उत्तर प्रदेश, 1995, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ।
- सांख्यिकीय पत्रिका, 2003, झाँसी मण्डल, अर्थ एवं नियोजन विभाग, झाँसी मण्डल ।
- सांख्यिकीय पत्रिका, 2003,चित्रकूट धाम मण्डल, अर्थ एवं नियोजन विभाग, चित्रकूट धाम मण्डल।

Websites -

- http://www.upgov.nic.in – Official website of the government of uttar pradesh.
- http://www.vidyabharti.org – Website of vidya bharti.
- http://www.upmsp.nic.in – Official website of the board of high school and intermediate education uttar pradesh, allahabad.
- http://banda.nic.in – Official website of the banda district.
- http://chitrakoot.nic.in – Official website of the chitrakoot district.
- http://hamirpur.nic.in – Official website of the hamirpur district.
- http://jalaun.nic.in - Official website of the Jalaun district.
- http://jhansi.nic.in – Official website of the jhansi district.
- http://lalitpur.nic.in – Official website of the lalitpur district.
- http://mahoba.nic.in – Official website of the mahoba district.